

॥ श्रीः ॥

वर्षप्रबोध ।

अर्थात्

वृत्तन संवत्सर शुभाशुभ फल प्रबोध ।



जिसको

हिन्दीहितैषी राजगन्धर्व चौधू नरेशाश्रित

श्रीहनुमान शर्मा,

जयपुर ने—

शुद्ध और संगठित करके मापाटीकासे निम्नोक्त किया और,

उत्तको

खेमराज श्रीकृष्णदासने

वम्बई

निज “श्रीविक्रमेश्वर” स्टीम-मुद्रण मन्त्रालयमें

मुद्रितकर प्रकाशित किया ।

द्वितीयारूति ।

संवत् १९७७ शके १८४२.

इसका सर्वाधिकार “श्रीविक्रमेश्वर” मन्त्रालयमें
स्वाम्यधिकार है.

यह पुस्तक सेमराज श्रीकृष्णदासने बम्बई गेनराडी ७ वीं गली लम्बाउ
लेन, स्वकीय 'श्रीवेङ्कटेश्वर' स्ट्रीम्-प्रेषमें जाने लिपे छाकर यही
प्रकाशित किया।

भूमिका ।



स्वार्थ और परमार्थ दोनों के लिये ज्योतिष शास्त्र बहुतही अच्छा है । इसके फलित ग्रन्थोंमेंसे नित्य व्यवहारकी उपयोगी बातें ढूँढकर उनका अभ्यास किया जाय तो वह मनुष्य घरहीमें बैठा हुआ धनी मानी और परोपकारी हीस-पता है किन्तु एक बातके लिये अनेकों ग्रन्थोंका अभ्यास किया जाय तब सफलता होती है और ऐसा करनेके लिये आज कालके प्रायः 'निरुधमी' निरुसाही, निराश्रयी, निराशुची, लोग कहाँतक ऐसे कामोंमें तन, मन, धन लगा सकते हैं अतएव ऐसेही लोगोंके उपकारके लिये श्रीमेषविजय महाशयने "वाराहीसंहिता" आदि कई एक संहिताओंसे सामग्री इकट्ठी करके यह "वैप्रमोक्ष" बहुतही उत्तम निर्माण किया था और इसमें खेती करनेवा-लोंके उपयोगी, व्यापारीयोंके उपयोगी तथा धनप्राप्ति अथवा परोपकारी पद्धतियोंके उपयोगी कई बातोंका अच्छा संग्रह किया था किन्तु कालान्तरके कारण अथवा दुर्लभतासे यह संग्रह छिन्न भिन्न होकर खंडित होगया । और सदृशवस्था रूपसे अब कहीं मिलताभी नहीं है यद्यपि भाषाटीका सहित एक मिलताहै किन्तु वह ऐसा है मानो खुले पत्रोंकी पुस्तक बांधीमें टडगई हो और उसीको ढूँढ ढाँढकर बिना नम्बर देखेही ष्योकी त्यों छापदी हो, क्योंकि उसमें एकही विषयके दश-दश अंगोंमेंसे आठ आठ अंग जोत रहेहैं और कई एक विषय इधर के उधर छिन्न भिन्न होकर खंडित होरहे हैं । संभवतः इसीकारणसे विद्वानोंके उपयोगमें यह ग्रन्थ विशेष नहीं आता है अतएव इन सब गड-बडाध्यायोंको देखकरही मैंने अब इस ग्रन्थका फिरसे संग्रह किया है और जहाँ जहाँ जो जो कुछ पुटियाँ अशुद्धियाँ न्यूनता वा दोष बिछोम थीं उन सबको काट छाट फेरबदल और समिश्रण करके इसे यथासाध्य सांगोपांग-सदृशवस्था

और सर्वोपयोगी बनानेका प्रयत्न किया है। जो जो विषय इसमें भरल वदल छेम विलोम और खडित होगये थे उन सबको क्रमपूर्वक मिळसिलेवार लगा-
कर खडित अंगोंको और और ग्रन्थोंके आधारसे पूर्ण किया है। और
इसमेंसे जो अंग जाते रहे थे उनके सैकड़ों श्लोक अन्य ग्रन्थोंसे लेकर इसमें
लगादिये हैं विशेषकर पंचांग बनानेवालोंकी उपयोगी भविष्य फल सम्बन्धी सब
सामग्री इसमें संयुक्त करदी है अतएव अब यह ग्रन्थ व्यापार करनेवालों, खेती-
करनेवालों, पंचांग बनानेवालों, वर्षा आदि देखनेवालों और शुभाशुभ इतलाने
वालोंको अवश्यही लाभदायक हो सकता है आशा है विद्वान् लोग इस सम्मा-
र्जित कुसुमोपहारको स्वीकार करनेमें सकोच नहीं करेंगे मैंने अब
इस ग्रन्थका सर्वाधिकार "श्रीवैकटेश्वर" प्रेसके मालिक सेठ खेमराजजीको
दे दिया है अतएव इसे अन्य कोई छपनेका दुःसाहस न करे इति शुभम् ।

हितैषी:-

हनुमान शर्मा, - जयपुर सिटी.



विषयानुक्रमणिका ।

—३०७—

सं.	विषय ।	पृ.	सं.	विषय ।	पृ.
(१)	पूर्वभाग प्रथमस्थल ।			कत्नेकी विधि ।	४१
(१)	मंगलाचरण,	१	(७)	आर्द्रा प्रवेशमें त्रिविधों	
	संवत् छानेकी रीति ३		का फल ४२
	प्रमदादि छानेकी रीति ४	" "	ज्येष्ठा का फल ४४
	प्रमदादि साठ संवत्सरोके नाम "		" "	नक्षत्रोंका फल ४५
	प्रमदादि संवत्सरोका फल ५	" "	चौगोका फल ४६
(२)	संवत्सरका अंग और		" "	समयका फल ५३
	फल १६	" "	लग्नका निरीक्षण ५४
(३)	संवत्के राजा आदिका		(८)	जगल्लग्नका विचार "	
	विचार और फल "		वर्षके जन्मलग्नका विचार ५५
	वर्षके राजाका फल १७	(९)	रोहिणीके निवासका	
	वर्षके मंत्रीका फल १८		ज्ञान और उसका फल "	
	संदेशका फल २०		समय निवासका ज्ञान और	
	शान्देशका फल २२		फल ६१
	प्रदेशका फल २३	(१०)	वर्षके स्तम्भका ज्ञान	
	संदेशका फल २५		और फल ६२
	शिरदेशका फल २७		समयके मुर्त्ति और विशेष ज्ञान	६३
	तलेशका फल २८	(११)	अगस्त्यका उद्-	
	मेशका फल ३०		यास्त छानेकी विधि "	
	गोशका फल ३२		अगम्योदयास्त फल "
(४)	नौ मेघोंका आनयन		(१२)	गुरुद्वय मानीय वर्ष	६६
	और फल ३३	" "	वर्षोंका फल "	
(५)	द्वादश नारोंका आन-		(१३)	वर्ष-धान्य-वृण-	
	यन और फल ३६		वेग-आदि चालीस-पचास	
(६)	कई प्रकारके मेघोंका			वातोंके बिम्बा छानेकी विधि	
	वर्णन ३८		और उनके उदाहरण	६८
	पोंके गुण और निम्न		(१४)	लाभ खर्च जाननेकी	
				दिया ७०

सं.	विषय ।	पृ.	सं.	विषय ।	पृ.
(२)	पूर्व भागका द्वितीयस्थल ।			नक्षत्रोंपर ग्रहण होनेका फल	१०१
(१)	खेधरचार अर्थात्		(४)	मंगलचार	१०३
	सूर्यादिकोंके चलने फिरने			अश्विनी आदि नक्षत्रों पर	
	उदयास्त होने आदिका			मंगलके होनेका फल	१०४
	विस्तृत विचार और फल ७२			राशियोंपर उदय होनेका फल	१०७
सूर्यचार ११			अस्तविचार	१०८
प्रतिसूर्य वर्णन ७३		(५)	बुधचार	
इन्द्रधनुष ७४			अश्विन्यादि पर बुधके होने-	
परिवेप ११			का फल	१०९
संक्रांति फल ७५			उदय होनेका फल ...	१११
संक्रांतिके समय वर्तमान मास-				अस्त होनेका फल	११२
का फल ७९		(६)	गुरुचार	
११ ११ बारका फल ११			राशिगत गुरुका विस्तृत फल	११३
संक्रांति विषयक विशेष फल	८३			वृहस्पतिके चक्रका विचार	१२६
संक्रांतिसे वर्षका शुभाशुभ....	११			नक्षत्रमोगका विचार	१३१
प्रसंगवश अन्य प्रकारसे शुभा-				विशेषफल	१३३
शुभ ज्ञान.... ८७			उदय राशिका फल	१३४
(२) चन्द्रचार	८९			उदयके महीनोंका फल ...	१३५
चन्द्रमाकी आकृति तथा शङ्क	९०			अस्तफल ...	१३६
चंद्रोदय राशि फल	९३		(७)	शुक्रचार	
चंद्रके दक्षिणोत्तरका उदय फल	९५			शुक्रोदयके महीनोंका फल....	१३७
(३) प्रसंगवश सूर्य चंद्र के				११ ११ राशियोंका फल....	१३८
ग्रहणका विचार	९५			नक्षत्र गत फल	११
ग्रहण कैसे होता है	११			आत राशि फल	१४१
चैत्रादि मासोंमें ग्रहण होनेका फल	९६			देवादि मणमें उदय होनेका फल	१४२
वारोंमें ग्रहण होनेका फल	९७			शुक्रास्तसे देश विशेषमें	
ग्रहण होनेका फल ९९				वर्षज्ञान	१४४

सं.	विषय ।	पृ.	सं.	विषय ।	पृ.
(८)	शानिचार ।			प्रत्येक ऋतुकी पवनोका	
राशिस्य फल....	...	१४६	चिनरण फल	१७१	
उदय फल	१५०	पवन और बादलोंका मिश्रितफल	१७२	
अस्त फल	१५१	आषाढी पूर्णिमाका वायु विचार	१८०	
विशेष विचार....	१५२	होलीके दिनकी वायुका विचार	१८५	
(९)	राहुचार ।		(४)	उत्तरभागका	
शिगत राहु फल	१५३	द्वितीय स्थल ।		
(१०)	केतुचार ।		(१)	वर्षाका विचार ...	१८६
केतुके उदय होनेका लक्षण	१५७		गर्म लक्षण-(जलका मौल)	१८६	
अश्विन्पादिमें उदय होनेका फल	"		प्रत्येक मासमें होने वाले प्रति		
अनेक प्रकारके केतुओंका			दिनके गर्मका विस्तृत वर्णन	१८८	
विशेषवर्णन	१५९		(२)	साल भरके गर्म तथा	
पूर्वभाग समाप्त			वर्षाकारक अनेकों योग	१९०	
(३)	उत्तरभाग प्रथमस्थल ।		(३)	वर्षाकारक विजालियों-	
(१)	उत्पात निरूपण	१६१	का वर्णन	२१०	
उत्पातोंके भेद और विशेष फल	१६३		प्रसंगश संख्या परिवेष वायु		
(२)	मण्डल विचार		आदिकी गति तथा प्रमाण वर्णन "		
(आकाशी मण्डल .)	१६५		संख्या परिवेष रज प्रतिमूर्ध		
अग्नि मण्डल	"	इन्द्रधनुष वायु विजली		
वायु मण्डल	१६६	वज्रपात मेघ गर्जन इनका		
जल मण्डल	१६७	कहांतक प्रभाव पहुंचता		
पृथ्वी मण्डल	१६८	है और कहा कितना फल		
मण्डलोंका विशेष फल	"	होताहै इसका वर्णन	२११	
(३)	पवनविचार	१७०	विजलीके चमकनेका बहुविध फल "		
किस मासकी कौन तिथिकी			विजलीके अनेक रंगोंके फल	२१३	
किस समय कैसी पवन क्या			(४)	ग्रहोंके संयोगसे वर्षा	
फल करेगी इसका विचार	१७०		होनेका योग	२१६	
अनेक प्रकारकी पवनोका वर्णन	१७१		(५)	प्रश्नके विशेषयोगसे	
			वर्षा होनेका ज्ञान	२१७	

स.	विषय ।	पृ.	स.	विषय ।	पृ.
(६)	शीघ्र वर्षा होनेके बहु- विध लक्षण	२१८	(५)	ग्रहोंके योगसे तेजी मदीका विचार	२५५
(७)	सत्काल वर्षा होनेका ज्ञान	२२३		ग्रहोंसे अदिगनी आदि नक्षत्रों- का वेध और उससे होने वाली पृथक् पृथक् तेजी	
(८)	वर्षा संबंधी और वार्ताका ज्ञान	२२४		मदी का ज्ञान	२५७
	गन्धर्वनगर—इन्द्रधनुष—प्रतिसूर्य रज-केतु-निर्घात उत्तरा पात और दिग्दाह इनका लक्षण	२२५	(६)	संवत्सरके अच्छे बुरे होनेके कारणोंका वर्णन	२६९
(९)	उत्तर भागका तृतीय स्थल ।			अक्षय तृतीया परीक्षा	२७१
(१)	अधिकमास निर्णय	२२७		आपाढी पूर्णिमासे सब धान्या- दिके न्यूनाधिक होनेवा ज्ञानोपाय, उसदिन किस वस्तुको कैसे तौलनी चाहिये उसका वर्णन	२७२
	अधिमासोंका फल	२२८		तौलनेका तरज और उसका साधन	२७४
(२)	तिथियोंके घटने बढ़ने- का फल ...	२२९		पृथ्वीपर चट्टानें अनेकों भातिके पुष्पलता आदिके सब सरका शुभाशुभ ज्ञान किस पत्र पुष्पा- दिके अधिक होनेमें कौन वस्तु अधिक उत्पन्न होगी	२७५
(३)	महीनोंमें होने वाले वारोंका फल	२३१		कागकी चेष्टाओंसे शुभाशुभ- का ज्ञान	२७८
(४)	तेजी-मंदी-ज्ञाननेका विस्तृत विचार	२३६		गौरी चेष्टाओंसे शुभाशुभ ज्ञान	२८१
	तेजीमदी करने वाले तिथि वार और नक्षत्रोंसे उत्पन्न हुए सालभरके अनेकों योग निनसे सब वस्तुओंकी मदगार्ह तथा सस्ती होनेका समाप्तासे ज्ञान	२३६		प्रथम भाग ।	

॥ श्रीः ॥

वर्षप्रबोधः

भाषाटीकासहितः ।



श्रीगणेशाय नमः ॥

जेतुं यस्त्रिपुरं हरेण हरिणा व्याजाद्वलिं बध्नता
स्रष्टुं वारिभवोद्भवेन भुवनं शेषेण धर्तुं धगम् ।
पार्वत्या महिषासुरप्रमथने सिद्धादिभिर्मुक्तये
ध्यातः पञ्चशरेण विश्वजितये पायात्स नागाननः ॥ १ ॥

“मंगलाचरण ” त्रिपुरासुरको मारनेके समय शिवजीने;—छलसे बलिको बाँधनेके समय भगवान् ने;—त्रिभुवनकी सृष्टि करनेके समय ब्रह्माने;—पृथ्वीको धारण करनेके समय शेषने;—महिषासुरको मारनेके समय पार्वती (देवी) ने;—मुक्ति साधनके समय सिद्धोंने और संसारको जीतनेके समय कामदेवने जिसका ध्यान किया, वह नागानन (गणेश) हमारी रक्षा करें ॥ १ ॥

यश्चैत्रशुक्लप्रतिपत्सु धीमान्

शृणोति वार्षीयफलं पवित्रम् ।

भवेद्धनाढ्यो बहुसस्यभोगी

जह्याच्च पीडां तनुजां च वार्षिकीम् ॥ २ ॥

जो बुद्धिमान् चैत्र शुक्ल प्रतिपदाको संवत्सरका पवित्र फल सुनताहै वह धनाढ्य और बहुत अन्न वाला होताहै । तथा उसके शरीरकी सालभरकी पीड़ायें दूर होजाती हैं ॥ २ ॥

शाकस्य श्रवणात् सुपुण्यजननं संवत्सरस्याढ्यर्ता
राज्ञो राजकुले जयो विजयते मंत्रीफलं बुद्धिदम् ।
धान्यं धान्यपते रसं रसपतेः क्षेत्रेषु वृद्धिस्तथा
सस्यं सर्वसुखं च वत्सरफलं संशृण्वतां सिद्धिदम् ॥ ३ ॥

शाकको सुननेसे पुण्य होता है, संवत्सरसे सम्पत्तिवान् होता है, संवत्से राजाका फल सुननेसे राजकुलमें विजय होती है, मंत्रीका फल बुद्धि देता है, धनाधिपसे धान्य होता है, रसाधिपसे रस मिलते हैं; तथा क्षेत्र (खेती आदि) में ज्ञान बढ़ता है और सस्येष्टस सर्व सुख मिलते हैं इस कारण सिद्धिके देनेवाले संवत्सरके फलको अवश्य सुनना चाहिये ॥ ३ ॥

प्राप्ते नूतनवत्सरे प्रतिगृहे कुर्याद्धजारोपणं
स्नानं मंगलमाचरेद्द्विजवरैः कुटुम्बान्मनोवाञ्छितम् ।
ग्राह्या रौप्यसुवर्णरत्नमणयो वृद्धादिभिः पूजये-
च्छ्रोत्रव्यं द्विजवर्यभाषितफलं श्रेयस्करं पुण्यदम् ॥ ४ ॥

जब नवीन संवत् बदले तब अपने मकानको लीप पोतकर ध्वजा रोषना चाहिये, और स्नानादि मंगलाचरण करके चांदी-सोना-रत्न-मणि-आदि यथायोग्य लेकर बड़े बूढ़ों सहित अच्छे पड़े लिखे ब्राह्मणोंका पूजन करके कल्याणकारक पुण्यदायी संवत्का फल सुनना चाहिये ॥ ४ ॥

पञ्चांगस्थं गणेशं द्विजगणकयुतं पूजयित्वा र्थिवृन्दं
सन्तोष्यानेकदानैः परमसुखयुतो भोजयित्वा त्रिमिष्टम्
शृण्वन्गीतादिवाद्यानि च विविधकथास्तद्दिनं
संकमेत कीडंस्त्रीभिश्च सार्द्धं निशमपि च नरो
सुखी स्यात् ॥ ५ ॥

पंचांगमें जो गणेशजी हैं उनका ब्राह्मणों सहित पूजन करके
अनेक दानोंसे उनको सन्तोष देकर फल फल मिठाई आदिका भोजन
कराके संवत्का फल सुनना चाहिये और उस दिन गीत वाद्यादि
करके रात्रिको स्त्रियोंके साथ क्रीड़ा करना चाहिये । ऐसा कर-
नेसे वह मनुष्य बारह मास तक सुखी रहता है ॥ ५ ॥

(पारिभद्रस्य पत्राणि कोमलानि विशेषतः ।

सपुष्पाणि समानीय चूर्णं कृत्वा विधानतः ।

मरीचहिङ्गुलवणजीरकेण च संयुतम् ।

अजमोदायुतं कृत्वा भक्षयेद्भोगशान्तये ॥)

संवत्सरानयनप्रकारः । ❀

शके च पंचांगिकुभिर्युक्तः स्याद्विक्रमस्य हि ।

रेखाया उत्तरे तीरे संवत्त्राम्नातिविश्रुतः ॥ ६ ॥

* "गतानि वर्षाणि शकेन्द्रकालादितानि ह्यैरिगुणयेचतुभिः । नवाष्टपञ्चाष्ट-
शुतानि कृत्वा विमाजयेच्छून्यशरागरामैः ॥ १ ॥ फलेन युक्तं शकभूपकार्ड
संशोभ्य पट्टया विपर्ययिमज्ज । युगानि नारायणपूर्वाकाणि लब्धानि शेषाः क्रमशः
समाः स्युः ॥ २ ॥ "

संवत्सर रानेकी दूसरी विधि यह है कि जाहेको दो जगह लिखकर एक
जगहमें ११ से गुणके ४ से गुणे और ८९८९ में जोड़कर ३७५० का
भाग दे (जो अंक आवे सो नई फिरसे शेषको १२ से गुणकर ३७५० का
भाग दे छत्र मास—फिर शेषको ३० से गुणकर ३७५० का भाग दे छत्र
दिन—फिर शेषको ६० से गुणकर ३७५० का भाग दे छत्र घड़ी और फिर
शेषको ६० से गुणकर ३७५० का भाग दे जो छत्र हो मो पछ जानना ।
फिर इन सबको) दूसरी जगहके शकेमें मिलाकर उसके अंकमें ६० का भाग
दे जो शेष अंक रहे उसको संवत् प्रमयादि गत जानना । और नीचे जो
मासादि हैं वह वर्तमानके गतमासादि जानना । उनको १२ में घटाने मो मोग्य
मासादि जानना । यथा—शके १८२९ को ११ से गु ७ तो २०२२९ इष्ट

नीमके कोमल पत्त तथा फूल लेकर उनमें मिर्च, हींग, लवण, अज-
मादो और जीरा मिलाकर संवत्सरके दिन सर्व रोगोंकी शांतिके
लिये खाना चाहिये “संवत् लानेकी रीति” शकेमें एक सौ पैंतीस १३५
जोड़नेसे विक्रम संवत् होता है । यह रेखाके उत्तर तीरमें संवत्नामसे
लिख्याती है ॥ ६ ॥

संवत्कालो ग्रहयुतः कृत्वा शून्यरसैर्हृतः ।

शेषाः संवत्सरा ज्ञेयाः प्रभवाद्या बुधैः क्रमात् ॥ ७ ॥

“प्रभवादि संवत्सर लानेकी रीति—” वर्तमान विक्रम संवत्के
अंकोंमें नी जोड़कर साठका भाग देनेसे जो बचे वह प्रभवादि संव-
त्सर जानना—यथा १ से प्रभव २ से विभव इत्यादि ॥ ७ ॥

प्रभवो विभवः शुक्रो प्रमोदोथ प्रजापतिः ।

अंगिराः श्रीमुखो भावो युवा धाता तथेश्वरः ॥ ८ ॥

वहुधान्यः प्रमाथी च विक्रमो वृषभस्तथा ।

चित्रभानुः सुभानुश्च तारणः पार्थिवो व्ययः ॥ ९ ॥

“प्रभवादिके नाम”—प्रभव, विभव, शुक्र, प्रमोद, प्रजापति,
अंगिरा, श्रीमुख, भाव, युवा, धाता, इश्वर, बहुधान्य, प्रमाथी,

—इनको ४ से गुणा ८०९१६६९ इनमें ८५८९ मिलाये ८२५०५६९ इनमें ३७५०
का भाग दिया तो २३ लब्ध हुए शेषको बारह-तीस-साठ-साठसे क्रमसे गुणकर
प्रत्येकमें ३७५० का भाग दिया तो १०।१२।२८।४८ हुए। उपरोक्त २३ को
शके १८३९ में मिलाकर ६० का भाग दिया तो २ शेष रहे । अतः विम्व
गत और नीचेके अंक जो १०।१२।२८।४८ हैं ये वर्तमान शुरुके गत मास
हूए इनको १२ में घटाये तो १।१७।३१।१२ भोग्य मासादि हुए । यह
समयके जानने चाहिये । विशेष “ग्रहसंहिता” में देखो ।

विक्रम, वृषभ, चित्रभानु, सुभानु, तारण, पार्थिव और व्यय यह २० संवत् ब्रह्माकी बीसीके हैं ॥ ८ ॥ ९ ॥

सर्वजितसर्वधारीचविरोधीविकृतिः खरः ।

नन्दनोविजयश्चैवजयोमन्मथदुर्मुखौ ॥ १० ॥

हेमलम्बीविलम्बीचविकारीशर्वरीप्लव-

शुभकृच्छोभनःक्रोधीविश्वावसुपराभवौ ॥ ११ ॥

सर्वजित्, सर्वधारी, विरोधी, विकृति, खर, नन्दन, विजय, जय, मन्मथ, दुर्मुख, हेमलम्ब, विलम्ब, विकारी, शर्वरी, प्लव, शुभकृत्, शोभन, क्रोधी, विश्वावसु और पराभव यह २० बीस संवत् विष्णुकी बीसीके हैं ॥ १० ॥ ११ ॥

प्लवंगःकीलकःसौम्यःसाधारणविरोधकृत् ।

परिधावीप्रमादीचआनन्दोराक्षसोनलः ॥ १२ ॥

पिंगलःकालयुक्तश्चसिद्धार्थीरौद्रदुर्मतिः ।

दुन्दुभीरुधिरोद्गारीरक्ताक्षःक्रोधनःक्षयः ॥ १३ ॥

प्लवंग, कीलक, सौम्य, साधारण, विरोधकृत्, परिधावी, प्रमादी, आनन्द, राक्षस, नल, पिंगल, काल, सिद्धार्थ, रौद्र, दुर्मति, दुन्दुभी, रुधिरोद्गारी, रक्ताक्ष, क्रोधन, और क्षय यह २० संवत् शिव विंशतिके हैं ॥ १२ ॥ १३ ॥

निरीतिः सकलोदेशःसस्यनिष्पत्तिरुन्नता ।

स्वस्थिताभ्रभुजाःसर्वप्रभवेसुखिनोजनाः ॥ १४ ॥

“प्रभवादिका फल”-प्रभय संवत्में इतिप्रय (टीकाआदि) नहीं रहे ऐसीकी उपज अच्छी हो । सब राजालोग प्रसन्न हैं और मनुष्य सुखी हैं ॥ १४ ॥

दंडनीतिपराभूपाःबहुशस्यार्धवृष्टयः ।

विभवाब्देखिलालोकाःसुखिनोनिरवैरिणः॥१५॥

विभव सदासरमें राजा लोग दंडनीति वाले हों अन्न तथा वर्षा बहुत हो और सम्पूर्ण मनुष्य निर्वैर होकर सुखसे रहें ॥ १५ ॥

शुक्लाब्देनिखिलालोकाःसुखिनःस्वजनैःसह ।

राजानोयुद्धनिरताःपरस्परजयैषिणः॥१६॥

शुक्ल वर्षमें स्वजनों सहित सब लोग सुखी रहें और परस्परमें जयकी इच्छा रखते हुए राजा लोग युद्धमें लगे रहें ॥ १६ ॥

प्रमोदाब्देप्रमोदन्तेराजानोनिखिलाजनाः ।

वीतरोगावीतभया ईतिशत्रुविनाशकाः॥१७॥

प्रमोद वर्षमें राजा प्रजा सब आनन्दित रहें । रोग और भय दूर हों तथा शत्रु और शत्रुका नाश हो ॥ १७ ॥

नचलन्त्यखिलालोकाःस्वस्वमार्गात्कथंचन ।

अब्देप्रजापतेर्नूनंबहुस्यार्धवृष्टयः॥१८॥

प्रजापति वर्षमें सब लोक अपने अपने मार्गको कुछभी नहीं छोड़ें और अन्न सस्ता तथा वर्षा निश्चय हो ॥ १८ ॥

अन्नाद्यंभुज्यते शश्वज्जनैरतिथिभिःसह ।

अंगिराब्देखिलालोका भूपाश्चकलहोत्सुकाः॥१९॥

अंगिरा वर्षमें आतिथियोंके साथ लोग निरन्तर अन्नादिका भोजन करें । और सब लोक तथा राजालोग कलहोत्सुक हों ॥ १९ ॥

श्रीमुखाब्देखिलाधात्रीबहुस्यार्धसंयुता ।

अध्वरेनिरताविप्रा वीतरोगाविवैरिणः॥२०॥

श्रीमुख वर्षमें सम्पूर्ण पृथ्वी बहुत अन्नसे संयुक्त हो और ब्राह्मण लोग यज्ञ करनेमें निरत रहें तथा रोग और वैरसे वर्जित हों ॥ २० ॥

भावाब्देप्रचुरारोगामध्याःसस्यार्धवृष्टयः ।

राजानोयुद्धनिरतास्तथापिसुखिनोजनाः ॥ २१ ॥

भाव वर्षमें रोग बहुत हों, वर्षा कम हो, अन्न मध्यम हो और राजा लोग युद्धमें लगे रहें तौभी अन्य जन सुखी रहें ॥ २१ ॥

प्रभूतपयसोगावःसुखिनःसर्वजन्तवः ।

सर्वकामक्रियासक्तोयुवाब्देयुवतीजनः ॥ २२ ॥

युवा वर्षमें गाँव बहुत दूध दें सब जीव सुखी रहें और स्त्रियाँ कामकलामें आसक्त हों ॥ २२ ॥

धातृवर्षेखिलाःक्षमेशाःसंग्रामेसक्तमानसाः ।

संपूर्णाधरणीभातिबहुसस्यार्धवृष्टिभिः ॥ २३ ॥

धाता वर्षमें सब राजा लोग लड़ाईमें आसक्त मन हों । और सम्पूर्ण पृथ्वी बहुत अन्न तथा वर्षासे सुशोभित हो ॥ २३ ॥

ईश्वराब्देखिलाञ्जन्तून्धात्रीधात्रीवसर्वदा ।

पोषयत्यखिलाँल्लोकान्नात्रकार्याविचारणा ॥ २४ ॥

ईश्वर वर्षमें पृथ्वी सम्पूर्ण जीवोंका माताकी भाँति पोषण करे । अर्थात् घास फूस अन्न फल फूल और रस कस आदि लोकोपयोगी सभी वस्तुएं उत्पन्न हों ॥ २४ ॥

बहुधाजायतेवृष्टिर्बहुधाख्यस्य वत्सरे ।

विविधैर्धान्यनिचयैःसंपूर्णाचाखिलाधरा ॥ २५ ॥

बहुधा वर्षमें वर्षा बहुत हो और कई भाँतिके अन्नसे सम्पूर्ण पृथ्वी पूर्ण हो ॥ २५ ॥

नमुंचतिपयोवाहःकुत्रचित्प्रचुरंजलम् ।

मध्यमावृष्टिर्थाश्चनूनमब्देप्रमाथिनि ॥ २६ ॥

प्रमाथी वर्षमें वादल, कहींभी अधिक जल नहीं छोड़ें, अर्थात् मध्यम वर्षा हो ॥ २६ ॥

विक्रमाब्देधराधीशाविक्रमाक्रान्तमूर्तयः ।

सर्वत्रसर्वदामेघांसुचन्तिप्रचुरंजलम् ॥ २७ ॥

विक्रम वर्षमें राजा लोग बड़े बलवान् हों । और सब जगह सदैव बहुत जल वर्ष ॥ २७ ॥

वृषभाब्देखिलाःक्ष्मेशायुद्धयन्तेवृषभा इव ।

मत्ताःप्रसक्ताविप्रेन्द्रायजन्तेसततंसुरान् ॥ २८ ॥

वृषभ वर्षमें राजा लोग बैलोंकी भाँति बहुत युद्ध करें । और ब्राह्मण लोग सदैव देवताओंकी पूजन करनेमें लगे रहें ॥ २८ ॥

चित्रार्थवृष्टिसस्याद्यैर्विचित्रानिखिलाधरा ।

निराकुलाखिलालोकाश्चित्रभानोश्चवत्सरे ॥ २९ ॥

चित्रभानु वर्षमें विचित्र वर्षा और अन्न धनसे पृथ्वी पूर्ण हो और लोकमें आकुलता नहीं रहे ॥ २९ ॥

सुभानुवत्सरेभूमौभूमिपानांचविग्रहः ।

जायतेघोररूपेणसर्वभूतभयंकरः ॥ ३० ॥

सुभानु वर्षमें पृथ्वीपर राजाओंमें घोर रूपसे विग्रह रहे जिससे सब डर जाय ॥ ३० ॥

कथंचिन्निखिलालोकास्तरन्तिप्रतिपत्तनम् ।

रोगशोकसमावेगात्कूरेतारणकाब्दके ॥ ३१ ॥

तारण वर्षमें लोग रोग-शोक-संकट आदिसे कठिनता से पार हो सकें ॥ ३१ ॥

पार्थिवाब्देचराजानःसुखिनःस्युर्भृशंजनाः ।

बहुभिःफलपुष्पाद्यैर्विविधैश्चपयोधरैः ॥ ३२ ॥

पार्थिव वर्षमें राजा लोक प्रसन्न रहें प्रजा सुखी रहे । और विविध पुष्पादिसे पृथ्वी संयुक्त हो ॥ ३२ ॥

व्ययान्देनिखिललोकाबहुव्ययपराभृशम् ।

उद्विग्नादुःखभारेणभूमिभीतिश्चसर्वदा ॥ ३३ ॥

व्यय वर्षमें सब लोग बहुत व्यय करें और उद्विगित तथा दुःखित रहें (यहाँतक ब्रह्म विंशति का फल हुआ) ॥ ३३ ॥

सर्वजिद्वत्सरेसर्वेजनास्त्रिदशसंनिभाः ।

राजानोविलयंयांतिवीरसंग्रामभूमिषु ३४ ॥

सर्वजित् संघर्षमें सब लोग तो स्वर्गकी समान सुखी रहें और राजा लोग युद्धमें प्राण त्याग करें ॥ ३४ ॥

सर्वधार्थन्दकेभूपाःप्रजापालनतत्पराः ।

प्रशान्तवैराःसर्वत्रबहुसस्यार्धवृष्टयः ॥ ३५ ॥

सर्वधारी वर्षमें राजा लोग प्रजापालनमें तत्पर रहें और सब जगह सुख शांति रहे ॥ ३५ ॥

शीतलादिविकारःस्याद्बालानांतस्कराजनाः ।

अल्पक्षीरास्तथागावोविरोधश्चविरोधिनि ॥ ३६ ॥

विरोधी वर्षमें बालकोंको शीतलाका विकार हो, चौर बहुत हों गावोंमें दूध की कमी हो और मनुष्योंमें विरोध हो ॥ ३६ ॥

मुष्णन्तितस्करालोकंविकृतिप्रकृतिस्तथा ।

विकाराअल्पवृष्टिश्चविकृतेन्देप्रजारुजः ॥ ३७ ॥

विकृत वर्षमें चोरी अधिक हों, प्रकृतिमें विकृत (विकार) हो, वर्षा कम हो और रोग अधिक हो ॥ ३७ ॥

स्वल्पावृष्टिःस्वल्पधान्यंखण्डवृष्टिर्नृपक्षयः ।

छत्रभङ्गःप्रजापीडाखरेऽन्देखरताजने ॥ ३८ ॥

रार वर्षमें स्वल्प वृष्टि-स्वल्प धान्य-खण्ड वर्षा-नृप क्षय-छत्र भंग और प्रजा पीड़ा हो ॥ ३८ ॥

सुभिक्षसुखिनोलोकाव्याधिशोकविवर्जिताः ।

नन्दनंचधनैर्धान्यैर्नन्दनेवत्सरेभवेत् ॥ ३९ ॥

नन्दन वर्षमें सुख, सुभिक्ष, शोक नाश और धन धान्य हों ३९॥

युध्यन्तेभूभृतोऽन्योन्यंलोकानांचधनक्षयः ।

दुर्भिक्षंचक्चित्स्वस्थंबहुसस्यार्घवृष्टयः ॥ ४० ॥

विजय वर्षमें राजा लोग परस्परमें युद्ध करें, लोगोंके धनका क्षय हो, दुर्भिक्ष पड़े, कहीं स्वस्थता हो और बहुत अन्न तथा वर्षा हो ४०॥

जयमंगलघोषाद्यैर्धरणीभातिसर्वदा ।

जयाब्देधरणीनाथासंग्रामेजयकांक्षिणः ॥ ४१ ॥

जय वर्षमें जय मंगल घोषादिसे पृथ्वी सुशोभित रहे । और धरणीनाथ संग्राममें जयकी इच्छा कर ॥ ४१ ॥

मन्मथाब्देजनाःसर्वेत्स्कराअतिलोलुपाः ।

शालीक्षुयवगोधूमैर्नयनाभिनवाधरा ॥ ४२ ॥

मन्मथ वर्षमें सब लोग चौर तथा अधिक लोभी हों और चावल ईस, गेहूँ तथा जीआंसे पृथ्वी पूर्ण हो ॥ ४२ ॥

दुर्मुखाब्देमध्यवृष्टिरीतिचौराकुलाधरा ।

महावैरामहीनाथावीरवारणवाजिभिः ॥ ४३ ॥

दुर्मुख वर्षमें वर्षा मध्यम हो, ईति और चौरोंसे पृथ्वी आकुल रहे । तथा राजाओंमें और हाथी घोड़ोंमें महा वैर रहे ॥ ४३ ॥

हेमलम्बेत्वीतिभीतिर्मध्यसस्यार्घवृष्टयः ।

भातिभूर्भूपतिसोभःखड्गविद्युलतादिभिः ॥ ४४ ॥

हेमलम्ब वत्सरमें ईति भीति हो, अन्न वर्षा मध्यम हों । पृथ्वी सुन्दर हो, राजाआम क्षोभ हो और विजली चमकें ॥ ४४ ॥

विलंबिवत्सरेभूपाःपरस्परविरोधिनः ।

प्रजापीडात्वनर्थत्वंतथापिसुखिनोजनाः ॥ ४५ ॥

विलंब वर्षमें राजाओंमें परस्पर विरोध बढ़े । प्रजामें पीडा तथा अनर्थ हो तीभी मनुष्य सुखी रहें ॥ ४५ ॥

विकार्यन्देखिलालोकाःसरोगावृष्टिपीडिताः ।

पूर्वसस्यफलंस्वलपेवदुलंभापरंफलम् ॥ ४६ ॥

विकारी वर्षमें सब लोग रोग तथा वृष्टिसे पीडित हों । और पूर्व सस्य (जौ गेहूं) तथा फल आदि कम हों और परसस्य (जाड़ेके अन्न) फल अधिक हों ॥ ४६ ॥

शर्वरीवत्सरेपूर्णाधरासस्यार्धवृष्टिभिः ।

जनाश्चसुखिनःसर्वेराजानःस्युर्विवैरिणः ॥ ४७ ॥

शर्वरी वर्षमें अन्न और वर्षासे पृथ्वी पूर्ण हो । मनुष्य सुखी रहें और राजाओंमें परस्पर विशेष वैर हो ॥ ४७ ॥

पुष्यान्देनिखिलाधात्रीवृष्टिभिःप्लाविता भवेत् ।

रोगाकुलात्वीतिभीतिःसम्पूर्णवत्सरेफलम् ॥ ४८ ॥

पुष्य वर्षमें वर्षा बहुत हो । और लोग रोगाकुल तथा ईतिभीतिसे दुःखित हों ॥ ४८ ॥

शुभकृद्रत्सरेपृथ्वीराजतेविविधोत्सवेः ।

आतंकचोराभयदाराजानःसमरोत्सुकाः ॥ ४९ ॥

शुभकृद् वर्षमें पृथ्वीपर नानाप्रकारके उत्सव हों । चोर दरोह रहें और राजाओंके युद्धकी इच्छा बढ़े ॥ ४९ ॥

शोभनेवत्सरेधात्रीप्रजानारोगशोकदा ।

तथापिसुखिनोलोकावदुसस्यार्धवृष्टयः ॥ ५० ॥

शोभन वर्षमें पृथ्वी प्रजाको रोग शोक देवै । तौभी अधिक अन्न
वृष्टि होनेसे लोग सुखी रहैं ॥ ५० ॥

क्रोधवदेत्वखिलालोकाः क्रीधलोभपरायणाः ।

ईतिदोषेणसततंमध्यसस्यार्धवृष्टयः ॥ ५१ ॥

क्रीधीवर्षमें सब लोक क्रोध लोभमें परायण हों । शीघ्रही ईति भव
हो और अन्न जल मध्यम हों ॥ ५१ ॥

अव्देविश्वावसौशश्वद्घोररोगाकुलाधरा ।

सस्यार्धवृष्टयोमध्याभूपालानातिभूतयः ॥ ५२ ॥

विश्वावसु वर्षमें पृथ्वी घोर रोगोंसे आकुल हो । अन्न जल
मध्यम हों । आर राजा लोगोंके तहसीलें (कर आदिके रुपये)
भी कम आवें ॥ ५२ ॥

पराभवाव्देराज्ञः स्यात्समरः सहशत्रुभिः ।

आमयक्षुद्रसत्यानिप्रभूतान्यरूपवृष्टयः ॥ ५३ ॥

पराभव वर्षमें राजालोग शत्रुके साथ युद्ध करें । रोग हो तथा
थोडा अन्न हो और वर्षाभी कम हो (यह विष्णुविंशतिके वर्षोंका
फल है ।) ॥ ५३ ॥

प्लवंगाव्देमध्यवृष्टीरोगवौराकुलाधरा ।

अन्योन्यसमरेभूपाः शत्रुभिर्हतभूमयः ॥ ५४ ॥

प्लवंग वर्षमें वर्षा मध्यम हो , रोग घोरोंसे पृथ्वी आकुल हो, राजा
लोग परस्परमें युद्ध करके शत्रुसे भूमि हरण करें ॥ ५४ ॥

कीलाव्देत्वीतिभीतिश्चप्रजाक्षोभनृपाह्वयौ ।

तथापिवर्धतेलोकः समधान्यार्धवृष्टिभिः ॥ ५५ ॥

कील वर्षमें ईति भीति हो, पृथ्वीमें राजाओंके संग्रामसे क्षोभ हो
तौभी अच्छी वर्षा होनेसे धान्य सस्ता हो और लोग बढ़ें ॥ ५५ ॥

सौम्याब्देनिखिलालोकाबहुसस्यार्धवृष्टिभिः ।

विवैरिणोधराधीशाविप्राश्चाध्वरतत्पराः ॥ ५६ ॥

सौम्य वर्षमें सब लोकोंमें बहुत अन्न जल हों । राजा लोग निर्वैर
और ब्राह्मण लोग यज्ञ करनेमें तत्पर हों ॥ ५६ ॥

साधारणाब्देवृष्ट्यर्द्धभयंसाधारणंस्मृतम् ।

विवैरिणोधराधीशाःप्रजाःस्युःस्वच्छचेतसः ॥ ५७ ॥

साधारण वर्षमें आधी वर्षा हो, साधारण भय हो । राजा लोग
निर्वैर हों और प्रजा स्वच्छचित्त (निष्कपट, हो ॥ ५७ ॥

विरोधकृद्धत्सरेतुपरस्परविरोधिनः ।

सर्वजनानृपाश्चैवमध्यसस्यार्धवृष्टयः ॥ ५८ ॥

विरोधकृद्ध वर्षमें परस्पर विरोध बढ़े और अन्न जल कम हों ५८

भूपाहवोमहारोगोमध्यसस्यार्धवृष्टयः ।

दुःखिनोजन्तवःसर्वेवत्सरेपरिधाविनः ॥ ५९ ॥

परिधावी वर्षमें राजाओंमें सुख हों-रोग हो-मध्यम अन्न हो और
सब जीव दुःखी रहें ॥ ५९ ॥

प्रमाथीवत्सरेतन्नमध्यसस्यार्धवृष्टयः ।

प्रजाःकथंचिज्जीवन्तिसमात्सर्याःक्षितीश्वराः ६० ॥

प्रमाथी वर्षमें जल अन्न मध्यम हों, प्रजामें रोग पीड़ा हो और
राजाओंमें मतसरता हो ॥ ६० ॥

आनन्दाब्देऽखिलालोकाःसर्वदानन्दचेतसः ।

राजानःसुखिनःसर्वेबहुसस्यार्धवृष्टिभिः ॥ ६१ ॥

आनन्द वर्षमें सब लोक आनन्दयुक्त रहें । राजा सुखी हों और
अन्न जल अच्छे हों ॥ ६१ ॥

स्वस्वकार्यैरताःसर्वेमध्यसस्यार्धवृष्टयः ।

राक्षसाब्देऽखिलालोकाराक्षसाइवनिष्क्रियाः ॥ ६२ ॥

राक्षस वर्षमें सब लोग अपने अपने कामोंमें लगे रहें । सस्यार्ध वृष्टि मध्यम हो । और राक्षसी क्रियामें लोग लगे रहें ॥ ६२ ॥

नलाब्देमध्यसस्यार्धवृष्टिभिःप्रवराधरा ।

नृपसंक्षोभसंजाताभूरितस्करभीतयः ॥ ६३ ॥

नल वर्षमें जल अन्न मध्यम हो । पृथ्वी अच्छा प्रतात हो । राजाओंमें क्षोभ रहे और चौरोंका भय अधिक बढ़े ॥ ६३ ॥

पिंगलाब्देत्वीतिभीतिर्मध्यसस्यार्धवृष्टयः ।

राजानोविक्रमाक्रांताभुंजतेशत्रुमेदिनीम् ॥ ६४ ॥

पिंगल वर्षमें ईति भीति हो, अन्न जल मध्यम हो, और राजालोग अपने घलके प्रभावसे शत्रुओंकी पृथ्वीका भोग करें ॥ ६४ ॥

वत्सरेकालयुक्ताख्येसुखिनःसर्वजंतवः ।

सन्त्यथापिचसस्यानिप्रचुराणितथागदाः ॥ ६५ ॥

काल वर्षमें सब मनुष्य सुखी रहें । और अन्न अधिक हो किन्तु रोग फल ॥ ६५ ॥

सिद्धार्थवत्सरेभूयोज्ञानवैराग्ययुक्प्रजाः ।

सकलावसुधाभातिबहुसस्यार्धवृष्टिभिः ॥ ६६ ॥

सिद्धार्थ वर्षमें प्रजा ज्ञान वैराग्यसे युक्त हो । सम्पूर्ण पृथ्वी पर प्रसन्नता रहे । और जल अन्न अच्छे हों ॥ ६६ ॥

रौद्रेब्देनृपसंभूतक्षोभकेशसमन्विते ।

सततंतवखिलालोकामध्यसस्यार्धवृष्टयः ॥ ६७ ॥

रौद्र वर्षमें राजाओंमें क्षोभ हो तथा द्वेषसंयुक्त हो । और अन्न जल मध्यम हों ॥ ६७ ॥

दुर्मत्यब्देखिललोकाभूपादुर्मतयस्तदा ।

तथापिसुखिनःसर्वसंग्रामाःसन्तिचेदपि ॥ ६८ ॥

दुर्मति वर्षमें राजाओंकी दुर्मति (खोटी बुद्धि) हो और युद्ध आदि हों तौभी प्रजा सुखी रहे ॥ ६८ ॥

सर्वसस्ययुताधात्रीपालिताधरणीधरैः ।

पूर्वदेशविनाशःस्यात्तत्रदुन्दुभिवत्सरे ॥ ६९ ॥

दुन्दुभि वर्षमें पृथ्वी पर सब तरहके अन्न उत्पन्न हों-राजालोग प्रजाकी पालना करें । और पूर्व देशका विनाश हो ॥ ६९ ॥

आहवेनिहताःसर्वेभूपारोगैस्तथाजनाः ।

यथाकथंचिज्जीवन्तिरुधिरोद्गारिवत्सरे ॥ ७० ॥

रुधिरोद्गारी वर्षमें राजालोग तो युद्धादिकोंमें फँस कर मरें । और प्रजा रोगादिसे मरे । किन्तु कुछ बचेभी रहें ॥ ७० ॥

रक्ताक्षिवत्सरेसस्यवृद्धिर्वृष्टिरनुत्तमा ।

प्रेक्षन्तेसर्वदाऽन्योन्यंराजानोरक्तलोचनाः ॥ ७१ ॥

रक्ताक्षी वर्षमें अन्नकी वृद्धि हो, वर्षा अनुत्तम हो । और राजा-लोग एक दूसरेको लाल आँखें करके देखें ॥ ७१ ॥

क्रोधनेमध्यवृष्टिःस्यात्पूर्वदेशेचवृष्टयः ।

सम्पूर्णमितरत्सर्वेभूपाःक्रोधंपरायणाः ॥ ७२ ॥

क्राधी वर्षमें वर्षा मध्यम हो पूर्व देशमें वर्षा हो और सब राजा परस्परमें क्रोधित रहें ॥ ७२ ॥

कर्पासगंधतैलेक्षुमधुसस्यविनाशनम् ।

क्षीयमाणाश्चापिनराजीवन्तिक्षयवत्सरे ॥ ७३ ॥

क्षय वर्षमें कपास, गंध, तेल, गन्ना, सहद और अन्न इनका नाश हो । और मनुष्यभी दुबले पतले जीवित रहें (यह शिव विंशतिके वर्षोंका फल है) ॥ ७३ ॥

इति पाटलिपुत्रस्यफल समाप्त ।

(२) अथ संवत्सरशरीरफलम् ।

कृत्तिकाद्वितीयं देहं वत्सरस्य प्रकीर्तितम् ।

पूर्वाषाढाद्वयं नाभिः सापं हृत्कुसुमं मघा ॥ ७४ ॥

(२) “संवत्सरका अङ्ग और फल” — कृत्तिका और रोहिणी यह दो नक्षत्र संवत्सके देह हैं पूर्वाषाढ और उत्तराषाढ यह दोनों नाभिके हैं । श्लेषा हृदय और मघा पुष्प है ॥ ७४ ॥

निपीडिते पापखगेन देहे वातामवातानलभीनृदेहे ।

नाभ्यां भयं क्षुज्जनितं नराणां बालादिपुष्पे हृदये

न धान्यम् ॥ ७५ ॥

इति संवत्सरशरीरफलम् ।

यदि देहके नक्षत्रोंपर पापग्रह हों तो नृदेहमें वायुभय हो । नाभिके नक्षत्रों पर पापग्रह हों तो क्षुधा जनित भय हो । हृदयके नक्षत्रोंपर पाप ग्रह हों तो धान्य भय हो । और पुष्पके नक्षत्रोंपर पापग्रह हों तो बालादिकोंको दुःख हो ॥ ७५ ॥

(३) अथ राजादिफलविचारः । (राज्ञः फलम्)

— (चैत्रशुक्लप्रतिपदि यो वारो भूपतिर्मतः ।)

सूर्ये नृपे स्वरूपफलाश्च मेघाः स्वरूपं पयो गोपु

जनेषु पीडा । स्वरूपं सुधान्यं फलमल्पवृक्षाश्चौ-

राग्निबाधा निधनं नृपाणाम् ॥ ७६ ॥

(३) “संवत्सके राजा आदिका विचार और फल” — “संवत्सरका राजा” — (चैत्र शुक्ल प्रतिपदाको जो वार हो वही वर्षका राजा होता है ।) यदि संवत्सका राजा सूर्य हो तो फल कम लगें — वर्षा कम हो-गायकें दूध भी कम रहें — मनुष्योंमें पीडा हो, धान्य कम हो, वृक्षोंमें फल कम लगें. चौर तथा आगकी बाधा हो और राजाओंका नाश हो ॥ ७६ ॥

चन्द्रे नृपे मंगलशोभनानि प्रभूतवृष्टिः प्रचुरं
च धान्यम् । सौख्यं जनानामुदयो नृपाणां
प्रशाम्यति व्याधिजरा नराणाम् ॥ ७७ ॥

वर्षका राजा चन्द्रमा हो तो लोगोंके शुभमंगल हों, वर्षा बहुत हों,
खेतियां अच्छी हों, मनुष्योंमें सुख रहे, राजाओंका उदय हो और
लोगोंकी सब व्याधियां दूर हों ॥ ७७ ॥

मौमे नृपे वह्निभयं जनक्षयं चौराकुलं पार्थि-
वविग्रहं च । दुःखं प्रजाव्याधिवियोगपीडा
स्वरूपं पयो मुञ्चति वारिवाहः ॥ ७८ ॥

मंगल राजा हो तो वह्निभय, जनक्षय, चारोंसे आकुलता
राजाओंमें और प्रजामें व्याधि वियोग पीडा आदिका दुःख
हो और मेघ कम वर्षे ॥ ७८ ॥

बुधस्य राज्ये सजलं महीतलं गृहे गृहे तूर्यवि-
वाहमङ्गलम् । प्रकुर्वते दानदयां जनोपि
स्वस्थं सुभिक्षं धनधान्यसङ्कुलम् ॥ ७९ ॥

वर्षका राजा बुध हो तो पृथ्वी सजलहो, घर घरमें विवाहादि
मंगल हों, दान दयाकी व्यवस्था बड़े और स्वास्थ्य वृद्धि तथा धन
धान्यके बाहुल्यसे सुभिक्ष हो ॥ ७९ ॥

गुरौ नृपे वर्षति कामदं जलं महीतले काम-
दुघाश्चधेनवः । यजन्तिविप्रा वहवोऽग्निहोत्रिणो
महोत्सवः सर्वजनेषु वर्तते ॥ ८० ॥

बृहस्पति राजा हो तो उपयोगी जल वर्षे, गायें अच्छा दूध दें,
ब्राह्मण लोग होम यज्ञादिमें-निरत रहें और सब लोगोंमें बड़े बड़े
उत्सव होते रहें ॥ ८० ॥

शुक्रस्य राज्ये बहुसस्यसंकुला सुतीव्रवेगाःसरितो-
ऽम्बुराशिभिः । फलन्ति वृक्षा बहुगोप्रसूतिर्वसु-
न्धरापार्थिवसौख्यसंयुता ॥ ८१ ॥

शुक्र राजा हो तो खेतियां बहुत उपजें, नदियां बड़ी वेगसे बहें,
वृक्षोंमें फल बहुत लगें- गायें अधिक व्यावें और पृथ्वी पार्थिव सौ-
ख्यसे संयुक्त हो ॥ ८१ ॥

शनैश्चरे भूमिपतौ सकृज्जलं प्रभूतरोगैःपरिपीड्यते
जनः । युद्धं नृपाणां गदतस्कराद्यैर्भ्रमन्ति लोकाः
क्षुधिताश्च देशान् ॥ ८२ ॥ (इति)

वर्षका राजा शनि हो तो एकही बार वर्षा हो, रोगवाढुल्यसे लोग
दुखित हों, राजाओंमें युद्ध हों, चोरी डकैती आदि अधिक करें
और लोग भूखे मरते हुए डुलते फिरें ॥ ८२ ॥

(मंत्रीफलम् ।)

(मेषसंक्रांतिवारेशो भवेत्सोपि चमूपतिः)
नृपभयं गदतोपि हि तस्करात्प्रचुरधान्यधनादि
महीतलेारसचयं हि समर्धतमं तदारविरमात्य-
पदं हि समागतः ॥ ८३ ॥

"मंत्री फल ।"—(मेष संक्रान्तिके दिन- जो बार हो वही उस
वर्षका मंत्री अथवा सेनापति होताहै ।) यदि सूर्य मन्त्री हो तो,
राजा, रोग और चोरोंका भय बड़े, पृथ्वीपर धन धान्य अधिक हों।
और सत्ताका संप्रद तथा समर्थता हो ॥ ८३ ॥

शशिनि मन्त्रिगते बहुसस्यवन्त्यपि धरा रमते
सुखमण्डिता । वियति वारिवरा बहुवर्षिणो
जनपदाःसुखराशिसुशोभिताः ॥ ८४ ॥

चन्द्रमा मन्त्री हो तो, वर्षा अधिक हो, अन्न बहुत हो लोग सुखी
हैं । और अन्य प्रकारके सुखोंकीभी वृद्धि हो ॥ ८४ ॥

अवनिजो ननु मंत्रिकर्ता गतो भवति दस्युगदा-
दिजवेदना । जनपदेषु जयसुखसंचयनबहुगोषु
पयो द्विजकर्म च ॥ ८५ ॥

यदि मंगल मन्त्री हो तो लोग बीमारियोंसे दुःखी हों—किन्तु
गायोंके दूध अधिक होनेसे लोग सुखीभी रहें ॥ ८५ ॥

शशिसुतेशुभमंत्रिसमागतेस्वपतिनारमते भदन-
क्रियाम् । बहुधनं बहुवादिसमन्वितं यवमसूर-
चणान्नमहर्घताम् ॥ ८६ ॥

यदि वर्षमें दूध मन्त्री हो तो, स्त्रियां अपने पतियोंके साथ भदन
क्रियामें रत हों । बहुत धन हो और जौ मसूर तथा चने इनकी
महंगाई हो ॥ ८६ ॥

विविधधान्ययुताखलुमेदिनीप्रचुरतोयधनामुदि-
ता भवेत् । नृपतयो जन्पालनतत्पराः सुरगुरौ
ननुमंत्रिसमागते ॥ ८७ ॥

यदि बृहस्पति मन्त्री हो तो पृथ्वी पर कई प्रकारके अन्न अधिक
उत्पन्न हों । वर्षा बहुत वर्षे और राजालोग मनुष्योंका पालन
करें ॥ ८७ ॥

भृगुसुतेननुमंत्रिपदंगतेशलभमृपकमृपकरोहिषः ।
भवति धान्यसमर्घतयामलंजनपदेषुजलं सरितो-
धिकम् ॥ ८८ ॥

शुक्र मन्त्री हो तो शलभा (बीड़ी) और मूमे आदिका मय रहे ।
धान्य सस्ता हो, जल अधिक वर्षे तथा कुल रोग पीड़ा हो ॥ ८८ ॥

रविसुतेयदिमंत्रिणिपार्थिवाविनयसंरहिताबहुदुः-
खदाः । नजलदाजलदाजनतापदाजनपदेषु
सुखंनधनंकचित् ॥ ८९ ॥

ज्ञानि मन्त्री हो तो राजाओंमें नम्रता न रहनेसे लोगोंको वे दुःख
दाई रहें । मेवोंसे जल नहीं गिरे और मनुष्योंमें कुछभी सुख
धन नहीं हो ॥ ८९ ॥

(सस्येशफलम्)

ककसक्रांतिवारेशःसस्यपःपरिकीर्तितः ।)
सस्याधिनाथे तरणौ हि पूर्वं धान्यं समर्घं
बहवोपि चौराः।पुद्गंनृपाणां जलदा जलाढ्याः
स्वरूपं च सस्यं बहुभूतहाश्च ॥ ९० ॥

“ सस्येश फल । ”—(कर्क संक्रान्तिके दिन जो बार हो वहीं
सस्येश होता है ।) यदि सूर्य सस्येश (अन्नका मालिक) हो तो
चौरोंकी अधिकतासे धान्य मँगाहो । राजाओंमें सुद्वहो, जल बहुत
वर्षे, अन्नभी कम हो और प्राणियोंकी हानि हो ॥ ९० ॥

सस्याधिपे शीतकरे प्रजासुखं मेघः पयो
सुञ्चति गोपगोधुक् । देवद्विजाराधनतत्परा नृपा
धरा भवेद्धान्यधनौघपूर्णा ॥ ९१ ॥

यदि चन्द्रमा सस्येश हो तो प्रजा सुखी रहे—जउ अच्छा वर्षे,
गायें दूधदे । राजा लोग देवद्विजोंका आराधन करें और पृथ्वी धन
धान्यसे बहुत पूर्ण हो ॥ ९१ ॥

प्रथमधान्यपतौधरणीसुतेगजतुरंगखरोष्ट्रगवामपि ।
प्रभवदोऽहुरोगधनोजलनसमसौख्यकरंतुषधान्यहत् ॥
मंगल सस्येश हो तो हाथी, घोड़े, गधे, ऊँट और गाय, बैलोंमें रोग

हों, जल नहीं वर्षे और तुष धान्य (जो गेहूं चावल) आदिकी खेती नष्ट हों ॥ ९२ ॥

जलधरा जलराशिमुचो भृशं सुखसमृद्धियुतं
निरुपद्रवम् । द्विजगणः श्रुतिपाठकरः सदा प्रथ-
मसस्यपतौ सति बोधने ॥ ९३ ॥

बुध सस्येश हो तो बादलोंसे जल अच्छा । गर सुख समृद्धि हो, किसी प्रकारका उपद्रव नहीं हो । और ब्राह्मण लोग वेद पाठ करें ९३

कणपतौ सुरराजपुरोहिते सकलसौख्यकरः श्रु-
तिपूर्वकः । जलधरा जलदा बहुसस्यदा रसप-
यांसि बहुनि वसूनि वै ॥ ९४ ॥

यदि बृहस्पति सस्येश हो तो वेद विहित मार्गके मचारसे सौख्य हों । वर्षा बहुत हो, अन्न तथा रस गोरस दूध आदिभी बहुत हों ॥ ९४ ॥

शुक्रोद्यदा धान्यपति धरायामेवो जलं वर्षति शोभनं
प्रियम् । गोधूमशालीक्षुधनं प्रियं गुह्येषु पुष्पा-
णि सुखप्रदानि ॥ ९५ ॥

शुक्र सस्येश हो तो शुभ और प्यारी वर्षा हो । गेहूं, चावल, ईख अन्न और प्रियंशु यह अच्छे हों और वृक्षोंमें सुखदाई पुष्प लगें ॥ ९५ ॥

रविसुतेयदि धान्यपतौ जनानृपतिभिः परिपीडि-
तविग्रहाः । गदभयंतुष धान्यहरं सदा दुरितवाद-
विनादयुतानराः ॥ ९६ ॥ (इति)

यदी शनि सस्येश हो तो लोग राजभयसे पीडित रहें । तथा रोग भय भी हो । जो गेहूं आदिकी खेतियां खराब हों और मनुष्य खोटे बाद विवादमें लगे रहें ॥ ९६ ॥

धान्येशफलम् ।

(धनुःसक्रान्तिवारेशो धान्येशःपारक्रांतितः ।

सस्येशःपूर्वधान्येशःपश्चाद्धान्यपतिस्त्वयम् ॥ १॥)

पश्चाद्धान्याधिपेसूर्यपश्चाद्धान्यंतदानहि ।

विग्रहंभूभृतांधान्यंमहर्घज्वरपीडनम् ॥ १७ ॥

“ धान्येश फल ”— (धनकी संक्रांति के दिन जो बार हो वही धान्येश होता है । धान्यभी अन्नका नाम है और सस्यभी अन्नहीका नाम है किन्तु गर्मीमें जो जौ गेहूं आदि होते हैं वह सस्यमें समझे गये हैं और जाड़ेमें मोठ मूंग चाजरी आदि होते हैं वह धान्यमें समझे गये हैं । अतएव सस्य और धान्य यह दो विभाग इसी हेतुसे किये गये हैं ।) धान्याधिप सूर्य हो तो पश्चाद्धान्य (पीछे वाला धान्य) नहीं हो, राजाओंमें विग्रह हो, धान्य महुंगा हो और ज्वरादिकी पीड़ा हो ॥ १७ ॥

चन्द्रेधान्याधिपेजातेप्रजावृद्धिःप्रजायते ।

गोधूमाःसर्पपाशैवगोपुक्षीरतदाबहु ॥ १८ ॥

चन्द्रमा धान्याधिप हो तो प्रजामें उत्पत्ति अधिक हो । गेहूं, सरसों और गोदुग्ध अधिक हों ॥ १८ ॥

भूमिजेग्रीष्मधान्येशेग्रीष्मधान्यमहर्घकम् ।

शालीक्षुधृततैलादिमहर्घाणिभवन्ति च ॥ १९ ॥

मैगल धान्याधिप हो तो ग्रीष्म धान्य महुंगाहो और चावल, ईलाची और तैलादि महुंगे हों ॥ १९ ॥

बुधधान्याधिपेमेघाजलंमुञ्चतिवैभृशम् ।

सैन्धवेलाटदेशेचमाधवोत्पंचवर्षति ॥ १०० ॥

यादि बुध धान्याधिप हो तो जल बहुत वर्षे और सिन्धु-तथा लाट देशमें वर्षा कम हो ॥ १०० ॥

गुरौधान्यपतौ याते यवगोधूमशालयः ।

पच्यन्तेसर्वदेशेषुयज्वानोब्राह्मणादयः ॥ १०१ ॥

यदि बृहस्पति धान्याधिप हो तो गेहूँ तथा चावल अधिक हों और ब्राह्मण लोग यजन याजन करनेमें तत्पर रहें ॥ १०१ ॥

भृगोपश्चिमधान्येशे पश्चाद्धान्यं न पच्यते ।

सस्यंसमर्धतांयातिस्वरूपंक्षीरंगवामपि ॥ १०२ ॥

धान्याधिप शुक्र हो तो पश्चाद्धान्य (जाड़ेकी खेतीयां) नहीं पके । अन्न सस्ता हो और गायोंमें दूध कम हो ॥ १०२ ॥

निर्धनाःक्षितिभुजोऽरणादराःसस्यमरूपमतिरोगि-
णोनराः । नैववर्षतिजलंसुरेश्वरःस्याद्यदात्यक-
णपःशनैश्चरः ॥ १०३ ॥

यदि शनैश्चर धान्याधिप हो तो रणादरी राजा लोग, निर्बल हों, अन्न कम हो । मनुष्य रोगी हों और इन्द्र जल नहीं वर्षावे ॥ १०३ ॥
(मेघेशफलम्)

आर्द्राप्रवेशेयोवारोमेघेशःपरिकीर्तितः ।)

जलदपेयदिवासरपेतदासरसिवैरमतेजनतारसम् ।

भवचणेश्चुनिवारसुशालिभिः सुखचयमुलभंभुवि
वर्तते ॥ १०४ ॥

“ मेघेश फल । ” (आर्द्रा प्रवेशके दिन जो वार हो वही मेघेश होता है) यदि मेघेश सूर्य हो तो जी-चने-ईख-नीवार (ओईरी) और चावल आदि अच्छे उत्पन्न हों और पृथ्वी पर, सुख संचय वर्तमान रहे ॥ १०४ ॥

शशिनितोयदपेयदिगोमहिष्यजखरादिषुदुग्धर-
संतदा । फलवतीधनधान्यवतीधराविविधभोग-
वतीननुभामिनी ॥ १०५ ॥

यदि चन्द्रमा मेषेश हो तो गो, भैंस, छेरो, गधी आदिके दूध अधिक हों । पृथ्वी पर खेतियों में अन्नभी अधिक हों और वृक्षों में फलभी अधिक लगें और सब सुखभोग मिलें ॥ १०५ ॥

अवनिजेजलदस्यपतौभुविश्रुतिविचारविहीनध-
रामराः । कचिदपिप्रचुरंजलमल्पकंकचिदपिप्र-
शमंबहुतापदम् ॥ १०६ ॥

मंगल मेषेश हो तो ब्राह्मण लोग वेद विचारसे हीन हों ।
कहाँ वर्षा कम और कहीं अधिक हो ॥ १०६ ॥

अमृतरश्मिसुतेयदिवारिपेबहुजलंतुषधान्यरसा-
दिकम् । द्विजवरायजनोत्सुकचेतसोविविधसौ-
ख्ययुताधरणीतदा ॥ १०७ ॥

बुध मेषेश हो तो जल बहुत वर्ष, ज़ी गेहूँ-सी खेती अच्छी हो,
ब्राह्मण लोग यजन (प्रयोगादि) करनेमें उत्सुक हों और पृथ्वी
विविध सौख्यसम्पन्न हो ॥ १०७ ॥

गुरुरपिप्रियवृष्टिकरः सदाखिलविलासयनीध-
रणीतदा । श्रुतिविचारपरानरपालकारससमृ-
द्धियुताखिलमानवाः ॥ १०८ ॥

बृहस्पति मेषेश हो तो उत्तम वर्षा हो, पृथ्वी पर मन भातिके
सुख विलास हों । राजा लोग वेदमार्ग (श्रुति स्मृतिग्रंथोंके धर्माच-
रण) का विचार रखें । और सब लोग रस समृद्धिमें युक्त हों ॥ १०८ ॥

भृगुसुतोजलदस्यपनिर्बदाजलमुचोजलदादिवि-
शोभनाः । धननिधानयुताद्विजपालकानृपतयो
जनतासुखदायकाः ॥ १०९ ॥

शुक्र मेघेश हो तो बादलोंसे अच्छा जल वर्षे । ब्रह्मणपालक
राजा लोग धनके निधान हों । और मनुष्योंको सुख दें ॥ १०९ ॥

रविसुते जलदस्यपतौभवेद्विरलवृष्टिवतीवसुधा
तदा । मनसितापकरोनृपतिःसदाविविधरोगरता
जनतामता ॥ ११० ॥ (इति)

यादि शनि मेघेश हो तो पृथ्वीपर विरली (शापद) वर्षा हों ।
राजा लोग मनमें सन्ताप करें और लोग कई प्रकारके रोगोंसे पीड़ित
रहें ॥ ११०-॥

(रसेशफलम्)

तुलासंक्रान्तिदिवसेयोवारःस रसाधिपः ।
रसपतौतरणीधरणौतदाविरसभागस्ताल्पपयो-
धा । वसनतैलघृतप्रियमानवाःसुखेरसनभुनक्ति
महीपतिः ॥ १११ ॥

“रसेश फल ।”- (तुल संक्रांतिके दिन जो वार हो वह रसेश होता
है) यदि सूर्य रसेश हो तो रस दूध आदि कम हों, बत्त-तेल-घी
इनकी आयु न्यूनता हो और राजाओंको सुख नहीं मिले ॥ १११ ॥

यदिविधौरसपेभुविमानवोनवनवांयुवती बुभुजे
प्रियाम् । जलधरावहुवारिधिधायकारसवतीध-
नधान्यवतीमही ॥ ११२ ॥

चन्द्रमा रसेश हो तो मनुष्य नदीन २ प्राणाप्रिय-प्रियाओंका
भोग करें । बादलोंसे बहुत पानी वर्षे और पृथ्वी रसवती तथा धन-
धान्यवती हो ॥ ११२ ॥

यदिहरातनयोरसपीभवेन्नरसराशियुता जनता
शुभा । नरपतिर्विषमोजनतापदोनजलदोवहुवृ-
ष्टिकरोभुवि ॥ ११३ ॥

यादि मैंगल रसेशं हो तो मनुष्योंकी रसराशि नहीं मिले, राजाओंका वर्ताव प्रजाके अनुकूल नहीं हो, वादलोंसे वर्षाभी कमगिरे ११३

रसपतौ द्विजराजसुते महीसुलभ धान्यवृतादियुता
जनाः । प्रमुदिता वरनायकपालिता बहुजलाखि-
लदेश सुरक्षिता ॥ ११४ ॥

बुध रसेश हो तो धान्य भी सुलभ हों और मनुष्य उनसे युक्त रहें । नायक (श्रेष्ठ पुरुष) प्रसन्न रहें और जल बहुत हो तथा देश सुरक्षित रहें ॥ ११४ ॥

यदिगुह्यरसपोजनसौख्यदः कमलवन्तिसरांसि
तृणानि च । जनपदा द्विजपूजनतत्परा गजसुवा-
जिरथोष्ट्रयुतानृपाः ॥ ११५ ॥

यादि घृहस्पाति रसेश हो तो शरीरसुख मिले, तृणादिकी उत्पत्ति अच्छी हो । जनपद, ब्राह्मणोंकी सेवा करें और राजा लोग हाथी घोड़े ऊँट रथादिसे युक्त रहें ॥ ११५ ॥

यजनयाजनकोत्सवकोत्सुका जनपदा जलतोषि-
तमानसाः । सुखसुभिक्षसुमोदवती धरा धरणिषा
हतपापगणप्रियाः ॥ ११६ ॥

शुक्र रसेश हो तो लोग यजन याजन तथा उत्सवादि करनेमें उत्सुक रहें । और उनके मन सन्तुष्ट रहें । पृथ्वी सुख-सुभिक्ष तथा आनन्दवती हो और राजा लोग निष्पापी हों ॥ ११६ ॥

रविसुते रसपेरससंक्षयोनजलदा गददाश्च पयोध-
राः । अजगवांगजवाजिखरोष्ट्रहा जनपदे पुनरान
रसैर्युताः ॥ ११७ ॥ (इति)

शनैश्चर रसेश हो तो रसोंका नाश हो बादलोंसे पानीके बदले रोग वर्षे । छेरी-गाय-हाथी-घोड़े, गधे और जेठ इनका नाश हो और मनुष्योंमें निरसता रहे ॥ ११७ ॥

(नीरसेशफलम्)

(नक्रसंक्रांतिवारेशो नीरसेशः प्रकीर्तितः ।)

नीरसाधिपतौमूर्ध्वेताम्रचन्दनयोरपि ।

रत्नमाणिक्यमुक्तादेरर्धवृद्धिः प्रजायते ॥ ११८ ॥

“नीरसेश फल । ”- मकर- संक्रांतिके दिन जो वार हो वह नीरसेश होता है यदि सूर्य नीरसेश हो तो तांबा, चन्दन, रत्न, माणिक्य और मोती आदिकी अर्ध वृद्धि हो ॥ ११८ ॥

शुक्लवर्णादिवस्तूनामुक्तारजतवाससाम् ।

अर्धवृद्धिः प्रजायेतशशांकेनीरसाधिपे ॥ ११९ ॥

चन्द्रमा नीरसेश हो तो सफेद रंगकी वस्तुएँ-तथा मोती चांदी और वस्त्र इनकी अर्ध वृद्धि हो अर्थात् यह सस्ते हों ॥ ११९ ॥

नीरसेशोयदाभौमः प्रवालरक्तवाससाम् ।

रक्तचंदनताम्राणामर्धवृद्धिर्दिनेदिने ॥ १२० ॥

मंगल नीरसेश हो तो भूंगालाल, वस्त्रलाल, चन्दन, तांबा और ऐसीही अन्य वस्तुओंकी दिन दिन अर्ध वृद्धि हो ॥ १२० ॥

चित्रवस्त्रादिकंचैवशंखचंदनपूर्वकम् ।

अर्धवृद्धिः प्रजायेतनीरसेशोबुधोयदि ॥ १२१ ॥

बुध नीरसेश हो तो छोटके कपड़े और शंख चंदन आदि सस्ते हों ॥ १२१ ॥

हरिद्रापीतवस्तूनिपीतवस्त्रादिकंचयत् ।

नीरसेशोयदाजीवः सर्वेषांप्रीतिरुत्तमा ॥ १२२ ॥

बृहस्पति नीरसेश हो तो हल्दी, पीले वस्त्र, 'पीले रंगकी वस्तु यह सब नस्ते हों और मनुष्योंमें प्रीति बढ़े ॥ १२२ ॥

कर्पूरागरगन्धानां हेममौक्तिकवाससाम् ।

अर्घवृद्धिः प्रजायेत नीरसे शोभ्युर्यदि ॥ १२३ ॥

शुक्र नीरसेश हो तो कपूर, अगर, गंध, सुवर्ण, मोती और कपड़े यह सस्ते हों ॥ १२३ ॥

अयः पिंडादिलोहानां कृष्णवस्त्रादिवस्तुनाम् ।

अर्घवृद्धिः प्रजायेत मन्दे नीरसनायके ॥ १२४ ॥

शनि नीरसेश हो तो पिण्डाकारलोह आदि तथा काले वस्त्रादिकी अर्घ्य वृद्धि हो ॥ १२४ ॥

(फलेशफलम्)

(मीनसंक्रांतिवारे शः फलेशः परिकीर्तितः ।)

द्रुमवती वरपुष्पवती धरा प्रमुदिता फलभोगविशेषता । बहुजलं जलदोभुवि मुंचति कचिदपि प्रमितं फलपो रविः ॥ १२५ ॥

'फलेश फल'—(मीन संक्रांतिके दिन जो याग हो वह फलेश होता है ।) सूर्य फलेश हो तो अनेक प्रकारके फल पुष्प और वृक्षोंसे पृथ्वी आनन्दित हो और वर्षा अच्छी हो ॥ १२५ ॥

यदिविधुः फलपो द्रुमराशयः फलयुता वलिभिः कुसुमेर्युताः । द्विजमुखावरभोगसमन्विता नृपतयो नयनाटनतत्पराः ॥ १२६ ॥

चंद्रमा फलेश हो तो वृक्षोंमें फल तथा वेलोंमें फूल बहुत लगें । ब्राह्मणोंको अच्छे भोजन मिले और राजा लोग न्यायी तथा भ्रमण-शील हों ॥ १२६ ॥

फलपतिर्यदिभूतनयो भवेन्नबहुपुष्पफलान्वितपा-
दपाः । गदभयान्वितदेशजनास्तदानृपतयोव-
हुविग्रहकारकाः ॥ १२७ ॥

मंगल फलेश हो तो वृक्षोंमें फल फूल कम लगें । मनुष्योंमें रो ।
भय हो और राजाओंमें विग्रह हो ॥ १२७ ॥

यदिवृधेफलपेफलमुत्तमंजलधराजलराशिमुच-
स्तदा । बहुतृणकुसुमैः कमलैर्युतंजनपदोजनसौ-
ख्यमुदान्वितः ॥ १२८ ॥

बृध फलेश हो तो उत्तम फल हों, बादल जल बहुत छोड़ें, वास्त-
फूल कमल और पुष्प यह बहुत हों और मनुष्य सुख तथा आ-
न्दसे युक्त रहें ॥ १२८ ॥

सुरगुरुःफलनायकर्तागतोगतभयावनराशिमहा-
द्रुमाः । यजनयाजनकोत्सवमन्दिराःश्रुतिवि-
चारपराद्विजपूर्वकाः ॥ १२९ ॥

बृहस्पति फलेश हो तो वनमें वृक्ष बहुत हों, भय नहीं हों, घर-
घरमें पूजा पाठ हों और आवाहन तथा पण्डित लोग, वेद विचारमें
तत्पर रहें ॥ १२९ ॥

यदि फलस्यपतौभृगुजेधरानृदुकुमारमहीरुहरा-
शयः । बहुफलानरनाथसुभोगदाद्विजवराःश्रु-
तिपाठपरायणाः ॥ १३० ॥

शुक फलेश हो तो पृथ्वी पर कोमले वास्त फूल फल आदि हों
और राजाओंको उत्तम भोग मिले और पण्डित लोग वेद पाठ
परायण हों ॥ १३० ॥

यदिशानिःफलपःफलहा भवेज्जनितपुष्पगणस्य
द्रुमःसदा । दिमभयंवरतस्करजन्तुभीर्जनपदो
गदराशिमहाकुलः ॥ १३१ ॥ (इति)

शानि फलेश हो तो फल हानि हो, वृक्षोंमें पुष्प निष्फल हों (हिम (वर्ष) का भय हो और चौरादिका भय हो तथा मनुष्योंमें बीमागी बढे ॥ १३१ ॥

(धनेशफलम् ।)

(कन्यासंक्रांतिदिनपोधनेशःपरिकीर्तितः ।)
द्रविणपे यदिवासरपेतदावणिजतोबहुद्रव्यसमा-
गमः। गजतुरंगममेषखरोष्ट्रतोधनचयंलभतेक्र-
यविक्रयात् ॥ १३२ ॥

“धनेश फल”-(कन्या संक्रांतिके दिन जो धार हो वह धनेश होता है ।) सूर्य धनेश हो तो हाथी, घोड़े, गये और ऊँट इनके व्यापारसे बहुत धनलाभ हो ॥ १३२ ॥

धनपतिर्मृगलाञ्छनकोयदारसचयक्रयविक्रय-
तो धनम् । वसनशालिसुगंधरसंबहुद्रविणतैलयु-
तंतृपसौख्यदम् ॥ १३३ ॥

चन्द्रमा धनेश हो तो क्रय विक्रयमें धन संग्रह हो । और वस्त्र-
शाली-सुगन्ध-तेल और घी इनमें लाभ हो, तथा राजाओंको सुख मिले ॥ १३३ ॥

असममौल्यकरोधरणीसुतः शरदितापकरस्तुप-
धान्यहत् । सहसिमासिभवेद्विगुणंतदानरपतिर्ज-
नशोकविधायकः ॥ १३४ ॥

मङ्गल धनेश हो तो तेजी मन्दीकी बदलां बदली बहुत हो, जो गेहूँकी रोतीका नाश हो, मार्ग मासमें विक्रय करनेसे संग्रहीत वस्तुमें दुगुना लाभ रहे और राजा शोकदाई हो ॥ १३४ ॥

द्रविणपो हिमरश्मिसुतोयदाविविधसंग्रहवस्तु-
फलार्थदा । द्विजवराजययज्ञसुसंयुताः कृषिवि-
शेषविशेषितमानसाः ॥ १३५ ॥

बुध धनेश हो तो कई प्रकारकी वस्तुओंका संग्रह लाभदायक हो । पंडित लोग जप यज्ञादि करें । और कृषक लोग खेती विशेष करें ॥ १३५ ॥

सुमनसांचगुरुर्द्रविणाधिपोवणिजवृत्तिपराः सुख-
भाजनाः । फलितपुष्पितभूमिरुदाः सदाविविध-
द्रव्ययुताभुविमानवाः ॥ १३६ ॥

वृहस्पति धनेश हो तो लोग निष्पापी हों, वाणिज्य वृत्ति करनेवाले सुखी रहें । वृक्षोंमें फल पुष्प लगे और मनुष्य कई भांतिके धन द्रव्यसे युक्त हों ॥ १३६ ॥

द्रविणपोभृगुजोद्रविणैर्युताः समधनासकलाननु-
मानवाः । समसुखाः क्रयविक्रयजीविनो नृपतयो
जनपालनतत्पराः ॥ १३७ ॥

शुक्र धनेश हो तो सब मनुष्य समान धनवान् हों । सुखभी समान मिले । और क्रय विक्रयमें लाभ हो तथा राजा लोग पालन करें ॥ १३७ ॥

द्रविणपेरविजेविरलंघनंगदरताधरणीपतयः सदा ।
अधनतां वणिजः कृषिजीविनो द्विजवराः परपीडन-
मानसाः ॥ १३८ ॥ (इति)

शनि धनेश हो तो लोगोंके पास धन नहीं रहे, राजा लोग रोगी रहें । वाणिज्य करनेवाले तथा खेती करनेवाले निर्धन हों और पंडित लोग पराई पीडासे दुःखी रहें ॥ १३८ ॥

(दुर्गेशफलम्)

(सिंहसंक्रान्तिवारेशोदुर्गेशः कथितोबुधैः)
 नयविशेषकरस्तरणिस्तदागतभयानरराजपुरो-
 गमाः । समधिकोनतदानृपजोन्यज्ञःस्वपथजं-
 जतानभयंकचित् ॥ १३९ ॥

“ दुर्गेश फल । ”—(सिंह संक्रांतिके दिन जो वार हो वह गढ-
 पति होता है ।) सूर्य दुर्गेश हो तो राजा न्याय करें, राजद्वारमें
 जानेवाले निर्भय हों, राजवर्गों तथा अन्य सब समान रहें । और
 अपने नियत मार्गमें चलनेवालोंको कुछभी भय नहीं हो ॥ १३९ ॥

गढपतिःशशलाञ्छनकोयदा नृपसुराज्यविला-
 सितपौरजाः । बहुधनेक्षुजगोरसभोगिनो नरवरा
 वरवर्णितविग्रहाः ॥ १४० ॥

चन्द्रमा दुर्गेशहो तो राजा सुराज्य करें, प्रजाआनंद करें। ईश तथा
 गोरस भोगियोंको धनलाभ हो और श्रेष्ठ लोगोंमें विग्रह हो ॥ १४० ॥

अवनिजोगढनायकतांगतोविविधदुःखवियोग-
 समन्वितः । जनपदेषुजनाःक्रयविक्रयेभयवि-
 शेषतयानफलंकचित् ॥ १४१ ॥

मंगल दुर्गेश हो तो लोगोंकी कई प्रकारसे दुःख मिले । दिन
 दिनमें लोगोंको बहुत भय हो और फलभी कम लगे ॥ १४१ ॥

विपमसाम्यसुखंशशिजेप्रभौभवतिराष्ट्रजनेषु वि-
 शेषताम् । शशिसुतेयदिकोटकपालक्रेपथिपुद्र-
 व्यवतानभयंकचित् ॥ १४२ ॥

बुध दुर्गेश हो तो शहरी लोगोंको सम विपम सुख मिले और
 धनवानोंको गस्तेमें भी कुछ भय नहीं हो ॥ १४२ ॥

सुरगुरौगढपेनयशोमितानरवरानरपाःकरपालि-
ताः । गिरिषुवैनगरेषुसमसुखंसुखमतिद्विजशस्त्र-
वतोऽनिशम् ॥ १४३ ॥

बृहस्पति दुर्गेश हो तो राजा लोग न्याय पूर्वक लोगोंकी पालना करें । और शहर तथा जंगलमें समान सुख मिले तथा द्विज सशस्त्र हों ॥ १४३ ॥

नगरदेशविशेषपतिर्यदाभृगुसुतोबहुसौख्यकरो
मतः । विनयवाणिजगेहसमःसुखोनगवनेनि-
कटेपिचदूरतः ॥ १४४ ॥

शुक दुर्गेश हो तो नगराधिषोंको तथा देशाधिषोंको सुख हो वाणिज्यमें तथा घरमें सम सुख मिले पर्वत और वन दूरीसे समीप दीखें ॥ १४४ ॥

रविसुतेगढपालिनिविग्रहे सकलदेशगताश्चलि-
ताजनाः । विविधवैरिविशेषितनागराःकृषिधनं
शालभैरुषितंभुवि ॥ १४५ ॥

शनि दुर्गेश हो तो दुनियामें इतने विग्रह उत्पन्न हों कि जिनसे लोग चल बिचलहो जाय । नागरिक लोगोंमें नाना भाँतिके वैर बँधें । और खेतीके धनमें टीढ़ी तथा चूहोंसे बहुत हानि हो ॥ १४५ ॥ इति

(४) अथ मेघानघनं तत्फलं च ।

(शाकेश्युणितेनन्दैर्भाजिते शेषतो घनः ।

आवर्तएकशेषेस्यात्संवर्ताख्योद्विशेषके ॥ १ ॥

त्रिशेषे पुष्करो द्रोणश्चतुःशेषप्रकीर्तितः ।

कालनामापंचशेषेष्टशेषेनीलकःस्मृतः ॥ २ ॥

वरुणःसप्तशेषस्याद्वायुरष्टावशेषके ।

नवशेषेतमोनामक्रमान्मेघानवस्मृताः ॥ ३ ॥)

(४) “नौ मेघोंका लाना”— (वर्तमान शाकेको आठसे गुण कर नौका भाग देनेसे जो शेष बचे वह मेघ होताहै । यथा एक शेष रहै तो ‘आवर्त’ दो शेष बचें तो ‘संवत्’ तीन शेष हों तो ‘पुष्कर’ चार शेष हों तो ‘द्रोण’ पांच हों तो ‘काल’ छः रहें तो ‘नीलक’ सात रहें तो ‘वरुण, आठ हों तो ‘वायु’ और नौ शेष रहें तो ‘तम’ नाम मेघ होताहै ॥)

विनाशनंशालियवादिक्कानांतथैवकार्पासघृतादि-
कानाम् । घनोयदावर्तकनामधेयःस्वरूपंजलं
स्याद्धनिनामपायः ॥ १४६ ॥

जिस सबतमें ‘आवर्त’ नाम मेघ हो उसमें जौ, चावल, गेहूँ, घने, कपास, घी और तैल आदिका नाश होताहै और जलभी कम बर्षताह ॥ १४६ ॥

कामाधिक्यंस्वरूपताधर्मकार्येपृथ्वीपालास्तत्परा
नान्यकार्ये ॥ संवर्तारुयोनीरदःस्याद्धियत्रप्राचो
वायुर्वातिसर्वत्रतत्र ॥ १४७ ॥

संवर्त नाम मेघ हो तो काम अधिक हो, धर्म कार्यमें कमी हो, राजा लोग अन्य कामोंमें तत्पर नहीं हों । वर्षा हो और सर्वत्र पूर्वी वायु चले ॥ १४७ ॥

नैव कंदफलमूलविवृद्धिर्जायते विविधपातकवृ-
द्धिः । रोगतोजनकृशत्वमनल्पपुष्करेजलधरे
जलमल्पम् ॥ १४८ ॥

जिस वर्षमें पुष्कर नाम मेघ हो तो कंद मूल फल इनकी वृद्धि

नहीं हो, कर्द भांतिके पाषोंकी वृद्धि हो । रोगपीडासे लोग दुबलें हों और वर्षा कम हो ॥ १४८ ॥

महीशाःस्वसंपतिवृद्ध्यासमेताः समस्तामहीभू-
रिधान्येनयुक्ता । यदाजायतेद्रोणनामापयोद-
स्तदा देवराजो भवेत्सत्पयोदः ॥ १४९ ॥

द्रोण मेघ हो तो राजा लोगोके खजाने मग्नूर रहें । संपूर्ण पृथ्वी-
पर भी धन धान्य व्याप्तिक हों । और इन्द्रदेव जलभी उत्तम
वर्षावें ॥ १४९ ॥

रोगतोविकलतावपुष्पमतांस्यान्मिथःकलहताक्ष-
माभृताम् । कालनामजलदोदयोयदानैववर्षति
जलंबृषातदा ॥ १५० ॥

काल नाम मेघ हो तो अच्छे आदमी रोग पीडासे व्याकुल हों,
राजाओंमें परस्पर कलह हो । और वर्षाभी कम हो ॥ १५० ॥

सत्पयोदिशतिगोकुलपूर्णावस्त्रताखिलमहीपरि-
पूर्णा । नीलनाम्रिजलदेजलवृष्टिर्जयतेसकल-
मानवतुष्टिः ॥ १५१ ॥

नील नाम मेघ हो तो गायें अच्छा दूध दे । रुई कपास आदि
अधिक हों । वर्षा अच्छी हो और लोग सब संतुष्ट रहें ॥ १५१ ॥

अग्निहोत्रकरणादराट्टिजाः स्युःसदाधिकमुदोखि-
लाः प्रजाः । अर्णवेणसहितंमहीतलंवारुणेजलधरे
भवेदलम् ॥ १५२ ॥

वरुण मेव हो तो अग्निहोत्री ब्राह्मणोंका आदर हो, प्रजायें सदैव
आनंद रहे । और वर्षाभी अच्छी अनुकूल हो ॥ १५२ ॥

नैवांगुवृष्टिकुरुतेसुरेशःसमस्तधान्यांवरकण्यना-

शः । धराधरः स्याद्यदि वायुना माजनव्रजस्तर्हि
विहीनधामा ॥ १५३ ॥

वायु मेघ हो तो इन्द्र जलकी वर्षा नहीं करे, सब धान्योंका नाश
हो । और सब वस्तुओंके संकोचसे लोग विहीनधाम (धरहीन)
होजाँय ॥ १५३ ॥

रोगाधिक्यं जायते नीरशेषश्चौराधिक्यं नैव धान्य-
स्य पोषः । यस्मिन् वर्षे स्यात्तमो नाम मेघस्तस्मि-
न्दुःखं प्राप्नुयात् लोकसंघः ॥ १५४ ॥

और तम नाम मेघ हो तो रोग अधिक हो, जलकी न्यूनता रहे,
चौर अधिक हों, धान्यका पोषण नहीं हो, और लोग अनेक प्रकारसे
दुःखित रहें ॥ १५४ ॥

(५) अथ द्वादशनागानयनं तत्फलं च ।

(शाके द्वाभ्यां युतः सूर्यैर्भक्तः शेषां कतः फणी । सुबु-
ध्राख्यो नन्दसारी कर्कोटाख्यः पृथुश्रवः ॥ १ ॥

वासुकिस्तक्षकाख्यः स्यार्कं बलेश्वतरस्तथा ।

हेममाली नरेन्द्राख्यो वज्रदंष्ट्रो वृषाभिधः ॥ २ ॥)

(५) 'द्वादश नागोंका फल'—(शाकेमें दो जोड़कर बारहका
भाग देनेसे जो शेष बचे सो नाग होता है । १ बचे तो 'सुबुध्र'
२ बचें तो 'नन्दसारी' ३ बचें तो 'कर्कोटक' ४ बचें तो 'पृथुश्रव'
५ बचें तो 'वासुकी' ६ बचें तो 'तक्षक' ७ बचें तो 'कंबल' ८ बचें
तो 'अश्वतर' ९ बचें तो 'हेममाली' १० बचें तो 'नरेन्द्र' ११ बचे
तो 'वज्रदंष्ट्र' और १२ बचें तो 'वृष' नाम नाग होता है ।)

सुबुध्रनामसहितो भुजंगो जायते तदा । नृणां सुबु-
द्धिकर्ता स्यान्मध्यवृष्टिप्रदायकः ॥ १५५ ॥

जिस वर्षमें सुबुध्न नाम नाग हो उस वर्षमें मनुष्योंकी बुद्धि अच्छी हो और वर्षा मध्यम हो ॥ १५५ ॥

यस्मिन्वर्षेनागराजोनन्दसार्यभिधानकः । तस्मिन्वर्षे महावृष्टिकुरुते नन्दतेजनः ॥ १५६ ॥

नन्दसारी नाग राजा हो तो वर्षा बहुत भारी हो और मनुष्य आनन्दित हों ॥ १५६ ॥

यदा कर्कोटनामा च जायते पवनाशनः ।

तदानां बुद्धदातीन्द्रो मरणं स्यान्महीपतेः ॥ १५७ ॥

कर्कोटक नाग हो तो वर्षा नहीं हो राजाओंकी मृत्यु हो ॥ १५७ ॥

पृथुश्रवाभुजंगेन्द्रो जायते यत्र वत्सरे ।

तत्र कीलालमल्पं स्यात्सस्य हानिरसंशयम् ॥ १५८ ॥

पृथुश्रव नाग हो तो वर्षा कम हो और अन्नकी हानि हो ॥ १५८ ॥

उदेति यत्र वत्सरे स वासुकिर्भुजंगमः ।

प्रभूतधान्यदायकः सुवृष्टिकारकस्तथा ॥ १५९ ॥

जिस वर्षमें वासुकी नाम नाग हो तो उस वर्षमें अच्छी खेती होने योग्य उत्तम वर्षा हो ॥ १५९ ॥

तक्षकाभिधनागेन्द्रो जायते यत्र वर्षके ।

तत्र मध्यमवृष्टिः स्याद्विग्रहानृपतेर्मतिः ॥ १६० ॥

तक्षक नाग हो तो वर्षा मध्यम हो और राजाओंमें विग्रह हो ॥ १६० ॥

यदैवकंबलाभिधो भुजंगमः प्रजायते ।

तदास्ति मध्यमं जलं समस्तधान्यमुत्तमम् ॥ १६१ ॥

जिस वर्षमें कंबल नाग हो उस वर्षमें भी जल कम वर्ष और अन्न कम हो ॥ १६१ ॥

यस्मिन्नब्देभुजंगेन्द्रो जायतेश्वतराभिधः ।

नवर्षतिजलंवज्रीतदासस्यंविनश्यति ॥ १६२ ॥

अश्वत्थ नाग हो तो जल नहीं वर्षे और अन्नकी खेतियां सूख जाय ॥ १६२ ॥

हेममालिनिनागेन्द्रे जायते त्वखिलामही ।

समस्तधान्यसंपूर्णाप्रभूतजलवृष्टितः ॥ १६३ ॥

हेममाली नाग हो तो बहुत वर्षासे संपूर्ण पृथ्वीपर समस्त धान्य पैदा हो ॥ १६३ ॥

यत्रसंवत्सरेनागोनरेन्द्रो नामतः शुभः ।

तदास्यान्नखिलापृथ्वीप्रभूतजलपूरिता ॥ १६४ ॥

नरेन्द्र नाग हो तो पृथ्वी वर्षाके जलसे पूर्ण हो ॥ १६४ ॥

यत्रसंवत्सरेनागोवज्रदंष्ट्राभिधानकः ।

तदांशुवनैर्षणं वसर्वसस्यविनाशनम् ॥ १६५ ॥

वज्रदंष्ट्र नाग हो तो उस वर्षमें जल नहीं वर्षे और खेती सूख जाय ॥ १६५ ॥

यदावृषाभिधानस्यभुजंगारुयो यदा भवेत् ।

तदासस्यादिकालपत्वं सुतरामीतितोभयम् ॥ १६६ ॥

जिस वर्षमें नृप नाम नाग राजा हो उस वर्षमें अन्न कम हो और ईतिभय हो ॥ १६६ ॥

(६) अयमेधानां विशेषवर्णनम् ।

ईश्वर उवाच-शृणु देवियथातथ्यं वर्णरूपं तुयादृशम् ।

मंदरोपरिमेधास्ते राजानो दशकीर्तिताः ॥ १६७ ॥

(६) " प्रसंगवशः यहां अन्य मेधांका वर्णन भी लिखते हैं । "

शिव पार्वतीको कहते हैं कि हे देवि ! मैं तुमको मेधांका मयार्थ

वर्ण रूप कहताहूँ सो सुनो । मेघोंके दश राजा तो मंदर पर्वत
रहते हैं ॥ १६७ ॥

कैलासेदशविक्षेपाः प्राकारे कोटजे दश ॥

उत्तरे दश राजानः शृंगवेरे तथा दश ॥ १६८ ॥

दश कैलासमें-दश कोटज प्राकारमें-दश राजा उत्तरमें और
दश शृंगवेरमें रहते हैं ॥ १६८ ॥

पर्यंते दश राजानो दशैव हिमवन्नगे ।

गंधमादनशैले च राजानो दशवास्दिः ॥ १६९ ॥

दश राजा पर्यन्तमें-दश हिमालय पर्वतमें और मेघोंके दश
राजा गंधमादन पर्वतपर रहते हैं ॥ १६९ ॥

अशीतिमेघा विरुधाताः कथितास्तव पार्वति ।

दिग्भागे च विदिग्भागे प्रत्येकं दश नीरदाः १७० ॥

हे पार्वति । इस भांति यह सब अस्सी मेघ हैं सो तुमको कहे हैं ।
दिशा और विदिशाओंमें भी दश दश मेघ रहते हैं ॥ १७० ॥

उन्नमय्य प्लावयन्ति मर्त्यलोके जलैर्महीम् ।

कमलेष्टदले वृष्ट्यै प्रतिष्ठाप्य पयोधरान् ॥ १७१ ॥

वे जब उदय होते हैं तब मृत्युलोककी पृथ्वीको जलसे भर देते
हैं । (अतः अब उनके उदय होकर यथेच्छ जल वर्षानेका उपाय
कहते हैं ।) अनुष्ठान भूमिमें विधिसहित अष्टदल कमल बनाकर
उसके बीचमें मेघोंकी स्थापना करे ॥ १७१ ॥

धूपदीपैश्च कुसुमैर्नैवद्यैः परिपूजयेत् ।

सिंहको विजयश्चैवलंबकोथजयद्रथः ॥ १७२ ॥

धूम्रश्च शिखरो भद्रो मातंगो वरुणस्तथा ।

त्रिलोचनपतिश्चैव मेवाः प्राच्या अमी दश ॥ १७३ ॥

और उनका वेदोक्त मंत्रोंसे आवाहन करके पुष्प-धूप-दीप-
और नैवेद्य आदिसे पूजन करो। उनमें सिद्धक-विजय-लंबक-त्रयद्रव्य-
धुम्र-शिखर-भद्र-प्रातंग-वरुण-और त्रिलोचन यह दश मेघ पूर्व
दिशाके हैं अतः इनका पूर्वमें स्थापन पूजन करो ॥ १७२ ॥ १७३ ॥

आनंदःकालदंष्ट्रश्च शूकरो वृषभस्तथा ।

मृगोनीलो भवः कुंभो निकुंभोमहिषस्तथा ॥ १७४ ॥

आनंद, कालदंष्ट्र, शूकर, वृषभ, मृग, नील, भव, कुंभ, निकुंभ
और महिष यह दश मेघ दक्षिण दिशामें रहते हैं अतः इनका
दक्षिणमें पूजन करो ॥ १७४ ॥

दशमेघादक्षिणस्यांप्रायोमीवृष्टिकारिणः ।

कुंजरःकालमेघश्च पुनर्वैकालकांतकः ॥ १७५ ॥

दुंदुभिर्मेखलःसिंधुर्मकरश्छत्रगस्तथा ॥

पश्चिमायाममीमेघादशवर्षाविधायिनः ॥ १७६ ॥

कुंजर, काल, मेघ, कालक, अन्तक, दुंदुभि, मेखल, सिंधु, मकर
और छत्र यह दश मेघ पश्चिम दिशामें रहते हैं । अतः इनका
पश्चिममें पूजन कर ॥ १७५ ॥ १७६ ॥

मेघनादो धनृपतिस्त्रिलोचनसुधाकरो ॥

दंडिनश्चसितालश्चैकालिकजलस्तथा ॥ १७७ ॥

वृषभोपिचगन्धर्वोविधुमासिरूपवच ।

गकरोदशमेघाःस्युत्तरस्यांप्रवर्षिणः ॥ १७८ ॥

और मेघनाद, त्रिलोचन, सुधाकर, दंडी, सिताल, ऐकालिक, जल
वृषभ, गंधर्व, विधुमासिक और गकर यह दश मेघ उत्तर दिशामें
जल वर्षाते हैं । अतः इनका उत्तर दिशामें पूजन करो ॥ १७७ ॥ १७८ ॥

ओंकारोनाभिमूर्तिश्चमयूरःकंदिकस्तथा ।

विदुकांतिश्चकरणोद्देमकांतिश्चपर्वतः ॥ १७९ ॥

गैरिकाह्वयकोमेघाःस्वर्गलोकेव्यवस्थिताः ।

दिव्यमेघाश्चसप्तैतेसर्वांगसुखदायिनः ॥ १८० ॥

ओंकार, मयूर, कान्दिक, चिदुकांति, करण, हेमकांति और गैरिक
अह दिव्य सात मेघ स्वर्गलोकमें स्थित रहते हैं । अतः इनका मण्ड-
लके मध्यमें पूजन करे ॥ १७९ ॥ १८० ॥

दशमेघाःश्वेतवर्णादशैवलोहितास्तथा ।

दशपीताःस्वर्णवर्णादशधूम्राःप्रकीर्तिताः ॥ १८१ ॥

दश मेघ श्वेत, दश लाल, दश पीले और दश धूम्र वर्णके
हैं ॥ १८१ ॥

अथमंत्रंप्रवक्ष्यामियेनमंत्रेणआहिताः ।

आगच्छन्तिधरादेवाःकुर्वन्त्येकार्णवांमहीम् ॥ १८२ ॥

अब मेघोंके आवाहनके मन्त्र कहते हैं जिससे मेघ आकर पृथ्वी-
को जलसे समान कर देंगे ॥ १८२ ॥

ॐ ह्रींमेघदूत्यैनमःआगच्छ २ स्वाहा । ॐ मेघदू-

तीकमलोद्भवायनमःआगच्छ २ स्वाहा । ॐ ह्रीं

महानिलराजहिमवन्निवासिनेआगच्छ २ स्वाहा ।

ॐ ह्रींनन्दिकेश्वरायजठरनिवासिनेमेघराजाय आ-

गच्छ २ स्वाहा । ॐ ह्रींकुबेराजायशृंगवेरनिवासिने

आगच्छ २ स्वाहा । जपोस्यदशसाहस्रोदशांशोहो-

मएवच । पुष्पैश्चधवलैरक्तेःकरवीरसमुद्भवैः ॥ १८३ ॥

ततःपुष्पैःसुगन्धाढ्यैरर्चयेन्मेघसप्तकम् ।

दद्याच्चैववनेगत्वा मेघानावाइयेद्बुधः ॥ १८४ ॥

ॐ ह्रीं मेघदूत्ये० इत्यादि पाचों मन्त्रोंमें प्रत्येकके दश २ हजार
जप करके इनके दशांगका होम करे । और सकेद तथा लाल कगेद

के पुष्पोसे अथवा अन्य सुगन्धित पुष्पोसे पूजन करके वनमें जाकर
मेघोंका आवाहन करे ॥ १८३ ॥ १८४ ॥

शिवालयेतडागेवापुनर्मेघान्विसर्जयेत् ॥ १८५ ॥ (इति)

और फिर विसर्जन करना हो तो शिवालयमें अथवा तालाब पर
जाकर उनका विसर्जन करे ॥ १८५ ॥

(७) आर्द्राप्रवेशेतिथ्यादिफलम् ।

प्रतिपद्विसेभानोर्यदार्द्रायांप्रवेशनम् ।

नृणांगृहेगृहेतर्हिभवेन्मंगलवर्धनम् ॥ १८६ ॥

(७) “आर्द्रा प्रवेशमे तिथ्यादिका फल ।” — (सूर्य जब आर्द्रा
नक्षत्रपर आता है तब उस समय जो तिथि बाराटि हों उनका
फल भी संवत्सरके शुभाशुभ फलमें उपयोगी होता है ।) प्रतिपदा
तिथिके दिन सूर्य आर्द्रा नक्षत्रपर आवे तो घर घरमें मंगलकार्य
बढ़ते हैं ॥ १८६ ॥

भानोर्यद्वितीयायांभवेदार्द्राप्रवेशनम् ।

तर्हिस्यात्सर्वधान्यानांवस्त्रादीनांविवर्धनम् ॥ १८७ ॥

द्वितीया तिथिमें सूर्य आर्द्रापर आवे तो सब धान्य तथा वस्त्रादि
सस्ते होते हैं ॥ १८७ ॥

भास्करस्ययदार्द्रायांतृतीयायांप्रवेशनम् ।

ईतिभीतिर्भवेत्तर्हितस्करादिविवर्धनम् ॥ १८८ ॥

तृतीयामें सूर्य आर्द्रामें आवे तो ईतिभीति हो और चीरभय
बढ़े ॥ १८८ ॥

गणपतितिथ्यांस्मरहरधिण्ये ।

यदिरविवेशोध्रुवमशुभंस्यात् ॥ १८९ ॥

चतुर्थीमें सूर्य आर्द्रामें आवे तो निश्चय अशुभ होता है ॥ १८९ ॥

पंचम्यांरौद्रनक्षत्रंप्रयातियदिभानुमान् ।

सर्वेषांप्राणिनांतर्हिफलंस्यादुत्तमोत्तमम् ॥ १९० ॥

पञ्चमीको आर्द्रा प्रवेश हो तो सब प्राणियोंको उत्तमोत्तम फल होता है ॥ १९० ॥

षष्ठ्यामार्द्राप्रवेशश्चेज्जायतेपद्मिनीपतेः ।

तर्हिद्रविणसंपत्त्यानराणांप्रचुरं सुखम् ॥ १९१ ॥

छठको हो तो धन सम्पत्ति अधिक बड़े, तथा मनुष्योंको प्रचुर सुख हों ॥ १९१ ॥

भास्करोभास्करतिथौयदार्द्रायांप्रवेशनम् ।

करोतितर्हिलोकानांसततंक्षेममुत्तमम् ॥ १९२ ॥

सप्तमीको आर्द्रा प्रवेश हो तो लोकमें उत्तम क्षेम रहे ॥ १९२ ॥

यदिस्यादष्टमीतिथ्यामार्द्रानक्षत्रगोरविः ।

सस्यानावाससामूल्यंस्वरूपवृष्टिर्नसंशयः ॥ १९३ ॥

अष्टमीको हो तो अन्न वस्त्रादिका मूल्य बढ जाय और वर्षा कम हो ॥ १९३ ॥

सूर्यस्यशिवनक्षत्रप्रवेशेनवमीतिथौ ।

तर्हिस्थात्समताभीतेरेवमाहुर्मनीषिणः ॥ १९४ ॥

नवमीको हो तो भयमें समानता हो ॥ १९४ ॥

सूर्यस्यरुद्रसंवेशोयदिस्यादशमीतिथौ ।

नानाविधानिकार्याणिमंगलानिदिनेदिने ॥ १९५ ॥

दशमीको हो तो प्रतिदिन नाना प्रकारके मंगल कार्य हों ॥ १९५ ॥

एकादश्यांतिथौसूर्यारौद्रभयातिचेत्तदा ।

सकलधनधान्यादिसुभिक्षंजायतेध्रुवम् ॥ १९६ ॥

एकादशीको हो तो सम्पूर्ण धन धान्य निश्चय सस्ते हों ॥ १९६ ॥

द्वादश्यां शिवनक्षत्रं प्रविष्टश्चेद्दिवाकरः ।

नानाविधं शुभं तर्हि जनः प्राप्नोति निश्चितम् ॥ १९७ ॥

द्वादशीको हो तो मनुष्योंको नाना प्रकारके शुभफल मिलें १९७॥

दिवाकरस्य रौद्रक्षेत्रवेशे च त्रयोदशी ।

तिथिर्यदि स्यात्तत्तिथ्यां जायते र्वजलं तदा ॥ १९८ ॥

त्रयोदशीमें हो तो तिथिकी स्थितिके अनुसार समर्घ महर्घ तथा जल वृष्टि हो ॥ १९८ ॥

दिवाकरस्य रौद्रक्षेत्रवेशे च चतुर्दशी ।

समस्त धान्यवासांसि महर्घाणि भवन्ति हि ॥ १९९ ॥

चतुर्दशीको हो तो सम्पूर्ण धान्य और सब तरहके कपड़े महर्घे हो ॥ १९९ ॥

पौर्णमास्यां दिने श्वेदाद्रा नक्षत्रगो भवेत् ।

प्रजानां तर्हि विविधाः संपूर्णाः स्युर्मनोरथाः ॥ २०० ॥

पौर्णिमा तिथिमें आर्द्रा प्रवेश हो तो प्रजाके सम्पूर्ण मनोरथ सिद्ध हों ॥ २०० ॥

अमायां पद्मिनीनाथ रौद्रनक्षत्रगे यदि ।

भूमिपानां विनाशः स्यात्तस्कराणामुपद्रवः ॥ २०१ ॥

और यदि अमावसमें आर्द्रा पर सूर्य आवे तो राजाओंका नाश तथा चौरोंका उपद्रव हो ॥ २०१ ॥

वारफलम् ।

दिनपतिवारे पशुपतिधिष्ण्ये ।

दिनपतिवेशे सति पशुनाशः ॥ २०२ ॥

“वारफल” — दीतवागके दिन सूर्य आर्द्रा पर आवे तो पशुओंका नाश हो ॥ २०२ ॥

शशिधरवारेस्मरहरधिष्ण्ये ।

दिनकरवेशेसतिहिसुभिक्षम् ॥ २०३ ॥

सोमवारको आवे तो सुभिक्ष हो ॥ २०३ ॥

भानोर्वेशःपृथ्वीमूनोर्वारोद्रेधिष्ण्येचेत्स्यात् ।

शस्त्राघातात्पृथ्वीशानानिःसंदेहंमृत्युस्तर्हि ॥ २०४ ॥

मंगलवारको आवे तो राजाओंकी शस्त्रघातसे निश्चय मृत्यु हो २०४ ॥

बुधस्यवासरेरोद्रेधिष्ण्येभानुःप्रयातिचेत् ।

तर्हिब्राह्मणजातीनांकल्याणंभूरिवर्तते ॥ २०५ ॥

बुधवारको आर्द्रा प्रवेश हो तो ब्राह्मण जातिका बहुत कल्याण हो ॥ २०५ ॥

सुरराजगुरोर्वरिद्युमणिर्यदिरोद्रगः ।

सर्वेषांतर्हिजंतूनांद्रव्यवृद्ध्यासुखंबहु ॥ २०६ ॥

बुधस्पतिवारको हो तो सब जीवोंको सुख मिले तथा द्रव्यकी वृद्धि हो ॥ २०६ ॥

दैत्यराजगुरोर्वरियदित्याद्रौद्रगोरविः ।

तर्हिशान्तिश्चपुष्टिश्चतुष्टिःप्रतिदिनंनृणाम् ॥ २०७ ॥

शुक्रवारको हो तो मनुष्योंमें प्रतिदिन शान्ति-पुष्टिसे तृष्टिहो ॥ २०७ ॥

शनैश्चरस्यवारेचेद्रविराद्रांगतोयदि ।

कृशतातर्हिलोकानानितांतमंदबुद्धिता ॥ २०८ ॥

और शनिवारको आर्द्रा प्रवेश हो तो लोग दुबले अधिक हों तथा बुद्धिभी कम हो ॥ २०८ ॥

नक्षत्रफलम् ।

रविराद्राप्रवेशेचेदास्रमंदिनमंभवेत् ।

अश्वादिपशुसंघस्यवृद्धिःस्यान्मंगलानिच ॥ २०९ ॥

“नक्षत्रफल”—आर्द्रा प्रवेशके समय आश्विनी नक्षत्र हो तो घोड़े
आदि पशु समूहमें वृद्धि तथा मंगलवृद्धि हो ॥ २०९ ॥

अर्कस्यरौद्रसंवेशेभरणीचंद्रभयदि ।

तर्हिस्याद्रोगबाहुल्यंशुभेनैवकदाचन ॥ २१० ॥
भरणी नक्षत्र हो तो रोगबाहुल्य हो और शुभ कुछनहीं हो २१०॥

कृत्तिकायदिचांद्रक्षमीशधिष्ण्यंगतेरवौ ।

अग्न्यादिकभयंभूरितर्हिस्यादंबुवर्षणम् ॥ २११ ॥
कृत्तिका हो तो आगका भय अधिक हो तथा जलवृष्टिहो ॥ २११॥

रोहिणीचंद्रनक्षत्रेभानुराद्रागतोयदि ।

सर्वधान्यविनिष्पत्त्यासंतोपोखिलदेहिनाम् २१२॥
रोहिणी हो तो सब धान्य उत्पन्न हों और सब प्राणियोंको
संतोष मिले ॥ २१२ ॥

यदिरौद्रप्रविष्टोकोमृगांकेमृगगेसति ।

धान्यांवरघृतादीनांप्रावलयंतर्हिजायते ॥ २१३ ॥
मृगाशिर हो तो धान्य, वस्त्र और घी यह बहुत हों ॥ २१३ ॥

रौद्रनक्षत्रगेचंद्रेरौद्रभयातिचेद्रविः ।

सकलाःप्राणिनस्तर्हिरौद्रकर्मप्रकुर्वते ॥ २१४ ॥
आर्द्रा प्रवेशके दिन आर्द्रा हो तो सब प्राणी रौद्रकर्म—(घाई
झकेती, मार काट आदि) करें ॥ २१४ ॥

अर्कस्यरौद्रसंवेशेयदिचांद्रपुनर्वसु ।

अभिवृद्धिःसमस्तानांसस्यानांतर्हिनिश्चयात् २१५
पुनर्वसु हो तो सब सस्योंको अवश्य अभिवृद्धि हो ॥ २१५ ॥

दिनर्क्षेपुष्यनक्षत्रेरौद्रेव्रजतिचेद्रविः ।

तदाजलप्लुताभूमिःसर्वधान्यसमन्विता ॥ २१६ ॥

घुष्य नक्षत्र हो तो जल बहुत वर्षे और सब धान्यास पृथ्वी संयुक्त रहे ॥ २१६ ॥

सार्पभंदिभं चेत्स्यादर्कस्यार्द्राप्रवेशने ।

दारुणं कर्म लोकानां भवेत्सौख्यविनाशनम् ॥ २१७ ॥

आश्लेषा हो तो लोग बड़े खोटे काम करें और सब सुखोंका नाश हो ॥ २१७ ॥

रौद्रं विशति चेद्भानुः पितृभे चन्द्रसंयुते ।

अल्पवृष्टिस्तदाज्ञेया कंदमूलादिकाल्पता ॥ २१८ ॥

मरा हो तो वर्षा कम हो और कंद मूल फलभी कम हों ॥ २१८ ॥

भगभे सति चन्द्रक्षेत्रे जायते रौद्रगोरविः ।

तदा भूमिभृतां कीर्तिः प्रत्यहं भाग्यवर्धनम् ॥ २१९ ॥

पूर्वाफाल्गुनी हो तो राजाओंकी कीर्ति प्रतिदिन अच्छी बड़े २१९ ॥

यदि रौद्रग आदित्ये चन्द्रभेर्भूमिदैवते ।

तदा सस्याभिवृद्धिः सदात्पुत्रपौत्रयुतोजनः ॥ २२० ॥

उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र हो तो अन्नकी वृद्धि हो और लोग बड़े धनोसे युक्त हों ॥ २२० ॥

हस्तनक्षत्रगे चन्द्रे रौद्रनक्षत्रगो यदि ।

सविता स्यात्तदा सर्वे सस्यसौख्यसमन्विताः ॥ २२१ ॥

हस्त हो तो सब लोग सब धान्योसे संयुक्त रहें ॥ २२१ ॥

सविता यदि रौद्रक्षेत्रे जे चित्रा गते विधी ।

तदा चित्राणि धान्यानि सर्वदेवशुभं भवेत् ॥ २२२ ॥

चित्रा हो तो मोठ-भूंग-उडद आदि अन्न उत्पन्न हों और सब प्रकारके शुभ हों ॥ २२२ ॥

भास्करोरौद्रगश्चेत्स्यान्मारुतेदिनभेसति ।

धनधान्यसमृद्धिः स्याद्धर्मवृद्धिर्दिनेदिने ॥ २२३ ॥

रक्षाती हो तो धनधान्यकी तथा धर्म कर्मकी दिन दिन वृद्धि हो ॥ २२३ ॥

विशाखायदिचांद्रक्षे भानोराद्राश्रवेशने ।

तदानिखिलरोगाणां विनाशो जायते ध्रुवम् ॥ २२४ ॥

विशाखा हो तो सब रोगोंका निश्चय नाश हो ॥ २२४ ॥

शशांकसहिते मैत्रेशिवभयातिचेद्रविः ।

सर्वलोकाश्च भूपाश्च संतुष्टाः स्युस्तदा भृशम् ॥ २२५ ॥

अनुराधा हो तो सब लोग तथा राजाओंमें संतोष रहे ॥ २२५ ॥

इन्द्रभेचंद्रसंयुक्ते सविता रौद्रगोयदि ।

तदा सकल लोकानां जायते प्रचुरं भयम् ॥ २२६ ॥

ज्येष्ठा हो तो सब लोगोंको बहुत भय हो ॥ २२६ ॥

चंद्राक्रांते निर्ऋतिभेयदाद्रारविसंयुता ॥

भयं नानाविधं पुंसां कृशत्वं रोगवृद्धिदा ॥ २२७ ॥

मूल नक्षत्र हो तो पुरुषोंको कई प्रकारके भय हों और रोग वृद्धि दुबलापन हो ॥ २२७ ॥

आर्द्राचेद्रविणायुक्ता तोयभेदिनभेसति ।

तर्हिसर्वे महीपालाः परस्परविरोधिनः ॥ २२८ ॥

पूर्वाषाढ हो तो सब राजाओंमें परस्पर विरोध हो ॥ २२८ ॥

वैश्वभेचंद्रसंयुक्ते रौद्रभंयदिसूर्ययुक् ।

तदानराः स्वकर्माणि कुर्वते मंगलान्विताः ॥ २२९ ॥

उत्तराषाढ हो तो मनुष्य अपने अपने काम करें तथा मंगल-युक्त हों ॥ २२९ ॥

श्रवणेचंद्रसहितेरविणारौद्रभंयदि ।

सहितस्य। तदालोकाः पुत्रसौख्यसमन्विताः २३० ॥

अत्र नक्षत्र हो तो लोग पुत्रसौख्यसे संयुक्त रहें ॥ २३० ॥

सवितुः शिवनक्षत्रप्रवेशसमये भवेत् ।

वासवं यदि चांद्रक्षं तदा बहु फलादिकम् ॥ २३१ ॥

घनिष्ठा हो तो फल बहुत हों ॥ २३१ ॥

शशिना वारुणे युक्ते रविणा शिवदेवतम् ।

यदि स्यात्सहितं तर्हि जलपूर्णा वसुंधरा ॥ २३२ ॥

शुक्रभिषा हो तो पृथ्वीपर जल बहुत हो ॥ २३२ ॥

पूर्वाभाद्रपदाधिष्ण्ये रजनीपति संयुते ।

यद्यको रौद्रभंयाति तदा सर्वे सुखोदयाः ॥ २३३ ॥

पूर्वाभाद्रपद हो तो सब सुखोंका उदय हो ॥ २३३ ॥

अनन्दे हि बुध्न्य नक्षत्रे रौद्रं चेदकं वेशनम् ।

तदा सर्वाणि कार्याणि सिद्धियान्ति नृणां सदा ॥ २३४ ॥

उत्तराभाद्रपद हो तो मनुष्योंके सब काम सिद्ध हो ॥ २३४ ॥

शशिभृतिपौष्णे सतियदि रौद्रम् ।

प्रविशति भानुर्नरपतिनिधनम् ॥ २३५ ॥ (इति) ॥

और आर्द्रा प्रवेशके समय रेवती नक्षत्र हो तो राजाकी मृत्यु हो ॥ २३५ ॥

योगफलम् ।

प्रथमजयोगे त्रिनयनधिष्ण्ये ।

यदि रविवेशो बहुवसुसस्यम् ॥ २३६ ॥

“योगफल” — विष्कम्भ योगमें आर्द्रा प्रवेश हो तो अन्न बहुत हो ॥ २३६ ॥

प्रीतियोगेविद्यमानेसत्यकोयदिरौद्रगः ।

सर्वावसुमतीतर्हिसलिलेनपरिप्लुता ॥ २३७ ॥

प्रीति योगमें हो तो सम्पूर्ण पृथ्वी जलसे व्याप्त हो ॥ २३७ ॥

आयुष्मत्संज्ञकेयोगेयदिभास्वाञ्छिवर्क्षगः ।

तर्हिसर्वेमहीपालाःसुचरित्रानिरामयाः ॥ २३८ ॥

आयुष्मानमें हो तो सब राजालोग रोग रहित स्वच्छ चरित्र

हों ॥ २३८ ॥

सौभाग्यनामकेयोगेरौद्रगश्चेद्दिवामणिः ।

सौभाग्यारोग्यतांवाप्तिस्तर्हिस्यात्सर्वदेहिनाम् ॥ २३९ ॥

सौभाग्य योगमें आर्द्रा प्रवेश हो तो सब देहधारियोंको सौभाग्य

प्राप्ति मिले ॥ २३९ ॥

सतिशोभनयोगेचेद्रौद्रगःपद्मिनीपतिः ।

शोभनंकर्मकुर्वन्तितर्हिसर्वजनानृपाः ॥ २४० ॥

शोभनमें हो तो सब लोग तथा राजा शुभ काम करें ॥ २४० ॥

अतिगंडाख्ययोगेचेदाद्रायातिदिवाकरः ।

परस्परंतुयुद्धं चतर्हिकुर्वन्तिभूमिपाः ॥ २४१ ॥

अतिगण्डमें हो तो राजालोक परस्परमें युद्ध करें ॥ २४१ ॥

सुकर्मनामयोगकेयदीशभंरवित्रजेत् ।

तदासमस्तभूसुराःसुकर्मकर्तुमुद्यताः ॥ २४२ ॥

सुकर्मामें हो तो सम्पूर्ण ब्राह्मण लोग अच्छे कामोंके करनेमें

उद्यत (तयार) हों ॥ २४२ ॥

सतिधृतियोगेयदिदिवसेशः

प्रविशतिरौद्रंभवतिसुभिक्षम् ॥ २४३ ॥

प्रतिमें हो तो सुभिक्ष हो ॥ २४३ ॥

योगेशूलाभिधानेचेद्रौद्रयातिदिवाकरः ।

शूलादिकैर्महारोगैःपीडात्यंतंतदानृणाम् ॥ २४४ ॥

शूलमें हो तो मनुष्योंमें शूल पीडा (पॉन्क्का दर्द) नयवा चदरशूल
आदि) अधिक हों ॥ २४४ ॥

गण्डयोगेवर्तमानेरौद्रयातिचभास्करः ।

तदा तुष्टानि कर्माणि कुर्वतिनिखिलाजनाः ॥ २४५ ॥

गण्डमें हो तो सब लोग प्रसन्नताके काम करें ॥ २४५ ॥

तरणिर्यदि रौद्रक्षप्रविशेद्वृद्धियोगके ।

पुत्रपौत्राभिवृद्धिः स्यात्तर्हियज्ञादिकर्मच ॥ २४६ ॥

वृद्धियोगमें आर्द्रा प्रवेश हो - तो पुत्रपौत्रादि की वृद्धि हो और
१. ज्ञादि कर्म हों ॥ २४६ ॥

सतिध्रुवाख्येयोगेचेद्रौद्रगः स्यादहर्षेतिः ।

जनाजनेशः सर्वेपिनैवचंचलमानसाः ॥ २४७ ॥

ध्रुव योगमें हो तो राजा प्रजा दोनों उदासीन रहें ॥ २४७ ॥

व्याघातनाम्नि योगेचेद्रविणाकांतभीशमम् ।

तदाजनानां सर्वेषां दुर्भिक्षात्प्राणनाशनम् ॥ २४८ ॥

व्याघात योगमें हो तो दुर्भिक्ष अकालसे सब मनुष्योंका नाश
हो ॥ २४८ ॥

खेरार्द्राप्रवेशस्यसमयेयदिहर्षणः ।

सर्वधान्यादिसंवृद्ध्याप्राणिनांहर्षसंभवः ॥ २४९ ॥

हर्षणमें हो तो सब अन्न सस्ते होनेसे प्राणियोंके हर्ष बढ़े ॥ २४९ ॥

वज्राभिधानयोगेचेत्तपनोरौद्रगोभवेत् ।

तर्हिभूपालकलहः क्वचित्स्याजलवर्षणम् ॥ २५० ॥

वज्रम हों तो राजाओंमें कलह हो और कहीं कहीं वर्षा हो ॥ २५० ॥

मार्तण्डःसिद्धियोगेचेत्कुर्याद्रौद्रप्रवेशनम् ।

धनधान्यांबरादीनांवृद्धिः स्यात्तर्हि रोगदः ॥ २५१ ॥

सिद्धि योगमें हो तो धन धान्य वस्त्रादिकोंकी वृद्धि हो और रोग हो ॥ २५१ ॥

व्यतिपाताभिधयोगेरविराद्रागतोयदि ।

तर्हिराज्ञोजनानांचनिश्चयेनधनक्षयः ॥ २५२ ॥

व्यतिपातमें हो तो राजा प्रजा दोनोंका धननाश हो ॥ २५२ ॥

वरीयान्वर्तमानश्चेद्रवेरार्द्राप्रवेशने ।

अल्पवृष्ट्यखिलंधान्यकंदमूलादिदुर्लभम् ॥ २५३ ॥

वरीयानमें हो तो कम वर्षा होनेसे कंद मूल फल धान्य (सिद्धि) दुर्लभ हों ॥ २५३ ॥

परिधेसतियोगेचक्षुमणिःशिवभंजयेत् ।

तदाधर्मार्थयोर्नाशोराजानःपरिपीडिताः ॥ २५४ ॥

परिधमें हो तो धर्म अर्थ इन दोनोंका नाश हो और राजा पीडित रहें ॥ २५४ ॥

शिवयोगेशिवक्षेचेद्वजेद्विसनायकः ।

सदाचाररताःसर्वेसदामांगल्यभागिनः ॥ २५५ ॥

शिव योगमें हो तो सब लोग सदाचारी रहें और मंगल भोगी हों ॥ २५५ ॥

सिद्धियोगेसहस्रांशोशिवनक्षत्रयायिनि ।

ओदनानांहिकार्याणांसिद्धिसम्पादकंवहु ॥ २५६ ॥

सिद्धि योगमें हो तो बहुतसे ओदन काप्यं भले प्रकार सिद्ध ॥ २५६ ॥

अंशुमात्रौद्रनक्षत्रंसाध्ययोगेप्रयातिचेत् ।

असाध्यमपिसाध्यंस्यात्कार्यंतर्हिबुधमताम् २५७ ॥

साध्यमें हो तो असाध्य कार्यभी सिद्ध हो जाय ॥ २५७ ॥

शुभयोगेदिनेशश्चेन्नक्षत्रंधूर्जट्यैर्जजेत् ।

तर्हिकीलालवृष्टिःस्यात्सर्वेसंतुष्टमानसाः ॥ २५८ ॥

शुभमें हो तो अच्छी वर्षा हो और उससे सब सन्तुष्ट हों ॥ २५८ ॥

शुक्रयोगेदिनकरेकूतरौद्रागमेसति ।

जलवर्षणयोगेनधान्याद्युपचयोभवेत् ॥ २५९ ॥

शुक्र योगमें हो तो जल वर्षणसे खेती अच्छी उत्पन्न हो ॥ २५९ ॥

ब्रह्माभिधानयोगेचेन्नलिनीशःशिवर्क्षगः ।

जलंचसकलंधान्यमध्यमंतर्हिजायते ॥ २६० ॥

ब्रह्म योगमें हो तो जल तथा धान्य सब मध्यम हों ॥ २६० ॥

ऐन्द्राभिधानयोगेचेद्विरोचनसमन्वितः ।

त्रिलोचनस्यनक्षत्रंतदानींजलवर्षणम् ॥ २६१ ॥

ऐन्द्रमें हो तो जल वर्ष ॥ २६१ ॥

सतिवैधृतियोगेचेत्तरणिःशिवधिष्ण्यगः ।

सर्वेषामपिजन्तूनांतदाव्याधिभयंभवेत् ॥ २६२ ॥

और वैधृति योगमें आर्द्रा प्रवेश हो तो सब जीवोंको व्याधि-
भय हो ॥ २६२ ॥

समयफलम् ।

सूर्योदयेरोगकरीस्मृताद्रावटीद्वयेविग्रहुरोगयोगः ।

मध्याह्नकालेकृषिनाशनायधान्यमहर्धचतृणस्य

नाशः ॥ २६३ ॥ इति ॥

“समय फल”—सूर्योदयके समय आर्द्रा प्रवेश होनेसे रोग हो
 दो बड़ी दिन चढ़े होनेसे विग्रह हो, दुपहरमें होनेसे खेतीका नाश
 हो धान्य मर्हंगा हो और घासका नाश हो ॥ २६३ ॥

संध्यास्थितार्द्राकुरुतेसुभिक्षंरात्रौस्थितासर्वसुखा-
 यलोके । भोगंप्रदत्तेखलुमध्यरात्रेःपूर्वसुखंदुःख-
 मतोऽपरत्र ॥ २६४ ॥ इति ॥

सन्धिमें हो तो सुभिक्ष हो, रात्रिमें हो तो सब लोगोंको सुख हो,
 मध्यरात्रि (आधी रात) में हो तो भोग प्रदान करे और आधीसे
 पूर्व भागमें सुख तथा पर भागमें हो तो दुःख हो ॥ २६४ ॥

आर्द्राप्रवेशे लग्नम् ।

रौद्रप्रवेशेतरणिर्विधुश्चेत्त्रिकोणसंस्थोथचतुष्टयस्थः ।
 जलक्षगोवाशुभवीक्षितोवाधान्यंप्रभूतंनिखिलंतदा-
 नीम् ॥ २६५ ॥ इति ॥

“आर्द्रा प्रवेशका लग्ननिरिक्षण”—यदि आर्द्रा प्रवेशकी लग्नकुण्डलीमें
 सूर्य और चन्द्रमा नीचे पाँचवें हों अथवा पहले—चौथे—सातवें—दशवें
 स्थानमें हों—या जल राशिमें हों और शुभ ग्रह उनको देखते हों तो
 सम्पूर्ण धान्य उत्पन्न हों ॥ २६५ ॥

(८) जगद्धर्माविचारः ।

चैत्रमासेषुनःप्राप्तेलोकानांहितहेतवे ।
 मेघसंक्रांतिवेलायांलग्नशोध्यंशुभाशुभम् ॥ २६६ ॥

(८) “जगद्धर्माविचार”—जब नवीन संवत्सर आवे तब उसमें
 मेघ संक्रांतिके समयका लग्न स्थापन करके संसारके हितके निमित्त
 उसका शुभाशुभ विचार करे ॥ २६६ ॥

यदाशुभग्रहैर्दृष्टंलग्नस्यात्तदाशुभम् ।

धनधान्यादिसंपूर्णसर्ववर्षशुभावहम् ॥ २६७ ॥

यादि उस लग्न (जगल्लग्न) को शुभ ग्रह देखते हों तो शुभ होता है ।
और उस वर्षमें धन धान्यादि सम्पूर्ण वस्तु अच्छी उत्पन्न होती है ॥ २६७ ॥

भावाद्वादशतेमासाःसौम्याःक्रूरग्रहाःपुनः ।

तेषुमासेषुदेवेशिफलंज्ञेयंशुभाशुभम् ॥ २६८ ॥

जगल्लग्नमें जो तत्तु आदि बारह भाव होते हैं उन्हीं बारहों भावोंको
चैत्रादि बारह मास मान कर सौम्य और क्रूर ग्रहोंकी स्थितिके अनु-
सार फल देखकर उन महीनों का शुभाशुभ जानि ॥ २६८ ॥

मेघप्रवेशलग्नेवायदिस्याद्धर्षजन्मनि ।

सप्तमस्थोयदापायोधान्यजातंविनाशयेत् ॥ २६९ ॥

मेघ प्रवेश लग्न (वर्ष जन्मलग्न—अथवा जगल्लग्न) में सातवें पापग्रह
हों तो—खड़ी ऐतिका नाश करते हैं ॥ २६९ ॥

धनेव्ययेचसौम्यश्चकेन्द्रेवामेघसंक्रमे ।

स्वर्गेशुभेसुहृदृष्टःसुभिक्षंव्यत्ययोऽन्यथा ॥ २७० ॥

यादि उसमें दूसरे वाहरमें अथवा केन्द्रमें सौम्य ग्रह हों और
स्वर्गही हों तथा मित्र ग्रहोंकी उन पर दृष्टि हो तो सुभिक्ष होता है ।
अन्यथा दुर्भिक्ष होता है ॥ २७० ॥ इति ।

वर्षलग्नविचारमाह ।

चैत्रशुक्लेपुनःप्राप्तेलोकानांहितहेतवे ।

प्रतिपल्लग्नवेलायांलग्नेशोध्यंशुभाशुभम् ॥ २७१ ॥

“अब संवत्सरके जन्मलग्नका फल कहते हैं ।”—जब फिर चैत्र
शुक्ले नवीन वर्ष आरंभ हो तब संवत्सरकी शुभकामनाके निमित्त
उस दिन जिस समय प्रतिपदा लगे उस समयका लग्न लगाकर उसमें
शुभाशुभ शोधना चाहिये । अर्थात् चैत्र शुक्ल प्रातःपदा आरंभ
होनेके समय अमावस्य जितनी घड़ी हो उसीको दृष्ट मानके उसपर
लग्न लगावेना चाहिये ॥ २७१ ॥

मेपलमेतुपूर्वस्यां दुर्भिक्षराजविग्रहः ।

दक्षिणस्यां सुभिक्षस्याद्बहुधान्यरसाचभूः ॥ २७२ ॥

यदि उस समय मेप लग्न हो तो उस वर्षमें पूर्वमें राजविग्रह तथा दुर्भिक्ष हो, दक्षिणमें बहुत धान्य और सुभिक्ष हो ॥ २७२ ॥

धान्यानां विक्रये लाभः पूर्णमेघमहोदयः ।

घृततैलादिवस्त्रूनां पण्यानां च महर्घता ॥ २७३ ॥

धान्योंके बेचनेसे लाभ हो, मेघ बहुत वर्ष, घी तैलादि महंगे हों ॥ २७३ ॥

उत्तरस्यां सुभिक्षस्याद्राज्ञासुद्वेगकारणम् ।

मध्यदेशे महावृष्टिर्निष्पत्तिर्धान्यसन्ततेः ॥ २७४ ॥

उत्तरमें सुभिक्ष हो, राजाओंमें उद्वेग हो, मध्य देशमें महावर्षा और धान्य उपजे ॥ २७४ ॥

वृषेपि पश्चिमे कालः पूर्वस्यां राजविग्रहः ।

उदग्धान्यार्द्धनिष्पत्तिर्दक्षिणस्यां विकालतः ॥ २७५ ॥

वृषलग्न हो तो पश्चिममें काल, पूर्वमें राजविग्रह, उत्तरमें आधी उपज और दक्षिणमें काल पड़े ॥ २७५ ॥

मिथुने बहुलं युद्धं पूर्वस्यां धान्यनष्टता ।

उदग्दक्षिणयोर्मैवावहवो धान्यसंग्रहः ॥ २७६ ॥

मिथुन लग्न हो तो युद्ध बहुत हो पूर्वमें खेती बिगड़े उत्तर दक्षिणमें वर्षा और धान्य बहुत हो ॥ २७६ ॥

पश्चिमायां स्वल्पमेघाश्छत्रभंगश्च विग्रहः ।

मध्यदेशे र्द्धनिष्पत्तिश्चतुष्पदस रोगता ॥ २७७ ॥

पश्चिममें कम वर्षा तथा छत्रभंग हो, मध्य देशमें आधी उत्पत्ति और पञ्चोंमें रोग हो ॥ २७७ ॥

कर्केसुखंतुपूर्वस्यामुत्तरस्यांतुविग्रहः ।

स्याच्चासनबलंयावद्दुर्भिक्षंपश्चिमेदिशि ॥ २७८ ॥

कर्कमें पूर्वमें सुख, उत्तरमें दुःख तथा आसन बल और पश्चिममें दुर्भिक्ष हो ॥ २७८ ॥

सिंहलग्नेदक्षिणस्यांदंष्ट्राभयमुदीर्यते ।

धान्येसमर्घतामासषट्कंयावद्धनंमहत् ॥ २७९ ॥

सिंहमें दक्षिणमें दाढ़भय, धान्यमें समर्घता और छः मासतक महाधनकी प्राप्ति हो ॥ २७९ ॥

पश्चिमायां धातुवस्तुफलादीनामहर्घता ।

उत्तरस्यामहावृष्टिःसुखंरान्येप्रजासुच ॥ २८० ॥

पश्चिममें धातुकी वस्तु और फल मंहगे हों, उत्तरमें महावृष्टि और राजा प्रजामें सुख हो ॥ २८० ॥

पूर्वस्यामर्द्धनिष्पत्तिःत्रेयोग्रेमासपञ्चकात् ।

मध्यदेशेराजयुद्धंमासेपञ्चकसुद्धृतम् ॥ २८१ ॥

पूर्वमें आधी उपज हो, आगे पांच मासमें कल्याण हो, मध्य देशमें ५ मास राजयुद्ध रहे ॥ २८१ ॥

कन्यायांसुस्थिराग्राच्याघृतेमहर्घतामता ।

मंजिष्ठादिसमर्घत्वंयावन्मासत्रयंभवेत् ॥ २८२ ॥

कन्यामें पूर्वमें स्थिरता, घीकी मंहगाई और ३ मास मंजीठ आदि सस्ते हों ॥ २८२ ॥

मारिर्दक्षिणदेशेस्यात्तथा वंगेष्युपद्रवः ।

लोकदुःखं पश्चिमायां विग्रहोन्नसमर्घता ॥ २८३ ॥

दक्षिणमें मरी पड़े, बंगालमें उपद्रव हो । पश्चिममें लोक विग्रह और अन्न मंहगा हो ॥ २८३ ॥

चतुष्पदसुखं प्राच्यामुदीच्यां राजविग्रहः ।

मध्यदेशेप्रजाभङ्गःसमर्घत्वंघृतेपुनः ॥ २८४ ॥

फिर चौपायोंमें सुख, पूर्वोत्तरमें राजविग्रह, मध्य देशमें प्रजाभंग और घाँकी सौंवाई हो ॥ २८४ ॥

तुलालग्रेमध्यदेशेछत्रभंगश्चविग्रहः ।

धान्यस्यविक्रयः प्राच्यांछत्रभंगमुपद्रवः ॥ २८५ ॥

तुलामें मध्यदेशमें विग्रह तथा छत्रभंग हो । पूर्वमें भी छत्रभंग और उपद्रव हो ॥ २८५ ॥

दुर्भिक्षं बहुलो वायुः स्वल्पमेघप्रवर्षणम् ।

पश्चिमायामहायुद्धं दंष्ट्राभयमहर्घता ॥ २८६ ॥

दुर्भिक्ष हो वायु बहुत चले वर्षा कम हो पश्चिममें महायुद्ध हो और दाढ़भय तथा महंगाई हो ॥ २८६ ॥

दक्षिणस्यां सुखं लोके दुर्भिक्षं चोत्तरापथे ।

मासद्वयंपश्चिमायां किंचिदुत्पातसंभवः ॥ २८७ ॥

दक्षिणमें सुख, उत्तरमें दुर्भिक्ष और पश्चिममें दो मास कुछ उत्पात हो ॥ २८७ ॥

वृश्चिके पश्चिमे देशे दुर्भिक्षं नवमासिकम् ।

उदीच्यामर्द्धनिष्पत्तिः समर्घा धातवस्तदा ॥ २८८ ॥

वृश्चिकमें पश्चिममें नौ मास दुर्भिक्ष, उत्तरमें आधी उत्पात्ति और धातुओंकी समर्घता हो ॥ २८८ ॥

पूर्वस्यां विग्रहो राज्ञां दुःखं मासत्रयं जने ।

पश्चात्सुखं धान्यनाशो मध्यदेशे प्रजायते ॥ २८९ ॥

पूर्वमें राजाओंमें विग्रह, मनुष्योंमें ३ मास दुःख पीछे सुख और मध्यदेशमें धान्यनाश हो ॥ २८९ ॥

दक्षिणस्यां देशभंगो भावीवर्षे प्रजायते ।

धातूनां विक्रयः कार्यः परतो मासपंचकात् ॥ २९० ॥
दक्षिणमें भावी वर्षमें देशभंग हो और पांच मास पीछे धातु-
विक्रयमें लाभ हो ॥ २९० ॥

धनुर्लगे तूत्तरस्यांपूर्वस्यां च सुखं नृणाम् ।

दुर्भिक्षं प्रबला वृष्टिर्मध्यदेशे सरोगता ॥ २९१ ॥
धन लग्नमें उत्तर, पूर्वमें सुख हो, मध्यदेशमें प्रबल वर्षासे दुर्भिक्ष
तथा रोग हो ॥ २९१ ॥

पश्चिमायां घृतं धान्यं समर्घं मासपंचकात् ।

दक्षिणस्यां सुखं लोके किञ्चित्पीडा चतुष्पदे ॥ २९२ ॥
पश्चिममें पांच मासमें घी धान्य सस्ते हों, दक्षिणमें सुख रहे,
किन्तु चौपायोंको कुछ पीडा हो ॥ २९२ ॥

मकरे च महोत्पात उत्तरस्यां नृपक्षयः ।

वर्षमेकं सुनिष्पत्तिः पश्चिमायां महासुखम् ॥ २९३ ॥
मकरमें उत्तरमें बड़े उत्पात तथा नृपक्षय हो और १ वर्षतक
अच्छी उत्पात्ति तथा सुख हो ॥ २९३ ॥

मध्यदेशेर्द्धनिष्पत्तिः किञ्चिद्धान्यमर्धता ।

अकाले मेघवृष्टिः स्याल्लाभो धान्यस्य विक्रयात् ॥ २९४ ॥
मध्य देशमें आधी उत्पात्ति हो, कुछ धान्य महंगा हो, अकालमें
मेघ वर्षे और धान्यविक्रीमें लाभ हो ॥ २९४ ॥

कुंभे सुखानि पूर्वस्यामुदग्दुर्भिक्षसंभवः ।

हाहाकारः पश्चिमायां भवेद्धान्यमर्धता ॥ २९५ ॥
कुंभमें पूर्वमें सुख, उत्तरमें दुर्भिक्ष और पश्चिममें धान्यकी मह-
गाईसे हाहाकार हो ॥ २९५ ॥

दक्षिणेविग्रहश्चैव मध्यदेशे महासुखम् ।

मीनलग्ने दक्षिणस्यां सुखी लोकोन्नसंग्रहः ॥ २९६ ॥

दक्षिणमें विग्रह और मध्य देशमें सुख हो । और मीन लग्नमें दक्षिणमें सुख हो ॥ २९६ ॥

मध्यदेशे धान्यनाशश्छत्रभंगः कचिद्भवेत् ।

एवं द्वादशधा लग्नं ज्ञेयं वत्सरजन्मनि ॥ २९७ ॥

इति वर्षजन्मलग्नम् ।

मध्य देशकी खेती नष्ट हों और कहीं छत्रभंगभी हो । इस प्रकार बारह लग्नोंमें वर्षका जन्म लग्न देखना चाहिये ॥ २९७ ॥ (इति)

(९) अथ रोहिणीवासज्ञानम् ।

मेषार्कदिननक्षत्रादब्धौयुग्मतटेद्वयम् ।

गिरावेकंद्वयंसंधौसाभिजिद्वयनाभवेत् ॥ २९८ ॥

(९) "रोहिणी वास ज्ञान"—समुद्र चक्रमें मेष संक्रांतिके दिन जो नक्षत्र हो उससे आरंभ करके दो दो नक्षत्र समुद्रोंमें, दो दो क्षेपोंमें, एक एक पर्वतों पर और दो दो संधियों में इस प्रकार अभिजिद्वय सहित अष्टाईसों नक्षत्र स्थापन करे ॥ २९८ ॥

यदापयोनिधिस्थलेगतो विरचिभंतदा ।

अतीववर्षणं भवेत्समस्तधान्यवर्द्धनम् ॥ २९९ ॥

उनमें जिस जगह रोहिणी नक्षत्र पड़ा हो वहीं रोहिणी निवास जानना । यदि 'समुद्र' में रोहिणी हो तो अत्यंत वर्षा होती है और सब धान्य बढ़ते हैं ॥ २९९ ॥

यदिविधिधिष्ण्यं पततितटस्थम्

शुभजलवृष्टिर्धनकणवृद्धिः ॥ ३०० ॥

यदि तटमें रोहिणी हो तो शुभ वर्षा हो और अन्न धनकी वृद्धि हो ॥ ३०० ॥

रोहिणीनामनक्षत्रं पर्वतस्थं यदा भवेत् ॥

वृष्टिर्हानिस्तदा ज्ञेया सर्वस्य विनाशनम् ॥ ३०१ ॥

यदि पर्वत पर रोहिणी हो तो वर्षा नहीं हो और सब खेतियाँ सूख जाय ॥ ३०१ ॥

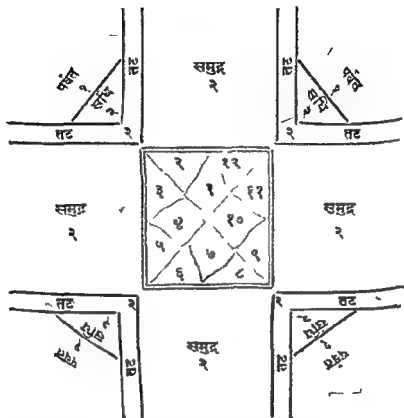
संधिसंस्थं यदा ब्राह्मभंजायते

खण्डवृष्टिस्तदा सर्वधान्यास्तयः ॥ ३०२ ॥ (इति

यदि सन्धिमें रोहिणी हो तो खण्ड वृष्टि हो किन्तु खेती सूखे नहीं ॥ ३०२ ॥

("समय निवास"—रोहिणी निवास समुद्रमें हो तो समय निवास मालीके घर, सन्धिमें हो तो वैश्यके घर, पर्वतमें हो तो कुम्हारके घर और तटमें हो तो धीर्विके घर जानना। "समय वाहन"—चैत्र शुक्ल प्रतिपदाकी सूर्यादि बारोंमें जो वार हो उनमें सूर्यमें अश्व, चं. मृग, मं. वृषभ, बु. सिंघाण, वृ. चातक, शु. दादुर और श. हो तो भैंसा वाहन होता है।)

मथ रोहिणीचक्रम् ।



(१०) स्तम्भानपनम् ।

चेत्रेसितप्रतिपदिरेवत्यांबहुलंजलम् ।

वैशाखशुक्लप्रतिपद्भरण्यांतृणसंभवः ॥ ३०३ ॥

(१०) "स्तम्भ ज्ञान"—(संवत्में चार स्तंभ देखे जाते हैं ।

जिस वस्तुका स्तंभ हो उसी वस्तुके आधिक्यसे वह संवत् व्यतीत होता है । जितने स्तंभ अधिक हों उतनाही अच्छा, जितने कम हों उतनाही मध्यम और कुठ्ठी स्तंभ न हो तो संवत् खराब

होता है ।) चैत्र शुक्ल प्रतिपदाको रेवती नक्षत्र हों तो 'जलका स्तंभ' होता है उस संबन्धमें जल अधिक वर्षता है । वैशाख शुक्ल प्रतिपदाको भरणी हो तो 'वृणका स्तंभ' होता है उससे घास अधिक होता है ॥ ३०३ ॥

ज्येष्ठशुक्लप्रतिपदिसृगेवातः शुभो भवेत् ।

आषाढशुक्लप्रतिपदादित्योधान्यसंभवः ३०४ ॥ (इति)

ज्येष्ठ शुक्ल प्रतिपदाको मृगशिर हो तो 'वायुका स्तंभ' होता है । उस वर्षमें वायु अधिक चलता है । और आषाढ शुक्ल प्रतिपदाको पुनर्वसु हो तो 'अन्नका स्तंभ' होता है । उस वर्षमें अन्न बहुत उत्पन्न होता है । (यदि जिस वर्षमें वह चारों स्तंभ हों तो यह वर्ष सबके लिये आनन्ददायक हो सकता है । और चारोंही न हों तो वह वर्ष दुःखदाई हो सकता है ॥ ३०४ ॥ (इति)

(११) अगस्त्योदयास्तानयनम् । तत्फलं च ।

पलभाष्टगुणिताष्टसप्ततितमेशीनंकृत्वाशेषेत्रिशता

भक्त्यल्लब्धसराशिः शेषमंशकलातुल्ये अगस्त्यास्तः ।

पुनः पलभाष्टगुणिताष्टनवतिमित्तैर्युक्तकृत्वा त्रि-

शताभक्त्यल्लब्धसराशिः यच्छेषं तदंशकलामिते अग-

स्त्योदयः ॥ ३०५ ॥

(' समयं मुहूर्तः ') - बारहों महीनोंकी संक्रान्तियोंके मुहूर्त जोड़कर इकट्ठे लिखे वही समयके मुहूर्त होते हैं । (१) बाहर महीनोंकी सब तिथियां जोड़ कर दूटी हुई तिथि घटानेसे "समय दिन होते हैं." किसीभी मासके शुक्ल पक्षकी दशमीको रविवार हो वह "दशमी रावि" कहोते हैं, जिस वर्षमें ऐसे दशमी दीतवार अधिक हों वे शुभ समझे जाते हैं । ऐसे दशमी दीतवारों की कुल सब धड़ी जितनी अधिक हों वह शुभ हैं ")

(११) “अगस्त्यका उदयास्त लानेकी विधि”-पलभाको ८ से गुण कर ७८ अठहत्तरमें घटावे जो शेष रहे उसमें ३० का भाग दे जो लब्ध हो वह सूर्य राशि और जो शेष हो वह अंश कला जानना, सूर्यके उन राशि अंश कलाके तुल्य अगस्त्य अस्त होता है यथा-पलभा ५ । ५८ को ८ से गुणे ४७ । ४४ हुए । इनको ७८ में घटाये ३० । १६ शेष रहे । इनमें ३० का भाग दिया तो १।०। १६ आये अतः वर्षके ० अंश १६ कला पर अगस्त्यास्त जानना । और उसी अष्ट गुणित पलभाको ९८ अठानवेमें जोड़ कर ३० का भाग देनेसे जो लब्धि हो वह राशि और जो शेष हो वह अंश कला होते हैं । सूर्यके उन राशि अंश कलाके तुल्यमें अगस्त्यका उदय होता है । यथा-अष्टगुणित पलभा ४७।४४को ९८में जोड़नेसे १४५। ४४ हुए । इनमें ३०के भागसे ४लब्धि हुई यह राशि और २५।४४ शेष रहे यह अंश कला । सूर्यके इन राशि अंश कलाके प्रामित अगस्त्यका उदय होता है । (सूर्यके उक्तांश और इष्टांशोंमें जो अंतर हो उसमें सूर्य गतिका भाग देनेसे उदयास्तके दिन घटी पल लब्ध होते हैं) यथा-अस्तमें सूर्यके इष्टांश १।०। १।२७ प्रोक्तांश १।०। १६ अंतर घटी १४।३३ रवि गति ५७।४० का भाग देनेसे लब्ध ०।१५।८ यह * “राजपुताना पंचांग” में सं. १९७४ ज्येष्ठ, कृष्ण ८ सोमवारको १५.

* यह ‘राजपुताना पंचांग’ जैपुर राजकीय सभ्यता पाठशालाके प्रोफेसर (अध्वक्ष) पं० श्रीदुर्गाप्रसादजी द्विवेदीके शिष्य ‘ ज्योतिषरत्न ’ पं० झूना-लालशर्मा द्वारा निर्मित होता है । और “ गुलाबचंद बुवमेछर जयपुर मिट्टी ” के पतेपर (=) में मिलता है । भारत वर्षके अनेकों विद्वानोंने इसका गणित शुद्ध देख कर मुहूर्त, तथा वर्ष जन्मपत्र देखने, व्रतोत्सवादिका निर्णय करने और संवास-रका शुभाशुभ (तेजी मन्दी आदि) जाननेमें उपयोगी समझकर जैपुर-जोधपुर-उदैपुर-अलवर-भरतपुर आदि राजपुतानेयमें इसका प्रचार फैलानेकी आन्तराय अभिलाषा प्रगट की है । अतः इस पुस्तकसे स्वतः शुभाशुभ इस पंचांगसे देखना उचित प्रतीत होता है (अनुवादक) ।

घड़ी ८ पल गये पीछे अगस्त्यास्त हुआ । और इसी प्रकार द्वितीय भाद्रपद कृष्णिकादशी बुधको ८ घड़ी १९ पलपर अगस्त्यका उदय हुआ ।) ॥ ३०५ ॥

रात्राबुदयनंश्रेष्ठोनेष्टश्चास्तंगमोमुनेः ।

दिवसेस्तंगमः श्रेष्ठोनेष्टश्चाभ्युदयस्तदा ॥ ३०६ ॥

“अगस्त्योदयास्त फल”-रात्रिमें अगस्त्यमुनिका उदय श्रेष्ठ और अस्त नेष्ट होताहै । एवं-दिनमें अस्त श्रेष्ठ और उदय नेष्ट होताहै ॥ ३०६ ॥

यद्युदेतिदिनेप्रातःपीताब्धिर्मुनिपुंगवः ।

दुर्भिक्षरौरवंचोरंराष्ट्रभंगंतदादिशेत् ॥ ३०७ ॥

यदि दिनमें अगस्त्य उदय हो तो घोर दुर्भिक्ष तथा राज्यभंग हो ॥ ३०७ ॥

रवौवापूर्वफाल्गुन्यांप्राप्तेचैवाष्टमेऽहनि ।

अगस्तेरुदयोलोकेनशुभायकचिन्मते ॥ ३०८ ॥

यदि पूर्वाफाल्गुनी पर सूर्य आनेसे आठवें दिन उदय हो तो भी अच्छा नहीं ॥ ३०८ ॥

कृत्तिकायांरवौजातेसप्तमेवाष्टमेहनि ।

ऋषेरस्तंगतिःश्रेष्ठादिवसेयदिजायते ॥ ३०९ ॥

यदि कृत्तिकापर सूर्य आनेसे सातवें आठवें दिन अगस्त्य ऋषिका दिनमें अस्त हो तो श्रेष्ठ होताहै ॥ ३०९ ॥

यद्यगस्तेरुदयनेवर्षाहर्षायजायते ।

सर्वधान्यस्यनिष्पत्तिर्नचेद्भिक्षापिदुर्लभा ॥ ३१० ॥

यदि अगस्त्यके उदय होनेपर वर्षा हो तो दुर्घ उत्पन्न करता है । और वर्षा न हो तो भिक्षाभी दुर्लभ होजाती है ॥ ३१० ॥ (इति) ॥

१२) अथ गुरुदयमानेन वर्षज्ञानम् ।

स्यादूर्जादिषुमासेषुवह्निभादिद्वयंद्वयम् ।

उषांत्यपंचमांत्येषुनक्षत्राणांत्रयंत्रयम् ॥

अस्मिन्नभ्युदितोजीवस्तन्नक्षत्राख्यवत्सरः ३११इति

(१२) "गुरुदयमानका वर्ष"—जिस समय गुरु उदय हो उस समय वह जिस नक्षत्रपर हो और उस नक्षत्रको जो महीना हो वही महीना गुरुदय मानसे वर्ष कहाताहै। यथा—कृत्तिका—रोहणी पर गुरु हो तो 'क्रांतिक संज्ञक वर्ष होताहै। मृ० आ० पर हो तो मार्गशीर्ष पु. पु. से पौष । आश्लेषा मघासे माघ । पू. उ. इ. से फाल्गुन । चि. स्वातीसे चैत्र । वि. अनु. से वैशाख ज्ये, मृ. से ज्येष्ठ । पू. उ. से आषाढ । श्र. घ. से श्रावण । श. पू. उ. से भाद्रपद । और रे. अ. म. से आश्विन संज्ञक वर्ष होताहै ॥ ३११ ॥

गुरुदयमानीयवर्षफलम् ।

स्यात्पीडाकार्त्तिकेवर्षेवह्निगावोपजीविनाम् ।

शस्त्राग्नेश्वभयंवृद्धिःपुष्पकौसुंभजीविनाम् ॥ ३१२ ॥

"इन वर्षोंका फल"—इस प्रकारसे—आयाहुआ कार्तिक वर्ष हो तो सुनार—भड़मूजे और ग्वालोंको शस्त्र तथा अग्निके घातादिकी पीडा हो और पीले तथा लाल पुष्प बेंचनेवालोंकी वृद्धि हो ॥ ३१२ ॥

मार्गवर्षेत्वल्पवृष्टिःसस्यहानिरनेकधा ।

राजानोयुद्धनिरताअन्योन्यवधकाक्षिणः ॥ ३१३ ॥

मार्गशीर्ष वर्ष हो तो वर्षा कम हो—खेती नष्ट हों और परस्परमें मारडालनेकी इच्छा करके राजा लोग युद्धमें फँसे ॥ ३१३ ॥

पौषेव्देसुखिनः सर्वेगुरुपूजारताजनाः ।

क्षेत्रंसुभिक्षमारोग्यंवृष्टिःकृषकसम्मताः ॥ ३१४ ॥

पौष नामक वर्ष हो तो सब लोग सुखी रहें. नदोंकी तथा गुरुकी

पूजामें रत रहें । खेती अच्छी होनेसे सुभिन्न और आरोग्य हो तथा
कृषकोंकी इच्छानुसार वर्षा हो ॥ ३१४ ॥

माघेसंपत्करोब्दः स्यात् सर्वभूतहितोदयः ।

सम्यग् वर्षति पर्जन्यः सुमिक्षं च प्रजायते ॥ ३१५ ॥

माघ वर्ष हो तो सब प्राणियोंके हितका उदय हो और वर्षा
भले प्रकारसे वर्षे ॥ ३१५ ॥

फाल्गुनाब्दे चौरभीतिः स्त्रीणां दुर्भगता भृशम् ।

कचिद्वृष्टिः कचित्सस्यं कचिद्भीरीतयः कचित् ३१६ ॥

फाल्गुन वर्ष हो तो चौरभय, स्त्री दुर्भग, वहाँ वर्षा, कहीं अन्न
और कहीं ईति, कहीं भयहो ॥ ३१६ ॥

चैत्राब्दे भृशजः स्वच्छाः स्त्रीषु चाल्पप्रजा भवेत् ।

अल्पवृष्टिः स्वल्पधान्यं प्रजानां व्याधितो भयम् ३१७

चैत्रमें राजा स्वच्छ, स्त्री स्वल्पप्रजा, वर्षा कम, खेती न्यून और
प्रजामें व्याधि हो ॥ ३१७ ॥

आषाढमें राजा लोग सदैव कलह करनेमें इच्छित रहें । कहों ईति कहीं भीति, कहीं वृद्धि और कहीं वर्षा हो ॥ ३२० ॥

श्रावणाव्देधराभातित्रिदशरूपर्द्धिमानवैः ॥

धरापुष्पफलयुक्तापरिपूर्णाध्वरादिभिः ॥ ३२१ ॥

श्रावण वर्षमें पृथ्वी ऐसी शोभित हो कि जिससे इन्द्रपुरी भी ईर्ष्या करे । पृथ्वीपर कई प्रकारके फल पुष्प बहुत उत्पन्न हों और यज्ञादिसे परिपूर्ण रहे ॥ ३२१ ॥

अव्देभाद्रपदेवृष्टिःक्षेमारोग्यंक्वचित्क्वचित् ।

सर्वसस्यसमृद्धिःस्यान्नाशमेत्यपरंफलम् ॥ ३२२ ॥

भाद्रपद वर्षमें कहीं २ वर्षा तथा क्षेम आरोग्य हो । और धान्य वृद्धि तथा फलनाश हो ॥ ३२२ ॥

अव्देत्वाश्वयुजेत्यर्थमुत्खिनःसर्वजन्तवः ।

मध्यमंपूर्वसस्यंस्यात्पग्निपूर्णाविपच्यते ॥ ३२३ ॥

और आश्विन संज्ञक वर्ष हो तो सब प्राणी सुखी रहें । प्रथम धान्य (जौ गेहूँ) कम हों और तब प्रकारसे परिपूर्णता हो ॥ ३२३ ॥ इति ॥

(१३) अथविशोपकानपनम् ।

शाकस्त्रिगुण्योनगभाजितश्चशेषंद्विनिर्गंशरत्नयुतं

च । लब्धंचशाकंचपुनःप्रकल्प्यपूर्वोक्तवत्स्युः

खलुविश्वकारुण्याः ॥ वर्षाचधान्यंतृणशीततेजो

वायुश्चवृद्धिःक्षयविग्रहोच ॥ ३२४ ॥

(१३) "विशोपका" — (अर्थात् सम्यक्त्वे वर्षा आदि कितने

विधा होंगे यह जाननेका विधि ।) शाकको तनिके गुणकर सानका भाग देनेसे जो शेष रहे उसे दुग्धना कटके पांच युक्त करे तो वर्षाके विश्वास होते हैं । आगे पूर्वोक्त लब्धिकी शक मानकर फिर ठसी

प्रकार को तो धान्य, तृण, शीत, तेज, वायु, घृष्टे, क्षय और विग्रह इनके विश्वा आजाते हैं ॥ ३२४ ॥

शाकं च वेदगुणितं सप्तभिर्भागमाहरेत् ।

शेषं द्विघ्नं त्रिभिर्गुणैः प्रोक्तं विश्वाख्यसंज्ञकम् ॥ ३२५ ॥

क्षुधा तृषा तथा निद्रा चालस्य चोद्यमस्तथा ।

शान्तिः क्रोधस्तथा दंभो लोभो मैथुनमेव च ॥ ३२६ ॥

ततस्तुरसनिष्पत्तिः फलनिष्पत्तिरेव च ।

उत्साहः सर्वलोकानां ज्ञातव्यं निश्चितं बुधैः ॥ ३२७ ॥

शाकेको चारसे गुण कर सातका भाग देनेसे जो केष रहे उसको दुगुना करके तीन मिलानेसे क्षुधा, तृषा, निद्रा, आलस्य, उद्यम, शान्ति, क्रोध, दंभ, लोभ, मैथुन, रसनिष्पत्ति, फलनिष्पत्ति और सब लोकोंका उत्साह इनके विश्वा जाने जाते हैं ॥ ३२५।३२६।३२७

शकाब्दं वसुभिर्निघ्नं नवभिर्भागमाहरेत् ।

शेषं तु द्विगुणीकृत्य रूपमत्रापियोजयेत् ॥ ३२८ ॥

उग्रपापं च पुण्यं च व्याधिं व्याधिनाशनम् ।

आचारश्चाप्यनाचारो मरणं जनिरेव च ।

देशस्योपद्रवं स्वास्थ्यं चौराकुलभयं तथा ॥ ३२९ ॥

शाकेको आठसे गुण कर नौका भाग देनेसे जो केष बचें उनको दुगुना करके एक मिलानेसे उग्र, पाप, पुण्य, व्याधि, व्याधिनाश आचार, अनाचार, मरण, जन्म, देशोपद्रव, देशस्वस्थता, चौरभय और चौरनाश इनके विश्वा ज्ञात होते हैं ॥ ३२८ ॥ ३२९ ॥

शक्रः पञ्चभिः सप्तभिर्गोभिरीशैश्चतुर्धा हतः सप्तभ-

क्तावशिष्टः ॥ द्विनिघ्नं त्रिभिर्गुणैः सुद्रिज्जगच्चाह-

जत्वेदजानां हि विशोपकाः स्युः ॥ ३३० ॥

शकेको चार जगह लिख कर प्रत्येक को पांचसे-सातसे-तीस-और ग्यारहसे गुणकर सबमें प्रथक् प्रथक् सातका भाग देनेसे जो शेष रहें उनको दुगुने करके तीन मिलानेसे क्रमसे उद्भिज (वृक्ष लता बेलि, आदि), जरायुज (मनुष्य तथा गौ आदि पशु), अंडज (पक्षी तथा सर्पादि) और स्वेदज (पक्षीनेमें उत्पन्न होनेवाले जंतु-खटमल-आदि कीड़े) इनके विश्वा मालूम हो जाते हैं ॥ ३३० ॥

(पंचांग कर्ताओंके हितनिमित्त यहां हम इनके उदाहरण और देते हैं । यथा—(१) शके १८४० को ३ से गुणा ५५२० और ७ का भाग देनेसे ७८८ लब्ध और ४ शेष रहे । चारसो दुगुने किये ८ और ५ मिलाये तो १३ हुए यह वर्षा १३ विश्वा हुई, आगे लब्ध ७८८ को शक मानकर शेष काम उसी प्रकार करनेसे धान्य वृण आदिके विश्वा आवेंगे । (२) शके १८४० को ४ से गुणा ७३६० कर सातका भाग दिया तो १०५१ लब्ध और शेष ३ रहें शेष ३ को दुगुना करके तीन युक्त किये ९ क्षुधाके विश्वा हुए । इसी प्रकार आगेभी जानना चाहिये । (३) शकेको ८ से गुणा १४७२० कर नौका भागदिया १६३७ लब्ध हुए । शेष १ को दुगुना करके १ मिलाया ३ हुए यह उग्रके विश्वा है । आगे इस प्रकार पापादिके विश्वा आते हैं । और (४) शके १८४० को चार जगह ५।७।९।११ से गुणा तो ९२०० । १२८८०।१६५६०।२०२४० हुए इनमें प्रथक् प्रथक् ७ का भाग देनेसे २ । ०।५। ३ बचे इनको दुगुने कर ३ जोड़नेसे ७।३।१३।९ उद्भिजादिके विश्वा हुए । इनके सिवाय औरभी सब वस्तुओंके विश्वा लगाये जाते हैं किन्तु विस्तारम्भसे यहां नहीं लिखे हैं । “संवत्सके विश्वा”—कर्क संक्रांतिके दिन जो बार हो उससे जाने जाते हैं । सूर्य हो तो १० चन्द्र हो तो २० म. हो तो ८ बु. १२ वृ. १८ शु. १८ और शनिवार हो तो ५ विश्वा जानन ।

(१४) अथायव्ययसाधनम् ।

स्वस्वामिवर्षाधिपवत्सरेक्यं त्रिघ्नशराढ्यंतिथि-
भक्तशेषम् । आयोथलब्धस्त्रिगुणाशराढ्याति-
थ्युद्धृताशेषमितोव्ययः स्यात् ॥ ३३१ ॥

(वर्षाणि) षट्सूर्येतिथयश्चन्द्रेष्टौभूमिजकेतथा ।
सप्तदर्शदुपुत्रेचदशमास्करनन्दने ॥ ३३२ ॥

एकोनविंशतिर्जोद्वेराहौद्वादशकंभवेत् । एकविं-
शतिराख्याताशुक्रत्यापितथैवच ॥ ३३३ ॥ (इति)

वर्षप्रबोध-पूर्वभागे प्रथमस्थलः ।

(१४) “लाभ स्वर्च जाननेकी क्रिया”-राशिके स्वामीके वर्षों
और संवत्सके राजाके वर्षोंको जोड़कर तीनसे गुणके पाँच मिलाकर
पन्द्रहका भाग देनेसे जो शेष हो सो लाभ और जो लब्धि हो
उसको तिगुनी करके पाँच मिलाकर पन्द्रहका भाग देनेसे जो शेष
रहे सो स्वर्च होता है यथा-राशि मेष इसके स्वामी मंगलके वर्ष ८,
राजा शनिके वर्ष १०, इनको जोड़े १८ हुए । तीनसे गुने ५४ हुए ५
मिलाये ५९ हुए १५ का भाग दिया १४ शेष रहे यह मेषका लाभ है ।
फिर लब्धि ३ को तीनसे गुणकर पाँच मिलोक १५ का भाग दिया
तो शेष १४ रहे यह मेषका स्वर्च हुआ इसी प्रकार सब राशिपरि
जानना चाहिये । स्मरण रहे कि लाभ स्वर्च विंशोत्तरी और अष्टो-
त्तरी इन दोनों मतसे लगाया करतेहैं सो जिस मतके लगाने हों
उसी मतके वर्ष लेने चाहिये । विंशोत्तरीके सू. ६।चं. १०।मं. ७। रा.
१८।वृ. १६।शनि १५।बु. १७।शुक्रके २० वर्ष होतेहैं । अष्टोत्तरीमतने
सूर्यके ६ । चं. १५ । मं. ८ । बु. १७ । म. १० । वृ. १९। रा. १२
और शुक्रके २२ वर्ष होते हैं ॥ ३३१ ॥ ३३२ ॥ ३३३ ॥

इति श्रीदत्तमानगर्मासंगहीत संवत्सर फल प्रबोधके पूर्व

भागका प्रथम स्थल समाप्त ।

(१) अथ खेचरचारे सूर्यचारः ।

साम्प्रतमयनंसवितुः कर्कटकाद्यंमृगादितश्चान्यत् ।
उक्ताभावोविकृतिःप्रत्यक्षपरीक्षणैर्व्यनक्ति ॥ १ ॥

(१) “अब खेचरचार में ‘सूर्यचार’ का विचार लिखते हैं ।”
वर्तमानमें सूर्यके कर्कादि और मकरादिसे दक्षिणायन और उत्तरा-
यण यह दो अयन होतेहैं । कथित रीतिके अभावको विकृति कहते
हैं । अतः प्रत्यक्ष परीक्षित युक्ति प्रकाशित करते हैं ॥ १ ॥

दूरस्थचिह्नवेधादुदयेस्तमयेपिवासहस्रांशो ।
छायाप्रवेशनिर्गमचिह्नैर्वामण्डलेमहति ॥ २ ॥

सूर्यके उदयास्त समयमें महामण्डलकी वृत्तिके चिह्नोंके वेधसे
अथवा छायाके प्रवेश और निर्गमके चिह्नोंसे अयनपरिवर्तनका ज्ञान
होताहै ॥ २ ॥

अप्राप्यमकरमर्कोविनिवृत्तोहन्ति संपरायाम्याम् ।
कर्कटमसम्प्राप्तोविनिवृत्तश्चोत्तरांसैन्द्रीम् ॥ ३ ॥

यदि सूर्य मकरमें बिना पहुँचेही लौट आये तो दक्षिणका नाश
होताहै । और कर्कमें बिना पहुँचेही लौट आये तो पूर्वसहित उत्तर
दिशाका नाश होताहै ॥ ३ ॥

उत्तरमयनमतीत्यव्यावृत्तःक्षेमसस्यवृद्धिकरः ।
प्रकृतिस्थश्चाप्येवंविकृतगतिर्भयकृदुष्णांशुः ॥ ४ ॥

यदि उत्तरायणको उलांच कर सूर्य लौटे तो क्षेम और तस्य(अन्न)
वृद्धि करताहै । इसीको प्रकृतिस्थ कहते हैं यदि इसमें विकार हो
तो भय होताहै ॥ ४ ॥

अमलवर्णपुरवक्रमण्डलःस्फुटविपुलामलदीर्घदी-
धितिः । अविकृततनुवर्णचिह्नभृजगतिकरोति
शिवंदिवाकरः ॥ ५ ॥

यदि सूर्य निर्मल देहवाला—गोल मण्डलवाला—स्पष्ट और बहु-
तमी निर्मल लम्बी किरणोंवाला हो तथा सूर्यके गोल बिंदुमें कुछभी
बिकार न हो रंगभी साफ हो और किसी भ्रांतिका उसमें कोई चिह्न
न हो तो ऐसे सूर्यनारायण जगत्का कल्याण करते हैं ॥ ५ ॥

असितविचित्रनीलपरुषोजनघातकरः ।

खगलृगभैरवखररुतेश्वनिंशाद्यमुखे ॥ ६ ॥

यदि सूर्यबिंब काला हो, विचित्र हो, नीला होकर भयंकर दीखता
हो और मायंकालमें पक्षी—हिरन—गीदड़े—और गधे रोवें तो मनु-
ष्योंका घात करता है ॥ ६ ॥

दिवसकृतःप्रतिसूर्योजलकृदुदग्दक्षिणेस्थितोऽ-
निलकृत् । उभयस्थःसलिलभयंनृपमुपरिनिह-
न्त्ययोजनहा ॥ ७ ॥

“प्रतिसूर्य”—यदि सूर्यका प्रतिसूर्य दीखे (अर्थात् उदयकालमें
जो लाल रंगका दूसरी तर्फमें एक सूर्य जैसाही और कुछ दीखता
करता है वह) उत्तरमें दीखे तो वर्षा होती है । दक्षिणमें दीखे तो
आंधी सूकान आते हैं । सूर्यके दोनों वालुओंमें दीखे तो जलभय
(महावृष्टि) हो सूर्यके ऊपर दीखे तो राजाका नाश, और नीचे
दीखे तो जननाश होता है ॥ ७ ॥

सूर्यस्यविविधवर्णाःपवनेनविघट्टिताःकराःसाम्ने ।

वियतिधनुःसंस्थनायेदृश्यन्तेतदिन्द्रधनुः ॥ ८ ॥

“इन्द्र धनुष”-सूर्यकी अनेक रंगोंकी किरणें पवनसे रुक कर बादलवाले आकाशमें जो धनुष जैसी दीखती हैं उसीको इन्द्र धनुष कहतेहैं ॥ ८ ॥

विदिगुद्धृतं दिक् स्वामिनाशनं व्यभ्रजं मरककारि ।

पाटलपीतकनीलैः शस्त्राग्निक्षुत्कृतादोषाः ॥ ९ ॥

ऐसा इन्द्र धनुष दिशाओंकी कोणोंमें (अग्नि-वैश्वदेव-वायु-और ईशानमें) दीखे तो तत्संहवर्ती दिशाके राजाका नाश होता है । और यदि बिनाही भेधके इन्द्रधनुष हो तो मरी पड़ती है । पाटल (पाटलके फूल समान) अथवा पीले रंगका या नीले रंगका हो तो शत्रु-अग्नि-भूखे मरनेका भय होता है ॥ ९ ॥

जलमध्येऽनावृष्टिर्भुविसस्यवधस्तरौ स्थिते व्याधिः

वरमीकेशस्त्रभयं निशिसचिववधाय धनुरेन्द्रम् ॥ १० ॥

वह इन्द्रधनुष यदि जलके बीचमें दीखे तो अनावृष्टि हो-पृथ्वी पर दीखे तो खेतीका नाश हो, वृक्षपर दीखे तो व्याधि हो-घमई पर दीखे तो शत्रु भय हो और रात्रिमें दीखे तो मन्त्री (मुशादियों) का वध हो ॥ १० ॥

सूर्येन्दुपरिवेपाणां फलं वक्ष्ये स्वयंततः ।

श्वेतवर्णे भवेद्द्रव्यं पीतवर्णे रुजाकरः ॥ ११ ॥

“परिवेप”-कभी कभी सूर्य अथवा चन्द्रमाके चौराफ मोल मण्डल दिखाई दिया करता है उसको परिवेप अथवा कुंडाला कहते हैं । वह परिवेप सफेद रंगका हो तो देशमें धन धान्य हों । पीले रंगका हो तो रोग हों ॥ ११ ॥

रक्तवर्णे भवेद्युद्धं कृष्णवर्णे नृपक्षयः ।

नीलवर्णे महावृष्टिर्वृषवर्णे वधूसरी ॥ १२ ॥

लालरंगका हो तो खुद हो । काले रंगका हो तो - राजा मरे । नीले रंगका हो तो बड़ी भारी वर्षा हो । धुँयेके समान हो तो धूसरता हो ॥ १२ ॥

स्वल्पेस्वरूपफलं सर्वबहूनांतुफलमहत् ।

जलद्रावेमहावृष्टिर्विवनाशेनृपक्षयम् ॥ १३ ॥

इनमें यदि न्यूनता हो तो फलमेंभी न्यूनता और अविकता हो तो फलमेंभी अधिकता हो । यदि उसमें जल कण्टके तो महावृष्टि हो और वह गोलाकार खण्डित हो तो राजाका नाश हो ॥ ११ ॥

अथसंक्रातिफलम् ।

यदैकराशिपरिभुज्यसूर्योराश्यंतरंयातिनभो-

विभागे । संक्रातिसंज्ञंखलुकालमेनमाचक्षतेशा-

स्त्ररहस्यविज्ञाः ॥ १४ ॥

संक्राति फलबोधकथनम् ।

वार	नक्षत्र	नाम	फल	काल	फल	दिशा
र.	उग्र	घोरा	शुद्धसुखा	पूर्वाह्न	वि. रा. सूर.	पूर्व
बु.	क्षिप्र	भवांशी	वैद्यसुखा	मध्याह्न	वैद्यसुख	पश्चिम
मं.	अर	महोदरी	चौरसुखा	अपराह्न	शुद्धसुख	दक्षिण
मु.	भैर	मन्दाकिनी	नृपसुखा	अटोप	पिशाचसुख	दक्षिण
बु.	ध्रुव	मान्दा	द्विजसुखा	अर्धरात्री	गङ्गासुख	उत्तरे
शु.	मिश्र	मिश्रा	पशुसुखा	अपर रात्री	नटसुख	पूर्व
ग	दाहण	राक्षसी	चाण्डालसुखा	मत्स्य	पशुपालसुख	पश्चिम

"संक्राति फल"—आकाश मण्डलमें सूर्य जब एक राशिकी भोग

कर दूतगीमें जाता है । उसी समयको पंडित लोग संक्रांति कहते हैं ॥ १४ ॥

मेघे रवी तुलाचन्द्रे षण्मासे धान्यलाभदः ।

वृषेऽर्के वृश्चिके चन्द्रस्तुर्ये मासेत्रलाभदः ॥ १५ ॥

वह संक्रांति जिस समय मेष राशिपर अर्क अर्थात् सूर्य मेषराशि पर आवे उस समय तुलका चन्द्रमा हो तो छः महीने धान्य लाभ हो । वृषका सूर्य आवे उस समय वृश्चिकका चन्द्रमा हो तो चार महीने अन्नका लाभ हो ॥ १५ ॥

मिथुनेर्के धनुश्चन्द्रस्तिलतैलात्रसंग्रहात् ।

मासैश्चतुर्भिर्लाभाय सरूरैश्चेन्न विद्यते ॥ १६ ॥

मिथुन पर सूर्य आवे तब धनका चन्द्रमा हो तो तिल तैलात्रके संग्रहसे चार महीनेमें लाभ हो किन्तु सूर ग्रह हों तो नहीं हो ॥ १६ ॥

कर्केर्के मकरे चन्द्रो दुर्भिक्षं कुरुते जने ।

घोरंवावच्चतुर्मासं दासीकृतधनेश्वरः ॥ १७ ॥

कर्क पर सूर्य आवे तब मकरका चन्द्रमा हो तो घोर दुर्भिक्ष हो, चार महीनेतक धनवानोंको भी नौकर बनादे ॥ १७ ॥

पण्मासाद्दिगुणो लाभः सिंहेर्के कुम्भचन्द्रतः ।

मीने चन्द्रश्च कन्यार्के छत्रभंगश्च विग्रहः ॥ १८ ॥

सिंह पर सूर्य आवे तब कुम्भका चन्द्रमा हो तो छः महीनेमें दुष्टना लाभ हो । कन्या पर सूर्य आवे तब मीनका चन्द्रमा हो तो न भंग और विग्रह हो ॥ १८ ॥

तुलाकें चंद्रमा मेषे पंचमे मासि लाभदः ।

वृश्चिकेकें वृषे चन्द्रे तिलतैलान्नसंग्रहः ॥ १९ ॥

प्रदत्ते द्विगुणं लाभं धान्यं मासद्वयांतरे ।

मिथुनेन्दुर्धनुष्यकें पंचमासान्नलाभदः ॥ २० ॥

तुल संक्रांतिके समय मेषका चन्द्रमा हो तो पांचवें महीनेमें लाभ हो । वृश्चिक संक्रांति समय वृषका चन्द्रमा हो तो तिल तैलान्नके संग्रहसे दो महीनेमें दुगुणा लाभ हो । धनार्कके समय मिथुनका चन्द्रमा हो तां पांच मासमें अन्न लाभ हो ॥ १९ ॥ २० ॥

कार्पासवृत्तसूत्रादेः पंचमे मासि लाभदः ।

मृगेकेंकर्कशीतांशुःपांसुलानांविनाशकः ॥ २१ ॥

कपास-घी-और सूत आदि पांच महीनेमें लाभ दें । मकर पर सूर्य आवे तब कर्कका चन्द्रमा हो तो कुलटा (खोटी छिपों) का नाश हो ॥ २१ ॥

सिंहेन्दुः कुम्भभानौ च तुर्ये मासेन्नलाभदः ।

कन्याचन्द्रेपि मीनेकस्तादृशीधान्यसंग्रहात् ॥ २२ ॥

कुंभ संक्रांतिके समय सिंहका चन्द्रमा हो तो चौथे मासमें अन्न लाभ हो । और मीन राशि पर सूर्य आवे उस समय कन्यापर चन्द्रमा हो तों मका, जुवार आदिके संग्रहसे चार महीने में लाभ हो ॥ २२ ॥ (इति)

नीचे लिखे कोष्ठकमें संक्रान्तिके वाहन फल जानना ।

करण	चव	माल्य	कोलय	तैलक	गर	घणिन	विष्ट	गफनि	चतुष्व	नाग	किस्तुप्र
मियात	बेडा	बढा	राढा	सुती	बेडी	खडी	चेडा	सुती	खडी	सुती	खडी
फळ	मथ	मथ्यन	महथ	समथ	मथ्यम	महथ	महथ	महथ	समथ	समथ	महथ
वाहन	सिंह	रपात्र	चराह	गदेभ	दुस्ती	महिणी	घोटक	कुत्ता	मेढा	बल	कुवकुद
उपवाहन	गज	भय	बैल	सुमिल	गदेभ	कैट	विह	शार्दूल	महिप	व्याघ्र	चराह
फल	अप	पीस	वीडा	पाडुर	लक्ष्मी	कलेश	स्थन	सुभिक्ष	केश	स्थेय	मृत्यु
घट	श्वेत	गदा	हरित	दण्ड	रक्त	ग्याम	फाला	चित्र	कम्बल	नस	चतवर्ण
आयुध	भुशुण्डी	कपा	राहग	कास्य	धनुष	तोमर	फुल	पाश	अफुरा	तलवार	बाण
पात्र	सुवर्ण	पायस	ताम्र	पद्मात्र	लोह	तीकर	पत्र	वस्त्र	कर	भूमि	काष्ठ
भक्ष्य	अन्न	कुंकुम	भक्ष्य	वादी	पय	दधि	चित्रात्र	गुड	मधु	घृत	अर्कुरा
लेपन	कस्तूरी	भुत	चन्दन	पशु	गोरोचन	आंवले	दुलद	सुरमा	सिन्धूर	अगर	कपूर
वर्ण	नव	भुत	सप	कैतकी	मृग	विघ्न	श्वरी	वैश्य	सूत्र	मिश्र	अन्यजन
पुष्प	पुलगा	जाती	बकुल	कैतकी	बैल	अर्क	कमल	दूवा	मल्लिका	पाटल	जपा
भूषण	गुपूर	कफण	मोती	मृगा	मुकुट	मणि	गुला	क्रीडा	नीलम	पुष्पाम	सुवर्ण
कंचुकी	निचित्र	पर्ण	हरित	भूजस्र	सात	पांश्वरा	नील	कृष्ण	अश्वन	नरकल	पाडुर
यय	वाला	कुमारी	गतालका	मुवा	प्रीडा	प्रगल्भा	बुद्धा	वन्ध्या	अतिवर्ध्या	पुत्रवती	संन्या

जिस कारणकी संक्रान्ति हो उसके वाहनफल चक्रसे समझना और संक्रान्ति जिस वाहनपर स्थित हो तथा जो वस्तु धारण करे उसीकी हानि समझना।

स्यात्कार्तिके वृश्चिकसंक्रमाहेस्यैमहर्घभुविशुकु-
वस्तु । म्लेच्छेषुरोगान्मरणायमंदःकुजःपरधा-
न्यरसग्रहाय ॥ २३ ॥ लाभस्तुतस्यत्रिगुणत्रि-
मासान्बुधेचपृगादिफलं महर्घम् । गुरौचशुक्रेति-
लतैलमूत्रकार्पाससूत्रादिमहर्घतास्यात् ॥ २४ ॥

“संक्रांति समयके मास तथा बारफल”-(प्रायः व्यापागादि विषयमें दीपावली पीछे वर्ष बदलता है अतः इसी अभिप्रायसे यहाँ कार्तिकादि महीनोंके क्रमसे फलका उल्लेख हुआ है ।) यदि कार्तिक महीनेमें वृश्चिककी संक्रांति दीतवारको अर्कें तो सफेद वस्तुमें महँगी हों, म्लेच्छोंमें रोग हो तथा मृत्यु हों । मंगल या शनिवारी हो तो धान्य तथा रसके मंत्रह करनेसे तीन महाने पीछे तिगुना लाभ हो बुधवार हो तो सुपागी नारियल आदि महँगे हो और बृहस्पति तथा शुक्रवारी हो तो तिल तैल रुई कपास और सूत आदि महँगे हों ॥ २४ ॥

धनुषितरणिभोगेमार्गशीर्षिकर्कभोमोशनिरवियविवा-
रश्चौडकर्णाटगौडाः । सुरगिरिमलयान्तामालवा-
स्तेपुराज्ञारणमरणविशेषाद्विग्रहायत्रयोऽमी ॥ २५ ॥

यदि मार्गशीर्षमें धनकी संक्रांतिके दिन दीत, मंगल, शनिवार हो तो चौल-कर्णाटक-गौड-देवगिरि (सुपेरुष्वर्त) मलय-और मालव इन देशोंमें गजाओंमें रणमरण तथा विग्रह विशेष हो ॥ २३ ॥ २५ ॥

कार्पाससूत्रादितिलाज्यतैलमहर्घतालाभदशासु-
वर्णात् । शैत्यप्रवृद्धिर्भुविसोमवारेकिंचिद्विना-
शोप्यतएवधान्ये ॥ २६ ॥

कपास सूत तिल घी और तैल महँगे हों सुषर्णमें लाभ हो और ठंड अधिक पड़े तथा सोमवार हो तो खेतीका कुछ नाश हो ॥ २६ ॥

बुधेगुरौवांनसमर्घतास्याच्छुकेपुनर्ल्लेच्छजनप्रमोदः ।

पौषेमृगेऽकेशनिनाभयायप्रभाकृताक्षत्रिकुलक्षयाय ॥

वही संक्रांति बुध या गुरुवारी हो तो अन्न सस्ता हो शुक्रवारी हो तो म्लेच्छों को आनन्द दे और पौषमें मकर संक्रांति शनिवारी हो तो भय तथा क्षत्रिय कुलका क्षय हो ॥ २७ ॥

बुधेमुदायुद्धमुरान्तिश्रेष्ठागुरौविरोधंस्वकुलेद्विमा-
स्याम् । युगन्धरीमल्लमसूरधान्येहिमाद्विनाशश्र-
णकेपिसोमे ॥ २८ ॥

बुधवारी हो तो प्रसन्नता और युद्ध हो । गुरुवारी हो तो वो महीने तक निजकुलमें विरोध रहे । युगंधरी, मल्ल, मसूर और घने इनका उपलब्ध होना नाश हो और सोमवारी हो तो भी यही फल हो ॥ २८ ॥

देवेगुरौवादलएवशुकेमाघेऽथकुंभेदिनकृत्प्रसंगे ।

पृथ्वीभयंविग्रहएवघोरंचतुष्पदानामतिशयकष्टम् ॥

माघमें कुंभकी संक्रांतिके दिन बृहस्पति या शुक्रवार हो तो पृथ्वी-
पर घोर भय विग्रह हो । और चौपायोंको अत्यन्त कष्ट हो ॥ २९ ॥

मीनेकंसतिफाल्गुनेशनिवशात्सामुद्रिकार्थक्षयो

भीमेहेत्रिसलाभतारणभट्टासूर्यभट्टानिष्टताः ।

तैलाज्यादिरसामहर्घदिवसाश्चन्द्रेजनानांसुखं

शुकेचंद्रसुतेषुभिक्षमतुलंरोगप्रयोगोगुरौ ॥ ३० ॥

फाल्गुनमें मीन संक्रांतिको शनिवार हो तो समुद्रीय द्रव्यों
(सोंप-मोती-शंखादि) का नाश हो, मंगल हो तो सोनेमें लाभ हो,
दीतिवार हो तो शूर वीर रणमें जुटे और तेल घी आदि मंहने हों,
सोमवार हो तो मनुष्योंको सुख हो शुक्र बुध हो तो अत्यन्त सम-
र्घता हो और बृहस्पतिवार हो तो रोगका प्रयोग हो ॥ ३० ॥

चैत्रमेपरवौ तथा क्षितिसुते मंदेमहर्घस्थितिर्गोधूमेच-
णकेतथैव शशिनाका प्रसतैलादिषु । जीवः क्षत्रिय-
जीवनाशनकरः शुक्रोऽथवा चंद्रजः सर्ववस्तुमह-
र्घमेव कुरुते वैवाहसोत्साहताम् ॥ ३१ ॥

चैत्रमें मेष संक्रांतिके दिन दीत तथा मंगल शनिवार हो तो गेहूं
तथा चणोंकी महंगाई हो । सोमवार हो तो कपास और तैल
आदि महंगे हों । बृहस्पति वार हो तो क्षत्रियोंका नाश हो और
शुक्र तथा बुधवार हो तो सब वस्तुएँ महंगी हों किन्तु विवाहादि
उत्साह हो ॥ ३१ ॥

वैशाखे वृष संक्रमेशानिकुजादित्यादिदुर्भिक्षदादेशे
क्लेशरुचिर्महर्घविधयः प्राप्या नगोधूमकाः । कार्पा-
सेफलवस्तुनीक्षुरसजे मांजिष्ठकेत्यादरः सोमेधा-
न्यमहर्घताकविगुरुतेषु प्रियाः स्खरसाः ॥ ३२ ॥

वैशाखमें वृष संक्रांति शनि रवि कुज धारी हो तो देशमें दुर्भिक्ष
हो । लोगोंकी रुचि क्लेशमें हो और गेहूँका दाना नहीं मिले । कपास
फलवरतु—ईखके गुड़ सकर—और मंजीठ इनका आदर हो अर्थात् यह
अधिक महंगे हों । सोमवार हो तो धान्य महंगे हों, शुक्र बृहस्पति-
वारी हो तो इनके मियरस उत्पन्न हों ॥ ३२ ॥

ज्येष्ठेश्रीमिथुनार्कतः शनिकुजादित्येषु पापाशयो रोगे-
भिर्ज्वलनादिजंभयमपि प्रायो महर्घाः कणाः । संतुष्टो
वसुधासुधाकरसुते वस्तुप्रियं सिंधुजंदुर्भिक्षं शशिजी-
वभार्गववलात्सार्वात्रिकं सूत्रताम् ॥ ३३ ॥

ज्येष्ठमें मिथुन संक्रांतिके दिन शनि मंगल दीतिवार हों तो पाप
केले, आग लगे, रोग बढ़े, भय हो और सब अन्न महंगे हों । बुधः

बार हो तो लोग प्रसन्न हों, साशुद्रिक वस्तुएँ प्रिय हों और चंद्र गुरु शुक्रवार हो तो सर्वत्रसे दुर्भिक्ष दूर हो ॥ ३३ ॥

आषाढे कर्कसंक्रान्तौकूरवारेतिवर्षणम् ।

क्षत्रियाणांक्षयोधान्यंगुरौतुप्रवलोनिलः ॥ ३४ ॥

आषाढमें कर्क संक्रांतिको कूर बार हो तो अधिक वर्षा हो, क्षत्रियों-का क्षय हो, धान्य हो और गुरुवार हो तो हवा अधिक वेगसे चले ॥ ३४ ॥

सोमेसौम्येतथाशुकेजलस्नानंभुवस्तलम् ।

धान्यंसमर्घतांयातिपरदेशाजनेसुखम् ॥ ३५ ॥

सोम शुक्र बुधवारी हो तो पृथ्वीपर जल हो, धान्य सस्ते हों और विदेशी लोग सब सुखी हों ॥ ३५ ॥

सिंहेकेश्रावणेभौमेशनौवार्वाहवृष्टये ।

तुपधान्यविनाशायवायुःपीडाकरोरवौ ॥ ३६ ॥

श्रावणमें सिंह संक्रांतिके दिन शनि भौमवार हो तो वर्षा हो, शुष्क धान्यका नाश हो । रविवारी हो तो वायु पीडाकारक हो ॥ ३६ ॥

समर्घमाज्यंदेवेज्येऽगुरुतैलमहर्घता ।

सोमेशुकेबुधेछत्रभंगकृल्लोकतोपदः ॥ ३७ ॥

बृहस्पतिवारी हो तो घी सस्ता हो, तेल महंगा हो । सोम शुक्र बुधवारी हो तो छत्रभंग हो किंतु संसारको संतोष मिले ॥ ३७ ॥

कन्यार्कतोभाद्रपदेल्पवृष्टिःशनेर्जने स्याद्बहुधा-

न्यनाशः । कुजाद्रुजाद्यावदुधेतयोवावृष्टिस्तदा-

ल्पातिमहर्घतान्ते ॥ ३८ ॥

भाद्रवामें कन्याकी संक्रांतिके दिन शनिवार हो तो अल्प वृष्टिसे धान्यनाश हो, मंगलवारी हो तो रोगादि हों, ईश्वरिभय हो और अल्प वृष्टिसे महंगाई हो ॥ ३८ ॥

जीवेन्दुशुकज्ञपराक्रमेण क्रमेण सौख्यं न बहु-
श्रमेण । असुद्रसामुद्रकसूपयुद्धं किञ्चिद्विनाशो-
पि च पश्चिमायाम् ॥ ३९ ॥

बृहस्पति सोम तथा शुक्रवारी हो तो क्रमके पराक्रमसेही सौख्य
हो, विशेष परिश्रमसे नहीं हो । और राजाओंमें असुद्र तथा सामुद्र
युद्ध होनेसे पश्चिममें कुछ नाश हो ॥ ३९ ॥

आश्विने रवितुलाधिरोहणे भास्करो द्विजगवा-
दिदुःखदः । राज्यविग्रहकरः शनैश्वरः सर्पिषः
खलु महर्घतां वदेत् ॥ ४० ॥

और आश्विनमें यदि तुल संक्रांतिके दिन दीतवार हो तो ब्राह्मण
तथा गायोंको दुःख हो । शनिवार हो तो राजाओंमें विग्रह करे
और सरसों महेगी हो ॥ ४० ॥

बहुधा बहुधान्यसंभवाद्बुधापूर्णसुधा बुधाश्र-
यात् । गुरुणातिसमर्घमन्नकं शशिना वा भृ-
गुसूनुना तथैव ॥ ४१ ॥

बुधवार हो तो पृथ्वीपर अनेक प्रकारके धान्य बहुत हों और
गुरु-चन्द्र-शुक्रवार हो तो अन्न सस्ता हो ॥ ४१ ॥

चैत्रमासस्य संक्रान्तौ यदि वर्षति माधवः ।

तदा धान्यस्य निष्पत्तिलोके बहुतरं सुखम् ॥ ४२ ॥

“संक्रांति समयकी वर्षाका फल” — यदि चैत्रके महीनेकी
संक्रांतिको मेघ वर्षे तो अन्न अच्छा उत्पन्न होता है तथा लोकमें
बहुत सुख होता है ॥ ४२ ॥

वैशाखज्येष्ठसंक्रान्तौ वृष्टिर्मिश्रफलाभवेत् ।

अर्घं महर्घं ज्ञातव्यं दुर्भिक्षं नैवमादिशेत् ॥ ४३ ॥

वैशाख और ज्येष्ठकी संक्रांतिकी वर्षा होनेसे मिला हुआ फल होता है । कभी तेजी और कभी मन्दी हो, दुर्भिक्ष नहीं हो ॥ ४३ ॥

यदि स्याज्ज्येष्ठपंचम्यांवृषसंक्रमणादनु ।

दिनद्वयान्तर्जलदस्तदासुभिक्षनिर्णयः ॥ ४४ ॥

यादि जेठकी पंचमीको वृष संक्रातिसे दो दिनके भीतर जल वर्षे तो सुभिक्ष हो ॥ ४४ ॥

आषाढे चैव संक्रान्तौ यदि वर्षति माधवः ।

व्याधिरुत्पद्यते घोरः श्रावणे शोभनं तदा ॥ ४५ ॥

आषाढकी संक्रांतिकी मेघ वर्षे तो घोर व्याधि उठती है ॥ ४५ ॥

श्रावणेचैवसंक्रांतौयदिवर्षतिवारिदः ।

अनन्तधान्यहानिःस्याद्भवेन्मेघमहोदयः ॥ ४६ ॥

श्रावणकी संक्रांतिकी वर्षा हो तो धान्यकी अनन्त हानि हो ४६ ॥

मासे भाद्रपदे प्राप्ते संक्रान्तौ यदि वर्षति ।

बहुरोगाकुलो लोक आश्विने शोभनं पुनः ॥ ४७ ॥

भाद्रपदकी संक्रांतिकी वर्षा हो तो लोग रोगोंसे व्याकुल हों ॥ ४७ ॥

आश्विनस्यापि संक्रान्तौ दृष्टे मेघमहोदये ।

राजयुद्धं प्रजाःस्वस्थाधान्येरापूर्यते जगत् ॥ ४८ ॥

आश्विनकी संक्रांतिकी वर्षा हो तो राज्यमें युद्ध प्रजामें सुख और पृथ्वी धान्यसे पूर्ण हो ॥ ४८ ॥

कार्तिके मार्गशीर्षे वा संक्रान्तौ यदि वर्षति ।

मध्यमं कुरुते वर्षं पौषमासे सुभिक्षकृत् ॥ ४९ ॥

कार्तिक और मार्गशीर्षकी संक्रांतियोंको वर्षे तो वर्ष मध्यम हो, पौषमें सुभिक्ष हो ॥ ४९ ॥

पौषमासस्य संक्रान्तौ यदा मेघमहोदयः ।

बहुक्षीरास्तदा गावो वसुधा बहुधान्यदा ॥ ५० ॥

पौषकी संक्रांति की वर्षा हो तो गायोंके दूध बहुत हों और
अन्नभी बहुत हों ॥ ५० ॥

माघमासे च संक्रान्तौ यदि वर्षति वारिदः ।

सुभिक्षं क्षेममारोग्यं गेहेगेहे महोत्सवम् ॥ ५१ ॥

माघकी संक्रांतिकी वर्षा हो तो सुभिक्ष, क्षेम, 'आरोग्य और
उत्सव हों ॥ ५१ ॥

फाल्गुने चैत्रसंक्रान्तौ यदि वर्षति माघवः ।

विचित्रं जायते सस्यं माघवज्येष्ठयोरपि ॥ ५२ ॥

फाल्गुनकी संक्रांतिकी वर्षा हो तो वैशाख ज्येष्ठमें विचित्र
धान्य हो ॥ ५२ ॥

संक्रांतिः विशेषफलम् ।

कार्तिके फाल्गुने मार्गे चैत्रे श्रावणभाद्रयोः ।

संक्रमेण्वशुभः पट्टसु यदि वर्षति वारिदः ॥ ५३ ॥

"संक्रांति विषयक विशेष फल"—कार्तिक, फाल्गुन, मार्गशीर्ष,
चैत्र, श्रावण और भाद्रपद इन छः संक्रांतियोंके दिन वर्षा हो तो
अशुभ होती है ॥ ५३ ॥

पौषे माघे च वैशाखे ज्येष्ठापाढाश्विनेषु च ।

संक्रांतौ वर्षति घनः सर्वदैव सुशोभनः ॥ ५४ ॥

और पौष, माघ, वैशाख, ज्येष्ठ, आपाढ और आश्विन इन
महीनोंकी संक्रांतियोंके दिन वर्षा हो तो सब प्रकारसे शुभ है ॥ ५४ ॥

नन्दायां मेघसंक्रांतिरूपवृष्टिकरी मता ।

भद्रायां राजयुद्धायजयायां व्याधये नृणाम् ॥ ५५ ॥

रिक्तायां पशुघाताथपूर्णायांधान्यवर्द्धिनी ।

इत्येतद्बालबोधोक्तं बहुशास्त्रेषु संमतम् ॥ ५६ ॥

मेघ संक्रांति नन्दा तिथिमें हो तो कम वर्षा हो । भद्रामें हो तो राजयुद्ध हो । जयामें हो तो मनुष्योंमें व्याधि हो । रिक्तामें हो तो पशुघात हो । और पूर्णामें हो तो धान्यवृद्धि हो ॥ ५५ ॥ ५६ ॥

चैत्रेशनौत्रयोदश्यां यदिमीनेर्कसंक्रमः ।

वत्सरःस्यात्तदानीन्द्यः सद्योधान्यार्थनाशनः ५७ ॥

चैत्रकी तेरस शनिवारको यदि मीन संक्रांति अर्के तो वह वर्ष निन्द्य तथा शीघ्रही धान्य और द्रव्यका नाश करता है ॥ ५७ ॥

यदिने यार्कसंक्रांतिस्तद्वाशौतद्दिनेशशी ।

जन्मवेधादयोनेष्टः श्रेष्ठः स्वसुहृदांगृहे ॥ ५८ ॥

जिस दिन जो सूर्य संक्रांति हो उस दिन उसी राशि पर चन्द्रमा हो तो यह जन्मवेधसे नेष्ट होता है और मित्रके घरमें हो तो श्रेष्ठ होता है । (एक राशि योग प्रायः अमावसको आता है) ॥ ५८ ॥

यस्मिन्वारेस्ति संक्रांतिस्तत्रैवामाभिधातिथिः ।

लोकेखर्परयोगोयंजीवधान्यादिनाशकः ॥ ५९ ॥

जिस दिन संक्रांति हो और उसी दिन अमावस तिथि हो तो यह खर्पर योग जीव तथा धान्यादिका नाशक है ॥ ५९ ॥

मेघकर्कमकरेर्कसंक्रमे क्रूरवारसहितेजलंनहि ।

धान्यमल्पतरमेववत्सरेविग्रहोविपुलरोगतस्कराः ६०

मेघ-कर्क-मकरकी संक्रांतियोंको क्रूर वार हों तो जल नहीं हो । धान्य कम हो और उस वर्षमें चौर तथा रोगादि और विग्रह बहुत ॥ ६० ॥

शनिःस्यादाद्यसंक्रान्तौद्वितीयायांप्रभाकरः ।

तृतीयायांकुजोयोगः स्वर्पराख्योतिकष्टकृत् ॥ ६१ ॥

प्रथम संक्रांतिको शनि-दूसरीको सूर्य और तीसरीको मंगल वार हो तो यह स्वर्पर योग कष्टकारी होता है ॥ ६१ ॥

संक्रांतिः स्याद्यदापौषेरविवारेणसंयुता ।

धान्यस्यद्विगुणमूल्यंतदाग्राहुर्महाधियः ॥ ६२ ॥

पौषकी संक्रांति दीतवारी हो तो महाबुद्धिवाले धान्यका दुगुना मूल्य कहते हैं ॥ ६२ ॥

शनौत्रिगुणतामूल्येमङ्गलेचचतुर्गुणम् ।

समानंबुधशुक्राभ्यामूल्यार्चगुरुसोमयोः ॥ ६३ ॥

यदि वही संक्रांति शनिवारी हो तो तिगुना और मंगलवारी हों तो चौगुना मूल्य होता है । और यदि बुध शुक्रवार हों तो समान भाव तथा गुरु चन्द्रवार हो तो आधा मूल्य होता है ॥ ६३ ॥

शनिभानुकुजेवारेवहवःसंकमा यदा ।

तदामहर्घमनिलंकुर्वतेरोगविग्रहम् ॥ ६४ ॥

यदि शनि-रवि-कुज वारी बहुतसी संक्रांतियां बराबर आवें तो महंगाई बड़े तथा रोग विग्रह हो ॥ ६४ ॥

मीनमेषान्तरेष्टम्यामंगलेधान्यसंग्रहात् ।

द्विस्त्रिश्चतुर्गुणोलाभइत्युक्तपूर्वसूरिभिः ॥ ६५ ॥

मीन और मेषकी संक्रांतिके बीचमें आठ मंगल वार आवें तो धान्य संग्रह करनेसे दुगुना-तिगुनाही क्या चौगुना तक लाभ होता है ॥ ६५ ॥

कुम्भमीनान्तरेष्टम्यांनवम्यांदशमीदिने ।

रोहिणीचेतदावृष्टिरल्पमध्यादिकाक्रमात् ॥ ६६ ॥

कुम्भ और मीनकी संक्रांतिके बीचमें आठि, नौमी या दशमीको रोहिणी हो तो क्रमसे स्वल्प-मध्य और अच्छी वर्षा हो ॥ ६६ ॥

माघेकृष्णदशम्यांचेन्मकरैर्कःप्रवर्तते ।

धान्यसंग्रहणालाभंतदाषाढेकरोत्ययम् ॥ ६७ ॥

माघ कृष्ण दशमीको यदि मकर संक्रांति हो तो धान्यके संग्रहसे आपाढमें लाभ हो ॥ ६७ ॥

सूर्योदयेपिविशतीजगतोविपत्तये

मध्यंदिनेसकलधान्यविनाशहेतुः ।

संक्रांतिरस्तसमयेधनधान्यवृद्धये

क्षेमं सुभिक्षमवनेः कुरुते निशीथे ॥ ६८ ॥

यदि कोईभी संक्रांति मातःकालमें हो तो जगत्में विपत्ति हो । दुपहरीमें हो तो सब धान्योंका नाश हो । सायंकालमें हो तो धन धान्यकी वृद्धि हो और अर्ध रात्रिमें हो तो पृथ्वीपर सब प्रकारसे क्षेम कुशल और सुभिक्ष हो ॥ ६८ ॥

संक्रांतिनाड्यात्तिथिवारऋक्षधान्याक्षरंवह्निद्वरे-

चुभागम् । संक्रांतिनाडीनवमिथिताचसप्ताहता

पावकभाजिताच ॥ ६९ ॥ एकेसमर्धद्वितयेच

साम्यं शून्ये महर्धं मुनयो वदन्ति ॥ ७० ॥

“संक्रांतिसे गणितागत शुभाशुभ जाननेकी विधि”—संक्रांतिकी घड़ी तथा वर्तमान तिथि वार नक्षत्र की संख्या और किसीभी अन्नके नामके अक्षर यह सब जोड़ कर तीनका भाग दे । यदि एक वचे तो सप्ता-दो वचें तो समान-और शून्य वचे तो तेज हो ॥ ६९ ॥ दूसरे प्रकारसे इसी भांति संक्रांतिकी घड़ियोंमें नौ मिलाकर सातसे गुणके तीनका भाग देनेसे एक वचे तो समर्ध, दो वचे तो साम्य और शून्य वचे तो महर्ध जानना ॥ ७० ॥

दिनयोगचनक्षत्रसंक्रान्तेर्गृह्यतेघटी ।

चतुर्गुणंसप्तभक्तप्रण्डितस्तद्विचारयेत् ॥ ७१ ॥

शून्येभयंक्षयरोगमेकेन्रद्वितयेरसः ।

त्रयेरोगश्चतुर्गुण्याद्वस्त्रमाहर्घ्यमुज्ज्वलम् ॥ ७२ ॥

संक्रांतिकी घटी तथा दिन और नक्षत्रकी संख्या को जोड़कर चौगुने करके सातका भाग दे । याद शून्य बचे तो भय-क्षय-और रोग हो, १ बचे तो अन्न, दो बचें तो रस, तीन बचें तो रोग, चार बचें तो उज्जले वस्त्रोंकी महंगाई । (पांच बचें तो क्षय और छः बचें तो रोगादि हों) ॥ ७१ ॥ ७२ ॥

प्रसंगादन्यप्रकारेण शुभाशुभज्ञानम् ।

आदित्याद्वारगणनात्प्रतिपत्प्रमुखातिथिः ।

अश्विन्यादिचनक्षत्रसंमील्यद्विगुणीकृतम् ॥ ७३ ॥

त्रिभिर्भागद्वयंशेषं सुभिक्षमादिशेद्बुधः ।

शून्येभवतिदुर्भिक्षमेकशेषेशुभंवदेत् ॥ ७४ ॥

“प्रसंगवशा वर्ष शुभाशुभ ज्ञानोपाय कहवै ।” —किसीभी दिन अकस्मात् कोई वर्षके शुभाशुभका प्रश्न करे तो उस दिन जो वार तिथि और नक्षत्र हों उनकी संख्या को जोड़कर द्वागुनी करे और तीनका भाग लगावे यदि एक शेष बचे तो शुभ, दो शेष बचें तो भी शुभ और शून्य शेष रहे तो दुर्भिक्ष जानना ॥ ७३ ॥ ७४ ॥

(२) अथ चन्द्रचारः ।

नित्यमवस्थस्येन्दोर्भाभिर्मानोःसितंभवत्यर्धम् ।

स्वच्छाययान्यदसितंकुमस्येवातपस्थस्य ॥ ७५ ॥

(२) “चन्द्र चार” —सूर्यके नीचे रहनेवाले चन्द्रमाका आधा भाग सूर्यके प्रकाशसे प्रकाशित होताहै और आधा भाग घाममें अपनीही छायासे (घटेकी भांति) काटा रहताहै ॥ ७५ ॥

सलिलमयेशशिनिरवेदींधितयोमूर्च्छितास्तमोनैशम् ।
क्षपयन्तिदर्पणोदरनिदताइवमन्दिरस्यांतः ॥ ७६ ॥

जैसे काचके ऊपर सूर्यका प्रतिबिम्ब पड़ कर अंधियारे घरमें भी उसके द्वारा भीतर घुसकर अंधेरा दूर करताहै वैसेही जलमय चन्द्रपर सूर्यकिरणें गिरकर रात्रिके अंधकारको दूर करतीहैं ॥ ७६ ॥

त्यजतोर्कतलं शशिनः—

पश्चादवलम्बते यथाशौक्यम् ।

दिनकरवशात्तथेन्दोः

प्रकाशतेऽधः प्रभृत्युदयः ॥ ७७ ॥

सूर्यका निचला भाग छोड़ते छोड़ते चन्द्रमाका पश्चिम भाग सूर्यकी किरणोंके बराबरे जितना सफेद (चमकीला) होता जाता है नीचे वह उतना ही प्रकाशित होता जाताहै । शुक्ल पक्षकी द्वितीयासे उसका प्रकाश आरम्भ होनेसे उसके गोलका उस दिन बहुतही कम अंश दीखनेमें आताहै । उसे चंद्र शृंग कहते हैं ॥ ७७ ॥

वक्रोलिद्वितये सिंहे शूलाभः कन्यकाद्वये ।

मीनत्रये दक्षिणोच्चश्चन्द्रः शेषे समाकृतिः ॥ ७८ ॥

उदय होनेके दिन वृश्चिक और धनका चन्द्रमा हो तो देवा, कन्या मिथुनका हो तो शूलकी समान, मीन, मेष, वृषका दक्षिण ओरसे ऊंचा और फर्क, सिंह, तुल, मकर कुम्भका हो तो दोनों शीर्ग समान होते हैं ॥ ७८ ॥

विग्रहं हि समे चन्द्रे दुर्भिक्षं दक्षिणोन्नते ।

व्याधिचौरभयं शूले सुभिक्षं चोत्तरोन्नते ॥ ७९ ॥

समान (बराबर) चन्द्रमा हो तो विग्रह हो, दक्षिणोन्नत हो तो

तेजी हो, शूल समान हो तो चौरमय तथा व्याधि हो और उत्तर शृंग ऊँचा हो तो धान्यादि सस्ते हों ॥ ७९ ॥

सिंहे मेषद्वये रक्तः श्यामो मकरकुंभयोः ।

तुलाकर्कालिषु श्वेतः पीतः शेषेषु शीतगुः ॥ ८० ॥

सिंह-मेष-वृषका चन्द्रमा हो तो लाल, मकर कुंभका हो तो काला, तुल-कर्क, शुक्रिका हो तो सफेद और शेषमें पीला रंग रहता है ॥ ८० ॥

अरुणः शीतलकिरणः करोति रसहानिरुग्र-
णमरणम् । पीतो रोगनियोगं करकादिभयं
पुनः कालः ॥ ८१ ॥

लाल रंगका चन्द्र दीखे तो रस हानि और उग्र युद्धमें मरण होता है । पीला हो तो रोग फैलाता है और करकादि भय करता है ॥ ८१ ॥

सूर्येन्दुर्जागारंकसौरिभार्गवाः प्रदक्षिणं यांति
यदा हिमवृतेः । तदा सुभिक्षं धनवृत्तिरुत्तमा
विपर्यये धान्यधनक्षयादि ॥ ८२ ॥

सूर्य, बुध, मंगल शनि और शुक्र ये यदि चन्द्रमार्गसे दहने चलें तो सुभिक्ष होता है-धन वृत्ति उत्तम होती है और बायें चलें तो धन धान्यका क्षय होता है ॥ ८२ ॥

दृश्यते यदि न रोहिणीयुतश्चन्द्रमा नभसि तो-
यदावृते । रुग्भयं महदुपस्थितं तदा भूश्च भूरे-
जलसस्यसंयुता ॥ ८३ ॥

बाद्री बादलोंसे ढँके हुए आकाशमें रोहिणी युक्त चन्द्रमा नहीं दीखे तो बड़ा रोगभय उपजता है तथा पृथ्वी जल पूर्ण होती है ॥ ८३ ॥

यद्दिनेगोकुलक्रीडातद्दिनेभ्युदितेविधौ ।

तदात्रीणिविनश्यन्तिप्रजागावोमहीपतिः ॥ ८४ ॥

जिस दिन गोकुलक्रीडा (गोवर्द्धन लीला) हो उसी दिन चन्द्र-
दर्शन हो तो प्रजा गौ और महीपति इन तीनोंका नाश होता है ॥ ८४ ॥

ज्येष्ठस्यान्तेप्रतिपदिसूर्यस्यास्तंविलोकयेत् ।

द्वितीयांवीक्ष्यतेचन्द्रोगतमुत्तरदक्षिणम् ॥ ८५ ॥

जेठ सुदी प्रतिपदाको सायंकालके समय द्वितीया आगई हो तो
चन्द्रमा देखे और उसके उत्तर दक्षिणका विचार करे ॥ ८५ ॥

सुभिक्षमुत्तरदिशिविपरीतन्तुदक्षिणे ।

तत्साम्येमध्यमंवर्षज्येष्ठान्तेतद्वदेवहि ॥ ८६ ॥

यदि उत्तर शृंगोन्नत हो तो सुभिक्ष और दक्षिणोन्नत हो तो
दुर्भिक्ष होता है-समान हो तो मध्यम जानना ॥ ८६ ॥

उत्तरेणग्रहाणांतुचंद्रचारोभवेद्यदि ।

सुभिक्षंक्षेममारोग्यंविग्रहोनात्रवत्सरे ॥ ८७ ॥

यदि उत्तरमें उदय हो तो उस वर्षमें सुभिक्ष, क्षेम, आरोग्य
होता है ॥ ८७ ॥

पञ्चतारग्रहायत्रसोमंकुर्वतिदक्षिणे ।

भौमेचराजमारिःस्याज्जनमारिश्चभार्गवे ॥ ८८ ॥

यदि पांचों तारे (मं. बु, वृ. शु. श.) चन्द्रको दहनी बाजू
करके चलें तो उनमें मंगलके जानेसे राजमारी और शुकके जानेसे
जनमारी होती है ॥ ८८ ॥

बुधेरसक्षयंविद्यादगुरौकुर्यान्निदारुक्म् ।

शनौवर्षक्षयंकुर्यान्मासेमासेविलोकयेत् ॥ ८९ ॥

बुधके जानेसे रत्न क्षय, गुरुसे जल वृष्टि और ज्ञानसे वर्षका क्षय होता है । अतः महीनेकी महीने चन्द्र देखना चाहिये ॥ ८९ ॥

चित्रानुराधाज्येष्ठाचक्रतिकारोहिणीतथा ।

मघामृगशिरामूलंतथाषाढविशाखयोः ॥ ९० ॥

एतेषामुत्तरामार्गेयदाचरतिचन्द्रमाः ।

सुभिक्षक्षेमवृद्धिश्चसुवृष्टिर्जायतेतदा ॥ ९१ ॥

एतेषांदक्षिणमार्गेयदाचरतिचन्द्रमाः ।

क्षयंगच्छन्तिभूनाथादुर्भिक्षं च भयं पथि ॥ ९२ ॥

चित्रा, अनुराधा, ज्येष्ठा, कृत्तिका, रोहिणी, मघा, मृगशिर, मूल, पूर्वाषाढ और विशाखा इनके उत्तर मार्गसे यदि चन्द्रमा चले तो सुभिक्ष, क्षेम, वृद्धि और वर्षा हो । तथा इनके दक्षिण मार्गसे चले तो राजाओंका क्षय, दुर्भिक्ष और मार्गभय हो ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥

चन्द्रोदयेमेपराशौमीषमधान्यमहर्घता ।

वृषेमाषतिलागुरुतुषधान्यमहर्घता ॥ ९३ ॥

“उदयफल” मेय राशिका चन्द्रमा उदय हो तो जौ गेहूँकी मह-गाई हो, वृषका हो तो उड़द-तिल और तुष धान्य बेज हों ॥ ९३ ॥

कार्पाससूत्रधान्यादिमहर्घमिथुनेस्मृतम् ।

अनावृष्टिः कर्कराशौ सिंहे धान्यमहर्घता ॥ ९४ ॥

मिथुनका हो तो कार्पास-सूत धान्यादि महर्घ हों, कर्कका हो तो अनावृष्टि हो-और सिंहाका हो तो धान्य महर्घा हो ॥ ९४ ॥

चतुष्पदविनाशोपिराज्ञामन्योन्यविग्रहः ।

द्विजादिपीडाकन्यायांतुलाक्रयणकंप्रियम् ॥ ९५ ॥

कन्याका हो तो चौपायोंका नाश हो, राजाओंमें विग्रह हो और ब्राह्मणोंको पीडा हो । तुलका चन्द्रमा उदय हो तो व्यापारी समान धारा हो ॥ ९५ ॥

वृश्चिकेधान्यनिष्पत्तिर्धनुर्मकरयोः शुभम् ।

कुम्भेचणकमाषादितिलानां नाश इष्यते ॥ ९६ ॥

वृश्चिकमें धान्यकी पैदावारी—घन मकरमें शुभ और कुम्भमें चने, उहद तथा तिलोंका नाश हो ॥ ९६ ॥

मीनेसुभिक्षमारोग्यफलं द्वादशराशिजम् ।

एवं ज्ञेयं द्वितीयायानियमेऽप्यत्र भावनात् ॥ ९७ ॥

और मीन राशिमें चन्द्रोदय हो तो सुभिक्ष तथा आरोग्य हो । यह बारहों राशियोंका फल प्रत्येक मासकी द्वितीयाको नियमसे देखना चाहिये ॥ ९७ ॥

चन्द्रेऽस्तेमेष राशिस्थे सर्वधान्यमहर्घता ।

वृषेचचणिका पीडामृत्युश्चौरभयं जने ॥ ९८ ॥

“अस्त फल” मेष राशिका चन्द्रमा अस्त हो अर्थात् अमावास्याके दिन मेषका चन्द्रमा हो तो सब धान्य महर्घ हों, वृषमें अस्त हो तो चणिक पीडा मृत्यु और चौर भय हो ॥ ९८ ॥

मिथुनेष्वतिवृष्टिः स्याद्बीजवापेन पुष्टये ।

कर्कटेऽप्यतिवृष्टिः स्यात्सिंहेधान्यमहर्घता ॥ ९९ ॥

मिथुनमें अति वर्षा होनेसे बीजा डुबा बीज पुष्ट नहीं हो । कर्कमें अति वर्षा हो और सिंहमें अन्न महर्घा हो ॥ ९९ ॥

कन्यायां खण्डवृष्टिश्च सर्वधान्यसमर्घता ।

तुलायामल्पवृष्टिः स्याद्देशभंगो भयं पथि ॥ १०० ॥

कन्यामें खण्ड वृष्टि हो, सर्व धान्य महर्घ हों, तुलामें अल्प वर्षा हो और देश भंग तथा मार्ग भय हो ॥ १०० ॥

वृश्चिके मध्यमं वर्षाग्रामनाशोऽप्युपद्रवात् ।

सुभिक्षं धनुषाधान्यैर्मकरेधान्यपीडनम् ॥ १०१ ॥

वृश्चिकमें मध्यम वर्षा हो और उपद्रवसे ग्राम नाश हो । धनमें धान्यसे सुभिक्ष हो और मकरमें धान्य पीड़ा हो ॥ १०१ ॥

कुंभेऽल्पवृष्टिर्धान्यानिमहर्घाणिप्रजाभयम् ।

सुखसंपत्तयोमीनेमासंयावदिदंफलम् ॥ १०२ ॥

कुंभमें अल्प वर्षा हो, धान्य महंगा हो, प्रजामें भय हो । और मीन राशिमें चन्द्रमाका अस्त हो तो सुख संपत्ति हो । ऊपर जो झंगोलाति तथा उदयास्तका फल कहा है यह केवल उसी मास भर होता है ॥ १०२ ॥

वैशाखेयदिवाज्येष्ठउत्तरस्यांविधूदये ।

बहुधाधान्यनिष्पत्तिर्भवेन्मेघमहोदयः ॥ १०३ ॥

वैशाखमें वा जेठमें उत्तरमें चन्द्रोदय हो तो धान्यकी बहुत उत्पत्ति हो और वर्षा अच्छी हो ॥ १०३ ॥ (इति)

(३) अथ सूर्यचन्द्रग्रहणविचारः ।

बहुफलं जपदानहुतादिके स्मृतिपुराणविदःप्रव-
दन्ति हि । सदुपयोगि जने सचमत्कृतिग्रहण-
मिन्द्रिनयोःकथयाम्यतः ॥ १०४ ॥

(३) " प्रसंग वश यहीं पर सूर्य चन्द्र ग्रहणका विचार लिखते हैं । "—स्मृति और पुराणोंके जानने वाले कहते हैं कि ग्रहणमें जपदान और होमादि करनेसे बहुत फल मिलता है और सदुपयोगी जनोंमें चमत्कृति करता है अतः एव सूर्य और चन्द्रका ग्रहण कहते हैं ॥ १०४ ॥

भूच्छायां स्वग्रहणे भास्करमर्कग्रहेप्रविशतीन्दुः ।

प्रग्रहणमतःपश्चान्नेन्दोर्भार्गोश्चपूर्वार्धात् ॥ १०५ ॥

सूर्य ग्रहणमें सूर्यके आड़ा चद्रमा आता है और चन्द्रग्रहणमें चन्द्रमाके पृथ्वी आधी आजाती है । इसीसे ग्रहण होता है । और

इसी कारण पश्चिम दिशासे चन्द्रग्रहण और पूर्वसे सूर्य ग्रहणका आरम्भ नहीं होता ॥ १०५ ॥

एवमुपरागकारणमुक्त मिदं दिव्यदृग्भिराचार्यैः ।

राहुः कारणमस्मिन्नित्युक्तः शास्त्रसद्भावः ॥ १०६ ॥

दिव्य दृष्टिवाले आचार्योंने तो ग्रहणका यही कारण बतलाया है किन्तु लोग जो राहुको कारण मानते हैं यह शास्त्रका केवल सद्भाव मात्र है ॥ १०६ ॥

योऽसावसुरो राहुस्तस्य वरो ब्रह्मणाऽयमाज्ञतः ।

आप्यायनमुपरागे दत्त हुतांशेन ते भविता ॥ १०७ ॥

क्योंकि पुराणोंमें लिखा है कि राहु नामक असुरको ब्रह्माजीने ऐसा वर दिया था कि “ग्रहणके समय जो लोग-होमादि करेंगे उसीके अंशसे तुम्हारी वृद्धि होगी—” वास्तवमें राहु तमोमय है और चन्द्रको पृथ्वीकी छाया तथा सूर्यको चन्द्र छाया आच्छादित करती है यहभी तम रूप है अतएव इनके साथ राहु संबंध उपयुक्त हो सकता है ॥ १०७ ॥

सूर्याचन्द्रमसोर्ग्रहः शुभकरो मार्गं तथा कार्तिके

पौषे धान्यमहर्घतां जनभयं वर्ष पुरो मध्यमम् ।

माघे वाञ्छितवृष्टिरन्नविगमः स्यात् फाल्गुने दुःखकृ-

चैत्रे चित्ररुगादिलेखकमहापीडा समामध्यमा १०८

मार्गं शीर्षं तथा कार्तिकमें सूर्य या चन्द्र ग्रहण हो तो शुभ करता है । पौषमें धान्यकी महँगाई, मनुष्योंको भय और अगले वर्षको मध्यम करता है । माघमें हो तो वांछित वृष्टि और अन्न करता है । फाल्गुनमें हो तो दुःख करता है चैत्रमें हो तो रोग तथा लेखकोंको महापीडा देता है और वर्ष मध्यम होता है ॥ १०८ ॥

वैशाखे तिलतैलमुद्रकुरुते कार्पासकैनाशयेज्ज्येष्ठे-
ऽवर्षणधान्यनाशनकरं स्याद्भाविवर्षशुभम् ।

आषाढेऋचिदेववर्षतिघनोरोगोऽन्नलाभः कचि-
द्रक्षेसूलफलानिहंतिसहसावर्षशुभंशंभवेत् ॥ १०९ ॥

वैशाखमें ग्रहण हो तो तिल तेल भूंग और कपास इनका नाश करताहै । जेठमें अवर्षण धान्यनाश और भावी वर्ष शुभ करताहै । आषाढमें हो तो कहीं कुउ वर्षा हो, कहीं रोग हो, कहीं अन्न लाभ हो और बृक्षोंसे अकस्मात् फल गिर पड़े तथा वर्ष शुभभी हो ॥ १०९ ॥

गर्भाः श्रावणकेऽश्वगर्दभभवास्तूर्णचतत्फलगुतां-

स्त्रीगर्भान्निनिहंतिभाद्रपदकेसौख्यं सुभिक्षजने ।

कुर्यादाश्विनकेऽथसूर्यशशिनोरेकत्रयासेग्रहद्वंद्वं

चेन्नरनायकावहुबलायुद्धयंतिकोपोत्कटाः ॥ ११० ॥

श्रावणमें ग्रहण हो तो घोड़ियोंके, गधियोंके और स्त्रियोंके गर्भ बहुत गिरें । भाद्रपदमें हो तो सौख्य तथा सुभिक्ष हो । और आश्विनमें एकही मासमें सूर्य चन्द्रके दोनों ग्रहण हों तो कोपसे उलझकर राजा लोग द्वंद्व युद्ध बहुत करें ॥ ११० ॥

कदाचिदधिकेमासेग्रहणंचंद्रसूर्ययोः ।

सर्वराष्ट्रभयभंगः क्षयं यांति महीभुजः ॥ १११ ॥

यदि अधिकमासमें चन्द्र सूर्य ग्रहण हो तो राष्ट्रभंग और राजाओंका क्षय हो ॥ १११ ॥

रवेर्ग्रहाच्चपक्षांतेयदिचन्द्रग्रहोभवेत् ।

तदादर्शनिनांपूजाधर्मवृद्धिर्महोदयः ॥ ११२ ॥

सूर्यक १५ दिन पीछेही चंद्रग्रहण हो तो शास्त्रकारोंकी पूजा, धर्मकी वृद्धि और वदोंका उदय हो ॥ ११२ ॥

ऋरसंयुक्तसूर्येन्द्रोर्ग्रहणेनृपतिक्षयः ।

राष्ट्रभंगइतिप्राहुर्महाप्राज्ञामुनीश्वराः ॥ ११३ ॥

सूर्य चंद्र ग्रहण ऋर ग्रह संयुक्त हो तो राजाओंका क्षय और राज्यभंग हो ॥ ११३ ॥

रविवारेग्रहेवर्षमध्यमंधान्यसंग्रहः ।

राजयुद्धंचदुर्भिक्षघृतायस्तैलविक्रयाः ॥ ११४ ॥

दीप्तवारको ग्रहण हो तो धान्यका संग्रह तथा वर्षा मध्यम हो, राजयुद्ध हो, दुर्भिक्ष हो और घी तथा तेल महँगे हों ॥ ११४ ॥

सोमेन्द्रग्रहणेरजाग्रहोन्नस्यमहर्घता ।

लाभस्तैलगृतादिभ्योभौमेवह्निभयंभवेत् ॥ ११५ ॥

सोमवारको हो तो अन्न महँगा हो, तेल घी आदिमें लाभ हो, मंगलको हो तो अग्निभय हो ॥ ११५ ॥

भौमवारेग्रहेभानोरन्योन्यनृपतिक्षयः ।

इन्द्रोर्ग्रहेचकार्पासपूतसूत्रमहर्घता ॥ ११६ ॥

अथवा मंगलवारको सूर्यग्रहण हो तो राजाओंकी क्षति हो और चंद्रग्रहण हो तो अच्छे सूतकी महँगाई हो ॥ ११६ ॥

बुधेपूंगंरक्तवस्त्रसंग्रहोलाभदायकः ।

शुरोरीतिरक्तवस्तुतैलगंधादिलाभदम् ॥ ११७ ॥

बुधवारको हो तो नारियल सुपारी और लाल वस्त्र इनका संग्रह लाभदायक होता है और शुरुवारको हो तो सन लाल वस्तु तथा तेल गंधादि लाभदायक होते हैं ॥ ११७ ॥

शुक्रेसुभिक्षमांगल्यंसर्वलोकशुभंकरम् ।

शनौयुगंधरीलाभःश्यामवस्तुमहर्घता ॥ ११८ ॥

शुक्रवारको हो तो सुभिक्ष-मंगलकारी-और सबको शुभकारा

होता है । और शनिवारको ग्रहण हो तो युगंधरीसे लाभ तथा कार्त्तिक वस्तु मँदगी होती है ॥ ११८ ॥

पीतरक्तवस्त्रताम्रवृषभादिकसंग्रहे ।

मासद्वयेतस्यलाभइत्युक्तंज्ञानिभिःपुरा ॥ ११९ ॥

पीले लाल वस्त्र तथा तांबा और बैल आदिके संग्रहसे दो मासमें लाभ होता है ॥ ११९ ॥

अर्द्धोर्द्धमासिकेलाभस्त्रिभागश्चत्रिमासिके ।

चतुर्भागश्चतुर्मासेऽस्तमितेवर्षसंभवः ॥ १२० ॥

अर्द्ध ग्रहणमें आधे मासमें—तीन भागमें तीन मासमें—चारभाग ग्रहणमें चार मासमें और सम्पूर्ण ग्रहणमें अथवा अस्तमितमें वर्ष भरमें लाभ होता है ॥ १२० ॥

ग्रहणाद्येचसर्वस्मिन्नुत्पातेप्रबलौयदा ।

पश्चात्संज्ञाततोघोररिष्टमंगंतदादिशेत् ॥ १२१ ॥

ग्रहणके आद्यमें यदि सब उत्पात प्रबल हों तो पीछे वर्षा हानसे घोर अरिष्ट दूर होजाते हैं ॥ १२१ ॥

एवमुत्पातरहितेअस्मिन्नुदकयोनिकाः ।

जीवाः पुद्गलकादृश्यास्तद्देशेष्वष्टिरुत्तमाः ॥ १२२ ॥

यदि उत्पात नहीं हो तो जलजन्तु बहुत होते हैं और वृष्टि उत्तम होती है ॥ १२२ ॥

उपरागो यदा मेघे पीडयतेऽयं तदा जनः ।

काम्बोजाभिकिराताश्च पांचालाश्चतिलङ्गकाः ॥ १२३ ॥

“गशि फल” मेघका ग्रहण हो तो काम्बोज किरात पांचाल और तैलंग देशके मनुष्योंको पीड़ा हो ॥ १२३ ॥

वृषे च ग्रहणे गोपाः पशवः पशिका जन्मः ।

महान्तो मनुजा ये च तेषां पीडा गरीयसी ॥ १२४ ॥

वृष राशिपर ग्रहण हो तो गोप-पशु-राहगीर-और बड़े आदमी
इनको पीड़ा हो ॥ १२४ ॥

सूर्याचन्द्रमसोग्रासो मिथुने च वरांगनाः ।

पीड्यन्ते बाहिका लोका यमुनातटवासिनः ॥ १२५ ॥

मिथुन राशिपर सूर्य या चंद्र ग्रहण हो तो बाहिक तथा यमुना,
तट निवासी लोगोंको और स्त्रियोंको पीड़ा हो ॥ १२५ ॥

कूर्कटे ग्रहणे पीडा गर्दभानां च जायते ।

आभीरवर्वराणां च पीडा च महती मता ॥ १२६ ॥

कूर्कका ग्रहण हो तो गधोंको पीड़ा हो । आभीर और वर्वरा
जातिको पीड़ा हो ॥ १२६ ॥

सिंहे च ग्रहणे पीडा सर्वेषां वनवासिनाम् ।

नृपाणां नृपतुल्यानां मनुजानां धनक्षयः ॥ १२७ ॥

सिंहका ग्रहण हो तो वनवासियोंको पीड़ा हो तथा राजाओंको
और राजतुल्य अन्य जनोंके धनका क्षय हो ॥ १२७ ॥

कन्यायां ग्रहणे पीडा त्रिपुटाशालिजातिषु ।

कवीनां लेखकानां च गायकानां धनक्षयः ॥ १२८ ॥

कन्यापर ग्रहण हो तो त्रिपुट-तथा शालि जातियोंमें पीड़ा हो
और कवियों, लेखकों तथा गवैयोंके धनका क्षय हो ॥ १२८ ॥

तुलायामुपरागे च दशार्णवकाहवः ।

मरुतश्चापरान्त्याश्च पीड्यन्ते यतिसाधवः ॥ १२९ ॥

तुलामें ग्रहण हो तो दशार्णव-काहव-मरुत तथा अपरान्तर्वर्ती
लोगोंको पीड़ा हो । और यति तथा साधुओंको पीड़ा हो ॥ १२९ ॥

वृश्चिके ग्रहणे दुःखं सर्वजातेः प्रजायते ।

यदुवरस्य मंद्रस्य चोलयौधेयकस्य वा ॥ १३० ॥

घृश्चिकका ग्रहण हो तो सब जातियोंको दुःख हो और 'मरुवर',
मद्र, चौल तथा यौधेय जातियोंको दुःख हो ॥ १३० ॥

यदोपरागश्चापेस्यात्तदावंत्यश्च वाजिनः ।

विदेहमल्लपांचालाःपीड्यन्ते मिषजो विशः॥१३१॥

घनका ग्रहण हो तो उज्जैन वासियोंमें षोडशमें-विदेह-मल्ल और
पांचाल वासियोंमें पीडा हो तथा बैद्यमें, वैश्यमें पीडा हो ॥ १३१ ॥

मकरे ग्रहणे पीडा नीचानां मन्त्रवादिनाम् ।

स्थविराणानटानां च चित्रकूटस्यसंक्षयः ॥१३२॥

मकरका ग्रहण हो तो नीचमन्त्रवादियोंका, स्थविरों (बृद्धों)का,
नटोंका और चित्रकूट निवासियोंका क्षय हो ॥ १३२ ॥

कुम्भोपरागेपीड्यन्तेगिरिजाःपश्चिमाजनाः ।

तस्कराद्विरदाभीराःप्रजानांदुःखदायकाः ॥१३३॥

कुम्भपर ग्रहण हो तो पश्चिमके पर्वतावासियोंको पीडा हो और
तस्कर, द्विरद (दोदोतों बलि) तथा आभीर इनसे प्रजाको दुःख
हो ॥ १३३ ॥

मीनोपरागेपीड्यन्तेजलद्रव्याणिसागराः ।

जलोपजीविनोलोकाभविद्यायेचपण्डिताः॥१३४॥

और मीन राशिपर ग्रहण हो तो सामुद्रिक जलद्रव्य मर्दंगे हों
और जलोपजीवी (नाव वाले-जहाजी-तथा तैरने वालों) को भय
हो ॥ १३४ ॥

अश्विन्यां पीडितायां स्यान्मुद्रादीनामहर्घता ।

भरण्यांश्वेतवस्त्रेभ्यो लाभं मासत्रये भवेत्॥१३५॥

'नक्षत्र फल'—अश्विनी नक्षत्रमें ग्रहण होनेसे मृग मर्दंगे हों ।
भरणीमें सफेद वस्तुओंसे ३ मासमें लाभ हो ॥ १३५ ॥

कृत्तिकायां हेमरूप्यप्रवालमणिमौक्तिकम् ।

संगृहीतं लाभदायि मासे च नवमे स्मृतम् ॥ १३६ ॥

कृत्तिकामें सोना, चांदी, मूंगा, मणि, मोती इनको खरीदनेसे नौ मासमें लाभ हो ॥ १३६ ॥

रोहिण्यां सूत्रकार्पाससंग्रहो लाभदायकः ।

दश मासान्तरे प्रोक्तः सोमवेधो नचेदिह ॥ १३७ ॥

रोहिणीमें सूत कपासका संग्रह दश मासमें लाभ दे किन्तु चंद्र-
वेध न हो ॥ १३७ ॥

मृगशीर्षेऽपि मंजिष्ठा लाक्षा क्षारः कुसुम्भकम् ।

महर्घं दशमासान्ते लाभदं च यथोचितम् ॥ १३८ ॥

मृगशीर्षमें मजीठ, लाख, खार, कसूभा यह महर्घे होकर १०
मासमें लाभ दें ॥ १३८ ॥

घृतं महर्घमाद्र्यायां लाभदं मासपंचके ।

तैलालाभः पुनर्वस्वोर्मासः पंचकतः परम् ॥ १३९ ॥

आद्रामें घी महर्घा होकर ५ मासमें लाभ दे और पुनर्वसुमें तेल
५ मासमें लाभ दे ॥ १३९ ॥

पुष्ये मासैस्त्रिभिर्लाभो भवेद्गोधूमसंग्रहे ।

आश्लेषायां तु मुद्गेभ्यः प्राप्तिः स्यान्मासपंचके १४०

पुष्यमें गेहूँका संग्रह तीन मासमें लाभ दे आश्लेषामें ५ महीनेमें
मूँगामें लाभ हो ॥ १४० ॥

मघाचतुष्टये चोलाचणकः खलु तुष्टये ।

चित्रायां च युगन्धर्याः लाभो मासद्वयात्यये १४१ ॥

मघासे चार नक्षत्रोंमें चीले, चणे चार मासमें लाभ दें । चित्रामें
युगंधरी २ मासमें लाभ दे ॥ १४१ ॥

त्रिपंचनवभिमासैः स्वातौ लाभस्ततस्तथा ।

विशाखायां कुलित्थेभ्यः षण्मासे लाभसंभवः १४२

स्वातौमें ३-५ नौवें महीनेमें अन्नमें लाभ हो । विशाखामें ६ मासमें कुलथीमें लाभ हो ॥ १४२ ॥

राधायां कोद्रवाच्छाभो मासैर्नवभिराप्यते ।

ज्येष्ठायां गुडखण्डादेः पंचमासे धनोदयः ॥ १४३ ॥

अनुराधामें कोदौमें नौ मासमें लाभ हो; ज्येष्ठामें गुड खांडमें ५ मासमें धन मिले ॥ १४३ ॥

तंडुलेभ्यस्तथा मूलेषूपयां श्वेतवस्त्रतः ।

उषायां श्रीफलात्पूगात्सर्वत्रयासपञ्चकम् ॥ १४४ ॥

मूलमें चाबलोंमें, पूर्वाषाढमें श्वेत वस्त्रमें और उत्तराषाढमें नारियल आदिमें लाभ हो । इन सबमें पाँच महीने पीछे लाभ जानना १४४ ।

श्रवणे तुवरीलाभो धनिष्ठायां तु माषतः ।

चणकेभ्योऽपि वारुण्यां तेभ्यः पूर्वाभिपीडने १४५ ॥

श्रवणमें दुअरमें, धनिष्ठामें उड़दोंमें, शतभिषा और पूर्वाभाद्रपदमें अणोंमें लाभ हो ॥ १४५ ॥

लाभस्त्रिमासि निर्दिष्टमुभाभ्यां लवणादितः ।

मासपट्काद्रवेच्छाभो रेवत्यां सुहमापतः ॥ १४६ ॥

उत्तराभाद्रपदमें लवणमें ३ मासमें लाभ हो और रेवतीमें ग्रहण हो तो ६ महीनेमें मूंगके संग्रहसे लाभ हो ॥ १४६ ॥ (इति)

(४) भौमचारः ।

शीतपीडाश्विनीभौमे तु पधान्यमर्ध्वता ।

द्रिजपीडाभरण्यादेर्नाशः स्यादतिशीघ्रगे ॥ १४७ ॥

(४) “ मंगल चार ”—अश्विनी नक्षत्र पर मंगल हों तो तुष धान्य महेँगे हों और भरणीपर हो तो ब्राह्मणोंको पीड़ा हो तथा उनका शत्रु नाश हो ॥ १४७ ॥

सर्वदेशेग्रामपीडा धान्यानांच महर्घता ।

कृत्तिकायांदेशभंगोपीडा तापसआश्रमे ॥ १४८ ॥

कृत्तिकापर हो तो सब देशोंमें तथा गाँवोंमें पीडा हो, धान्य महेँगा हो, देश भंग हो और तपस्वियोंके आश्रमोंमें पीडा हो ॥ १४८ ॥

वृक्षपीडाश्वापदानारोगःस्याद्रोहिणीकुजे ।

महर्घतापि कार्पासेवस्त्रेसूत्रेविशेषतः ॥ १४९ ॥

रोहिणीपर मंगल हो तो वृक्षोंमें रोग, चौपायोंमें पीडा, कपास वस्त्र और सूतकी महेँगाई हो ॥ १४९ ॥

कार्पासनाशःप्रबलंसुभिक्षंमृनेकुजेभूर्जलपूरितेव ।

वृष्टिश्चरौद्रेदितिजेतिलानांशोविनाशोमहिषी-

कुलस्य ॥ १५० ॥

मृगांशपर मंगल हो तो पृथ्वी जलसे पूरित होजाय और कपासकी खेती नष्ट होजाय । आर्द्रा पर हो तो वृष्टि हो और पुनर्वसु पर हो तो तिलोंका नाश तथा भैंसोंका विनाश हो ॥ १५० ॥

पुष्येकुजेचौरभयविरोधान्छुभंनकिंचिन्नृपनिर्व-

लत्वम् । सार्पेल्पवृष्टिर्वहुधान्यनाशोदुर्भिक्षने-

वोरगदंशभीतिः ॥ १५१ ॥

पुष्यपर हो तो चौरभय हो, विरोधसे अशुभ हो, और राजा कम-जोर हों । श्लेषापर हो तो बहुत वर्षासे धान्य नाश हो, दुर्भिक्ष हो और साँपोंका भय अधिक हो ॥ १५१ ॥

येन्येनवृष्टिस्तिलमाषमुद्रविनाशनंदुर्लभतान्य-
धान्ये । स्वाद्योनिजे चेत्क्षितिजेरुपवृष्टिःप्रजासु
पीडामुरुतैलमूल्यम् ॥ १५२ ॥

अधपर हो तो वर्षा न होनेसे उड़द मूंग और तिलोंका नाश हो
अन्य धान्य दुर्लभ हों । पूर्वाफाल्गुनीपर हो तो अल्प वर्षा हो, प्रजामें
पीडा हो और तैलका मूल्य बढ़जाय ॥ १५२ ॥

तथोत्तरायांजलवृष्टिरोधाच्चतुष्पदे पीडनमश्वमू-
ल्यम् । हस्तेकुजेरुपांशु च तुच्छधान्यंघृतंशुडो
वा लवणं महर्घम् ॥ १५३ ॥

उत्तराफाल्गुनीपर हो तो वर्षाके अवरोधसे चौपायोंमें पीडा हो,
घोड़ोंका मूल्य घटे । और हस्तपर मंगल हो तो जल कम हो, तुच्छ
धान्य हो, घृत गुड़ और नमक महँगे हों ॥ १५३ ॥

चित्राकुजे तीव्ररुजोतिपीडा शालीष्टगोधूमम-
हर्घतापि । स्वातावनावृष्टिरथद्विद्वे कापासगो-
धूममहर्घभाषः ॥ १५४ ॥

चित्रापर मंगल हो तो तीव्र रोगपीडा हो । चावल तथा गेहूँ महँगे
हों । स्वातीपर हो तो अनावृष्टि हो, विशाखापर हो तो फपास और
गेहूँका भाव महँगा हो ॥ १५४ ॥

मैत्रे शुभिक्षं पशुपक्षिपीडा ज्येष्ठकुजे स्वरुप-
जलं च रोगाः । मूले द्विजक्षत्रियवर्गपीडा मह-
र्घता वा तुषधान्यराशेः ॥ १५५ ॥

अतुराधापर हो तो शुभिक्ष हो, पशु पक्षियोंकी पीडा हो, ज्येष्ठा
पर मंगल हो तो जल कम हो, रोग हो । मूल पर मंगल हो तो
क्षत्रियोंमें पीडा हो, तुष धान्य महँगा हो ॥ १५५ ॥

पूषाकुजे भूरिजलाः पयोदा गावोऽऽरुपदुग्धा
वसुधान्नपूर्णा । मर्द्धता शालितिलाज्यमापे-
ष्वग्रेपि तत्पूर्ववदेव भावम् ॥ १५६ ॥

पूर्वाषाढपर हो तो जल बहुत हों, गायें दूध कम दें, पृथ्वी अन्नसे
पूरित हो । शालि, तिल, घी, और उड़द मँहंगे हों, उत्तराषाढपर हो
तो भी वही फल हो ॥ १५६ ॥

श्रुतौ च रोगा बहुधान्ययोगो भूम्यां न पश्चाज्ज-
लदागमश्च । स्याद्भासवे वासववत्समृद्धिर्धान्यं
समर्घं गुडशर्करादि ॥ १५७ ॥

श्रवणपर मंगल हो तो रोग हो, धान्यका योग न हो, पीछे वर्षा
हो । धनिष्ठा पर हो तो इन्द्रकी भांति समृद्धि हो, धान्य सस्ता हो
और गुड शर्कराभी सस्ते हों ॥ १५७ ॥

स्युर्वारुणे. कीटकमूपकाद्यास्तथापि धान्यानि
बहूनि भूम्याम् । पूषामहीजे तिलवस्त्रसूत्रका-
पांसूगादिमर्द्धता वा ॥ १५८ ॥

शतभिषापर मंगल हो तो कीड़े और मूषे अधिक हों, तीभी
खेतियां बहुत हों । पूषाभाद्रपर हो तो तिल, वस्त्र, कपास, सुपारी
आदि मँहंगे हों ॥ १५८ ॥

दुर्भिक्षमेवोत्तरभाद्रिकायां वर्षा न मेघोन्नयनेपि
किञ्चित् । सौख्यं सुभिक्षं क्षितिजे सर्पोष्णे नरेषु
रोगा बहुधान्यलक्ष्मीः ॥ १५९ ॥

उत्तराभाद्रपर हो तो दुर्भिक्ष हो-वर्षा तथा अन्न नहीं हो । और
रेवती नक्षत्र पर मंगल हो तो सुभिक्ष हो, मनुष्योंमें रोग हो और अन्न
लक्ष्मी बहुत हो ॥ १५९ ॥

मेघेभूमिसुतोदयेचचपलामाषास्तिलाःस्युःप्रियाः
नाशःस्याच्चवृषेचतुष्पदकुलेयुग्मेमदुःप्राप्यता ।
वैश्यानां बहुपीडनंशशिगृहे वृष्ट्यातिधान्यो
दयः सिंहे शालिमहर्षता द्विजरुजः कन्योदये
भूपतेः ॥ १६० ॥

“उदय फल”-मेघ राशिमें मंगलका उदय हो तो तिल और
उदय मिलें हों (अर्थात् मंहेंगे हों) वृषमें हो तो चौपायोंका नाश
हो । मिथुनमें हो तो दुष्प्राप्यता हो । कर्कमें हो तो वैश्योंकी बहुत
पीडा हो, धान्यका उदय हो, सिंहमें हो तो चावल मंहेंगे हों और
कन्यामें उदय हो तो ब्राह्मणों तथा राजाओंमें रोग हो ॥ १६० ॥

धान्यानिभूयांसि तुलोदये स्युः कन्याद्वये तेन
सुभिक्षमेव । चौराग्निभीतिर्नृपदुष्टनीतिर्निष्प-
त्तिरन्नस्य तु वृश्चिकस्थे ॥ १६१ ॥

तुलमें हो तो धान्य बहुत हों (कोईका मत है कि कन्या
मिथुनमें सुभिक्ष हो,) वृश्चिकमें हो तो चौर तथा अग्निका भय हो
राजाओंकी नीति खोटी हो और अन्नकी उत्पात्ति हो ॥ १६१ ॥

वनुपि रसातलवृष्टिःशालिगुडादेर्महर्षतामकरे ।
पश्चिमधान्यविनाशो वर्षाप्यतिशायनीदेशे ॥ १६२ ॥

घनमें हो तो पातालवृष्टि हो, मकरमें हो तो चावल तथा गुडा-
दिकी महर्षता हो और पश्चिम धान्य (भूग मोंठ तिल बाजरी)का
नाश हो, वर्षा अधिक हो ॥ १६२ ॥

कुम्भेतीढागमात्पीडा यदि वा मूषकादिना ।

मीने कुजोदयो नैव वर्षादुर्भिक्षसाधनम् ॥ १६३ ॥

कुम्भमें हो तो टीढीके आनेसे पीडा हो, जयवा मूषक वृद्धि हो । और

शनि राशिपर मंगलका उदय हो तो वर्षा नहीं हो और दुर्भिक्षका
साधन हो ॥ १६३ ॥

अथ अस्त्राविचारः ।

संमलास्तगमान्मेषेपापाणानां महर्घता ।

वृणादेःखलुवस्तूनांसुभिक्षंस्वस्थतावृषे ॥ १६४ ॥

“अस्त फल”-मेष राशिमें मंगलका अस्त हो तो पत्थरोंकी
अहंगाई हो। वृषमें अस्त हो तो घास फूस चारेकी सस्ती हो ॥ १६४ ॥

युग्मेतिवृष्टिःकर्कस्थे तस्मिन्भूधान्यशून्यता ।

सिंहेश्वखरयोःपीडाचतुष्पदमहर्घता ॥ १६५ ॥

मिथुनमें हो तो अति वर्षा हो, कर्कमें हो तो पृथ्वीपर अन्नकी
शून्यता करे । सिंहमें हो तो घोड़े तथा गधोंको पीडा करे और
चौपाये मंहें हों ॥ १६५ ॥

कन्याद्वये महर्घाःस्युर्गोधूमाश्वणका यदा ।

अलौसुभिक्षंनृपभीर्धनुर्महर्घशालिकृत् ॥ १६६ ॥

कन्या तथा तुलमें हो तो गेहूँ और चणे मंहें हों, । वृश्चिकमें
गर्जभय तथा सुभिक्ष हो और धनमें चावल मंहें हों ॥ १६६ ॥

तुषधान्यागरुस्तद्वन्मकरेविपुलंजलम् ।

चौरवह्निभयदेशेकुम्भेराजसुविग्रहः ॥ १६७ ॥

मकरमें तुष धान्य तथा अगर मंहें हों, जल बहुत गिरे । कुंभमें
हो तो चौर तथा अग्निका भय हो, राजाओंमें विग्रह हो ॥ १६७ ॥

मीने कुजास्तंगमनात्रवनागाकुलाःप्रजाः ।

बहुप्रजासुभिक्षेणसोत्सवःशुभलक्षणः ॥ १६८ ॥

और मीनमें मंगलका अस्त हो तो अन्नकी तेजी हो, सर्पोंसे
व्याकुलता हो, बालकोंका जन्म अधिक हो, सुम्न हो, उत्सव हो
और शुभ लक्षण हो ॥ १६८ ॥

अथ बुधचारः ।

बुधेऽश्विन्यां तु पीडयन्ते गोधूमश्च यवादयः ।

इक्षुदुग्धरसादीनांसमर्घचघृतादिषु ॥ १६९ ॥

(९) "बुधचार" - अश्विनीमें बुध हो तो जी गेहूंमें रोग हो ।

ईख, दूध, रस और घी आदि सस्ते हों ॥ १६९ ॥

बुधेऽभरण्यां मातंगपीडाचाण्डालनाशनम् ।

तीव्ररोगाद्धान्यवस्तुमहर्घलोकवैरतः ॥ १७० ॥

भरणी पर बुध हो तो हाथियोंको पीडा हो, चाण्डालोंका नाश हो, तीव्र रोग हो, धान्य महंगे हों और वैर बढ़े ॥ १७० ॥

कृत्तिक्रायां बुधे विप्रपीडा मेघारुपता जने ।

अन्नमल्पपुष्परंवाधा क्वचिद्विग्रहकारणम् ॥ १७१ ॥

कृत्तिकामें बुध हो तो ग्राहणोंको पीडा हो, मेघ कम हो, अन्न अल्प हों मनुष्योंमें ज्वरपीडा हो और कहीं कुछ बखेडा खडा हो ॥ १७१ ॥

रोहिण्यां ज्ञे त्र कार्पासतिलसूत्रमहर्घता ।

मृगशीर्षे सुभिक्षस्याद्वातवृष्टिर्महीयसी ॥ १७२ ॥

रोहिणीमें बुध हो तो कपास, तिल, सूत महंगे हों । मृगशिरमें हो तो सुभिक्ष हो, वायुसे वर्षा हो ॥ १७२ ॥

गोधूमतिलमापादिसमर्घसुखिनोजनाः ।

आर्द्रायां वृष्टिरतुलाग्रहपाताप्रवाहतः ॥ १७३ ॥

आर्द्रामें हो तो अर्घा अधिक हो, गेहूं तिल ठंडा सस्ते हों, मनुष्य सुखी रहें । और ग्रहपात तथा पवन प्रवाह हो ॥ १७३ ॥

पुनर्वसौ बालपीडा कार्पासे सूक्ष्मदन्ता ।

जनेषु सर्वसंयोगः पुष्ये राज्ञाभ्यंजयः ॥ १७४ ॥

पुनर्वसुमें बुध हो तो बालकोंको पीडा हो, कपास सूत मंदा हों,

धुष्यमें हो तो सब लोगोंका संयोग हो । राजाओंमें भय हो । तथा जय हो ॥ १७४ ॥

आश्लेषायां महावृष्टिस्तुषधान्यसमुद्भवः ।

मघाबुधेल्पवृष्टिश्चधान्यनाशःप्रजाभयम् ॥ १७५ ॥

आश्लेषामें हो तो महावृष्टि हो, तुष धान्य उत्पन्न हों । मघामें बुध हो तो वर्षा कम हो, धान्य नाश और प्रजामें भय हो ॥ १७५ ॥

पूर्वायां नृपसंग्रामः क्षेत्रबाधान्नमंदता ।

उफायां तुमापमुद्राद्यल्पनिष्पत्तिमादिशेत् ॥ १७६ ॥

पूर्वाफाल्गुनीमें हो तो राजाओंमें युद्ध हो, क्षेत्र बाधा हो, अन्न मंद हो, उत्तराफाल्गुनीमें हो तो उडद मृग कम उत्पन्न हों ॥ १७६ ॥

हस्ते बुधे सुभिक्षं स्याद्धान्यमारोग्यमन्बुदाः ।

चित्रायां गणिकाशिल्पिद्विजपीडालपवर्षणम् १७७ ॥

हस्तमें बुध हो तो सुभिक्ष हो धान्य निरोग रहे । चित्रामें हो तो घर्षा कम हो और वेश्या तथा शिल्पी लोग और ब्राह्मणोंमें पीडा हो ॥ १७७ ॥

स्वाती बुधे मन्दवृष्टिर्विशाखायां सुभिक्षता ।

व्याधिर्भयंच दुर्मिक्षं किंचित्कुत्रापि जायते ॥ १७८ ॥

स्वातीमें बुध हो तो मन्द वर्षा हो, विशाखामें हो तो सुभिक्ष हो । वही व्याधि भय और दुर्मिक्ष भी हो ॥ १७८ ॥

सुभिक्षमनुराधायां पक्षिपीडा प्रजासुखम् ।

ज्येष्ठायां मिश्रशाल्याज्यमदधताश्चरोगिता ॥ १७९ ॥

अनुराधामें सुभिक्ष हो, पशुओंमें पीडा हो, मनुष्योंको सुख हो । और ज्येष्ठामें हो तो ईख, शाली-और धी मढ़ेंगे हों तथा घोड़ोंमें रोग हो ॥ १७९ ॥

मूलेपक्षिपशूनांचबालपीडाविजायते ।

धान्यमंदंचपूषायांव्याधिर्ग्रीष्मेपिवर्षणम् ॥ १८० ॥

मूलमें हो तो पशु पक्षी और बालकोंमें पीडा हो । पूर्वाषाढमें हो तो धान्य मन्दा हो और ग्रीष्ममें व्याधि तथा वर्षा हो ॥ १८० ॥

उषायांसस्यनिष्पत्तिरष्टवर्षशिशुक्षयः ।

श्रुतौगुडांतसीधान्यचणकेषुहिमाद्र्यम् ॥ १८१ ॥

उत्तराषाढमें हो तो अलसी उत्पत्ति हो, भाठ २ वर्षके बालकोंका नाश हो । श्रावणमें हो तो गुड अलसी और चणे आदि धान्यमें खर्फ आले गिरनेका भय हो ॥ १८१ ॥

वासवेतुगवांपीडावारुणेशूद्ररोगता ।

दुर्भिक्षमथपूषायांक्षेममारोग्यतास्मृता ॥ १८२ ॥

धनिष्ठामें गायोंको पीडा हो । शतभिषामें शूद्रोंमें रोग हो । पूर्वाभाद्रपदमें हो तो दुर्भिक्ष हो और क्षेम तथा आरोग्य हो ॥ १८२ ॥

उभायांनृपतिकेशआरोग्यंपशुपक्षिणाम् ।

रेवत्यांनंदनंचन्द्रोमहर्षकुंकुमाद्यपि ॥ १८३ ॥

उत्तराभाद्रपदमें हो तो राजाओंमें क्लेश तथा पक्षियोंमें आरोग्यता हो । और रेवतीमें बुध हो तो कुंकुम आदि महंगे हों ॥ १८३ ॥

मेघेषुधस्योदयतोगवादिचतुष्पदानांमहतीदपी-

डा । तीडादिनाधान्यमहर्षता च वृषेतिवृष्टिर्भि-

थुनेन वर्षा ॥ १८४ ॥

“उदय फल”-मेघमें बुधका उदय हो तो गाय बैल आदि चौपायोंको बड़ीभारी पीडा हो दीदी आदिसे धान्य महंगा हो । वृषमें हो तो वर्षा अविक्र हो और मिथुनमें उदय हो तो वर्षा नहीं हो ॥ १८४ ॥

कर्कसुखंसिंहपदैचतुष्पान्म्रयेतकन्या बहुधा-
न्यसौख्यम् ॥ भूकंपयुद्धादि तुलोदितेज्ञेतथाष्ट-
मेराजभयंसुभिक्षम् ॥ १८५ ॥

कर्कमें सुख हो, सिंहमें चौपायोंकी मृत्यु हो, कन्यामें बहुत
धान्य सुख हो । तुलमें उदय हो तो भूकंप तथा युद्धादि हों और
वृश्चिकमें उदय हो तो राजभय तथा सुभिक्ष हो ॥ १८५ ॥

धनुर्बुधस्याभ्युदयात्सुखानिमृगेमही धान्यरसा-
दिपूर्णा । कुम्भेतिवायुःपथिभिश्चमीनेदुर्भिक्षप-
क्षोयदिवातिवृष्टिः ॥ १८६ ॥

धनमें बुधोदय हो तो सुखका उदय हो, मकरमें हो तो पृथ्वी
धान्य तथा रससे पूर्ण हो । कुम्भमें हो तो मार्गमें हवा बहुत चले
और मीनमें बुधका उदय हो तो अति वृष्टिसे दुर्भिक्ष हो ॥ १८६ ॥

मेपेबुधास्तेभुवनेसुभिक्षंचतुष्पदां नाशकरंवृषा-
स्तम् । राज्ञांतुपीडामिथुनेथकर्केऽनावृष्टयेमृत्यु-
भयंच चौराः ॥ १८७ ॥

"अस्त फल"—मेप राशिमें बुधका अस्त हो तो सुभिक्ष हो ।
वृषमें उदय हो तो चौपायोंका नाश हो । मिथुनमें हो तो राजा
ओंको पीडा हो । और कर्कमें हो तो अनावृष्टि तथा मृत्युभय आदि
चौरभय हो ॥ १८७ ॥

तथैवसिंहेलपजलंचकन्याबुधास्ततश्चौरभयाति-
वृष्टिः । क्रयाणकानांचमहर्घतायैतुलाप्यलिधा-
त्तुमहर्घतायै ॥ १८८ ॥

सिंहमें अस्त हो तो वर्षा कम हो, कन्यामें हो तो चौरभय तथा
अतिवृष्टि हो । और तुलामें हो तो व्यापारी वस्तु महंगी हों तथा
वृश्चिकमें हो तो धातु महंगे हों ॥ १८८ ॥

राज्ञांभयंघन्विनिरोगचारोमृगेल्लपलाभो व्यव-
सायिलोके । कुंभेतिवायुर्हिमदग्धवृक्षा मीनेत्र-
धानानृपवर्गपीडा ॥ १८९ ॥

घनमें हो तो राजाओंमें भय हो । रोगका प्रचार हो । मकरमें हो तों व्यापारियोंको कम लाभ हो । कुम्भमें हो तां हवा बहुत चले और हिम (टंड) से वृक्ष जल जाँय तथा मीनमें बुधका अरत हो तो राक्षसवर्गमें पीडा हो ॥ १८९ ॥

(६) अथगुरुचारः ।

मेषराशौयदाजीवश्चैत्रसम्बत्सरस्तदा ।

प्रबुद्धोनामजलदःवर्षाचसर्वतोमुखी ॥ १९० ॥

(६) "गुरुचार विचार" मेष राशिमें बृहस्पति हो तो उसे चैत्र सम्बत्सर नामना उसमें प्रबुद्ध नामका मेघ चारों ओर जल वर्षाता है ॥ १९० ॥

सुभिक्षंविग्रहोराज्ञांसमर्घवस्त्रकर्पटम् ।

हेमरूप्यंतथाताम्रंकार्पासंचप्रवालकम् ॥ १९१ ॥

सुभिक्ष होता है राजाओंमें विग्रह रहता है । वस्त्र-कपीठ-सोना, चोर्दी, तांबा, कपास और मृंगे यह सरते होते हैं ॥ १९१ ॥

अश्वपीडामहारोगोद्विजानांकष्टसंभवः ।

मासत्रयेफलमिदंपश्चाद्भाद्रपदेपुनः ॥ १९२ ॥

घोड़ोंमें महा रोगसे पीडा और ब्राह्मणोंको कष्ट यह फल तीन मासोंमें रहता है ॥ १९२ ॥

गोधूमशालिमाषाणामाज्यस्वात्रेसमर्घता ।

दक्षिणत्सामुत्तरस्याखण्डवृष्टिःप्रमायते ॥ १९३ ॥

फिर भादवेमें गेहूँ—चावल, घी, उडद इनकी सस्ती होती है। और दक्षिण, उत्तरमें खण्ड वृष्टि होती है ॥ १९३ ॥

दक्षिणोत्तरयोर्देशे छत्रभंगोपिकुत्रचित् ।

दुर्भिक्षमपि षण्मासा आश्विने फाल्गुने तथा ॥ १९४ ॥

दक्षिणोत्तर देशमें कहीं छत्रभंगभी हो सकता है। आश्विनसे फाल्गुन तक छः मासका दुर्भिक्ष हो ॥ १९४ ॥

पश्चात्सुभिक्षं द्वा मासौ मेघावैस्युर्जलप्रदाः ।

कार्तिके मार्गशीर्षे च कार्पासान्नमहर्घता ॥ १९५ ॥

पछे सुभिक्ष हो दो मास वर्षा हो कार्तिक मार्गशीर्षमें कपास तथा अन्न महंगा हो ॥ १९५ ॥

भेदपाठे राज्यपीडा देशभंगो भवेद्भ्रुवम् ।

लोकाः सरोगा दुर्भिक्षं पीपेरसमहर्घता ॥ १९६ ॥

भेदपाठमें राज्य, पीडा तथा देश भंग हो पीपमें लोग रोगी हों रसकी महंगाई हो ॥ १९६ ॥

वाणिज्ये संशयो लाभैर्वैशाखे गुर्जरैरणः ।

छत्रभंगस्तथा पाठे श्रावणे च भयं पथि ॥ १९७ ॥

वैशाखमें व्यापार लाभमें संशय रहे गुर्जर देशमें रण हो छत्रभंग हो और श्रावणमें मार्ग भय हो ॥ १९७ ॥

अब्दमध्ये यदा जीवः क्रमाद्वा शित्रयं स्पृशेत् ।

तदा सुभटकोटीभिः प्रेतपूर्णा वसुंधरा ॥ १९८ ॥

(वर्षके बीचमें) यदि बृहस्पति तीन राशियोंको स्पर्श करे तो मोक्षाओंकी कोटीका नाश हो तथा पृथ्वी प्रेतोंसे पूर्ण हो ॥ १९८ ॥

वृषगशौ यदा जीवो वैशाखे वत्सरस्तदा ।

नंदशालो भवेन्मेघः सर्वधान्यसमर्घता ॥ १९९ ॥

घृपराशिमें बृहस्पति हो तो उसे वैशाख वत्सर जानना । उसमें
नेदशाल नामक मेघ वर्षा करता है और सब रस सस्ते होते हैं ॥ १९९ ॥

वैशाखे आश्विने मासे स्त्रीणां रोगाश्च दन्ति नाम् ।

अश्वानां च महापीडा गृहवैरं परस्परम् ॥ २०० ॥

वैशाख और आश्विनमें स्त्री और हाथियों को पीडा हो परस्पर
विरोध हो ॥ २०० ॥

गोधूमशालिचणका सुद्रामापास्तथा तिलः ।

सहर्षाः श्रावणे ज्येष्ठे मेघानां नमहाजलम् ॥ २०१ ॥

गेहूँ, चावल, चने, मूँग, उड़द, तिल यह श्रावण तथा जेठमें
सहर्षे होते हैं । वर्षा कम हो ॥ २०१ ॥

शृंगालके मालवे चउत्पातो राजविग्रहः ।

देशभंगाद्भयं शून्यं चृतधान्यमहर्वता ॥ २०२ ॥

शृंगाल मालवा इनमें उत्पात हो राजाओंमें विग्रह हो देश भंगा
हो घी और धान्य थोड़े कम विके ॥ २०२ ॥

आषाढे श्रावणे वर्षानवर्षा भाद्रपादके ।

अश्वरोगश्च तुष्पादनाशः पीडागमः क्वचित् ॥ २०३ ॥

आषाढ श्रावणमें वर्षा हो भादवेमें खींच हो । चौपायोंमें रोग
हो । और चौपाये मरें ॥ २०३ ॥

मिथुने संगते जीवे ज्येष्ठाख्यो वत्सरो भवेत् ।

चालानां दोषमश्वानां खण्डवृष्टिस्तदा वदेत् ॥ २०४ ॥

मिथुनमें बृहस्पति आवे तो जेष्ठ वर्ष होता है । उसमें चालकों
तथा घोड़ोंमें पीडा हो खण्ड वृष्टि हो ॥ २०४ ॥

कर्कोटकस्तथा मेघो वर्षते नात्र संशयः ।

तस्करैः पीडयते लोकः पापोपहतमानसैः ॥ २०५ ॥

उस समयमें ककोंटक नाम मेव वर्षा करता है । लोग चोरोसे पीड़ित हों ॥ २०५ ॥

पश्चिमायां सिंधुदेशे वायव्ये चोत्तरादिशि ।

चित्रा विचित्रा जायन्ते रोगपीडोत्तरापथे ॥ २०६ ॥

पश्चिममें सिंधु देशमें वायव्यमें और उत्तर दिशामें चित्र विचित्र वर्षा हो तथा रोग पीडा हो ॥ २०६ ॥

श्वेतवस्त्रं तथा कांस्यं कपूरं चंदनादिकम् ।

मंजिष्ठं नारिकेलं च पूगी स्वर्णं च हृष्यकम् २०७

मासो वै पंचकं यावत् समर्घं चैत्रतो भवेत् ।

पश्चान्महर्घपूर्वोक्तधान्यानां च समर्घता ॥ २०८ ॥

सफेद वस्त्र, तथा काँसी कपूर चंदन मजीठ नारियल सुपारी सोना और चाँदी यह चैत्र तक पांच महीने सस्ते होकर फिर महँगे हों ॥ २०७ ॥ २०८ ॥

श्रावणे तुमहत्कष्टं महिषीणां च हस्तिनाम् ।

पूर्वाग्रियाम्यनेर्ऋत्यामीशाने च सुभिक्षता ॥ २०९ ॥

श्रावणमें भैरव और हाथियोंकी बड़ा कष्ट हो और पूर्व, आश्विन, दक्षिण ईशान इन दिशाओंके देशोंमें सुभिक्ष हो ॥ २०९ ॥

राजास्वस्थः प्रजाबुद्धिः सुभिक्षं मंगलं भुवि ।

समर्घतैलखण्डादिशर्कराघातवोपि च ॥ २१० ॥

राजालोग स्वस्थ रहें, प्रजामें वृद्धि हो, सुभिक्ष हो, पृथ्वी पर मंगल हों । तेल-खांड-शर्करा और घातु सस्ते हों ॥ २१० ॥

शुंठी मरीच पिप्पल्यो मंजिष्ठो नातिकोशलः ।

महर्घमे तद्वस्तु स्यात् फाल्गुने धान्यसंग्रहः ॥ २११ ॥

सोंठ, मिर्च, पीपल, मँजीठ, जायफल कंकौलयह महगे हों और
फाल्गुनमें धान्य संग्रह लाभदायक हो ॥ २११ ॥

कर्केंगुरुस्तदाऽऽषाढेवासरस्तत्रजायते ।

पूर्वदक्षिणयोर्मघःमध्यमःकंबलाभिघ्नः ॥ २१२ ॥

कर्क राशिका बृहस्पति हो तो उत्तर्को आषाढ वर्ष कहतेहैं । उसमें
कंबल नामक भेघ दक्षिण और पूर्वसे वर्षा करते हैं ॥ २१२ ॥

महर्घ सर्वधान्यानांकार्तिकेफाल्गुनेतथा ।

पश्चिमायांसिंधुदेशेघायव्येचोत्तरादिशि ॥ २१३ ॥

अथश्चतुष्पदानांस्याहुर्भिक्षंमृगसैन्यकम् ।

हेमरूप्यंतथाताम्रंपट्सूत्रंप्रवालकम् ॥ २१४ ॥

मौक्तिकंद्रव्यमन्नादिलोकोक्त्यालोकविक्रयः ।

मंजिष्ठाश्वेतवस्त्राणांसमर्घस्यान्नसंशयः ॥ २१५ ॥

कार्तिक-और फाल्गुनमें सब धान्य तेज हों, पश्चिम सिंधु देश
चायव्य-उत्तर दिशा इनमें चौपायोंका नाश हो- हरिणोंको दुःखही,
हुर्भिक्ष हो । सोना, आंटी-ताम्बा, रेशम, मृगा, मोती, द्रव्य, और
अन्न यह लोकोक्तियों (बड़े सस्ते-बड़े अच्छे इत्यादि बातें काने)से
विकें । और मंजीठ तथा श्वेत वस्त्र सस्ते हों ॥ २१३ ॥ २१४ ॥ २१५ ॥

गोधूमशालितैलाज्यंलवणंशर्कराधुनः ।

मापामहर्घाजायन्तेपापकर्मरतोजनः ॥ २१६ ॥

गेहूँ, चावल, तेल, घी, नमक, शर्करा, उड़द यह महगे हों और
मनुष्य पाप करें ॥ २१६ ॥

पट्सूत्रंचवस्त्राणिजातीफललवंगकम् ।

मरिचंशीतकालेथसंग्राह्यावैवणिजनैः ॥ २१७ ॥

रेशमी वस्त्र, जायफल, लौंग और मिर्च यह जाडेमें व्यापारियोंको संग्रह करनी चाहिये ॥ २१७ ॥

वैशाखज्येष्ठयोर्लाभोद्विगुणस्तस्यविक्रयात् ।

वर्षाकाले महावर्षासर्वधान्यसमर्धता ॥ २१८ ॥

इन वस्तुओंको वैशाख जेठमें बेचनेसे दूना लाभ हो वर्षा ऋतुमें बहुत वर्षा होनेसे खेतियां बहुत हों ॥ २१८ ॥

सिंहेजीवेश्रावणारुख्यंवत्सरेवासुकिर्धनः ।

बहुक्षीरघृतागावोजलपूर्णाचमेदिनी ॥ २१९ ॥

सिंह राशिपर वृहस्पति आवे तब उसको श्रावण वर्ष कहते हैं । उसमें वासुकी मेघ वर्षता है गायें घी दूध बहुत देती है और पृथ्वी जलसे पूर्ण होजाती है ॥ २१९ ॥

देवब्राह्मणपूजास्यान्नराणांमान्यतासताम् ।

रोगाविवादश्चान्योन्यंचतुष्पदमहर्धता ॥ २२० ॥

उस समयमें देव ब्राह्मणोंकी पूजा हो और सत्पुरुषोंका मान हो । रोग विवाद हो और चौपायोंकी तेजी हो ॥ २२० ॥

गोधूमतिलमाषाज्यशालीनांचमहर्धता ॥

सुवर्णरूप्यताम्रादेःप्रवालानांसमर्धता ॥ २२१ ॥

गेहूं, तिल, उड़द, घी, चावल, सोना, रूपा, चांया और धूमे मईगे हों ॥ २२१ ॥

सुभिक्षंसर्पदंशश्चमेघोप्यापादभाद्रयोः ।

श्रावणवृष्टिरल्पैवसुकालःकार्तिकेमतः ॥ २२२ ॥

सुभिक्ष हो, यहीं सर्प बाधा हो आपाद और भादवेमें अच्छी वर्षा हो श्रावणमें कम वर्षा हो और कार्तिकमें सुकाल हो ॥ २२२ ॥

कन्याभोगेगुरोजतिमेघनामतमस्तमः ।

भाद्रसम्बत्सरस्तत्रसप्तमासाश्चरौरवम् ॥ २२३ ॥

जब कन्या राशिपर बृहस्पति आवे तो उसें भाद्रपद वर्ष कहते हैं ।
उसमें तमनाम मेघ वर्षता है और सातमहीने दुःख रहता है ॥ २२३ ॥

ततः परं सुभिक्षस्यात्कार्तिकान्माघवावधि ।

धान्यसंग्रहणेलामोद्विगुणोभाद्रमासजः ॥ २२४ ॥

इसके पीछे कार्तिकसे लेकर वैशाख तक सुभिक्ष रहता है । इस
अवसरमें धान्य संग्रह करनेसे भादवेमें दूना लाभ होता है ॥ २२४ ॥

चतुष्पदानां पीडापि गोधूमाः शालिशर्कराः ।

तेलमाषामहर्घाणि गुडादीक्षुरसस्तथा ॥ २२५ ॥

उस वर्षमें चौपायोंमें पीडा हो गेहूं, धान्य, शक्कर, तेल, उड़द,
ईख और गुड़ यह महंगे हों ॥ २२५ ॥

शूद्राणामन्त्यजानांचकष्टसौराष्ट्रमण्डले ।

खण्डवृष्टिर्दक्षिणस्यामुत्पातो म्लेच्छमण्डले ॥ २२६ ॥

तथा शूद्र और अन्त्यजोंको कष्ट हो । सौराष्ट्र देशमें कष्ट दक्षिणमें
खण्ड वृष्टि और म्लेच्छ देश (काबुल) में उत्पात हों ॥ २२६ ॥

भेदपाटे शृगालेचपरचक्रभयंरणः ।

सर्पदंशो वह्निभयमेघोत्पश्चरसेल्पता ॥ २२७ ॥

भेदपाट और शृगाल देशमें शत्रुसे भय और युद्ध हो । साँपोंके
काट खानेकी तथा अग्निकी शिकायत रहे । मेघ और रस कम
हों ॥ २२७ ॥

मरुदेशे छत्रमंगश्चैत्रे वामाधवे भवेत् ।

गोधूमघृततैलानिमहर्घाणिसमादिशेत् ॥ २२८ ॥

चैत्र वा वैशाखमें मरु देशमें छत्रभंग हो । और गेहूं वी तेल
महंगे बिकें ॥ २२८ ॥

वस्त्रकम्बलधातूनामिन्नादेश्वसमर्घता ।

धान्यसंग्रह आपादे भाद्रे लाभश्चतुर्गुणः ॥ २२९ ॥

वज्र कम्बल धातु यह सस्ते हों और आपादमें धान्य संग्रह करनेसे भादवेमें चौगुणा लाभ हो ॥ २२९ ॥

गुरोस्तुलायामेधाख्यःतक्षकोवत्सरोऽश्विनः ।

तदातिवृष्टिर्मेजिष्ठानालिकेरसमर्घता ॥ २३० ॥

यदि गुरु तुल्य राशिपर आवे तो वह आश्विन नामका वर्ष होता है उसमें तक्षक मेघ अत्यन्त वृष्टि करता है। और मंजीठ तथा नारियल महंगे होते हैं ॥ २३० ॥

अन्योन्यराजयुद्धानिसमर्घत्वाज्यतैलयोः ।

मार्गशीर्षेतथापौषेद्वयेधान्यस्यसंग्रहः ॥ २३१ ॥

लाभःस्यात्पंचमेमासेमार्गात्प्रारभ्यचैत्रतः ।

छत्रभंगस्ततोराजविग्रहःकापिमंडके ॥ २३२ ॥

राजाओंमें अभ्योन्य युद्ध हो या तेल सस्ते हों । यदि मगक्षिर और पौषमें धान्य संग्रह करे तो पाँचवें महीने (चैत्र या वैशाखमें) लाभ हो। और कहीं छत्र भंग तथा राजाओंमें विग्रह हो २३१ ॥ २३२ ॥

उत्पातोमरुदेशेस्यान्मार्गेचौरभयंतथा ।

कोटजसलमेवादीपरचक्रगमोमतः ॥ २३३ ॥

मारवाड़में उत्पात हों मगक्षिरमें चौरभय हो । कोट और जस-खमेर आदिमें परंचक्र हो ॥ २३३ ॥

रसक्रयाणकादीनांसंग्रहेणचतुर्गुणः ।

लाभश्चतुर्थकेमासेधातूनांचसमर्घता ॥ २३४ ॥

रसादिकोंके संग्रहसे चौथे मासमें लाभ हो तथा धातु सस्ते हों ॥ २३४ ॥

वृश्चिकस्थेगुरौसोममेघःकार्तिकमासतः ।

सम्बत्सरःखण्डवृष्टिर्धान्यमल्पंभयमदत् ॥ २३५ ॥

वृश्चिकका वृहस्पति हो तब कार्तिक वर्ष होता है उसमें सोम मेघ
चर्पता है । खण्ड वर्षा होती है । और खेतिपां कम पैदा होती हैं ।
जया भय अधिक होता है ॥

गृहेपरस्परवैरमष्टौमासानसंशयः ।

भाद्राश्विनकार्तिकारूयास्त्रयोमासामहर्वता २३६॥

लोगोंके घरोंमें आठ महीने तक परस्पर वैर भाव रहता है ।
आद्रपद आश्विन कार्तिक इन तीनमें मईगाई होती है ॥ २३६ ॥

हेमरूप्यंकांस्यताम्रतिलाज्यश्रीफलादिषु ।

महर्घगुडकार्पासलवणश्वेतवस्त्रकम् ॥ २३७ ॥

सोना, चांदी, कांसी, तांबा, तिल, घी, श्रीफल, गुड़, कपास
लवण और सफेद वस्त्र यह महर्घ होते हैं ॥ २३७ ॥

महिषीवृषभास्रवाः समर्घामध्यमंडले ।

पीडास्थान्म्लेच्छलोकानामहोत्पातश्चसंभवेत् २३८॥

भैंस, बैल, घोड़े यह मध्य प्रदेशमें सस्ते होते हैं । और म्लेच्छ
लोगोंमें पीडा होती है तथा बड़े उत्पात रहते हैं ॥ २३८ ॥

देशभगोप्यरूपवृष्टिःस्त्रीणामपिचदुःखिता ।

मरौतथानागपुरदेशेक्लेशाकुलाःप्रजाः ॥ २३९ ॥

देशभग अल्प वृष्टि तथा स्त्रियोंको दुःख होता है । मरु देश तथा
नागपुरकी प्रजा क्लेशोंसे आकुल होती है ॥ २३९ ॥

धनेगुरौहेममालीमेघसम्बत्सरस्तथा ।

मार्गशीर्षेदिव्यवृष्टिःस्त्रीणांपीडाग्रहेऽह्ने ॥ २४० ॥

धनका वृहस्पति हो तो मार्गशीर्ष संबत्सर होता है उसमें हेममाली
मेघ वर्षता है । और घर घरमें स्त्रियोंको पीडा होती है ॥ २४० ॥

पूर्वकालेभवेद्धान्यगोधूमशालिशर्कराः ।

कार्पासश्चप्रवालानिकांस्यलोहघृतत्रयम् ॥ २४१ ॥

हेमहृण्यमहर्घाणितिलास्तेलगुडस्तथा ।

पूगीफलंश्वेतवस्त्रंसमर्वचक्चिद्भवेत् ॥ २४२ ॥

पूर्वकालमें धान्य, गेहूँ, चावल, शक्कर, अधिक हों और कपास, प्रवाल, कांसी, लोह, वी, सीसा, सोना, चांदी यह महँगे हों तब तिल तेल गुड़ सुपारी श्वेत वस्त्र यह कुछ समे हों ॥ २४१ ॥ २४२ ॥

मार्गशीर्षात्पुनर्ज्येष्ठ्यावद्घृतमहर्वता ।

महिषीवाजिधनूनामंजिष्ठायामहर्वता ॥ २४३ ॥

मगशिरसे लेकर जेठतक घी महंगा हो और भैंस, घोड़े गौ, मंजीठ महँगे हों ॥ २४३ ॥

मार्गशीर्षंतथापौषेमंजिष्ठाहिंशुमौलिकम् ।

जातीपूगीफलंचैवप्रवालानामहर्घता ॥ २४४ ॥

मगशिर तथा पौषमें मंजीठ हींग, मोती जायफल सुपारी और प्रवाल महँगे हों ॥ २४४ ॥

चतुष्पादादिकार्पाससंग्रहोरसमापकान् ।

तल्लभःसप्तमेमासेप्रोक्तोव्यक्तश्चतुर्गुणः ॥ २४५ ॥

चौपाये आदि तथा कपास - संग्रह करनेसे सात महीने पाले चौगुणा लाभ होता है ॥ २४५ ॥

गुरौमकरगेमेघोजलेन्द्रःपौषवत्सरः ।

चतुष्पदस्योभूम्यांदुर्मिक्षंनिर्जलोजनः ॥ २४६ ॥

जब गुरु मकर राशिमें आवे तब पौष वर्ष होता है उसमें जलेन्द्रमेव वर्षता है । वह चौपायोंका नाश और पृथ्वीपर दुर्मिक्ष तथा मनुष्योंको निर्जल कर देता है ॥ २४६ ॥

उत्तरेपश्चिमेदेशेखण्डवृष्टिःकदापिच ।

पूर्वस्यांदक्षिणेचैवदुर्भिक्षराज्यविग्रहम् ॥ २४७ ॥

उत्तर तथा पश्चिम देशोंमें खण्ड वृष्टि और पूर्व दक्षिणमें राज-
विग्रह तथा दुर्भिक्ष करता है ॥ २४७ ॥

पापबुद्धिरतालोकाहाहाभूताचमेदिनी ।

जलतेलाज्यदुग्धान्नरक्तवस्त्रमहर्षता ॥ २४८ ॥

लोग पापबुद्धिरत होजाते हैं । और पृथ्वीपर हाहाकार मच
जाता है । जल, तेल, घी, दूध, अन्न और लाल वस्त्र यह महर्ष
होजाते हैं ॥ २४८ ॥

उत्तमामध्यमाःसर्वेसर्वभक्षणतत्पराः ।

क्षत्रियाणांछत्रभंगोम्लेच्छानांचततःक्षयः ॥ २४९ ॥

उत्तम मध्यम सबही सर्वभक्षी होजाते हैं और क्षत्रियोंका छत्र-
भंग तथा म्लेच्छोंका क्षय होता है ॥ २४९ ॥

चैत्राश्विनाषाढमासास्त्रयोमहर्षहेतवः ।

पश्चाद्धान्यंसुभिक्षस्यात्प्रजापीडादितंस्कराः २५० ॥

चैत्र आपाढ और आश्विन इन तीनों महीनोंमें अन्न तेज रहक
पीछि सस्ता हो तथा प्रजामें पीड़ा और चौर भय हो ॥ २५० ॥

हेमरूप्यंताम्रलोहंकर्पूरंचन्दनादिकम् ।

महर्षेनर्मदातीरेअन्यदेशेषुभवेत् ॥ २५१ ॥

सोना चांदी तांबा लोह कपूर और चन्दन आदि नर्मदा किनारे
महर्षे हों और अन्यत्र शुभ हों ॥ २५१ ॥

मेघेमालवकेदेशेभंगोवर्षानभूयसी ।

व्याधयोबहुलारूप्यधातूनांचमहर्षता ॥ २५२ ॥

मालव देशमें भंग हो और बहुत वर्षा नहीं हो व्याधियां बहुत हों तथा चांदी महँगी हो ॥ २५२ ॥

भेदपाटे चकटकेमार्गशीर्षेपिपौषके ।

महाजनानांपीडापिच्छत्रभंगोमहाभयम् ॥ २५३ ॥

भेदपाट और चकटके मार्गशिर पौषमें बड़े लोगोंको पीडा हो छत्र-भंग तथा भय हो ॥ २५३ ॥

देशग्रामपुरादीनांविध्वंसोयुद्धसंभवः ।

शालयोयवगोधूमामहर्घाःस्थुस्तथारसाः ॥ २५४ ॥

देश ग्राम पुरादिमें विध्वंसक युद्ध हो । और चावल जौ गेहूं यद-महँगे हों ॥ २५४ ॥

कुंभेगुरौवज्रदंशोमेघोमाघादिवत्सरः ।

सुभिक्षंजायतेतत्रऋषिदेवद्विजार्चनम् ॥ २५५ ॥

कुम्भका बृहस्पति हो तो माघ वर्ष होताहै उसमें वज्रदंश मेघ वर्षता है । उसमें सुभिक्ष होता है और ऋषि देवता तथा ब्राह्मणोंकी पूजा होती है ॥ २५५ ॥

कांस्यंचपित्तललोहमंजिष्ठात्रपुकांचनम् ।

एषामासत्रयंयावत्समर्घत्वंप्रजायते ॥ २५६ ॥

कांसी पीतल लोह मंजीठ. सीता और सोना इनका ३ मास तक सस्तापन रहै ॥ २५६ ॥

माघफाल्गुनचैत्रेपुरोगामासत्रयेमताः ।

महर्घलवणोलोकेमरौघान्यमहर्घकम् ॥ २५७ ॥

माघ-फाल्गुन-चैत्रमें रोग हो । नमक महँगा. तथा मरु देशमें, घान्प महँगा हो ॥ २५७ ॥

चैत्रवैशाखयोः सिंधुदेशे कटकचालकः ।

वस्त्रकंबलहिंगुनां महर्षत्वं प्रजायते ॥ २५८ ॥

चैत्र वैशाखमें सिंधु देशमें कटक तथा चालक प्रदेशमें वस्त्र कंबल
होंगे महंगे हों ॥ २५८ ॥

कार्तिके आश्विनैरोगाश्छत्रभंगो महद्भयम् ।

रसकार्पासवस्त्राणां सर्वत्र स्यान्महर्षता ॥ २५९ ॥

कार्तिक आश्विनमें रोग हों, छत्रभंग तथा महाभय हो ।- और
रस कपास वस्त्र यह सर्वत्र महंगे हों ॥ २५९ ॥

श्रावणे वाभाद्रपदे धान्यसंगृह्यते यदा ।

पौषे स्याद्विगुणो लाभः युगंधर्याश्च विक्रयात् ॥ २६० ॥

यदि श्रावण भाद्रपदेमें धान्य संग्रह करे तो पौषमें दुगुणा लाभ
हो तथा युगंधरीके विक्रयसे भी लाभ हो ॥ २६० ॥

मीने गुरौ फाल्गुने स्याद्वत्सरः संभवो घनः ।

खण्डवृष्टिर्महर्षाणि सर्वधान्यानि भूतले ॥ २६१ ॥

मीनके बृहस्पतिमें फाल्गुन संवत्सर होता है इसमें संभव मेव
बर्धता है । खण्ड वृष्टि होती है और सब धान्य महंगे होते हैं ॥ २६१ ॥

विविधारोगपीडा च देशान्तरे न ज्ञेयः ।

मासानां पंचकं यावद्भयं राजविरोधतः ॥ २६२ ॥

पश्चात् सुखं सुभिक्षं च शालिगोधूमशर्कराः ।

तिलतैलगुडानां च महर्षत्वं समीरितम् ॥ २६३ ॥

कई प्रकारकी रोगपीडासे लोग देशान्तरमें चले जाय । और
राज विरोधसे पांच महिने भय रहे । पीछे सुख तथा सुमित्र हो ।
शाली गेहूँ, शर्कर, तिल, गुड, यह महंगे हों ॥ २६२ ॥ २६३ ॥

मज्जिष्ठानारिकेलानां श्वेतवस्त्रं च दन्तकाः ।

कर्पूरलवणाज्यानां महर्घत्वं प्रजायते ॥ २६४ ॥

मजीठ, नारियल, श्वेत वस्त्र, हार्थादांत, कपूर, नमक और घी महंगे हों ॥ २६४ ॥

पौषे क्लेशसमुत्पत्तिस्तथा फाल्गुनचैत्रयोः ।

मरुदेशे महापीडा दुर्भिक्षं तत्र जायते ॥ २६५ ॥

पौषमें क्लेश उत्पन्न हो तथा फाल्गुन और चैत्रमें मरुदेशमें महा पीडा तथा दुर्भिक्ष हो ॥ २६५ ॥

चतुष्पदानां मरणं वैशाखज्येष्ठयोर्भवेत् ।

आपादश्रावणधान्यघृततैलमहर्वता ॥ २६६ ॥

वैशाख जेठमें धौपायोका मरण और आपाद श्रावणमें धान्य तथा घी तेल महंगे हों ॥ २६६ ॥

श्रावणस्योत्तरपक्षे महावर्षा प्रजायते ।

घृतं समर्वभाद्रपदशुभावाश्विनकार्तिकौ ॥ २६७ ॥

श्रावण शुक्लमें महा वर्षा हो भाद्रपदमें घी सस्ता हो और आश्विन कार्तिकमें शुभ हो ॥ २६७ ॥

समर्वास्तिलकार्पासाश्छत्रभंगस्ततोर्बुदे ।

मार्गशीर्षे तथा पौषे उत्पातो मरुमण्डले ॥ २६८ ॥

तिल कपास सस्ते हों आवृत्त छत्रभंग हो और मार्गशीर्ष पौषमें मरुवाडमें उत्पात हो ॥ २६८ ॥ (इति)

अथ वक्रीविचारः ।

अपराशिगतो जीवो यदा स्यान्मीनसङ्गतः ।

तदा पादश्रावणयोर्गोमहिष्यः खरोष्ट्रकाः ॥ २६९ ॥

इतिमहर्घतांयांतिमासद्वयनसंशयः ।

पश्चाद्भाद्रपदेमासेआश्विनेहेमहेश्वरि ॥ २७० ॥

“वक्री विचार”-भेषका बृहस्पति वक्री होकर मीन पर आज्ञाय
सो आपाठ श्रावणमें गाय, भैस, गधे और ऊंट यह दो महीने
निःसन्देह महंगे हों पीछे हे पार्वती ! भाद्रवा आसोजमें सस्ते
हों ॥ २६९ ॥ २७० ॥

चन्दनकुसुमंवापियेचान्येपिसुगंधयः ।

तैलपण्यानिसर्वाणिमासद्वयमहर्घता ॥ २७१ ॥

चन्दन पुष्प तथा औरभी सुगन्धवाली वस्तुएं और तैलादि सब
दो मास महंगे हों ॥ २७१ ॥

वृषराशिगतेजीवेवक्रीस्यान्मासपंचके ।

वृषभादिचतुष्पादैस्तुलाभाण्डेमहर्घता ॥ २७२ ॥

वृषका बृहस्पति वक्री हो तो पांच महीने बैल आदि चौपायेतथा
घौलके विक्रयवाले पदार्थ और वर्तन महंगे हों ॥ २७२ ॥

संग्रहःसर्वधान्यानांमासाएकेमहर्घता ।

श्रीःश्रावणेभाद्रपदेआश्विनेकार्तिकेतथा ॥ २७३ ॥

तत्परंसर्वधान्यानांचतुष्पादांविशेषतः ।

विक्रयाद्विगुणोलाभःत्रिगुणस्तुचतुष्पदे ॥ २७४ ॥

सब धान्योका संग्रह किया जाय तो लाभ हो क्योंकि आठ
महीने महंगाई रहे । श्रावण, भाद्रवा आसोज और कार्तिकके पीछे
सब धान्य तथा विशेषकर चौपाये बेचनेसे दुगुणा लाभ हो और
चौपायोंमें त्रिगुणा लाभ हो ॥ २७३ ॥ २७४ ॥

मिथुनस्थःसुरगुरुःविकारंकुरुतेयदा ।

अष्टमासीभवेत्कूराचतुष्पदमहर्घता ॥ २७५ ॥

गेहं चने आदि बेचनेके धान्य और गुड़ लवणादि सस्ते हों ॥ २८८ ॥

चैत्रादिसंग्रहस्तेषामार्गशीर्षादिविक्रयः ।

सर्वाणिलाभंलभतेमासैकादशकात्यये ॥ २८९ ॥

इनका चैत्रादिमें संग्रह करके मार्गशीर्षादिमें बेचनेसे सबहीमें लाभ होता है ॥ २८९ ॥

मकरस्थो यदा जीवः करोति वक्रगामिताम् ।

आरोग्यंकुरुतेधान्यंसमर्घनात्रसंशयः ॥ २९० ॥

मकरका बृहस्पति वक्री हो तो आरोग्यता करे और धान्य सस्ता हो ॥ २९० ॥

कुंभराशिगते जीवः करोति यदि वक्रताम् ।

आरोग्यंसर्वस्वस्थत्वंराज्ञांश्रीर्जयसंभवः ॥ २९१ ॥

कुंभका बृहस्पति वक्री हो तो आरोग्यता करे, सब स्वस्थ रहें और राजाओंको विजयश्री मिले ॥ २९१ ॥

सर्वधान्येषुनिष्पत्तिः सर्वधान्यस्यविक्रयः ।

घृतंतैलतुलाभांडमासाएकेचसंग्रहः ॥ २९२ ॥

पश्चाद्विक्रयतोलाभःसुभिक्षनिर्भयाजनाः ।

पूजागोद्विजदेवानां भवत्येव न संशयः ॥ २९३ ॥

सब धान्यकी उत्पत्ति हो सब धान्योंके विक्रयसे लाभ हो । घी तेल तुला और भाण्ड इनका ८ मास संग्रह करके पीछे बेचे तो लाभ हो । सुभिक्ष हो । मनुष्य निर्भय हों और गो ब्राह्मण तथा देवताओंका निःसन्देह पूजन हो ॥ २९२ ॥ २९३ ॥

मीनराशिगतोजीवो वक्रतामुपयातिचेत ।

धनक्षयस्तदालोकेचौराद्राजापिरोपितः ॥ २९४ ॥

मीनका गुरु वकी हो तो चौर तथा राजाओंके द्वारा धनका नाश हो ॥ २९४ ॥

निराधाराप्रजापीडाग्रहभूतादिदोषतः ।

तुलाभांडगुडःखंडाअर्धददतिवांछितम् ॥ २९५ ॥

निराधार प्रजाको अह भूतादि दोषोंसे पीड़ा हो, तुल भाण्ड गुड़ खाण्ड यह इच्छित लाभ दें ॥ २९५ ॥

लवणघृततैलादिसर्वधान्यमहर्घता ।

कार्पासस्यार्घसम्प्राप्तिलाभस्तेषांचतुर्गुणः ॥ २९६ ॥

लवण, घी, तैलादि और सब धान्य महंगे हों, कारासभी महंगे हों इन सबमें चौगुना लाभ हो ॥ २९६ ॥

अथ नक्षत्रभोगविचारः ।

कृत्तकाराहणीश्रुक्षेयदातिष्ठेद्बृहस्पतिः ।

मध्यमात्रभवेद्बृष्टिःसस्यंभवतिमध्यमम् ॥ २९७ ॥

“नक्षत्र भोग विचार” यादि कृत्तिका और रोहिणी नक्षत्रपर बृहस्पति हो तो वर्षा तथा खेती मध्यम हो ॥ २९७ ॥

शृगशीर्षेतथार्द्रायांयदितिष्ठेद्बृहस्पतिः ।

सुभिक्षलभतेसौख्यंवृष्टिजातंसदाजनः ॥ २९८ ॥

शृगाक्षर और आर्द्रापर बृहस्पति हो तो सुभिक्ष हो, लोगोंको सुख मिले और वर्षा हो ॥ २९८ ॥

आदित्यपुष्याश्लेषासुगुरुभोगेप्रसंगिनी ।

अनावृष्टिभयंचोरंदुर्भिक्षंनर्वमण्डले ॥ २९९ ॥

पुनर्वसु पुष्य और श्लेषापर गुरु हो तो अनावृष्टिसे सर्वत्र दुर्भिक्ष हो ॥ २९९ ॥

मघाचपूर्वाफाल्गुन्यांयदातिष्ठेद्वृहस्पतिः ।

सुभिक्षंक्षेममारोग्यंदेशयोगंबहुदकम् ॥ ३०० ॥

मघा और पूर्वाफाल्गुनी पर हो तो देशमें सुभिक्ष क्षेम आरोग्य और बहुत जल हो ॥ ३०० ॥

उत्तराफाल्गुनीहस्तेमुरौवर्षासुखंजने ।

चित्रायांचतथास्वातीविचित्राधान्यसंपदः ३०१ ॥

उत्तराफाल्गुनी तथा हस्तपर वृहस्पति हो तो वर्षा हो लोग सुखी रहें । और चित्रा स्वाती पर हो तो धान्य संपत्ति विचित्र हो ॥ ३०१ ॥

विशाखायांचराधायांसस्यंभवतिमध्यमम् ।

मध्यमैवभवेद्र्पावर्षं तदपि मध्यमम् ॥ ३०२ ॥

विशाखा तथा अनुराधा पर वृहस्पति हो तो अन्न मध्यम हो । और वर्षा मध्यम होनेसे वर्ष भी मध्यम हो ॥ ३०२ ॥

गुरुज्येष्ठामूलचारेमासद्वयेनवर्षणम् ।

परतःखण्डवृष्टिःस्यान्नृपाणांदारुणोरणः ॥ ३०३ ॥

ज्येष्ठा तथा मूलका वृहस्पति हो तो दो मास वर्षा नहीं हो, पीछे खंड वर्षा हो और राजाओंमें दारुण रण हो ॥ ३०३ ॥

जीवेपूर्वोत्तरापादयुक्तेलोकसुखंमतम् ।

त्रिमासाज्जायतेवर्षामासमेकंनवर्षति ॥ ३०४ ॥

पूर्वोत्तरापादमें वृहस्पति हो तो लोग सुखी रहें तीन महीने नल वर्ष और एक मास नहीं वर्ष ॥ ३०४ ॥

श्रवणेवाधनिष्ठायांवारुणेगुरुसंगमे ।

सुभिक्षंक्षेममारोग्यंबहुसस्वाचमेदिनी ॥ ३०५ ॥

श्रवण धनिष्ठा तथा शतभिषाका वृहस्पति हो तो सुभिक्ष क्षेम आरोग्य हो और पृथ्वीपर खेतियाँ बहुत उत्पन्न हों ॥ ३०५ ॥

पूर्वोत्तराभाद्रपदयोरनावृष्टिभयादिकम् ।

पौष्णाश्विनीभरणीपुषुभिर्क्षान्यसम्पदा ॥ ३०६ ॥

पूर्वाभाद्रपद तथा उत्तराभाद्रपदपर गुरु हो तो अनावृष्टि आदिका भय हो । और रेवती, अश्विनी, भरणी पर हो तो सुभिक्ष हो तथा धान्य सम्पदा अच्छी हो ॥ ३०६ ॥

विशेषफलम् ।

मृगादिपंचकंचित्राद्वयमेवाष्टकन्तथा ।

नक्षत्रेषुशुभंजीवोशेषेषुशुभमादिशेत् ॥ ३०७ ॥

“विशेष फल” मृगशिर, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, श्लेषा, चित्रा स्वाती विशाखा, इनका गुरु शुभ होता है ॥ ३०७ ॥

स्वातिमुख्याष्टकेजीवेत्वश्विन्यादित्रिकेपिच ।

शनिराहुकुजैश्चैवप्रत्येकंसहितोभवेत् ॥ ३०८ ॥

सञ्चरतेयदाकालेसुभिक्षंजायतेतदा ।

मृगादिवशकेजीवेधनिष्ठापंचकेथवा ॥ ३०९ ॥

मौमादिसहितोगच्छेद्दुर्भिक्षंतत्रजायते ।

एकराशिगतेचैवएकक्षंतुमहद्भयम् ॥ ३१० ॥

स्वातिको आदि लेकर आठ नक्षत्रोंपर अथवा अश्विन्यादि तीन पर शनि राहु मंगल इन सहित बृहस्पति विचरे तो सुभिक्ष होता है । मृगशीर्षादि पांचमें तथा धनिष्ठादि ५ में मौमादि सहित बृहस्पति चले तो दुर्भिक्ष हो । एक राशिका गुरु एकही नक्षत्रपर रहे तो महाभय हो ॥ ३०८ ॥ ३०९ ॥ ३१० ॥

अतिचारगते जीवेवकीभूतेशनैश्चरे ।

दादाभूतंजगत्सर्वरुण्डमालामहीनले ॥ ३११ ॥

बृहस्पति अति चारी (शीघ्र गति वाला) हो और शनैश्चर
वर्क्री हो तो पृथ्वीपर उस समय सब जगत्में हाहाकार मचे और
महीतलपर रुण्डमालायें हों ॥ ३११ ॥

उदयफलम् ।

मेघेगुरुदयभवात्त्वतिवृष्टिरेवदुर्भिक्षमुत्तमवृत्तिवृ-
षमेसुभिक्षम् । पापाणशालिमणिरत्नमहर्घभावः
स्वावस्थयामिथुनकेगणिकासुपीडा ॥ ३१२ ॥

“उदय फल” — मेघमें गुरु उदय होनेसे अतिवृष्टिके कारण दुर्भि-
क्षमें मरण होता है । वृष राशिमें उदय हो तो सुभिक्ष होता है ।
पापाण शाली — मणि रत्न महर्घे होते हैं । और मिथुनमें उदय हो तो
अपनी अवस्थासे बेइयाओंमें पीडा होती है ॥ ३१२ ॥

स्यात्कर्कटेजनमृतिर्जलवृष्टिरल्पासिहेतयैवक-
थितंबहुधान्यलाभः । कन्यास्थितस्यचगुरोरुद-
येशिशूनापीडातथैवगणिकासुचवृद्धलोके ॥ ३१३ ॥

कर्कमें हो तो मनुष्योंकी मृत्यु हो, जल वृष्टि कम हो, सिंहमें
हो तो बहुत धान्य लाभ हो, कन्यापर बैठे हुए गुरुके उदयसे बाल-
कोंकी पीडा हो तथा बेइया और वृद्धोंकी पीडा हो ॥ ३१३ ॥

काश्मीरचन्दनफलादिमहर्घतास्याल्लाभोमहान्
व्यवहृतौचतुलावलंबे । दुर्भिक्षतालिधनुषोरपि
चारुपवर्षालोकेरुजोमकरकेवहुधान्यवृष्टिः ॥ ३१४ ॥

तुलके बृहस्पतिके उदय होनेसे कश्मीरी चन्दन तथा फलादि महर्घ
हों, व्यवहारमें लाभ हो । वृश्चिकमें दुर्भिक्ष और धनमें अल्प वर्षा
ये और मकरमें रोग तथा बहुत धान्य वर्षा हो ॥ ३१४ ॥

कुंभेगुरोरुदयतासकलेपिदेशेवृष्टिर्घनेपिचघनेति
महर्घमन्नम् । मीनेल्पवृष्टिरवनीश्वरयुद्धयोगःपी-
डाजनस्यमरकान्नरकानुरूपा ॥ ३१५ ॥

कुम्भके वृहस्पतिके उदय होनेसे सब देशोंमें बहुत वर्षा और बहुत
महंगाई हो और मीनमें उदय होनेसे राजाओंके युद्धका योग हो
और मनुष्योंमें मरकीसे नरक समान पीड़ा हो ॥ ३१५ ॥

मासफलम् ।

जीवोभ्युदेतियदिकार्तिकमासिवह्निल्लैकेनवृष्टि-
रपिरोगनिर्पीडनंच । मार्गेपिधान्यविगमंसुख-
मेवपौषेनीरोगतासकलधान्यसमुद्भवश्च ॥ ३१६ ॥

“मासोदय फल”-यदि कार्तिकमें बृहस्पति उदय हो तो वहि
भय हो, अनावृष्टि हो, रोग पीडा हो । मार्गशिरमें हो तो धान्य बा-
हर बहुत जाय । पौषमें सुख हो और नैरोग्यता हो तथा सब धान्य
उत्पन्न हों ॥ ३१६ ॥

माघेतथैवपरतोभुविखण्डवृष्टिश्चैत्रेविचित्रजल-
वृष्टिरतोपिराधे । सर्वं सुखंजलनिरोधनमेवशु-
क्रेऽप्यापाढकेनृपरणान्नमहर्घताच ॥ ३१७ ॥

माघ और फाल्गुनमें उदय हो तो खण्ड वृष्टि हो चैत्रमें विचित्र
वर्षा, वैशाखमें सर्व सुख, ज्येष्ठमें जलकी रुकावट और आपाढमें
राजाओंमें रण तथा अन्नकी महर्घता हो ॥ ३१७ ॥

आरोग्यंश्रावणेवर्षावहुलासुखिनोजनाः ।

भाद्रमासेधान्यनाशआश्विनःसुखदःस्मृतः ॥ ३१८ ॥

श्रावणमें गुरु उदय हो तो आरोग्यता बढ़े, वर्षा बहुत हो, लोग
सुखी रहें । भाद्रपदेमें उदय हो तो धान्य नाश हो और आश्विनमें
हो तो सुख देवे ॥ ३१८ ॥ (इति)

अस्तफलम् ।

यद्यस्तमेत्यजगतोगुरुरल्पवृष्टिर्दुर्भिक्षमेवकुरुते
 वृषभेगुरुःस्यात् । तैलघृतंचलवणंप्रभवेन्महर्घ-
 मृत्युस्तथारूपजलदोमिथुनेस्तमास्ते ॥ ३१९ ॥

“अस्त फल ”—यादि मेष राशिपर स्थित हुआ बृहस्पति अस्त हो तो अल्प वर्षा हो, वृषका अस्त हो तो दुर्भिक्ष करे, मिथुनमें हो तो तैल घी लवणकी महर्घता हो । मनुष्योंकी मृत्यु हो और वर्षा कम हो ॥ ३१९ ॥

कर्केस्ततो नृपभयंकुशलंसुभिक्षं सिंहेनृणामरणलो-
 कधनादिनाशः । कन्यास्ततः सकलधान्यसम-
 र्घता स्यात्क्षेमंसुभिक्षमतुलं जनलोकनाशः ॥ ३२० ॥

कर्कका गुरु अस्त हो तो राजाओंमें भय हो—कुशल हो—सुभिक्ष हो । सिंहमें अस्त हो तो लोक धनादिका नाश हो । कन्याका अस्त हो तो सब धान्य सस्ते हों क्षेम और सुभिक्ष हो ॥ ३२० ॥

पीडाद्विजेषु बहुधान्यसमर्घता च जाते तुलास्तम-
 यनेन यनेषुरोगः । राज्ञां भयान्यलिनितस्करलुं-
 ठनानि मापास्तिलाश्च न हवो धनुषास्तमास्ते ॥ ३२१ ॥

तुलाका अस्त हो तो मनुष्योंका नाश हो, ब्राह्मणोंमें पीडा हो, धान्यकी बहुत समर्घता हो । वृश्चिकमें हो तो आँखें दूखनेका विकार अधिक फैले । धनमें हो तो राजाओंका भय हो चौरोंकी लूट खोस रहे । मकरमें अस्त हो तो उडद तिल अधिक हो ॥ ३२१ ॥

कुम्भेगुरोरस्तमयात्प्रजायाः पीडापरंगर्भवती च
 जाया । मीने सुभिक्षं कुशलं समर्घधान्यं वनस्या-
 र्पतयापि पृष्टेः ॥ ३२२ ॥ (इति)

कुम्भका मुरु अस्त हो तो प्रजामें और गर्भवती स्त्रियोंमें पीड़ा हो ।
सीनका बृहस्पति अस्त हो तो सुमिश्र हो, कुशल हो, धान्यकी सम-
र्थता हो और वर्षा कम हो तौभी धान्य अधिक हो ॥ ३२२ ॥ इति

(७) अथ शुक्रचारः ।

शुक्रोदयात्फाल्गुनमासिवृद्धिरर्धस्यधान्यादिषुभै-
श्वृत्तिः । चैत्रेविभूतिर्भुविमाधवेचरणोमहान्वृ-
ष्टिरतीवशुक्ले ॥ ३२३ ॥

(७) "शुक्र चार"—फाल्गुनमें शुक्रका उदय हो तो अर्ध वृद्धि
हो, धान्यादिमें भैश्यवृत्ति (भीख मंगापन) हो । चैत्र वैशाखमें
शुक्रोदय हो तो शुद्ध अधिक हों और जेठमें उदय हो तो वर्षा
अधिक हो ॥ ३२३ ॥

आषाढमासेजलदुर्लभत्वेचतुष्पदार्तिर्नभसिप्र-
दिष्टा । समृद्धिरन्नस्यतुभाद्रमासेतथाश्विनेसम्प-
दएवसर्वाः ॥ ३२४ ॥

आषाढमें उदय हो तो जल दुर्लभ हो । श्रावणमें हो तो चौपायोंको
इष्ट हो, भाद्रवमें हो तो अन्नकी समृद्धि और आश्विनमें हो तो
सब सम्पत्ति हों ॥ ३२४ ॥

शुभंपरंकार्तिकमार्गमासेपौषेमहच्छत्रविभंगएव ।
माघेपितृद्वत्सकलफलंस्यान्नचेत्पराब्दे जलदस्य
रोधः ॥ ३२५ ॥

कार्तिक और मार्गशीर्षमें उदय हो तो शुभ हो । पौषमें हो तो
छत्रभंग हो । माघमें उदय हो तौभी सब फल ऐसाही हो और
आगले वर्षमें जल नहीं वर्षे ॥ ३२५ ॥

मेघेशुक्रोदयेधान्यमहर्घरोगसंभवः ।

वृषेधान्यंसमर्घस्यान्नृपास्तुष्टाः प्रजासुखम् ॥ ३२६ ॥

मेघ राशिमें शुक्रका उदय हो तो धान्य महंगे हों, रोग उत्पन्न हों।
वृषमें उदय हो तो धान्य सस्ता हो, राजा लोग प्रसन्न रहें और
प्रजामें सुख हो ॥ ३२६ ॥

मिथुनेलोकमरणंगोधूमावहवोभुवि ।

कर्केतिवृष्टिर्धान्यस्यविनाशंचौरजंभयम् ॥ ३२७ ॥

मिथुनमें लोकमरण हो पृथ्वीपर गेहूं अधिक उपजें। कर्कमें
अति वृष्टिसे धान्य नाश हो और चौरोंका भय रहे ॥ ३२७ ॥

सिंहेपिकर्कवद्धान्यंकन्यायानृपपीडनम् ।

स्वल्पावृष्टिस्तुलायोगेसमर्घधान्यमाहितम् ॥ ३२८ ॥

सिंहमेंभी कर्ककी भाँति कहना चाहिये। कन्यामें राजपीडा हो
और स्वल्प वर्षा हो और तुलामें धान्यके अधिकतासे समर्घता
हो ॥ ३२८ ॥

वृश्चिकेबहुलावृष्टिर्दुर्भिक्षधान्यमल्पकम् ।

धनुष्यवर्षणंधान्यमहर्घमकरेतथा ॥ ३२९ ॥

वृश्चिकमें बहुत वर्षा हो, धान्य कम होनेसे दुर्भिक्ष हो। धन और
मकरमें अवर्षणसे धान्य महंगा हो ॥ ३२९ ॥

कुंभेतिविरलोमेघश्चतुष्पदविनाशनम् ।

मीनेसुभिक्षंलोकानांसुखमेवमहोदयः ॥ ३३० ॥

कुम्भमें मघ कहीं कुछ वर्षे चतुष्पदोंका नाश हो और मीनमें
शुक्रोदय हो तो संसारमें सुख तथा सुभिक्ष हो ॥ ३३० ॥

शुक्रेश्विन्यां ब्राह्मणजातिविरोधो यवास्तिलामा-

पाः । स्वल्पाभरण्यांसंस्थेतुपधान्यमहर्घताचति-

लनाशः ॥ ३३१ ॥

“नक्षत्र गत फल” —अभिनीमें शुक हो तो ब्राह्मण जातिमें विरोध हो । जी, तिल, उड़द कम हों । भरणीपर हो तो तुष धान्य मँहगे हों और तिलोंका नाश हो ॥ ३३१ ॥

सर्षपमाषालपत्वमाग्नेयेसर्वधान्यनिष्पत्तिः ।

रोहिण्यामारोग्यंमृगेमहर्घाणिधान्यानि ॥ ३३२ ॥
कृत्तिकापर हो तो सरसों उड़द कम हों और सब धान्य उत्पन्न हों । रोहिणीमें आरोग्यता और मृगशिरमें धान्यकी महर्घता हो ॥ ३३२ ॥

रौद्रेऽल्पवृष्टिरन्नमधौसुखंनश्यतिविशेषात् ।

पुष्येदुर्भिक्षभयंचौराःसापेनवर्षास्यात् ॥ ३३३ ॥
आर्द्रां अल्प वृष्टि हो पुनर्वसुमें अन्न सुखका नाश हो । पुष्यमें दुर्भिक्ष भय तथा चौर भय हो और श्लेषामें वर्षा नहीं हो ॥ ३३३ ॥

मघादित्रितयेकष्टहस्तेमेघमहोदयः ।

रोगवृष्टिस्तुचित्रायांस्वातौक्षेमसुभिक्षता ॥ ३३४ ॥
मघा—पूर्वा—उत्तरामें कष्ट हस्तमें मेघका महोदय । चित्रामें रोग वृद्धि स्वातिमें क्षेम और सुभिक्ष हो ॥ ३३४ ॥

तर्कदेवविशाखायांतुषधान्यमहर्घता ।

अरुणवृष्टिश्चमैत्रक्षेत्रेचतुष्पदप्रपीडनम् ॥ ३३५ ॥
विशाखामें तुष धान्यकी मँहगाई और अनुराधामें उदय हो तो अल्प वृष्टि तथा चौपायोंको पीडा हो ॥ ३३५ ॥

द्वारानुसारात्शेषेषुफलमाद्यैर्निगद्यते ।

चारानुसाराद्दुर्भिक्षं सुभिक्षं फलमादिशेत् ॥ ३३६ ॥
शेष नक्षत्रोंका फल द्वारोंके अनुसार जानना । और चारके अनुसार सुभिक्ष दुर्भिक्षका फल कहना ॥ ३३६ ॥

भरण्याद्यष्टकेभानांमेघद्वारंभृगोःस्मृतम् ।

मेघवृष्टिःप्रजानंदःसमर्घधान्यमेवच ॥ ३३७ ॥

मिथुनेवैश्यपीडास्यादल्पवर्षाप्रजाभयम् ।

कर्कटेबहुलावृष्टिर्जायतेनात्रसंशयः ॥ ३४८ ॥

मिथुनमें वैश्योंको पीडा हो अल्प वर्षा तथा प्रजाभय हो ।
कर्कमें निरान्देह बहुत वर्षा हो ॥ ३४८ ॥

सिंहेपीडाभूपवर्गेतथाऽनावृष्टिर्जंभयम् ।

कन्यायांवैद्यलोकस्यसूत्रधारस्यपीडनम् ॥ ३४९ ॥

सिंहमें भूपवर्गमें पीडा हो और अनावृष्टिका भय हो कन्यामें
वैद्य लोगोंको तथा सूत्रधार (नटादिकों) को पीडा हो ॥ ३४९ ॥

तुलायांसिंहवत्सर्वदुर्भिक्षंवृश्चिकेमतम् ।

स्त्रीधान्यनाशोधनुपिमकरेधान्यसंपदः ॥ ३५० ॥

तुलामें सिंहकी तुल्य हो और वृश्चिकमें दुर्भिक्ष हो । धनुमें स्त्री
तथा धान्यका नाश हो और मकरमें धान्यकी सम्पत्ति हो ॥ ३५० ॥

द्विजपीडाकुम्भराशौमीनेमेघमहोदयः ।

रोगनाशःप्रजासौख्यंपृथिव्यांबहुमंगलम् ॥ ३५१ ॥

कुम्भराशिमें द्विजपीडा हो और मीन राशिपर शुक्रका अस्त हो
तो मेघ अच्छा बरें तथा रोग नाश-प्रजा सुख और पृथ्वीपर बहुत
मंगल हों ॥ ३५१ ॥

भृगुसुतःकुरुतेभ्युदयंयदासुरगंणर्क्षगतःखलुसि-

धुषु । सकलगुर्जरकर्कटमंडलेभवतिसस्यविना-

शमद्दारुजे ॥ ३५२ ॥

१ अश्विनी मृगशिरस्यो हस्तपुष्यपुनर्वसु । अनुराधा श्रुतिः स्वातिः
कथितो देवतागणः ॥ १ ॥ तिस्रःपूर्वोत्तराश्विनः आर्द्रो वैश्व तु रोहिणी ।
मरणी च मनुष्यास्त्यो गण्योमी कथिनो नृपैः ॥ २ ॥ वृश्चिका च मघाद्वेष्टा
विशाखा शततारका । चित्रा ज्येष्ठा चमिष्टा च मूढं स्वगणः स्मृतः ॥ ३ ॥

यदि शुक्रका उदय देव गणके नक्षत्रोंमें हो तो सिंधु-गुर्जर-और
कर्जदेशोंमें सस्य नाश तथा महारोग हो ॥ ३५२ ॥

जालंधरेपिदुर्भिक्षविग्रहोरणसंभवः ।

मनुष्यगणभेशुक्रोदयेसौराष्ट्रविग्रहः ॥ ३५३ ॥

मनुष्य गणके नक्षत्रोंमें शुक्रोदय हो तो जालन्धरमें दुर्भिक्ष विग्रह
रण संभव और सौराष्ट्रमें विग्रह हो ॥ ३५३ ॥

कालिंगदेशेस्त्रीराज्येमध्यमंवर्षलब्धते ।

मरुस्थलेचदुर्भिक्षघृतधान्यमहर्घता ॥ ३५४ ॥

कालिंग देशमें स्त्री राज्य (भूपाल आदि) में मध्यम वर्षा हो ।
और मारवाडमें दुर्भिक्ष हो घी और खज महंगे हों ॥ ३५४ ॥

स्वर्णरौप्यमहर्घस्यात्पीडागोमहिषव्रजे ।

कार्पासतूलमूत्रादेर्महर्घत्वंप्रजायते ॥ ३५५ ॥

सोना, चांदी, महंगे हों गाय भैंसोंमें पीडा हो । कपास रुई
सूत आदिभी महंगे हों ॥ ३५५ ॥

नक्षत्रेराक्षसगणेशुक्रस्याभ्युदयेसति ।

गुर्जरेषुद्रलभयंदुर्भिक्षद्रव्यहीनता ॥ ३५६ ॥

राक्षस गणके नक्षत्रोंमें शुक्रोदय हो तो गुजरातमें और पुंगलमें
दुर्भिक्ष तथा द्रव्य हानि हो ॥ ३५६ ॥

पंचवर्णपट्टसूत्रमूल्येनापिचदुर्लभम् ।

श्रीफलंदुर्लभमृत्युःश्रेष्ठःपुंसश्चकस्वचित् ॥ ३५७ ॥

पंचवर्ण (पंचरंगी) पट्टवस्त्र (रेशमी कपड़े) और सूती वस्त्र
मूल्यप्राप्ति नहीं मिले । तथा श्रीफल मिलनाभी दुर्लभ हो और किसी
श्रेष्ठ पुरुषकी मृत्यु हो ॥ ३५७ ॥

विराटदुंदपांचालसौराष्ट्रेषुचरौवरम् ॥

तथाराज्यपरावर्त्तोमालवेषुजनक्षयः ॥ ३७० ॥

वैराट दूँडाड़ पांचाल और सौराष्ट्र देशोंमें कष्ट हो, राज्य परिवर्तन हो, तथा मालवके मनुष्योंका क्षय हो ॥ ३७० ॥

जीर्णदुर्गेभयंभंगःपत्तनेऽन्नमहर्घता ।

नव्यमुद्राप्रकाशःस्यादक्षिणेषुखसंपदः ॥ ३७१ ॥

पुराने किल्लोंके टूट पड़नेका भय हो, दुर्भिक्ष हो । नया रुपया चले और दक्षिणमें सुख संपदा हो ॥ ३७१ ॥ इति ॥

(८) अथ शनिचारः ।

मेषस्थेभानुपुत्रेऽत्रिभुवनविदिते यातिधान्यंवि-
नाशनूनंतैलंगवंगेहयमुरदलितंविग्रहस्तीव्रएव ।
पातालेनागलोकेदिशिविदिशिगता भीतभीता
नरेन्द्राःसर्वलोकाविलीनाःशुभफलविहिनाया-
चमानाव्रजन्ति ॥ ३७२ ॥

(८) “शनिचार विचार”-मेषका शनि हो तो धान्यका नाश हो तैलंग, वंग, देशमें विग्रह हो । और पाताल तथा नाग लोक एवं दिशा विदिशाओंके राजा लोग भयभीत होकर भागते फिरें। क्या अच्छे फलसे हीन होकर मनुष्य याचना करते फिरें ॥ ३७२ ॥

वैरावर्ताजनानाधनसुखहरणंसर्वदेशमहर्घं दुःखं
वैराग्ययोगःसकलजनमनस्यान्ननाशःपशूनाम् ।

धान्यंसैवार्द्धनाशेरसकससहितंसर्वशून्यं जनाना-

मित्येतेसर्वदेशाःपरिजनविकलाःसूर्यपुत्रेवृषस्थे३७३

वृषका शनि हो तो मनुष्योंमें वैर भाव बढ़े, धन सुखका नाश हो, जनकी सर्वत्र सेजी हो । दुःख वैराग्य और संताप हो पशुओंका नाश,

खेतियोंका नाश, रसोंकी मङ्गलाई और शून्यता यह बातें भी हों
और अनेक देशोंमें व्याकुलता फैले ॥ ३७३ ॥

आद्यंकार्पासलोहलवणतिलगुडाःसर्वदेशमहर्घा
मेजिष्ठाहेमतारेवृषभहयगजंसर्वधान्यंसमर्घम् ।

सप्तद्वीपेसमुद्रेमुखिजनसहितेसर्वसौख्यंनरेन्द्राः

सर्वत्रायान्तिमेघाःसकलमुनिमतंमैथुनेसूर्यपुत्रे॥३७४॥

मिथुनका शनि हो तो पहले कपास-लोह-लवण-तेल गुड यह सर्वत्र
मँगे हों, मैजीठ, सोना, घोड़े, बैल, हाथी सब धान्य सस्ते हों ।
सातों द्वीपोंमें समुद्र पर्यन्त निवासियोंको सुख मिले, राजाओंको
भी सब सुख प्राप्त हों और वर्षा सर्वत्र अच्छी हो ॥ ३७४ ॥

रोगानित्यंम्रसन्तिप्रचुरपरिभवोवित्तनाशस्तथैव
कार्येहानिर्विरुद्धैः संकलभयजनैर्देशचिन्तावि-

पादः । आरावोऽम्बुप्रपातैःप्रचलितधरणीसर्व-

लोकस्यनाशः सर्वस्मिन्राजयुद्धंपशुधनहरणं

कर्कटेसूर्यपुत्रे ॥ ३७५ ॥

कर्कटका शनि हो तो लोगोंको रोजही रोग खाते रहें, धनका नाश
हो, कार्यकी हानि हो, सब लोग विरुद्ध रहें, देशमें चिन्ता और
विपाद फैले । शब्दयुक्त जल वर्षे, भूकम्प अधिक हों, सब लोकोंका
नाश हो, राजाओंमें युद्ध हो और पशु तथा धनका हरण हो ॥ ३७५ ॥

भूम्यां नाशश्चतुष्पाद्भयवृषभैर्युद्धदुर्भिक्षरोगैः पी-

ड्यन्तेसर्वदेशाउदधिपुरपथेदुर्गदेशेषुभंगः । म्ले-

च्छान्तोग्रान्यभावोवनसुखमवनीयेन्द्रचन्द्रप्रतापः

सर्वेतेयातिकालेभ्रमतिपुगमिदांसहगेसूर्यपुत्रे॥३७६॥

शुद्धका शनि हो तो हाथी घोड़े बैलोंका नाश हो, युद्ध दुर्भिक्ष

और-रोगोंसे लोग पीड़ित रहें। तसुद्रके मार्गके देशोंमें भंग हो म्लेच्छोंसे लोगोंको दुःख हो धान्य भाव अच्छा हो राजाओंको धन सुख मिले उनका प्रताप फैले। और पीछे सब दुःखी होकर भ्रमण करें ३७६

काश्मीरं याति नाशं हय रवदलितं विग्रहतत्र कुर्याद्रत्नस्थं धातु रूप्यं गजहयवृषभं छागलं माहिषं च । मंजिष्ठाकुंकुमाद्यं रसकस सहितं यान्ति सर्वे समर्थं कन्यायां सूर्यपुत्रे सकलजनसुखं संग्रहे सर्वधान्यम् ॥ ३७७ ॥

कन्याका शनि हो तो काश्मीरका नाश हो घोड़ोंमें रव (शब्द) परितः विग्रह हो रत्न धातु चांदी हाथी घोड़े बैल छांली, भैंस, मंजीठ और केशर यह रस कस सहित सब सस्ते हों और सब मनुष्योंको सुख हो तथा धान्य संग्रह लाभदायक हो ॥ ३७७ ॥

धान्यानां वैमहर्षं नरपुरं नगराः क्लेशपृणाश्च देशाः पृथ्व्यां कम्पमाप्ता सकलमुनिवरे देहपीडापिनित्यम् । सर्वे ते यान्ति नाशं नरपुरं नगराण्यम्बुदोष्यल्पएव च कावातोजनानां सुखधनरहितः सूर्यपुत्रे तुलायाम् ३७८

तुलका शनि हो तो धान्य महँगे हों, शहरों वा गाँवोंके मनुष्य क्लेशयुक्त हों । पृथ्वी कम्पित हो सब मुनि श्रेष्ठोंमें भी देह पीड़ा हो। शहर वा गाँवोंके सब मनुष्योंका नाश हो जल बहुत कम वर्ष और मनुष्य सुख तथा धनसे हीन रहें ॥ ३७८ ॥

भूमीशाः क्रोधपूर्णा विप्रधरमुदिताः पक्षिणां सन्निपातः सप्तद्वीपप्रकम्पात्तरपतिमरणं यांति मेधाविनाशम् । वैकल्याद्व्याप्यमानः सकलजनरिपुः सर्वकार्यनिहंतिसर्वे ते यान्ति नाशं सकलगुणविधेर्वैश्विके सूर्यपुत्रे ॥ ३७९ ॥

वृश्चिकका शनि हो तो राजा लोग क्रोधित रहें सर्पोंमें हर्ष बहै
पक्षियोंमें युद्ध मचै । सातों द्वीपोंमें भूकम्पादि हों राजाओंको मरण
तथा वर्षाका विनाश हो । मनुष्योंमें कलह विस्फुल्लतासे अशुता फैले
कामोंका नाश हो और गुणवानोंका नाश हो ॥ ३७९ ॥

सप्तद्वीपाःसमुद्राःसकलमुनिवर्नवायुपूर्णाधरित्री
विप्रावेदांगलीनाजगतिजनसुखं सर्वतोयातिस-
स्यम् । धान्यंचारुप्रभूतं रसकसबहुलंयातिधा-
न्यंप्रसारं सर्वेषांराजनानांप्रहसतिवदनंसूर्यपुत्रे
धनस्थे ॥ ३८० ॥

वनका शनि हो तो समुद्रके सातों द्वीप और मुनियोंको सम्पूर्ण
वनकी पृथ्वी वायुसे पूर्ण हो। ब्राह्मण लोग वेदांगमें लीन रहें जगत्में
मनुष्य सर्वत्र सुखी रहें खेतिवां अच्छी हों अन्नभी अच्छे हों रसकस
बहुत हों धान्य फैले और सब मनुष्य प्रसन्न वदन रहें ॥ ३८० ॥

रूप्यं ताम्रं सुवर्णं हयगजवृषभं सूत्रकार्पासमूल्यं
सर्वस्मिन्धान्यमात्रं भवति भुवितले सर्वनाशश्च
सस्ये । पृथ्वीशाःक्रोधपूर्णाभवतिपथिभयं सर्व-
रोगाद्विनाशश्चिन्तास्थानं नृपाणां भवति सति
बलेसूर्यपुत्रेमृगस्थे ॥ ३८१ ॥

मङ्गका शनि हो तो चांदी ताँबा सोना हाथी घोड़े बैल सूत कपास
इन मयरा मूल्य धान्य मात्र हो अर्थात् अधिक तेज हो । अन्नक
नाश हो । राजा क्रोधित रहें मार्गोंमें भय रहे सब गेहोंसे नाश हो
और पत्तवान् राजाओंकोभी चिन्ता लगी रहे ॥ ३८१ ॥

लक्ष्मीप्राकारसौख्यंधनकणसहितं देशसौख्यंनृ-
पाणांयर्मायर्माविधत्तेसुखनिरतजनोमेघपूर्णाध-

रित्री । मांगल्यंसवलोकेप्रभवतिबहुशःसस्यनि-
ष्पत्तिदर्पाभूमीरम्याविवादैर्जनसुखसमयःकुम्भगे
सूर्यपुत्रे ॥ ३८२ ॥

कुम्भका शनि हो तो लक्ष्मीकी प्राप्ति सौख्य धन तथा अन्न हो
देशमें सुख रहे राजा लोग धर्म अधर्मका विधानः करते रहें । मनुष्य
सुखी रहें। वर्षा अच्छी हो । सब जगह मंगल हो । खेतियां बहुत हों।
पृथ्वी मनोहर रहै और विवाहादि मंगलोंसे लोग सुखी रहें ॥ ३८२ ॥

पृथ्वीवैकम्पमात्रप्रचलतिपवनःकम्पते नागलो-
कःसप्तद्विपेषुसिन्धोर्गिरिवरगहने सर्ववृक्षादिहा-
निः ॥ नाशःपृथ्वीपतीनांजनपदविलयोयान्ति
मेघाःप्रणाशचक्रावर्तैःसमस्तभ्रमतिजगदिदंभी-
नगेसूर्यपुत्रे ॥ ३८३ ॥

और मीनका शनि हो तो पृथ्वी कम्पित रहे, पवन चले पाताल
(अमेरिका) आदिमें भूकम्प हो सिन्धु तथा पर्वतोंमें उत्पात हों सब
वृक्षादिकी हानि हो । राजाओंका नाश हो मनुष्योंका विनाश हो
मेघोंका अभाव हो और प्रचण्ड पवनसे सारा जगत् घूमे ॥ ३८३ ॥

मेपेशनेरुदयनेजलवृष्टिरुच्चैःसौख्यजनंवृषभगेतृ-
णकाष्टकष्टम् । अश्वेषुरोगकरणंचमहर्धमिक्षुज-
न्यंगुडादिमिथुनेऽतिसुभिक्षमेव ॥ ३८४ ॥

“उदय फल” मेपका शनि उदय हो तो वर्षा बहुत हो लोग
सुखी रहें । वृषका उदय हो तो घास तथा काटका कष्ट हो घोड़ोंमें
रोग करे इससे पैदा होनेवाले गुड़ादि महंगे हों और मिथुनका उदय
हो तो अत्यन्त सुभिक्ष हो ॥ ३८४ ॥

वृष्टिर्नकर्कगृहगोसरसांचशोषः सर्वत्रमारिभयमा-
शुजनेषुपीडा । पीडागमःक्वचनसिंहगतेशिशूनां
नाशप्रकाशनमधार्मिकशासनस्य ॥ ३८५ ॥

कर्कका शनि उदय हो तो वर्षा नहीं हो रस सब सूख जायँ सब
जगह मारी भयसे लोगोंमें पीडा हो । सिंहका उदय हो तो बाल-
कोंमें पीडा हो राजा लोग धर्मशून्य राज करें ॥ ३८५ ॥

कन्याशनेरुदयताकिलधान्यनाशःपृथ्वीशसंधि-
रतुलस्तुलयानवर्षा । गोधूमवर्जितमहीतदसौफलं
स्यादस्वस्थताधनुषिमानुषजातिरोगम् ॥ ३८६ ॥

कन्याका उदय हो तो धान्य नाश हो तुलका उदय हो तो
पृथ्वीश संधि करै वर्षा नहीं हो गेहूं पृथ्वीपर नहीं रहें और घनमें
उदय हो तो मनुष्योंका स्वास्थ्य बिगड़े और रोग अधिक हों ॥ ३८६ ॥

स्त्रीणांशिशोश्चत्रिपदोखिलधान्यनाशःशौरेर्मृगे-
भ्युदयनेनृपयुद्धबुद्धिः । नाशश्चतुष्पदकुलेकलशो-
धमीनेदीनेजनेननुशनेरुदयान्नधान्यम् ॥ ३८७ ॥

स्त्री और बालकोंमें विपत्ति हो और धान्यका नाश हो । यदि
मकरका शनि उदय हो तो राजाओंकी युद्ध बुद्धि हो और चौपा-
योंका नाश हो । कुंभ अथवा मीनका शनि उदय हो तो मनुष्योंमें
गरीबी बढ़े और धान्य नहीं हो ॥ ३८७ ॥

अथ अस्तविचारः ।

मेपेस्तंगमनेशनेर्भुविजनेधान्यमहर्षवृषेसर्वत्रापि
गवादिपीडनमहोपण्यांगनामैथुने । दुःखातो
पथिकर्कटेरिपुभयं कार्यासधान्यादिपुदौर्लभ्यं
जलदेज्ववर्षणविधिःसिहेप्रभूतव्यथा ॥ ३८८ ॥

“ अस्त विचार ”—मेषका शनि अस्त हो तो धान्य तेज हो, वृषका अस्त हो तो सब जगह गवादि पशुओंको पीडा हो, मिथुनमें पण्यंगना (व्यापारकी स्त्रियां—वेश्या) ओमें पीडा हो । कर्कमें मार्गीय कष्ट शत्रु भय कपास तथा धान्यादिकी दुर्लभता हो और वादलोंसे मेघ नहीं बरे । सिंहमें व्यथा उत्पन्न हो ॥ ३८८ ॥

धातुनांचमहर्घतान्रविधमः कन्यास्थितावग्रतो
लोकेन्येपितुलाबलेनसततंनिष्पत्तिरानंदतः ।

स्वरूपधान्यमलौजनेनृपभयंपीडापिशल्भादिभि-
श्चापेलोक्सुखंमृगेपिपवनेऽनावृष्टिनारीमृतिः३८९

कन्यामें अस्त हो तो धातुओंकी महंगाई हो अन्न भाव तेज हो तुलामें हो तो लोगोंमें आनन्द हो धान्य कम उपजे वृश्चिकमें प्राणि-
योंमें भय हो और राजाओंसे पीडा तथा टीडी आदिकी पीडा हो ।
धनमें हो तो सुख हो मकरमें अस्त हो तो प्रचण्ड पवन चले वर्षा
कम हो स्त्रियां अधिक मरें ॥ ३८९ ॥

कुम्भेशीतभयंचतुष्पदपरिग्लानिश्चहानिर्गवां

मीनेहीनतयाघनस्यनजलंकापीहवापीस्थले ।

संतापीनृपतिःस्वधर्मविमुखःपापीजनः पीडया

मंदमंदसमंसभूपतिरणोमन्देस्तमप्याश्रिते ॥३९०॥

कुंभमें शीतभय चौपायोंमें मन मचलान गायोंकी हानि और
मीनमें शनिका अस्त हो तो वर्षा कहीं कहीं कुछ कुछ हो राजा
निज धर्मसे विमुख होकर दुःखदे पापियोंको पीडा हो और राजा-
ओंमें युद्ध हो ॥ ३९० ॥

कन्यायांमिधुनेमीनेवृषेधनुपिवास्थितः ।

शनिःकरोतिदुर्मिसंराज्ञायुद्धंपरस्परम् ॥ ३९१ ॥

“विशेष फल”-कन्या मिथुन मीन वृष और धन पर शनि स्थित हो तो दुर्भिक्ष करे और राजाओंमें परस्पर युद्ध हो ॥ ३९१ ॥

(९) अथ राहुचारः ।

यस्मिन्संवत्सरेराहुर्मीनराशौप्रजायते ।

तस्मिन्मासेभयंविद्युदुःखकष्टसमागतः ॥ ३९२ ॥

(९) “राहु चार”-जिस वर्षमें मीनका राहु हो तो उसके आक्रांत मासमें विजलीका भय हो और कष्टका आगमन हो ॥ ३९२ ॥

एवंज्ञात्वाचकर्तव्योपायदन्नादिसंग्रहः ।

संग्रहःसर्वधान्यानांलाभोद्वित्रिचतुर्गुणः ॥ ३९३ ॥

इस प्रकार जान कर अन्नका संग्रह किया जाय तो दुर्गुना त्रिगुना लाभ हो ॥ ३९३ ॥

वर्षमेकंतुदुर्भिक्षंरौरवपरिकीर्तितम् ।

प्राप्तेत्रयोदशमासेसुभिक्षमतुलंभवेत् ॥ ३९४ ॥

एक वर्षतक दुर्भिक्ष रहे और तेरहवा महीना आये पीछे अतुल सुभिक्ष हो ॥ ३९४ ॥

कुंभेराशौयदाराहुर्देवाङ्गीमोपिसंगतः ।

तदालोक्यविधातव्यःशणसूत्रस्यसंग्रहः ॥ ३९५ ॥

कुंभका राहु और देव योगसे मंगलभी साथ हो तो शण सूत्र का संग्रह करना चाहिये ॥ ३९५ ॥

भांडानिचसमस्तानिकांस्यादीनिविशेषतः ।

संगृह्यंतेमासपट्टकविक्रेतव्यानिसप्तमे ॥ ३९६ ॥

लाभश्चतुर्गुणोज्ञेयोभौमराहुद्वयस्थितौ ।

नान्यथेतिचवक्तव्यंयावद्भुक्तिस्थितौविमौ ॥ ३९७ ॥

सब प्रकारके बर्तन विशेष कर कांसी पीतलके बर्तन संग्रह करके

छः महीने रखकर सातवें महीनेमें बेचें तो चौगुना लाभ होता है इसमें कोई झूठ नहीं है । राहु और मंगलकी एक स्थिति रहे जब तक यह बात जानना ॥ ३९६ ॥ ३९७ ॥

सैहिकेयोयदायातिराशिमकरनामकम् ।

तदासंवीक्ष्यकर्तव्यःपट्टसूत्रस्यसंग्रहः ॥ ३९८ ॥

धृत्वामासत्रययावत्पट्टसूत्रयथातथा ।

प्रातेचतुर्थकेमासेलाभःस्याद्विकपंचकः ॥ ३९९ ॥

राहु मकर राशिपर हो तो उस समय मौका देखकर पट्ट सूत्र संग्रह करके तीन महीने बाद चौथे महीनेमें बेचे तो तिगुना चौगुना पचगुना लाभ होता है ॥ ३९८ ॥ ३९९ ॥

सैहिकेयोयदायातिधनराशौकमात्ततः ।

महिष्यादेस्तदाकार्यःसंग्रहोवसुधातले ॥ ४०० ॥

हयानांचगजानांचगर्दभानांविशेषतः ।

लाभश्चतुर्गुणःप्रोक्तोमासेद्वितियपंचमे ॥ ४०१ ॥

यदि धन राशिपर राहु हो तो भैंस और घोड़े तथा हाथी और विशेष कर गधे खरीदकर रखनेसे दूसरे या पांचवें महीनेमें चौगुना लाभ होता है ॥ ४०० ॥ ४०१ ॥

वृश्चिकस्थोयदाराहुर्देवाद्रोमस्यसंगमः ।

तदाज्ञात्वाचकर्तव्यःसंग्रहोघृतवाससाम् ॥ ४०२ ॥

पंचमासान्व्यतिक्रम्यपष्टेकार्योस्यविक्रयः ।

लाभश्चद्विगुणोज्ञेयोनिश्चितंशास्त्रभाषितम् ॥ ४०३ ॥

यदि वृश्चिकका राहु हो और देवयोगसे भीमका भी संगम हो जाय तो उस योगको जानकर घी तथा कपड़ोंका संग्रह करना चाहिये

उनको पांच महीने रखकर छठे महीनेमें बेंचनेसे निश्चय दुगुना लाभ होता है । यह शास्त्र कहता है ॥ ४०२ ॥ ४०३ ॥

तुलाराशियदाराहुःसंस्थितःसंक्रमेखेः ।

तदाभवतिदुर्भिक्षपितुःपुत्रस्यविक्रयः ॥ ४०४ ॥

वार्षिकसंग्रहंकुर्याद्ग्रीहीणांचविशेषतः ।

गणकानांतथालोकेलाभःकंबलकांस्यतः ॥ ४०५ ॥

तुल राशिका सूर्य संक्रांतिके दिन राहु बदले तो ऐसा दुर्भिक्ष हो कि जिसमें पिता पुत्रको भी बेंच दे । उस समयमें वार्षिक संग्रह करना चाहिये तो विशेषकर चावलोंका संग्रह करना चाहिये ज्योतिषियोंको लाभ होता है और कंबल तथा कांतीसेभी लाभ होता है ॥ ४०४ ॥ ४०५ ॥

कन्यागतोयदाराहुःसंभवेन्मासपंचके ।

तदाविज्ञायसंग्राह्यधातकीपिप्पलीद्वयम् ॥ ४०६ ॥

मासमेकंचसंग्राह्यधातकीपुष्पविक्रये ।

मासद्वयेनपिप्पल्यालांभोभवतिवांछितः ॥ ४०७ ॥

कन्या राशिमें राहु आवे तो यह देखकर पांच महीनेतक धावडया तथा दोनों पीपलका संग्रह करना चाहिये । एक महीने संग्रह करके दूसरे महीनेमें बेंचनेसे पायके फूल और पीपलोंमें मनचाहा लाभ होता है ॥ ४०६ ॥ ४०७ ॥

सिहराशौक्रमाद्वक्रोयदाराहुःप्रवर्तते ।

अवश्यंसंग्रहःकार्यस्तदाचोप्येपुवस्तुपु ॥ ४०८ ॥

वक्रो राहु सिंहाका हो तो चुंपने (आचार मुरखे आम तथा ईल) की वस्तुओंका अवश्य संग्रह करना चाहिये । उनमें लाभ होता है ॥ ४०८ ॥

आवौ धान्यकमादायशुंठीमरिचपिप्पली ।

जीरकं लवणं सौवर्चलसैधवस्वादिरः ॥ ४०९ ॥

धृत्वा संवत्सरं यावत्पण्मासान्ते स्वविक्रयः ।

लामश्चतुर्गुणं तस्य यदि सौम्येन वेध्यते ॥ ४१० ॥

धानिया सोंठ मिर्च पीपल जीरा और सींघा, खारी, तथा संघर
लवण इनको इकट्ठे करके छः महीनेके पीछे बेचनेसे (यदि सौम्य
अद्व न वेधे तो) चौगुना लाभ होता है ॥ ४०९ ॥ ४१० ॥

कर्कटे तु यद्दारादुस्तिष्ठत्येव महाबलः ।

अवश्यं तस्कराः सर्वे लोकपीडां प्रकुर्वते ॥ ४११ ॥

यदि कर्कका राहु हो तो अवश्यही लोगोंको चौरोंसे बहुत पीड़ा
हो ॥ ४११ ॥

सूक्ष्मता स्यात्तु ब्रीहिणां समर्घं स्वर्णरूप्यकम् ।

कांस्यं ताम्रं च संग्राह्यं पण्मासे लाभदायकम् ॥ ४१२ ॥

चावलोंकी कमी हो सोना चांदी सस्ते हों और कांसी ताम्र
संग्रह करनेसे छः मासमें लाभ दे ॥ ४१२ ॥

मिथुने च यद्दारादुःस्वोच्चस्थानवशात्तदा ।

घृतधान्यं समर्घं स्यान्माणिक्यानां समर्घता ॥ ४१३ ॥

यदि मिथुनका राहु हो तो उच्चता होनेके कारण घी, धान्य,
चूंगा आदि सस्ते हों ॥ ४१३ ॥

सैदिके यो यदा याति भौमग्रहनिरीक्षितः ।

वृषराशौ क्रमेणैव निधानं लभते जनः ॥ ४१४ ॥

राहु यदि वृषका हो और उसे मंगल देखता हो तो मनुष्योंको
वचित है कि ॥ ४१४ ॥

संग्रहःसर्वधान्यानांघृततैलंविशेषतः ।

कुंकुमंगंधद्रव्यंचकार्पासश्चगुडस्तथा ॥ ४१५ ॥

मासपट्टकश्चधृत्यैवंविक्रेयंसप्तमेपुनः ।

ज्ञेयश्चतुर्गुणोलाभःसत्यमेवहिनान्यथा ॥ ४१६ ॥

उक्त समय सब धान्योंका संग्रह करें । विशेष कर धी तेल रोली कशर इतरादि सुगन्ध द्रव्य और गुड़ तथा कपास इनका संग्रह करके छः महीने बाद सातवें मासमें बेचे तो चौगुणा लाभ होता है यह सत्य है झूठ नहीं है ॥ ४१५ ॥ ४१६ ॥

कांस्यंचलाक्षामंजिष्ठाशुंठीमरिचिहिंगवः ।

एषांसंग्रहणकार्यपण्मासश्चाधिनिश्चितम् ॥ ४१७ ॥

कांसी-लाख-मंजीठ, सोंठ, मिर्च, हिंग इनके संग्रहसे भी छः मासमें लाभ होता है ॥ ४१७ ॥

मेपराशौयदाराद्भुःसंस्थितश्चन्द्रसूर्ययोः ।

दैवाद्ग्रहणसंयोगेदुर्भिक्षंभवतिध्रुवम् ॥ ४१८ ॥

यदि मेपका राट्ट हो और मेप परही चन्द्र सूर्य हों, और देव-योगसे सूर्यग्रहण होनेका संयोगभी आजाय तो निश्चय दुर्भिक्ष होता है ॥ ४१८ ॥ (इति) ॥

(१०) अथ केतुचारः ।

रवावस्ताचलेप्राप्तेपश्चिमायांनिरीक्षते ।

यदावह्निशिखाकारास्तदाकेतुदयोवदेत् ॥ ४१९ ॥

(१०) "केतुचार विचार"—जिस समय सूर्य अस्ताचलको प्राप्त हो उस समय पश्चिम दिशाको देखना चाहिये । यदि जब आगकी शिखाका आकार दीखे तो केतुका उदय जानना ॥ ४१९ ॥

अश्विन्यामुदितःकेतुर्हन्यादश्मकपालकम् ।

भरण्यांचकिरातेशंकृत्तिकायांकलिंगपम् ॥ ४२० ॥

वह केतु यदि अश्विनीमें उदय हो तो अश्मक देशके राजाका नाश हो । भरणीमें किरात राजाका और कृत्तिकामें कालिंग देशके राजाका नाश हो ॥ ४२० ॥

रोहिण्यांसूरसेनेशमृगेचोशीनराधिपम् ।

आर्द्रायांजालणाधीशमश्मकेशंपुनर्वसौ ॥ ४२१ ॥

रोहिणीमें सूरसेनके राजाका, मृगशिरमें उशीनरके राजाका, आर्द्रामें जालनाके राजाका और पुनर्वसुमें अश्मकके राजाका नाश हो ॥ ४२१ ॥

पुष्येचमगधाधीशंसापेंकेरलयाधिपम् ।

मघायामंगनाथंचपूपायांपांड्यनायकम् ॥ ४२२ ॥

पुष्यमें मगधाधीशका श्लेषामें केरलाधिपका मघामें अंगनायका पूषामें पांड्यका नाश हो ॥ ४२२ ॥

उज्जयिन्यांनृपंहन्यादुत्तराफाल्गुनीगतः ।

दण्डकाधिपतिहस्तेचित्रायांकुरुभूपतिम् ॥ ४२३ ॥

उत्तराफाल्गुनीमें उज्जैनके राजाका, हस्तमें दण्डकाधिपका और चित्रामें कुरु राजाका नाश हो ॥ ४२३ ॥

स्वात्यांकाश्मीरकम्बोजभूपतीनांविनाशकः ।

इक्ष्वाकुकोशलेशानांविशाखायांचघातकः ॥ ४२४ ॥

स्वातिमें कश्मीर तथा कंबोजके राजाओंका और विशाखामें इक्ष्वाकु तथा कोशलेशका घात हो ॥ ४२४ ॥

मैत्रेयौण्ड्यमहीनाथंसार्वभौमन्तथैन्द्रमे ।

अन्ध्रमद्रकनाथंचमूलस्थोहन्तिनिश्चितम् ॥ ४२५ ॥

मैत्रेयामें पौंड्र राजाका, ज्येष्ठामें सम्राट्का और मूलमें अन्ध्र तथा मद्रासके राजाका घात हो ॥ ४२५ ॥

पूर्वाषाढाकाशिराजमुत्तराहंतिकैकतम् ।

शोधेशिधिपवेदीशंश्रवणकैकयेश्वरम् ॥ ४२६ ॥

पूर्वाषाढमें काशीराजका, उत्तरामें कैकत, अभिजितमें शिवपेश और श्रवणमें कैकयेश्वरका नाश हो ॥ ४२६ ॥ -

वासवेपञ्चजन्येश्वारुणसिंहलेश्वरम् ।

पूर्वभायामंगनाथनैमिपेशमुभागतौ ॥ ४२७ ॥

धनिष्ठामें पांचजन्य, शतभिषामें सिंहलेश्वर, पूर्वाभाद्रपदमें अंग-
नाथ और उत्तराभाद्रपदमें नैमिपेशत्रके अधिपतिका नाश हो ॥ ४२७ ॥

रेवत्यासुदितःकेतुःकिराताधिपघातकः ।

धूम्राकारसपुच्छश्चकेतुर्विश्वस्यपीडकः ॥ ४२८ ॥

और रेवतीमें केतुका उदय हो तो किरात देशके राजाका घात हो । यदि धूआंके आकारका चोटल पूंछल केतु उदय हो तो वह संसार भाको पीडा देता है ॥ ४२८ ॥

श्रावणेभाद्रमासेचकेतवोवारुणादश ।

जलवृष्टिकरालोकेतदाधान्यसमर्धता ॥ ४२९ ॥

“विशेष फल”-श्रावण और भाद्रमेमें वारुण नामके दश केतु होतेहैं। ये संसारमें अच्छा जल वर्षातेहैं और अन्न सस्ता रहताहै ॥ ४२९ ॥

आश्विनेकार्तिकेत्तेस्फःसूर्यपुत्राश्चतुर्दश ।

कुर्युश्चतुष्पदेमृत्युन्दुर्भिक्षंचैवनाशनम् ॥ ४३० ॥

आश्विन और कार्तिकमें तेस्फ नामक सूर्यके पुत्र चोदह केतु उदय होते हैं वे दुर्भिक्ष आदिसे सांपायोंका नाश करते हैं ॥ ४३० ॥

वह्निपुत्राश्चतुस्त्रिंशत्केतवोमार्गपौषयोः

अग्निदाहंचौरभयमनावृष्टिदिशत्यमी ॥ ४३१ ॥

मगशिर और पौषमें वह्निपुत्र ३४ केतु होते हैं ये अग्निदाह, चौर भय और अनावृष्टि करते हैं ॥ ४३१ ॥

केतवोयमपुत्राःस्युर्माघफाल्गुनयोर्नव ।

धान्यमहवदुर्भिक्षंकुर्युर्भूपमहारणम् ॥ ४३२ ॥

भाव फाल्गुनमें यमके पुत्र नौ केतु दीखते हैं वे धान्य महुंगा करके दुर्भिक्ष बना देते हैं और राजाओंमें बड़ी लड़ाईयां होती हैं ॥ ४३२ ॥

केतवोऽष्टादशसुताघनदस्यवसन्तके ।

लोकेसुखमंगलानिसुभिक्षंकुर्युरुद्यताः ॥ ४३३ ॥

चैत्र और वैशाखमें वरुणके पुत्र अठारह केतु होते हैं वे संसारमें सुख और मंगल कार्य करते हैं ॥ ४३३ ॥

ज्येष्ठाषाढोदितावायोः पुत्राविंशतिकेतवः ।

सवातजलवर्षायेतरुप्रासादभंगदाः ॥ ४३४ ॥

ज्येष्ठ और आषाढमें वायुके पुत्र बीस केतु होते हैं वे पवन सहित वर्षा करते हैं जिससे वृक्ष और महलोंकी अटारियां टूट जाती हैं ॥ ४३४ ॥

एवंपंचोत्तरशतंकचिदष्टोत्तरंशतम् ।

केचिदेकोत्तरशतंकेतूनांस्थानकत्रयात् ॥ ४३५ ॥

इस प्रकार यह १०५ केतु हैं कोई १०८ और कोई १०१ केतु बतलाते हैं ४३५ केतुद्वयफलम् ।

एषांकदाफलमितिज्ञेयमृक्षंविलोकयेत् ।

महोत्पातइतेऋक्षेदेशेनावृष्टिसंभवः ॥ ४३६ ॥

इनका फल जाननेके लिये नक्षत्रका विचार करना चाहिये यदि इससे नक्षत्र इस दुआ हो तो उस देशमें उत्पात और अनावृष्टि होती है ॥ ४३६ ॥

उल्कापातोदिशांदाहोभुकंपोब्रह्मवर्चसम् ।

दृष्ट्वाऋक्षंभवेद्यत्रतदक्षंपीडितंभवेत् ॥ ४३७ ॥

इति वर्षप्रबोधे पूर्वभागः समाप्तः ।

उल्कापात-दिग्दाह-भूकंपादि देखकर नक्षत्रका विचार करे क्योंकि उस दिन जो नक्षत्र होगा वही पीडित होगा ॥ ४३७ ॥

इति श्रीहनुमान् शर्मा संग्रहीत भाषाटीकासहित वर्षप्रबोधके

पूर्वभागका द्वितीयस्थल समाप्त । पूर्वभाग समाप्त ।

वर्षप्रबोधः

उत्तरभागःभाषाटीकासहितः ।



(१) अथ उत्पातनिरूपणम् ।

प्रकृतेश्चान्यथाभावउत्पातःसत्त्वेनेकधा ।

सयत्रतत्रदुर्भिक्षदेशराज्यप्रजाक्षयः ॥ १ ॥

अब वर्षप्रबोधका उत्तरभाग आरम्भ होता है ।

(१) "उत्पात निरूपण"—प्रकृतिमें किसी प्रकारका फेर बदल

ही वही उत्पात होता है और इस भांति अनेक प्रकारके उत्पात होते हैं । जहां ऐसे उत्पात हों वहां दुर्भिक्ष तथा देश, राज्य और प्रजाक्षय नाश होता है ॥ १ ॥

देवानावैकृतंभंगंचित्रेष्वायतनेषुच ।

ध्वजश्चोर्द्धमुखोयत्रतत्रराष्ट्रस्यविप्लवः ॥ २ ॥

देवमूर्तिपां हंसों, रोंबों या दूट जायें अथवा गिरपड़ें । ध्वजा ऊर्ध्वमुख होजाय तो देशमें उपद्रव होता है ॥ २ ॥

जलस्थलपुरारण्यदृश्यन्तेऽन्यत्रजन्तवः ।

शिवाकाकादिकाक्रन्दः पुरमध्येपुरच्छिदे ॥ ३ ॥

जलजीव (मछली) आदि स्थल (सूखी रेतमें) और स्थलके जीव जलमें और शहरोंके जंगलमें अथवा जंगली जीव शहरोंमें दीख पड़ें । गावोंमें गीदड़ और कौए रोंबें तो विध्वंस हो ॥ ३ ॥

छत्रप्राकारसेनादिदाहाद्यैर्नृपतीन्पुनः ॥

अस्त्राणांज्वलनंकोशनिर्गमश्चपराजये ॥ ४ ॥

छत्र, परकोटा, सुवर्ण और अस्त्र यह अपने आप जल उठें तथा
ध्यानसे तलवार निकल पड़े तो पराजय होती है ॥ ४ ॥

अन्यायश्चदुराचारःपाखण्डाधिकताजने ।

सर्वमाकस्मिकञ्जातवैकृतदेशनाशनम् ॥ ५ ॥

मनुष्योंमें अन्याय दुराचार पाखण्ड यह अकस्मात् अधिक हों
तो देशका नाश होता है ॥ ५ ॥

राजादिःकृषिजीवीचेद्विधर्मःपशुपालकः

देवताप्रतिमाभंगोलिगिविप्रवधस्तथा ॥ ६ ॥

जो राजा होकरभी खेती करे ग्वाल पना करे, देव मूर्ति टूटजाय
और संन्यासी, ब्राह्मण मारा जाय तो यहभी उत्पातहीकों कारणहै

सितरक्तंपीतकृष्णंसुरेन्द्रस्यशरासनम् ।

भवेद्विप्रादिवर्णानांचतुर्णानाशनंक्रमात् ॥ ७ ॥

विना वर्षा इन्द्रधनुष हों और वह सूर्यके सन्मुख न हो तो उसके
रंग सजातियोंका फल जानना । सफेद, लाल, पीला, काला होनेमें
क्रमसे ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य और शूद्र इनका नाश करताहै ॥ ७ ॥

अकालेषुष्पिंतावृक्षाःफलिताश्चान्यभूभुजे ।

अल्पेऽल्पमहतिप्राज्यंदुर्निमित्तैःफलंवदेत् ॥ ८ ॥

वृक्षोंमें विना समय फल फूल आवें अथवा बिलकुलही कम या
एकदम अधिक फल फूल आवें तोभी दुर्निमित्त होता है ॥ ८ ॥

अश्वत्थोदुम्बरवटपृक्षाःपुनरकालतः ।

विप्रक्षत्त्रियविटशूद्रवर्णानानाशनंक्रमात् ॥ ९ ॥

पीपल, गूलर, वट औ पिछखन यह विना समय फलें तो क्रमसे
ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य और शूद्रोंका नाश होता है ॥ ९ ॥

वृक्षेषुत्रेफलेषुष्पेवृक्षपुष्पफलंदलम् ।

जायतेचेत्तदालोकेदुर्मिक्षादिमहाभयम् ॥ १० ॥

वृक्षके पत्तेमें, फूलमें और फलमें वृक्षका रस फूल या फल उत्पन्न हो तो दुर्भिक्ष होता है और महामारी पड़ती है ॥ १० ॥

गोधनीनिर्निशिसर्वत्रकलिर्वाददुराःशिखी ।

श्वेतकाकश्चगृध्रादिभ्रमणदेशनाशनम् ॥ ११ ॥

गोधनी, कली, मीडक और मोर यह रात्रिमें विचरें तो देशनाशन होता है अथवा सफेद काग और गीघ आदि पक्षमें घुसैं तो भी देशनाशन होता है ॥ ११ ॥

एवमुत्पातेसंयोगाज्ज्ञात्वाशास्त्रान्तरादपि ।

वर्षेशुभाशुभदेशेज्ञेयं वर्षपरीक्षकैः ॥ १२ ॥

इस प्रकारके उत्पातोंके संयोगको अन्य शास्त्रोंसे भी जान लेना चाहिये और संवत्सरका शुभाशुभ तथा वर्षाका ज्ञान करलेना चाहिये ॥ १२ ॥

“उत्पातभेदाः।” भूमिकम्पेप्रजापीडानिर्घातेषु

नृपक्षयः। अनावृष्टिस्तु दिग्दाहे दुर्भिक्षं पांसुवर्षेण १३ ॥

“उत्पातोंके भेद * और विशेष फल । ”—भूकंपसे प्रजामें पीडा हो, निर्घाते नृप क्षय हो, दिग्दाहसे अनावृष्टि हो, पांसु (बाछ) वर्षासे दुर्भिक्ष हो ॥ १३ ॥

क्षयकृत्पांसुवृष्टिश्चनीहारश्चभयंकरः ।

दिग्दाहोऽभिभयंकुर्यान्निर्घातो नृपभीतिदः ॥ १४ ॥

निघूलकी वर्षासे क्षय होता है, नीहार (कोहरा) भय करता है । दिग्दाहसे अभिभयभी होता है, निर्घात (वज्रपात) से राजाको भय होता है ॥ १४ ॥

झंझावायुश्चण्डशब्दश्चौरभीतिप्रदायकः ।

भूकंपोदुःखदायीचपरिवेषश्चरोनसत् ॥ १५ ॥

झंझा वायु (खन खनाट करती हुई हवा) और घोर शब्दसे चौर भय होता है । भूकंप दुःखदाई और परिवेष (कुण्डाल) बुरा होता है ॥ १५ ॥

अहयुद्धेराजयुद्धंकेतौदृष्टेतथैवच ॥

अहणांतिमहावृष्टिः सर्वदोषविनाशिनी ॥ १६ ॥

अहोंके युद्धसे अथवा घूमकेतुके दीखनेसे राज युद्ध होता है और अहणके अन्तमें यदि महावर्षा हो तो सब दोष दूर होजाते हैं ॥ १६ ॥

उल्कापातेश्चेष्टनाशोद्धुमच्छिन्नेधनक्षयः ।

पाषाणवर्षणेज्ञेयासर्वधान्यमहर्घता ॥ १७ ॥

बड़े तारुओंके टूटनेसे सेठोंका नाश, तथा धूँओंके उखड़ पडनेसे धन क्षय होता है । पाषाण वर्षण अथवा उपल वृष्टि (ओलि गिरने) से सब खेतियोंका नाश होता है ॥ १७ ॥

विद्युत्पातेजलाभावःप्रजानाशोऽव्यकारिता ।

ऋतूनांव्यत्ययेरोगःसर्वजन्तुषुजायते ॥ १८ ॥

विजलीके उत्पातसे जलका अभाव होता है, घोर अव्यकारसे प्रजाका नाश होता है । ऋतुओंकी विपरितता (जाड़ेमें गर्मी और गर्मीमें ठंड पडने) से सब जीवोंमें रोग फैलता है ॥ १८ ॥

जन्तूनांविकृतोत्पत्तीराजविघ्नकरीमता ।

विग्रहोजायतेघोरश्चन्द्रसूर्यविपर्यये ॥ १९ ॥

जीवोंकी विपरीत उत्पत्ति होनेसे राजाओंमें विघ्न होता है । और चन्द्र सूर्यके विपर्ययसे घोर विग्रह होता है ॥ १९ ॥

अहयुद्धेभवेद्युद्धंयुतौचैवमहर्घता ।

अकालेफलपुष्पाणिसस्यनाशकराणिच ॥ २० ॥

५ ग्रहोंके युद्धसे युद्ध और युक्त होनेसे महुँगाई होती है । अकारणमें फल पुष्प होनेसे खेतियोंका नाश होता है ॥ २० ॥

यस्यराज्येचराष्ट्रेचदेवध्वंसःप्रजायते ।

सूर्यद्वोःसर्वथाग्रासेसर्वस्यापिमहर्घता ॥ २१ ॥

१ जिसके राज्यमें अथवा राष्ट्रमें देवताका विध्वंस (टूट फूट कट घूर) हो जाय अथवा सूर्य और चन्द्रमाका सर्वथास हो तो सब बरहकी महुँगाई होती है ॥ २१ ॥

भौमादिग्रहवक्रस्य चक्रे च प्राक्तनफलम् ॥ २२ ॥

भौमादि ग्रहोंके वक्रों होनेसेभी पूर्वोक्त फल होता है ॥ २२ ॥ (इति)

(२) अथ मंडलविचारमाह ।

कृत्तिकाभरणीपुण्यंद्विदैवंपूर्वफलमुनी ।

पूर्वाभाद्रपदपेयंस्मृतमाग्नेयमंडलम् ॥ २३ ॥

(२) "मण्डल विचार"—कृत्तिका, भरणी, पुण्य, विवासा, पूर्वाभाद्रपद और मघा यह "आग्नेय मण्डल"के नक्षत्र हैं ॥ २३ ॥

यद्यस्मिन्धूलिवर्षादेर्विकारःकोपिजायते ।

भूमिकंपोशनेःपातवल्कापातोन्धकारिता ॥ २४ ॥

दर्शनंधूमकेतोश्चग्रहणंचंद्रसूर्ययोः ।

रक्तवृष्टिर्जलवृष्टिरन्यद्वाकिंचिदद्भुतम् ॥ २५ ॥

तदाग्निमंडलात्प्राज्ञोजानीयाद्भाविलक्षणम् ।

नेत्ररोगमतीसारंदेशेऽग्निप्रबलोदयः ॥ २६ ॥

इनमेंसे जिस नक्षत्रमें घृष्टिबर्षा आदि कोईभी विचार पैदा हो अथवा भूकंप, बज्रपात, उल्कापात, अंधकार, धूमकेतुका दर्शन, चन्द्र ग्रहणके ग्रहण, रक्त वृष्टि (लाल रंगकी वर्षा), जलकी वर्षा अथवा बरसाही और कुछ अद्भुत दृश्य हो तो विद्वानोंको उचित है कि

अग्निमंडलसे भावी फलका लक्षण जानना । इसमें नेत्ररोग,
अतिसार और प्रबल अमिका उदय हो ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥

गवांद्गुग्धघृताल्पत्वंद्रुमेपुष्पफलरूपता ।

अर्थनाशंचचौरेभ्यःस्वरूपवृष्टिसमादिशेत् ॥ २७ ॥

गायोंमें दूध घीकी कमी हो, वृक्षोंमें फल पुष्पोंकी कमी हो,
चौरोंसे द्रव्यका नाश हो और वर्षा कम हो ॥ २७ ॥

क्षुधयापीडितालोकाभिक्षाखर्परधारिणः ।

संधवायमुनातीरघृताटंकजवाहिकाः ॥ २८ ॥

जालंधराश्चकाश्मीराःसमंत्रंचोत्तरापथः ।

एतेदेशाविनश्यंतितस्मिन्नुत्पातदर्शने ॥ २९ ॥

इति आग्नेयमंडलम् ।

लोग भूखसे पीडित होकर भिक्षाके लिये खर्परधारी (जोगी)
हो जाँय । सिंधुदेश-यमुना किनारेके देश घृताटंक और नाहिक
जालंधर-काश्मीर और उत्तर देश इन देशोंका उन उत्पातोंके देखा-
नेसे नाश हो ॥ २८ ॥ २९ ॥

मृगादित्याश्विनीहस्ताश्वित्रास्वातिसमन्विताः ।

उत्तराफाल्गुनीवायोरिदंमंडलमुच्यते ॥ ३० ॥

मृगशिर, पुनर्वसु, अश्विनी, हस्त, चित्रा, स्वाति और उत्तरा
फाल्गुनी यह नक्षत्र "वायुमण्डल" के हैं ॥ ३० ॥

यद्येषुजायतेकिंचित्पूर्वोक्तोत्पातलक्षणम् ।

महावातास्तदावांतिमहद्भयमुपस्थितम् ॥ ३१ ॥

यदि इनमें पूर्वोक्त उत्पात लक्षण हों तो उस समय महावायु
(बड़ी जोरकी आँधी) चलती है और महामय उपस्थित होता है ३१

उन्नीताअपिपर्जन्यानमुञ्चंतितदाजलम् ।

विनाशोदेवविप्राणांनृपाणांविन्ध्यवासिनाम् ॥ ३२ ॥

जलसे भरे हुए बादलोंकी घन घोर घटासेभी जल नहीं बरे ।
और आकाशोंका देवताओंका तथा विम्बवातियोंका विनाश
होता है ॥ ३२ ॥

प्राकारगिरिशृङ्गाणितोरणस्थलभूमिका ।

वायुवेगविधूतानिवनानिनिपतंतिहि ॥ ३३ ॥

इति वायुमण्डलम् ।

शहरोंके परकोठे, पहाड़ोंके बिस्तर, मकानोंके औरण और बनोके
वृक्ष बह वायु वेगसे भग्न होजाते हैं ॥ ३३ ॥

आर्द्राश्लेषोत्तराभाद्रपदंपुष्यंचवारुणम् ।

पूर्वाषाढामूलमेतद्वारुणमंडलंस्मृतम् ॥ ३४ ॥

आर्द्रा-श्लेषा, उत्तराभाद्रपद, पुष्य, शतभिषा, पूर्वाषाढा और
मूल यह "वारुण" (जल) मंडलके नक्षत्र हैं ॥ ३४ ॥

पषूत्पातोदयेपूर्वगदितेस्यात्प्रजासुखम् ।

बहुक्षीरघृतागावोबहुपुष्पफलाद्गुमाः ॥ ३५ ॥

इनमें पहले कहे हुए उत्पात हों तो प्रजाको सुख मिलता है ।
गायोंके दूध घी बहुत हों, वृक्षोंके फल पुष्प अधिक हों ॥ ३५ ॥

बहुधान्यामहीलोकेनैरुज्यं बहुमंगलम् ।

धान्यानिचसमर्घाणिसुभिक्षंप्रबलंभवेत् ॥ ३६ ॥

पृथ्वीपर खेतियां अच्छी हों, निरोगता हो, बहुत भातिका मंगल
हों । जल सस्ते हों और बड़ा सुभिक्ष हो ॥ ३६ ॥

कीटकामृषकाः सर्पाः शलभामृगकर्कटाः ।

मारिः पिपीलिकाकामंस्थलदेशे प्रजायते ॥ ३७ ॥

कौड़े, मूषे, सर्प, टींड़ी, हरिण, केंकड़े, पिपीलिका और मारी यह
स्थल देशोंमें बहुत हों ॥ ३७ ॥

ज्येष्ठानुराधारोहिण्योधनिष्ठाश्रवणस्तथा ।

अभिजिदुत्तराषाढाशुभंमाहेन्द्रमंडलम् ॥ ३८ ॥

ज्येष्ठा, अनुराधा, रोहिणी, धनिष्ठा, श्रवण, अभिजित और उत्तराषाढ यह नक्षत्र "महीमण्डल" (भूमंडल) के हैं ॥ ३८ ॥

षष्ठ्युत्पातोदयेलोकाः सर्वेमुदितमानसाः ।

संधिकुर्वन्तिभूमीशाःसुभिक्षमंगलोदयः ॥ ३९ ॥

इनमें यदि उपरोक्त उत्पात हों तो सब लोग बड़े प्रसन्न मन रहें। राजा लोग संधि (राजीपा) करें। सुभिक्ष हो और मंगल कार्योंका उदय हो ॥ ३९ ॥

उत्तरापातादयःसर्वेऽमीषुस्वस्वफलप्रदाः ।

वर्षाकालंविनाज्ञेयावर्षाकालेतुवृष्टिदाः ॥ ४० ॥

उत्तरापातादि वर्षाकालके विना भी अपने अपने फल देते हैं और वर्षा कालमें तो अवश्यही वर्षा करते हैं ॥ ४० ॥

माहेन्द्रं सप्तरात्रेण सद्यो वारुणमंडलम् ।

आग्नेयमर्द्धमासेन फलं मासेन वायवम् ॥ ४१ ॥

माहेय (पृथ्वी) मंडलका फल सात रात्रिमें, वारुण (जल) मंडलका फल सातका, अग्निमंडलका फल पन्द्रह दिनमें और वायुमंडलका फल १ महीनेमें होता है ॥ ४१ ॥

सुभिक्षं क्षेममारोग्यं राज्ञां संधिः परस्परम् ।

अंत्यमंडलयोर्ज्ञेयं तद्विपर्ययमाद्ययोः ॥ ४२ ॥

"विशेष फल" अन्त्य मण्डल (पृथ्वीमण्डल) में सुभिक्ष, क्षेम, आरोग्यता और राजाओंमें परस्पर सन्धि होती है। और आद्य (अग्निमंडल) में इनसे विपरीत होता है ॥ ४२ ॥

माहेन्द्रे वारुणे चैव ह्यष्टा भवन्ति धेनवः ।

उत्पाताः प्रलयं याति धरणी वर्द्धते शिवैः ॥ ४३ ॥

माहेन्द्र और वारुण मंडलमें गार्गे बड़ी हष्ट पुष्ट होती हैं, ठत्कार सब दूर होजाते हैं और पृथ्वीपर कल्याण बढ़ते हैं ॥ ४३ ॥

त्रिमासिकंतुचाग्नेयंवायव्यंचद्विमासिकम् ।

मासमेकंचवारुण्यंमाहेन्द्रंसतरात्रिकम् ॥ ४४ ॥

किसीका यहभी मत है कि, आग्नेयमंडलका ३ मासमें, वायव्यको दोमासमें वारुणका एक मासमें और माहेन्द्रका सात रात्रिमें फल होता है ॥ ४४ ॥

विवेकाविलासे पुनः ।

मंडलेऽग्रेरष्टमासैर्द्वाभ्यांवायव्यकेपुनः ।

मासेनवारुणेसतरात्रान्माहेन्द्रकेफलम् ॥ ४५ ॥

विवेक विलासमें लिखा है कि-आग्नेयमंडल आठ महीनेमें, वायु-मण्डल दो महीनेमें, वारुण एक महीनेमें और माहेन्द्र सात रात्रिमें, फल देता है ॥ ४५ ॥

रुद्रदेवः प्राह ।

वायव्यंमासयुग्मेनमाहेन्द्रंसतरात्रिकम् ।

आग्नेयमर्द्धमासेनवारुणंशीघ्रवारिदम् ॥ ४६ ॥

रुद्रदेव कहते हैं-कि वायव्य दो महीनोंमें, माहेन्द्र सात रात्रिमें, आग्नेय १५ दिनमें और वारुण शीघ्रही फल देता है (अथवा जल वर्षाता है) ॥ ४६ ॥

वारुणाग्नेययोर्भौमानिलयोःफलमंदता ।

अन्योन्यमभिघातेनतद्विमृश्यवदेत्फलम् ॥ ४७ ॥

वारुणसे आग्नेयका और भीमसे वायुका फल मंद होता है । और परस्परके अभिघातसे जो फल हो वह विचार कर करना चाहिये ॥ ४७ ॥

भूमिकंपरजोवर्षदिग्दाहो कालवर्षणम् ।

इत्याद्याकस्मिकंसर्वमुत्पातइतिकीर्त्यते ॥ ४८ ॥

भूकंप-धूलि वर्षा- दिग्दाह (दिशाओंमें आग जली हुई दीप्ति)
और अकालवर्षा हो यह सब अकस्मात् (अचानक) होनेवाले
उत्पात कहाते हैं ॥ ४८ ॥

इत्यनीतिप्रजारोगरणाद्युत्पातजंफलम् ।

मंडलाख्यासमंप्रायोवह्निवाय्वादिकंतथा ॥ ४९ ॥

इस प्रकार अन्याय, रोग, यह रण उत्पातोंसे होने वाले फल हैं ।
और मण्डलभी कहाते हैं, प्रायः यह बहिर्वायव्यादि होते हैं ॥ ४९ ॥

आग्नेयेपीडयतेयाग्यांवायव्यांपुनरुत्तराम् ।

वारुणेपश्चिमांनात्रपूर्वामाहेंद्रमंडले ॥ ५० ॥ इति ॥

आग्नेय मण्डलमें दक्षिण दिशामें पीडा होती है । वायु मण्डलमें
उत्तरमें, वारुणमें पश्चिममें और माहेंद्रमें पूर्वमें पीडा होती है ॥ ५० ॥

(३) अथ वायुविचारमाह ।

पूर्वस्याअथवोदीच्याःपवनःशीघ्रवृष्टये ।

दक्षिणस्यावृष्टिनाशीपश्चिमायांविलंबकः ॥ ५१ ॥

(३) "पवन विचार" पूर्व अथवा उत्तरकी पवन शीघ्र वृष्टि करती
है । दक्षिणसे वृष्टि रुकती है और पश्चिमकी हवासे वर्षामें विलंब
होता है ५१ ॥

आग्नेयाविग्रहंवह्नेर्मयंवृष्टिर्विवाधनम् ।

नैऋतःपवनोयावत्तावत्कुर्यान्महातपम् ॥ ५२ ॥

अग्निकोणकीसे अग्निमय तथा जलकी रुकावट और नैऋत्यकीसे
महा गर्मी होती है ॥ ५२ ॥

वायव्यवायुःकुरुतेवृष्टिपवनसंयुताम् ।

ततःपीडामत्कुणाद्यादतयोजीववर्षणम् ॥ ५३ ॥

वायव्यकी वायुसे पवन सहित वर्षा होती है, जिससे स्रष्टमल आदि उत्पन्न होकर ईति भव होता है ॥ ५३ ॥

ऐशानःपवनोविश्वदितायजलवृष्टये ।

आनन्दनन्दयेल्लोकोवायुचक्रमिदमतम् ॥ ५४ ॥

ईशानकी पवनसे संसारका हित होता है, जल वृष्टि होता है । और लोकोको आनन्द मिलता है ॥ ५४ ॥

रुद्रोऽपि स्वकृतमेघमालायामाह ।

वायुधारणमेवेदंशृणुतत्त्वेनसुन्दरि ।

सुभिक्षपूर्ववातेनजायतेनात्रसंशयः ॥ ५५ ॥

महादेवजी अपनी बनाई मेघमालामें कहते हैं कि हे सुन्दरी ! वायु धारण, तत्त्वसे सुनो । पूर्वकी वायुसे निःसन्देह सुभिक्ष होता है ॥ ५५ ॥

आग्नेय्याखंडवृष्टिश्चजायतेगिरिजात्मजे ।

दक्षिणईतिर्विज्ञेयानैर्ऋत्याकुलतात्वहे ॥ ५६ ॥

अग्निकोणकीसे खंड वृष्टि होती है दक्षिणकीसे ईति (चूहे टीढ़ी अनावृष्टि आदि) होते हैं । और नैर्ऋत्यकीसे आकुलता होती है ॥ ५६ ॥

वारुणेदिव्यधान्यंचवायव्यांतप्तसंभवः ।

उत्तराद्याशुभंज्ञेयमीशान्यांसर्वसंपदः ॥ ५७ ॥

इति सामान्यतोवायुचक्रविचारः ।

पश्चिमकी पवनसे दिव्य धान्य (अच्छी खेतियां) वायव्यकी से वाप, उत्तरकी शुभ और ईशानकी पवन सब संपत्ति देनेवाली होती है ॥ ५७ ॥

हेमंतेदक्षिणेवायुःशिशिरेनैर्ऋतःशुभः ।

वसंतेचोषणःश्रेष्ठफलदायीशरत्सुसः ॥ ५८ ॥

हेमंतमें दक्षिणकी, शिशिरमें नैर्ऋत्यकी और वसंतमें उष्ण (गर्म) वायु, शरदमें श्रेष्ठ फल देती है ॥ ५८ ॥

शरत्कालेतुपूर्वस्याःसमीरःफलनाशनः ।

वसन्तेचोत्तरावायुःफलपुष्पाणिनाशयेत् ॥ ५९ ॥

शरदमें पूर्वकी वायुसे फल मारे जाते हैं । और वसंतमें उत्तरकी वायुसे फल पुष्पोंका नाश होता है ॥ ५९ ॥

आग्नेय्यानकदापीष्टपेशानःसर्वदाशुभः ।

नैऋतोविग्रहंरोगंदुर्भिक्षंकुरुतेभवम् ॥ ६० ॥

इति वातविशेषचक्रम् ।

आग्नेयी वायु सदा खराब और ईशानकी सदा अच्छी होती है । नैऋत्यकीसे रोग विग्रह और दुर्भिक्ष भय होता है ॥ ६० ॥

ह्लांझावातंविनाकश्चिद्यदाप्राच्यादिकोऽनिलः ।

स्पष्टभावेनचेद्भातितदावृष्टिःस्थिराभवेत् ॥ ६१ ॥

सनझनाटकी न हो तो पूर्वकी वायु स्पष्ट भावसे चलती हुई निश्चय वर्षा करती है ॥ ६१ ॥

श्रावणेमुख्यतःप्राच्यानभस्येचोत्तरोऽनिलः ।

वृष्टिदृढतरांकुर्याच्छेषमासेषुवारुणः ॥ ६२ ॥

इति स्थापकवातः ।

मुख्य तो श्रावणमें पूर्वकी और भादवेमें उत्तरकी पवन दृढ वर्षा करती है । और श्रेष्ठ महीनामें पश्चिमी हवा अच्छी है यह स्थापक वायु है ॥ ६२ ॥

चैत्रासितद्वितीयायांसर्वदिग्भ्रामकोऽनिलः ।

विनामेघंतदाभाद्रपदेवृष्टिस्तुभूयसी ॥ ६३ ॥

“चैत्र” कृष्ण द्वितीयाको यदि सब दिशाओंमें घूमती हुई हवा सहे तो भादवेमें बिना बादलोंके भी बहुत वर्षा हो ॥ ६३ ॥

पूर्वस्याउत्तरस्याश्चवायुश्चेत्रेसितेनरे !

वृतीयायांतदालोकेसुभिक्षंप्रचुरंजलम् ॥ ६४ ॥

यदि चैत्र कृष्ण तीजको पूर्व अथवा उत्तरको पवन चले तो प्रचुर जल वृष्टिसे अच्छा सुमित्र होता है ॥ ६४ ॥

चतुर्थ्यावृष्टियुग्वातस्तदादुर्भिक्षमादिशेत् ।

चैत्रेसितादिपंचम्यांतादृगवफलंभवेत् ॥ ६५ ॥

चैत्र कृष्ण चतुर्थीको यदि वर्षा सहित वायु चले तो दुर्भिक्ष होता है। चैत्र शुक्ल पंचमीको भी ऐसी पवन चले तो ऐसाही फल जानना ॥ ६५ ॥

चैत्रद्वितीयादिचतुर्दिनेषुकृष्णेऽथपक्षेयदिपूर्ववातः ।

वर्षायुतो नैव शुभः सितेतु पूर्वोत्तरावायुरतीवशस्तः ॥ ६६ ॥

चैत्र कृष्ण २।३।४।५को वर्षा सहित पूर्व वायु चले तो शुभ नहीं होती है, किंतु शुक्ल पक्षमें पूर्वोत्तरकी वायु अत्यन्त श्रेष्ठ होती है ॥ ६६ ॥

चैत्रस्यशुक्लपंचम्यांवायुर्दक्षिणपूर्वयोः ।

वृष्ट्यासद्वतदावर्षेधान्यत्रिगुणमूल्यता ॥ ६७ ॥

चैत्रशुक्ल पंचमीको दक्षिण पूर्वकी वर्षा सहित वायु चले तो उस वर्षमें धान्यका तिगुना मूल्य होजाता है ॥ ६७ ॥

एवं च ।

चैत्रोऽयम्बहु रूपस्तुदक्षिणानिलसंयुतः ।

सर्वोविद्युत्समायुक्तोवृष्टेर्गर्भदितावहः ॥ ६८ ॥

यदि चैत्रमें अनेक प्रकारकी पवन चले और बिजली चमके तो श्रेष्ठ वर्षा हो ॥ ६८ ॥

मूलमारभ्ययाम्यांतंक्रमाच्चैत्रविलोकयेत् ।

यावदक्षिणतोवायुस्तावद्वृष्टिप्रदायकः ॥ ६९ ॥

मूलसे भरणी तक चैत्रको देखना चाहिये उसमें जब तक दक्षिणकी पवन चले तब तक वर्षा हो ॥ ६९ ॥

शुक्लाकृष्णापिवैशाखेऽष्टमीयद्वाचतुर्दशी ।

एषुचैदक्षिणोवातस्तदामेघमहोदयः ॥ ७० ॥

वैशाखमें शुक्ल या कृष्णकी आठ चौदसको दक्षिणकी पवन चले तो मेघ उदय हो ॥ ७० ॥

राधेशुक्लतृतीयायांचिह्नैर्निश्चीयतेऽनिलः ।

पूर्वास्यायदिवोदीच्याघनाघनस्तदाघनः ॥ ७१ ॥

वैशाख शुक्ल ३ को ध्वजादि चिह्नोंसे वायुका विचार करे, यदि पूर्व या उत्तरकी वायु चले तो मेघ आवे और वर्षा हो ॥ ७१ ॥

दक्षिणोनैर्ऋतोवायुवृष्टेः स्यात्प्रतिघातकः ।

वारुणाद्बृष्टिरधिकापरधान्यस्यरोधनम् ॥ ७२ ॥

उसी दिन दक्षिण या नैर्ऋत्यकी पवन चले तो वर्षा नहीं हो और पश्चिमकी पवन चले तो अच्छी हो किन्तु माड़ेकी खेतिपां नष्ट हों ॥ ७२ ॥

वैशाखशुक्लतुर्येहिसंध्यायामुत्तरानिलः ।

सुभिक्षायाथपंचम्यामैन्द्रोधान्यमहर्घकृत् ॥ ७३ ॥

वैशाख शुक्ल ४ को उत्तरकी हवा चले तो सुभिक्ष हो और पंचमी को पश्चिमी पवन चले तो तेजी हो ॥ ७३ ॥

उदयास्तगतोयावत्पूर्वावायुर्यदाभवेत् ।

संगृहीयाच्चधान्यानिबहूनि सुलभान्यथ ॥ ७४ ॥

उदय और अस्तके समय पूर्वकी पवन चले तो गस्ते नाजका अचर संग्रह करना चाहिये ॥ ७४ ॥

एवंशुद्धदशम्यांचेत्तदापिधान्यसंग्रहः ।

तथादेशेषुपूर्णायांवायुंसम्यग्विचारयेत् ॥ ७५ ॥

इसी प्रकार शुद्ध दशमीको भी उदयास्तमें पवन चले तो धान्य संग्रह करना चाहिये । तथा देशोंमें पूर्ण वायुका सहे प्रकार विचार ... चाहिये ॥ ७५ ॥

प्रातश्चतुर्वटीमध्येपूर्वोवायुर्यदाभवेत् ।

सूर्याद्रासंगमेवाद्यदिनेमेघमहोदयः ॥ ७६ ॥

सूर्य आर्द्रा नक्षत्र पर हो तब यदि प्रातःकालके समय चार घड़िके भीतर पूर्वकी पवन चले तो मेघका उसीदिन उदय होता है ॥ ७६ ॥

वृष्टिर्द्वितीयेपिवायुर्घटिकेपूर्वयायुतः ।

ज्ञेयाद्वितीयेदिवसेआर्द्रातपनसंगमे ॥ ७७ ॥

इसी भाँति दूसरे दिनभी पूर्व वायु हो तो अवश्य वर्षा होतीहै ॥ ७७ ॥

पूर्णिमातःसमारभ्ययावज्ज्येष्ठासिताष्टमी ।

एवमार्द्रादिसूर्यर्क्षनवकेवृष्टिरुच्यते ॥ ७८ ॥

वैशाखी पूर्णिमासे "ज्येष्ठ" कृष्णाष्टमी तक आर्द्राके सूर्यमें नौ नक्षत्रोंका योग हो अर्थात् आर्द्रापर सूर्य हो और पूर्णिमासे अष्टमीतक आर्द्रादि नौ नक्षत्र हों तो अवश्य वर्षा होतीहै ॥ ७८ ॥

सूर्यसोमेत्वमायोगेवायुर्वारुणदिग्भवः ।

यदासरत्सुविज्ञेयोवायुर्धान्यमहाफलम् ॥ ७९ ॥

सूर्य चंद्र और अमावास्याका योग हो और पश्चिमी हवा चले तो अच्छा अन्न हो ॥ ७९ ॥

नवमासान्यदापूर्वोवायुश्चरतिभूतले ।

स्वातौमौक्तिकनिष्पत्तिर्बहुधान्यादिमंगलम् ॥ ८० ॥

यदि नौमास तक बराबर पूर्वी पवन चले तो सीपमें मोती और अश्वीपर धान्य तथा मंगल बहुत हों ॥ ८० ॥

ज्येष्ठमासेरविकरास्तपंतिप्रचुरोऽनिलः ।

लूकासमन्वितोवापिघनगर्भस्तदाशुभः ॥ ८१ ॥

ज्येष्ठ मासमें कड़ी घुप पड़े, हवा बहुत चले, लू लगे तो वर्षाका गर्भ शुभ होता है ॥ ८१ ॥

ज्येष्ठमासेऽष्टमीकृष्णातथाकृष्णचतुर्दशी ।

दक्षिणानिलसंयुक्तः परतो वृष्टिहेतवे ॥ ८२ ॥

जेठ वदी आठै तथा चौदसको दक्षिणी पवन हो तो पीछे वर्षा होती है ॥ ८२ ॥

ज्येष्ठस्य यदि पंचम्यां दक्षिणः पवनश्चरेत् ।

तदा तिलास्तथा तैलं घृतं क्रेयंतदाश्विने ॥ ८३ ॥

जेठकी पंचमीको दक्षिणी पवन चले तो तिल तेल घी यह आसों-जमें खरीदने चाहिये ॥ ८३ ॥

यदुक्तं मेघमालायांगर्जितं श्रूयते यदि ।

दक्षिणस्या भवेद्वायुराच्छन्नं च यदानभः ॥ ८४ ॥

धान्यानां तिलतैलानां संग्रहः कियते तदा ।

द्विगुणस्त्रिगुणो लाभः क्रमान्मासश्चतुष्टये ॥ ८५ ॥

उक्त मेघमालामें यदि गर्जना सुने, दक्षिणी पवन हो और आकाश बादलोंसे ढका हुआ हो तो धान्य तथा तिल तैलादिका संग्रह करनेसे चार मासमें दुगुना त्रिगुना लाभ होता है ॥ ८४ ॥ ८५ ॥

सिताऽष्टम्यां ज्येष्ठमासे च तस्मै वायुधारणाः ।

मृदुवायुः १ शुनो वातः २ स्निग्धाभ्रः ३ स्थगिताभ्रकः

मृदु (कोमल पवन) शुन (शब्द युक्त हवा)—स्निग्ध (चिकनी हवा) और स्थगित (शनी हुई हवा) यह चार भौतिकी पवन होती हैं । इसका ज्येष्ठ शुक्लाष्टमीको विचार करना चाहिये ॥ ८६ ॥

यदि ता एकरूपाः स्युः सुभिक्षं सुखकारिकाः ।

सांतरालाः शिवायै तास्तस्कराग्निभयप्रदाः ॥ ८७ ॥

यदि उस दिन यह चारोंही चलें तोः सुखकारक सुभिक्ष होता है । और एकके पीछे एक चले तो चौर तथा आग्निभय होता है ॥ ८७ ॥

ज्येष्ठस्य शुक्लैकादश्यां पूजां कृत्वा सुशोभनाम् ।

शुभं मंगलं कृत्वा पुष्पधूपैरलंकृतः ॥ ८८ ॥

ज्येष्ठ शुक्ल एकादशीको पूजन करना चाहिये और धूप दीपादिके अलंकृत शुभ मंगल करना चाहिये ॥ ८८ ॥

उच्चस्थाने प्रतिष्ठाप्य दीर्घदण्डे महाध्वजः ।

एवं कृत्वा प्रयत्नेन शोधयेत्कालनिर्णयम् ॥ ८९ ॥

और पीछे एक लम्बे दण्डवाली ध्वजाको किसी ऊँचे स्थानपर स्थापन करना चाहिये । और ऐसा करके यत्न पूर्वक उस समयका निर्णय करना चाहिये ॥ ८९ ॥

एको वातो यदा वातियानि चिह्नानि वा पुनः ।

तदा त्रिचतुरो मासान् ध्रुवं वर्षति वारिदः ॥ ९० ॥

यदि उस ध्वजाके हिलनेके चिह्नोमें ४ दिन तक एकही पवन चले तो तीन चार मास तक निश्चय वर्षा होती है ॥ ९० ॥

प्रथमं पश्चिमो वातश्चतुर्दिनानि वाति चेत् ।

अनावृष्टिं विजानीयाद्दुर्भिक्षं रौरवन्तदा ॥ ९१ ॥

यदि पहले पश्चिमी हवा ४ दिन चले तो अनावृष्टि जाननी और दुर्भिक्ष जानना ॥ ९१ ॥

उत्तरोदयमार्गेण चतस्रोदन्ति वादिशः ।

चत्वारो वार्षिकमासामेघा वर्षति भूतले ॥ ९२ ॥

यदि चारों दिन उत्तरकी हवा चले तो वर्षाके चारों महीनोंमें भेष नै ॥ ९२ ॥

विषरीतो यदा वातश्चतस्रोदन्ति वादिशः ।

रविमार्गे परिभ्रष्टो जानीयात्तस्य लक्षणम् ॥ ९३ ॥

यदि चारों दिनोंमें विषरीत वायु चले तो अशुभ लक्षण जानना ॥ ९३ ॥

शीतकालेतदावृष्टिर्वर्षाकालेनविद्यते ।

अनयोर्वैपरीत्येचवृष्टिर्वर्षासुनिर्दिशेत् ॥ ९४ ॥

इससे शीत कालमें तो वर्षा हो किन्तु वर्षातमें नहीं हो । और
इससे विपरीत वर्षा हो तो अच्छी जानना ॥ ९४ ॥

वायव्यांपश्चिमायांचनैर्ऋत्यांवातिचक्रमात् ।

आपादश्रावणेक्षिप्रंद्वौमासौवृष्टिरुत्तमा ॥ ९५ ॥

यदि वायव्य पश्चिम और नैऋत्यकी वायु क्रमसे चले तो आपाद
श्रावणमें जल्दी वर्षा हो ॥ ९५ ॥

पूर्वस्यांचतथेशान्यामाग्नेय्यांवातिचक्रमात् ।

भाद्रपदाश्विनोच्छिद्रातदन्तेवृष्टिरुत्तमा ॥ ९६ ॥

पूर्व ईशान तथा अग्निकी पवन चले तो भाद्रपदा और आश्विनके
अन्तमें वर्षा हो ॥ ९६ ॥

अमार्याचैवपूर्णायांज्येष्ठमासेदिवानिशम् ।

मेघैराच्छादितेव्योम्निवातोवहतिवारुणः ॥ ९७ ॥

अनावृष्टिस्तदादेश्याक्कचिद्वृष्टिस्तुभाग्यतः ।

मासौद्वौश्रावणाषाढौपूर्णेभाद्रपदाश्विनौ ॥ ९८ ॥

यदि जेठकी अभावस या पूर्णिमाको दिन रात मेघाच्छादन रह
और पश्चिमी पवन चले तो अनावृष्टि जानना । आपाद श्रावणमें
कहीं कुछ भागसे वर्षा होसकती है । नहीं तो मार्वी और आश्विन-
मी पूरे सूखे निकल सकते हैं ॥ ९७ ॥ ९८ ॥

आपादशुक्लपंचम्यांपश्चिमोयदिमारुतः ।

वर्षागर्जितसंयुक्तःशक्रवापेनभुषितः ॥ ९९ ॥

"आपाद"—शुक्ल पञ्चमीको यदि पश्चिमी पवन चले और गर्जना
सरित वर्षा हो तथा इन्द्रधनुषसेभी शोभित हो तो ॥ ९९ ॥

तदासंगृह्यतेधान्यंकार्तिकेतन्मद्वर्षता ।

लाभायजायतेनूननान्यथाऋषिभाषितम् ॥ १०० ॥

उक्त समय दान्यका संग्रह करे क्योंकि कार्तिकमें उसकी तेजी होती है । जिससे अच्छा लाभ रहता है यह ऋषि भाषण झूठा नहीं है ॥ १०० ॥

आषाढशुक्लपक्षस्यद्वितीयायांनवर्षति ।

यदिमेघस्तदावृष्टिःश्रावणेजायतेध्रुवम् ॥ १०१ ॥

आषाढ शुक्ल द्वितीयाको मेघ तो हो किन्तु वर्षा न हो तो आषाढमें निश्चय वर्षता है ॥ १०१ ॥

तृतीयायांपूर्ववायुःपूर्वगामीचवारिदः ।

घनामेघास्तदाभाद्रेवर्षतिविपुलंजलम् ॥ १०२ ॥

आषाढ शुक्ल १ को पूर्वकी वायु चले और पूर्वहीसे बादल जाय तो भादेवमें बहुत वर्षा और गहरा जल होता है ॥ १०२ ॥

चतुर्थ्यादक्षिणोवायुर्मेघःपूर्वेचगच्छति ।

आश्विनेचतदामासेवृष्टिर्मवतिनिश्चितम् ॥ १०३ ॥

चौथको यदि दक्षिणी पवन चले और पूर्वमें बादल जाय तो आश्विनमें निश्चय वर्षा होती है ॥ १०३ ॥

वृष्टेदिनचतुष्केऽस्मिन्वातेपूर्वोत्तरागते ।

अतिवृष्टिःसुभिक्षेचदुर्भिक्षंचतदन्यथा ॥ १०४ ॥

यदि इन चारों दिनोंमें पूर्वोत्तर वायु चले तो अतिवृष्टिः तथा सुभिक्ष हो अन्यथा दुर्भिक्ष हो ॥ १०४ ॥

सर्वरात्रयदाभ्राणिवातीपूर्वोत्तरौयदि ।

तस्मिन्वर्षेऋणाःपुष्टाभवेतिभुविमंगलम् ॥ १०५ ॥

इन दिनोंमें सब रात बादल रहें और पूर्वोत्तर वायु चले तो वरु

वर्षमें अन्न बहुत मोटा होता है और पृथ्वीपर मांगलिक काम होते हैं ॥ १०५ ॥

यदिवानाभ्रलेशः स्याद्वातौ पूर्वोत्तरौ न हि ।

न वर्षेति यदा देवोदुष्टकालं तदादि शेत् ॥ १०६ ॥

यादि लेश मात्रभी बादल न हो और पूर्वोत्तरकी पवनभी न हो तो वर्ष नहीं वर्ष और अकाल पड़े ॥ १०६ ॥

यत्राभ्रेस्वरूपके जाते मध्येवातेऽल्पवर्षेणम् ।

यत्र मासविभागे च निर्मलं दृश्यते न भः ॥ १०७ ॥

तत्र दानिश्च वृष्टेश्च विज्ञेयं गर्भपातनम् ।

यत्राभ्रं पंचनाडीषु वातौ पूर्वोत्तरौ यदि ॥ १०८ ॥

तत्र मासे भवेद्दृष्टिरित्येवं सर्वनिर्णयः ।

आपादयान् रात्रिकालेऽपि पवनः सर्वदिग्गतः ॥ १०९ ॥

जब कम बादल हों और हवाभी कम चले तो मध्यम वर्षा हो । और महीनेके अन्तमें निर्मल आकाश दीखे तो वर्षाकी हानि तथा गर्भपात हो और पांचों नाड़ीमें मेघ तथा पूर्वोत्तरकी पवन चले तो पौष मासमें अवश्य वर्षा हो तथा आपाटी पूर्णिमाको रातमें सब दिशाओंकी पवन चले तो ऐसाही हो ॥ १०७ ॥ १०८ ॥ १०९ ॥

अथैरवृष्टैरपि च पूर्णिमा सुखदायिनी ।

आद्ययामे यदा भ्राणिवातौ पूर्वोत्तरौ यदि ॥ ११० ॥

आद्यमासे तदा वृष्टिर्वांछिता दधिकाक्षिणी ।

आपादयान् च विनष्टान् नूनं भवति निःकणम् १११ ॥

पूर्णिमाको बादल हों और अवृष्टि हो तो सुख होता है । उसदिन यदि पहले पहरमें बादल हों और पूर्वोत्तरकी पवन चले तो पहले महीनेमें आशासेभी अधिक वर्षा होती है और यदि आपाटी दूर आप तो कण नहीं होता है ॥ ११० ॥ १११ ॥

महणंवृक्षपाताद्यैर्मर्त्यनश्यतिपूर्णिमा ।

अथमाघटिकाःपंचआषाढःपंचश्रावणः ॥ ११२ ॥

पूर्णिमाके हाससे महण तथा वृक्ष पातादि होते हैं । (आषाढ शुक्ल पूर्णिमाकी रातको पांच पांच घड़ीके पांच भाग बनाकर उस रातको पांच भागोंमें विभाजित करे) प्रथम पांच घटीको आषाढ, दूसरी पांच घटीको श्रावण समझै ॥ ११२ ॥

पंचभाद्रपदोमासस्तथापंचाश्विनःपुनः ।

यत्राभ्राकुलनाडीषुवातौपूर्वोत्तरौस्फुटम् ॥ ११३ ॥

तत्रमासेभवेद्गृष्टिर्वातैरपिशुभैःशुभः ।

येषुमासेषुयेदग्धागर्भाःपौषादिसंभवाः ॥ ११४ ॥

इसी प्रकार तीसरी पांच घड़ीको भाद्रवा और चौथी पांच घड़ीको आश्विन माने । इस प्रकार मानी हुई घटियोंमें जिस मासकी पांच घटियोंमें बादल छाये हों और पूर्वोत्तरकी स्पष्ट हवा चले तो उस मासमें वर्षा होती है और शुभ वायुभी शुभ होता है । जिस मासमें पौषादि संभावित गर्भ दग्ध हों तो नेष्ट होते हैं ॥ ११३ ॥ ११४ ॥

तन्मासपंचभागेषुरात्रौ चंद्रोऽतिनिर्मलः ।

पौषादिसंभवेगर्भेध्रुवमुत्पातसंभवः ॥ ११५ ॥

उस रात्रिमें महीनोंके पांचों भागोंमें चन्द्रमा अत्यन्त निर्मल रहे तो पौषादिके गर्भमें उत्पात होनेकी संभावना है ॥ ११५ ॥

तेनाषाढीदिवारात्रौद्रष्टव्यावृष्टिहेतवे ।

यद्याषाढ्यामहोरात्रममेवातैःशुभैर्युतम् ॥ ११६ ॥

अत एव आषाढी पूर्णिमाको वृष्टिके हेतु दिन रात देखने चाहिये । यदि आषाढीको रात दिन पवन चलती रहे तो शुभ है ॥ ११६ ॥

तदागर्भाःशुभाज्ञेयाःशीतकालेपिधीमता ।

एकमेवदिनंप्रेक्ष्यंवर्षज्ञानायधीधनैः ॥ ११७ ॥

उससे शीतकालमें भी गर्भ शुभ होते हैं । साल भरके ज्ञानके लिये यह एक दिन विद्वानोंको अवश्य विचारना चाहिये ॥ ११७ ॥

चेदष्टम्यांशुभ्रमभ्रंवातैर्वर्षभवेच्छुभम् ।

आषाढ्यानिर्मलचंद्रःपरिवेपयुतोऽथवा ॥ ११८ ॥

तदाजगत्समुद्धतुंशक्रेणापिनशक्यते ।

कुहूतःषोडशेचाह्निलक्षणंचितयेदिदम् ॥ ११९ ॥

जो आषाढकी अष्टमीको शुभ्र (सफेदी वाले) बादल हों और वायु सहित वर्षा हो तो शुभ होता है । आषाढ शुक्ल पूर्णिमाको निर्मल चन्द्रमा हो अथवा उसके परिवेष (घेरा) हो तो संतारका उद्धार करनेमें इन्द्रभी समर्थ नहीं होसकता । अतः गत अमावससे सोलहवें दिन सब प्रकारके लक्षण विचारने चाहिये ॥ ११८ ॥ ११९ ॥

अस्तंगच्छतिगिर्मांशौतस्माद्वर्षशुभाशुभम् ।

आषाढ्यापूर्ववातेचसर्वधान्यामहीभवेत् ॥ १२० ॥

“आषाढी पूर्णिमा”—को जिस समय सूर्य भगवान् अस्त होनेको चले गयेहों उस समय वर्षका शुभाशुभ जाननेको वायु परीक्षा करे । उस दिन यदि पूर्वकी पवन चले तो सम्पूर्ण धान्य पृथ्वीपर हो ॥ १२० ॥

आग्नेयवातेलोकाःस्युरुद्विग्राश्चातिरोगतः ।

दक्षिणेपवनेराज्ञांमहायुद्धंपरस्परम् ॥ १२१ ॥

आग्नेयकी वायु चले तो लोगोंमें उद्वेग तथा रोग बहुत हों । और दक्षिणकी पवन चले तो राजाओंमें परस्पर महायुद्ध हों ॥ १२१ ॥

नैऋतेनिर्जलाभूमिर्धान्यसंग्रहकारणम् ।

वारुणेप्रवलावृष्टिर्धान्यनिष्पत्तिहेतवे ॥ १२२ ॥

नैऋत्यकी पवन चले तो नीरका नाश हो और धान्य संग्रह करनेकी आवश्यकता हो । पश्चिमकी पवन चले तो बहुत जल वर्षे और उससे खेतिवां बहुत उत्पन्न हों ॥ १२२ ॥

वायव्ये मत्कुणात्पीडामशकाद्यास्तथेतयः ।

उत्तरे पवने लोका गीतमंगल पूरिताः ॥ १२३ ॥

वायव्यकी पवन चले तो उटकण मच्छर आदि ईति हों । उत्तरकी चले तो लोकोंमें गीत मंगल बहुत हों ॥ १२३ ॥

धान्यं घनं तथे शाने सुखं धान्यसमर्घता ।

इत्याषाढी वातचक्रमाषाढे घनशेखरम् ॥ १२४ ॥

और यदि आषाढी पूर्णिमाको ईशानकी पवन चले तो धान्यका सुख मिले और अन्न सस्ता रहे यह अषाढी वायुचक्र विचारणीय है ॥ १२४ ॥

गर्जति यदि वामे घोवाति चोत्तरः पवनः ।

दशमे तदानीं भुवि मेघमहोदयं कुर्यात् ॥ १२५ ॥

“विशेषफल”-जो आषाढी पूर्णिमाको मेघ गर्जे और उत्तरकी पवन चले तो शुभ होता है ॥ १२५ ॥

अभ्रं विनाषाढपूर्णावातौ पूर्वोत्तरौ यदि ।

यत्र यामार्द्धवे तत्र मासे वृष्टिर्हि वा भवेत् ॥ १२६ ॥

यदि आषाढी पूर्णिमाको बादल न हों और पूर्व उत्तरकी पवन चले तो जिस यामार्द्धमें ऐसा हो उसी मासमें वर्षा हो (यामार्द्ध पहले कह आये हैं) ॥ १२६ ॥

भवेत् पूर्वोत्तरौ वातौ न चान्नं नापि वर्षणम् ।

आषाढ्यातर्हि विज्ञेयं दुर्भिक्षं लोकदुःखदम् ॥ १२७ ॥

यदि आपादीको पूर्वोत्तर वायु भिन्न रूपकी हो अर्थात् बेग पूर्वकी
कभी पूर्वकी कभी उत्तरकी हो और बादल न हों तो न तो अन्न हो
और न वर्षा हो किन्तु लोक दुःखदाई दुर्भिक्ष हो ॥ १२७ ॥

मार्गमासेसिताष्टम्यांपूर्वोवातःसुभिक्षकृत् ।

अन्यतःपवनःकुर्यादुर्भिक्षंभाविवत्सरे ॥ १२८ ॥

("आषण-भाद्रपद-आश्विन-और कार्तिक" की पवनका विचार
११० के श्लोकमें पहले होगया अब "मार्गशीर्ष" का विचार
लिखते हैं ।) यदि मार्ग शुक्लाष्टमीको पूर्वकी पवन चले तो सुभिक्ष
करती है । और और तरफकी चले तो दुर्भिक्ष करती है ॥ १२८ ॥

एकादश्यांपौषकृष्णोदक्षिणःपवनोयदा ।

विद्युद्रादलसंयुक्तस्तदादुर्भिक्षकारकः ॥ १२९ ॥

"पौष" कृष्ण एकादशीको दक्षिणकी पवन चले तो और बिजली
बाधल संयुक्त हों तो दुर्भिक्ष करती है ॥ १२९ ॥

पौषस्यशुक्लपंचम्यांतुपारःपवनोयदि ।

तदागर्भस्यपीडास्याद्भाविवर्षहितावहः ॥ १३० ॥

पौष शुक्ल पंचमीको वर्षकी पवन हो तो आगामी वर्षके हितमें
गर्भ पीडा करती है ॥ १३० ॥

पंचम्यांव्योमखंडेपियदाचशीतलोऽनिलः ।

विद्युन्मैघसमायुक्तस्तदागर्भोदयोध्रुवम् ॥ १३१ ॥

उसी पंचमीको आकाशमें शीतल पवन चले और मेघ सहित
बिजली चमके तो निश्चयही गर्भका उदय होता है ॥ १३१ ॥

माघेशुक्लप्रतिपदिवायुर्वादलसंयुतः ।

तेलादिसर्वसुरभीमहर्षजायतेभुवि ॥ १३२ ॥

"माघ" शुक्ल प्रतिपदाको बादल सहित वायु चले तो तैलादि
सब सुगन्ध पदार्थ महंगे हों ॥ १३२ ॥

माघस्यशुक्लपंचम्यांवृष्टिबुक्तोत्तरानिलः ॥

अनावृष्टिर्भाद्रपदेकुर्याद्धान्यमहर्घता ॥ १३३ ॥

यदि माघ शुक्ल पंचमीको वृष्टि युक्त उत्तरकी पवन हो तो भाद्वेमें अनावृष्टि होकर अन्न महेगा हो ॥ १३३ ॥

शुक्लेमाघस्यसप्तम्यांवारुण्यांविद्युदभ्रयुक् ।

ऐन्द्रोवातोथकौवेरोदिवाविंशत्सुभिक्षकृत् ॥ १३४ ॥

माघ शुक्ल सप्तमीको पश्चिममें बादल तथा बिजली हो और पूर्व अथवा उत्तरकी पवन हो तो बीस दिनमें सुभिक्ष हो ॥ १३४ ॥

माघस्यनवमीकृष्णादशम्यैकादशीतथा ।

सवाताविद्युतायुक्ताःकथयन्तिजलंबहु ॥ १३५ ॥

माघ कृष्ण नौमी दशमी एकादशीको वायु और बिजली हो तो बहुत जल होता है ॥ १३५ ॥

अमावास्यामहोरात्रंहियोवातस्तुवृष्टिकृत् ।

पौर्णमास्यांभाद्रपदेकुर्यान्मेघमहोदयम् ॥ १३६ ॥

अमावास्याको दिन रातमें ठंडी पवन हो तो वर्षा करती है । और भाद्रपदकी पूर्णिमाको वर्षा करती है ॥ १३६ ॥

फाल्गुनेऽतिरयोवायुर्वातिपत्राणिपातयन् ।

दक्षिणोतिमृदुश्चैत्रमेघगर्भहितायसः ॥ १३७ ॥

“फाल्गुन” में अत्यंत शब्द वाली वायु चलकर वृक्षोंके पान गिरादे । और दक्षिणकी कोमल पवन चले तो चैत्रके मेघके गर्भको दित होती है ॥ १३७ ॥

हुताशन्यादीप्तिकालेऐन्द्रःस्यादतिवृष्टये ।

औदीच्योधान्यनिष्पत्त्यैदुर्भिक्षंदक्षिणोनिलः १३८

“होलीकी हवा”—यदि फाल्गुनी पूर्णिमाको होलीके दीप्तिकाल (जल उठनेके समय) पूर्वकी पवन चले तो आतिवृष्टि होती है

उत्तरकी चले तो धान्य उपजाते हैं और दक्षिणकी चले तो दुर्भिक्ष होता है ॥ १३८ ॥

वारुणो मध्यमं वर्षमुच्चैर्वातो भयंकरः ।

चतुर्विंशुमद्वद्वते राज्ञा युद्धं प्रजाक्षयः ॥ १३९ ॥

इति वर्षप्रबोधे उत्तरभागे प्रथमः स्थलः ।

पश्चिमकी वायु चले तो मध्यम वर्ष होता है । ऊँची हवा चले तो भय करती है । चोतर्फाकी हवा चले तो राजाओंमें युद्ध और प्रजाका क्षय होता है ॥ १३९ ॥

इति हनुमान शर्मा संग्रहीत-भाषाटीकासहित वर्षप्रबो-
धके उत्तरभागका प्रथमस्थल समाप्त ।

(१) अथ वृष्टिविचारमाह ।

अक्षजगतः प्राणाः प्रावृट्कालस्य चान्नमायत्तम् ।

यस्मादतः परीक्ष्यः प्रावृट्कालः प्रयत्नेन ॥ १ ॥

(१) “अथ वर्षाका विचार” लिखते हैं । अक्षही जगत्का प्राण है और वही अन्न वर्षाके वशीभूत है अर्थात् वर्षा होनेहीसे अन्न होसकताहै अत एव वर्षाकालकी यत्नसे परीक्षा करनी चाहिये ॥ १ ॥

दैवविदवदितचित्तोद्युनिशंयोगर्मलक्षणे भवति ।

तस्य मुनेरिव धाणीन भवति मिथ्याभ्युनिर्देशो ॥ २ ॥

जो दैवका जाननेवाला रात दिन गर्मके लक्षण जाननेमें मन लगाता है उसके वाक्य वर्षाके वतानेमें सुनियोंकी भाँति कभी झूठ नहीं होते ॥ २ ॥

गर्मलक्षणम् ।

मार्गशिरः सितपक्षे प्रतिपत्प्रभृति क्षपाकरे पाढाम् ।

पूर्ववासमुपगते गर्मवालक्षणे ज्ञेयम् ॥ ३ ॥

"गर्भलक्षण"—मार्गशीर्ष शुक्ल प्रतिपदासे जिस दिन चंद्रमा पूर्वाषाढ नक्षत्रमें आवे उस दिनसेही सब गर्भोंका लक्षण जान लेना चाहिये ३॥

यत्रक्षत्रसुपगतेगर्भश्चन्द्रेभवेत्सचन्द्रवशात् ।

पञ्चनवतिदिनशतेतत्रैवप्रसवमायाति ॥ ४ ॥

चंद्रमाके जिस नक्षत्रमें प्राप्त होनेसे भेषका गर्भ होता है उसी नक्षत्रसे १९५ एकसौ पचानवे दिनमें वह गर्भ प्रसवकालको प्राप्त होता है अर्थात् मेह वर्षता है ॥ ४ ॥

सितपक्षभवाःकृष्णशुक्लेकृष्णाद्युसंभवारात्रौ ।

नक्तंप्रभवाश्चाहनिसन्ध्याजाताश्चसन्ध्यायाम् ॥ ५ ॥

शुक्ल पक्षका पैदा हुआ गर्भ कृष्ण पक्षमें और कृष्ण पक्षका शुक्ल पक्षमें एवं दिनका गर्भ रातमें और रातका गर्भ दिनमें और प्रातःकालका सायंकालमें तथा सायंकाल का गर्भ प्रातःकालमें प्रसव होता है ॥ ५ ॥

शूरग्रहसंयुक्तेकर्काशनिमत्स्यवर्षदागर्भाः ।

शशिनिरवौषाशुभसंयुक्तेक्षितेभूरिवृष्टिकराः ॥ ६ ॥

यदि प्रसव कालके समय शूर ग्रह संयुक्त हो तो उस गर्भसे ओले अशनि और मच्छी आदिकी वर्षा होती है और यदि चंद्र सूर्य शुभग्रहोंसे संयुक्त हों अथवा शुभनिरीक्षित हों तो अच्छी वर्षा होती है ॥ ६ ॥

करकाधूमरिकापातोरजोवृष्टिःसधूमिका ।

त्रिभिरेतैर्महोत्पातैःसद्योगर्भोविनश्यति ॥ ७ ॥

करक वृष्टि-धूम पात और सधूम रजोवृष्टि यह तीनों शीघ्र गर्भ-नाशक हैं ॥ ७ ॥

गर्भःपुष्टःप्रसवेन्नहोपघातादिभिर्यदिनवृष्टिः ।

आत्मीयगर्भसमयेकरकानिश्रंददात्यंभः ॥ ८ ॥

जो पुष्ट गर्भ भी प्रसव कालमें ग्रहोंके उपघातादिसे न बर्षें तो आत्मीय गर्भके समय ओलोंसे मिला हुआ जल बर्षें ॥ ८ ॥

पञ्चनिमित्तैः शतयोजनंतदर्धार्धमेकहान्यातः ।

वर्षतिपञ्चसमन्ताद्रूपेणैवयोगर्मः ॥ ९ ॥

जो गर्भ पांच निमित्तोंसे पुष्ट होता है, वह सौ योजन तक फैलकर वर्षा करता है और यदि उसमें निमित्तोंकी न्यूनता हो तो पूर्ण वर्षामें भी अर्द्धार्द्ध न्यूनता होती है । अर्थात् एक निमित्त कम हो तो ५० योजन (२०० कोश) दो कम हों तो २५ योजन (१०० कोश) तीन कम हों तो १२॥ योजन (५० कोश) और ४ निमित्त कम हों तो १० कोश तक जल वर्षता है ॥ ९ ॥

द्रोणः पञ्चनिमित्तैर्गर्भे त्रीण्याढकानि पवनेन ।

पद्मविद्युतानवाभ्रैः स्तनितेन द्वादशप्रसवे ॥ १० ॥

“जलका तौल”—यदि गर्भमें पांच निमित्त (पवन १, जल २ बिजली ३ गर्जना ४ और बादल ५) हों तो प्रसव कालमें एक द्रोण (२०० पल) जल वर्षाता है । पवन निमित्तवाला गर्भ प्रसव तीन आढक (१५० पल) जल वर्षाता है । बिजली निमित्तक गर्भ छः आढक (३०० पल) जल वर्षाता है । मेघ निमित्तक नौ आढक (४५० पल) और गर्जन निमित्तक १२ आढक (६०० पल) जल वर्षाता है (एक पल, ३ तोले २ मासे ८॥ १ स्तीका होता है । आकाशी जलकी तौल आजही नहीं हुई है । पहलेहीसे होसी आरही है) ॥ १० ॥

मृगशीर्षाद्यानर्भामन्दफलाः पौषशुक्लजाताश्च ।

पौषस्य कृष्णपक्षे विनिर्दिशेच्छ्रावणस्य सितम् ॥ ११ ॥

मृगशीर्षादिके गर्भ और पौष शुक्लके पैदा हुए गर्भ, मंद फल युक्त होते हैं । पौषके कृष्ण पक्षसे श्रावणका शुक्ल पक्ष बतलाना चाहिये ॥ ११ ॥

माघसितोत्थागर्भाःश्रावणकृष्णेप्रसूतिमायाति ।

माघस्यकृष्णपक्षेविनिर्दिशेद्भाद्रपदशुक्लम् ॥ १२ ॥

माघके शुक्लपक्षका गर्भ श्रावणके कृष्णपक्षमें वर्पता है और माघके कृष्ण पक्षसे भाद्रपद शुक्लका ज्ञान होता है ॥ १२ ॥

फाल्गुनशुक्लसमुत्थाभाद्रपदस्यासितेविनिर्देश्याः ।

तस्यैवकृष्णपक्षोद्भवास्तुयेतेऽश्वयुजशुक्ले ॥ १३ ॥

फाल्गुन शुक्लमें उठे हुए गर्भ, भाद्रपद कृष्णमें वर्पते हैं और फाल्गुन कृष्णमें उत्पन्न हुए गर्भ आश्विन शुक्लमें प्रसव होते हैं ॥ १३ ॥

चैत्रसितपक्षजाताःकृष्णेश्वयुजश्ववारिदागर्भाः ।

चैत्रासितसंभूताःकार्तिकशुक्लेभिवर्षन्ति ॥ १४ ॥

चैत्र शुक्लके गर्भ आश्विन कृष्णमें और चैत्र कृष्णके कार्तिक शुक्लमें वर्पते हैं ॥ १४ ॥

मार्गशीर्षेकृष्णपक्षेमघायांगर्भसंभवे ।

यद्भाकृष्णचतुर्दश्यासविद्युन्मेघदर्शने ॥ १५ ॥

आषाढशुक्लपक्षेचचतुर्थ्यावर्षतिध्रुवम् ।

मार्गकृष्णचतुर्थ्यादित्रयेऽश्लेषात्रयीक्रमात् ॥ १६ ॥

गार्भितेष्वेष्टेषुक्रमेणमार्गेकृष्णफलंभवेत् ।

आषाढपूर्वफाल्गुन्यांत्रिरात्रं वृष्टिसंभवः ॥ १७ ॥

मार्गशीर्ष कृष्णमें मघामें या १४ में गर्भ हो और बिजली सदित बादल दीखे तो आषाढ शुक्ल चतुर्थीको निश्चय वर्षा होती है । मार्गशीर्ष कृष्ण चौथ, पाँच, छठको या श्लेषा, मघा, पूषाको गर्भ तो मार्ग कृष्णमें फल मिलता है । उससे आषाढमें पूर्वाफाल्गुनीसे तीन रात वर्षा होती है ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥

उत्तराहस्तचित्राचसप्तम्यादित्रयेयदा ।

मार्गशीर्षे गार्भेताचेदध्रैर्वातैश्चविद्युतः ॥ १८ ॥

आषाढेश्वेतपक्षेतुअष्टम्यांस्वातिभेतदा ।

त्रिरात्रमेघवृष्ट्यास्याज्जलैरेकार्णवामही ॥ १९ ॥

मार्गशीर्षमें ७।८।९ को उ. ह. चि. होकर बादल बिजली और वायुसे गर्भे तो आषाढ शुक्ल अष्टमीसे अथवा स्वातिसे तीन रात तक इतना जल वर्षे कि पृथ्वीपर एकार्णव होजाय ॥ १८ ॥ १९ ॥

दशम्यादित्रयेमार्गेकृष्णेचामावसीतिथौ ।

चित्रास्वातिविशाखासुसंजातेगर्भलक्षणे ॥ २० ॥

आषाढेशुक्लपक्षान्तस्तिथौतस्याघनोदयः ।

तस्मिन्नेवचनक्षत्रेजायतेनात्रसंशयः ॥ २१ ॥

मार्ग कृष्ण १०।११।१२ अथवा ३० तिथि और चित्रा स्वाति विशाखामें गर्भे तो आषाढ शुक्लकी उन्हीं तिथियोंमें और उन्हीं नक्षत्रोंमें मेघ होताहै इसमें सन्देह नहीं ॥ २० ॥ २१ ॥

चैत्रेकृष्णद्वितीयायांनिरभ्रंचैत्रभोभवेत् ।

तदाभाद्रपदेमासेज्ञेयोमेघमहोदयः ॥ २२ ॥

(२) "गर्भे तथा वर्षाकारक अन्ययोग"—चैत्र कृष्ण दोयज को आकाशमें बादल न हों तो भाद्रपदेमें मेघमहोदय जानना ॥ २२ ॥

चैत्रकृष्णद्वितीयायांमेघोवैप्रबल्लोयदा ।

जलंपततिचैत्रेचतदावृष्टिस्तुकार्तिके ॥ २३ ॥

चैत्र कृष्ण द्वितीयाको प्रबल बादल हों तो कार्तिकमें अच्छी वर्षा होती है ॥ २३ ॥

चतुर्थ्याकृष्णपक्षस्यवर्षादुभिशकारिणी ।

पंचम्यामसितेचैत्रेनृणांतद्दुर्दिनःशुभः ॥ २४ ॥

कृष्णपक्षकी ४ को वर्षा हो तो दुर्मिष्ट हो और पंचमीको दुर्दिन हो तो शुभ है ॥ २४ ॥

चैत्रस्यकृष्णपंचम्यांहस्तनक्षत्रसंगमे ।

नविद्युद्गर्जिताभ्राणितदास्याद्भस्तरःशुभः ॥ २५ ॥

चैत्र कृष्ण पंचमीको हस्त हो और बादल बिजली गर्जन न हो तो वर्ष शुभ होता है ॥ २५ ॥

त्रयोदशीचनवमीपंचमीकृष्णचैत्रगाः ।

एतान्तुविद्युतोगर्भसंभवोवृष्टिहानिकृत् ॥ २६ ॥

चैत्र कृष्णकी तैरस, नौमी, पंचमीको बिजली का गर्भ-वृष्टिकी हानि कर्ता है ॥ २६ ॥

चैत्रस्यकृष्णसप्तम्यामभ्रच्छन्नंयदानमः ।

रक्तवस्तुसमर्घत्वंभवत्येवनसंशयः ॥ २७ ॥

चैत्रकृष्ण सप्तमीको आकाश बादलोंसे विरा हुआ हो तो लाल वस्तुमें बहुत हों ॥ २७ ॥

प्रतिपच्चैत्रशुक्लायांद्वितीया वा तृतीयका ।

चतुर्थीवृष्टियुक्ताचेच्चातुर्मास्यंतदाघनः ॥ २८ ॥

चैत्र शुक्ल प्रतिपदासे चार दिन तक वर्षा हो तो चौरमासा अच्छा हो २८

चैत्राद्यप्रतिपन्मेघःगर्जितंवर्षणंतथा ।

श्रावणे माद्रमासेचतदावृष्टिर्नजायते ॥ २९ ॥

चैत्र कृष्ण प्रतिपदाको मेघ गर्जे तथा वर्षे तो श्रावण भादोंमें वर्षा नहीं हो ॥ २९ ॥

पंचमीसप्तमीशुक्लाचैत्रीयाचत्रयोदशी ।

एतासुवादलंश्रेष्ठतत्रवर्षादुदुःखकृत् ॥ ३० ॥

चैत्र शुक्ल ५, ७, १३ में बादल अच्छे और वर्षा नष्ट है ॥ ३० ॥

चैत्रेमासेकृष्णपक्षेचतुर्दशीतथाष्टमी ।

तत्राभ्रमुत्तरोवायुःशुभायवत्सरंभवेत् ॥ ३१ ॥

चैत्र कृष्ण १४ या ८ को बादल तथा उत्तरकी वायु हो तो वर्षा अच्छा होता है ॥ ३१ ॥

चैत्रस्यशुक्लपक्षेतुत्रयोदश्यांरजोनिलः ।

अथवाधूमरीपातोमेघस्तत्रनवर्षति ॥ ३२ ॥

चैत्र शुक्ल १३ को धूलियुक्त पवन हो अथवा धूमरी पात हो तो मेघ नहीं वर्षें ॥ ३२ ॥

चैत्रेदशम्यांशनिनामघायोगेयदाम्बुदः ।

वर्षेत्तदासर्ववर्षेधान्यस्यार्थोनजायते ॥ ३३ ॥

चैत्र शुक्ल दशमीको शनिवार मघा नक्षत्र हो और वर्षा हो तो उस वर्षभरमें धान्यकी उत्पत्ति अच्छी नहीं हो ॥ ३३ ॥

वैशाखकृष्णप्रतिपद्युद्धच्छेत्रभभास्करः ।

मेघैराच्छाद्यतेव्योमिसंवत्सरहितायसः ॥ ३४ ॥

यादि वैशाख कृष्ण १ को मेघाच्छादित सूर्य जगे तो संपत्तार का हित हो ॥ ३४ ॥

शुक्लेकृष्णेचवैशाखेचतुर्दश्यष्टमीदिने ।

गर्जविद्युत्पयोवर्षावर्षानंदविधायकाः ॥ ३५ ॥

वैशाख शुक्ल या कृष्णकी चौदह आठकी गज-विजली हो और वर्षे तो आनंद हो ॥ ३५ ॥

वैशाखकृष्णेकादश्यांमेघोवैप्रबलोभवेत् ।

तदाधान्यानिविक्रेयःकर्तव्यःकृपिकर्मणि ॥ ३६ ॥

वैशाख कृष्ण ११ को प्रबल मेघ हो हो खेती बीजोंके लिये धान्य बेचना चाहिये ॥ ३६ ॥

वैशाखशुक्लप्रतिपद्वितीयादिनद्वयेबादलंकशुभाय ।
तदातृतीयादिवसेपिचाभ्रंवृष्टिर्विशिष्टापरमंगरोगः३७

वैशाख शुक्ल १ । २ । ३ में बादल हों तो वर्षा विशेष हो परंतु
अंग रोग हो ॥ ३७ ॥

वैशाखशुक्लदशमीदिनेचवादलंशुभम् ।

राधेश्विनीदिनेपष्ठ्यांरक्तवस्तुमहर्घता ॥ ३८ ॥

वैशाख शुक्ल १० को बादल शुभ होते हैं, वैशाखकी छठको अश्विनी हो तो लाल वस्तु महँगी हों ॥ ३८ ॥

(वैशाखसितपंचम्यांमेघवादलसंभवः ।

संग्रहस्सर्वधान्यानांलाभोभाद्रपदेभवेत् ॥ ३८ ॥

वैशाख शुक्ल ५ को मेघ बादल हों तो भादेवमें वर्षा नहीं हो ॥ ३८ ॥

राधेशुक्लप्रतिपदिसप्तम्यादिदिनत्रये ।

बादलानांसमुदयेशीघ्रंवृष्टिविनिर्दिशेत् ॥ ३९ ॥

वैशाख शुक्ल १।७।८।९ को बादल होनेसे शीघ्र वर्षा हो ॥ ३९ ॥

एकादशीत्रयेशुक्लेदुर्भिक्षंवृष्टिवादलात् ।

राधेचपूर्णिमावृष्टिर्भाद्रधान्यमहर्घकृत् ॥ ४० ॥

एकादशी आदि ३ दिनोंमें बादल वा वृष्टिसे दुर्भिक्ष होता है और पूर्णिमाको वर्षा होनेसे भादेवमें खैच होती है ॥ ४० ॥

पंचम्यामथसप्तम्यांनवम्येकादशीदिने ।

त्रयोदश्यांचवैशाखेवृष्टौलोकेसुखंभवेत् ॥ ४१ ॥

वैशाखकी ५।७।९।११।१३को वर्षा हो तो लोकमें सुख हो ॥ ४१ ॥

अष्टम्यांचचतुर्दश्याज्येष्ठेशुक्लेतथासिते ।

कृत्तणेदशम्यांवृष्टिःस्याद्भाद्रमासेतिवृष्टये ॥ ४२ ॥

ज्येष्ठ शुद्ध १४ । ८ तथा कृष्ण १०को वर्षा हो तो भादवेमें अति वृष्टि हो ॥ ४२ ॥

ज्येष्ठस्यदशमीरात्रौयदिचन्द्रोनदृश्यते ।

वर्षणंजायतेश्रेष्ठंस्वस्थासर्वामहीभवेत् ॥ ४३ ॥

जेठकी शुद्ध दशमीकी रातमें यदि चन्द्रमा न दीखे तो वर्षा अच्छी हो ॥ ४३ ॥

ज्येष्ठस्यकृष्णौकादश्यांद्वादश्यांवाब्दगर्जितम् ।

विद्युत्पयोदवृष्टिश्चेद्भस्तरःस्यात्तदाशुभम् ॥ ४४ ॥

ज्येष्ठकृष्ण ११।१२को मेव गर्जे बिजली चमके और जल गिरे तो वर्ष शुभ होता है ॥ ४४ ॥

ज्येष्ठाषाढसमुद्भूतेरोहिणीदिवसेनभः ।

साभ्रंवृष्टिविनाशायसमेयंवृष्टिवर्द्धनम् ॥ ४५ ॥

ज्येष्ठ आषाढमें रोहिणीके दिन चादल हों तो वर्षाका नाश हो और वर्षा हों तो वृद्धि हो ॥ ४५ ॥

ज्येष्ठेमूलदिनेवृष्टिर्ज्येष्ठान्तेदिवसद्वये ।

दुर्भिक्षं कुरुते श्रेष्ठा विद्युत्पांसु युतानिलाः ॥ ४६ ॥

ज्येष्ठके अंतके दो दिनोंमें ज्येष्ठा और मूलमें वर्षा हो तो दुर्भिक्ष हो और आधी तथा बिजली हो तो श्रेष्ठ हो ॥ ४६ ॥

ज्येष्ठमासे तथा षाढेयत्रतत्राब्दवर्षणम् ।

श्रावणेभाद्रमासेवातदिनेवृष्टिर्निर्णयः ॥ ४७ ॥

ज्येष्ठ तथा आषाढमें जहा कहीं वर्षा हो तो श्रावण भादवेमें भी उस दिन वर्षा हो ॥ ४७ ॥

ज्येष्ठेशुद्ध द्वितीयायां गर्भपाताय गर्जितम् ।

शुक्ले तृतीयायां योगे वृष्टिर्दुर्भिक्षदर्शनी ॥ ४८ ॥

ज्येष्ठ सुदी २ को गर्जे तो गर्भ पात हो तीजको आर्द्रा हो तो दुर्भिक्ष हो ॥ ४८ ॥

यदिज्येष्ठस्यपंचम्यांवृषार्कंवृष्टिरुद्भवेत् ।

पूर्वाषाढादिनेवास्यान्मूलदृष्टंनदोषकृत् ॥ ४९ ॥

यदि ज्येष्ठकी ५ को वृष संक्रांतिमें वृष्टि हो या पूर्वाषाढ तथा मूलके दिन वर्षा हो तो ठीक है ॥ ४९ ॥

ज्येष्ठस्यपूर्णिमायांतुमूलंप्रस्रवतेयदा ।

दिनषष्टिव्यतिक्रम्यज्ञेयोमेघमहोदयः ॥ ५० ॥

ज्येष्ठ सुदी पूर्णिमाको मेघ वर्षे तो ६० दिन पीछे अच्छी वर्षा हो ॥ ५० ॥

यदाश्रुतिधनिष्ठाहेनभवेज्जलवर्षणम् ।

ज्येष्ठानुज्ज्वलपक्षेतुनक्षत्रश्रवणादिके ॥ ५१ ॥

जो श्रवण धनिष्ठामें न वर्षे और ज्येष्ठ कृष्णमें श्रवणादिमें न वर्षे तो ॥ ५१ ॥

अवर्षणेनवर्षास्याद्वृष्टौतुविपुलंजलम् ।

चित्रास्वातिविशाखासुषादलंचतदाशुभम् ॥ ५२ ॥

अवर्षणसे वर्षा हो और वर्षनेसे बहुत जल हो उस समय चित्रा स्वा. वि. में वादल शुभ होते हैं ॥ ५२ ॥

कृष्णाषाढचतुर्थ्याचमेघैराच्छादितोरविः ।

मासत्रयव्यतीतेचतदामेघमहोदयः ॥ ५३ ॥

आषाढ कृष्ण चौथको सूर्य बादलोंसे ढका हुआ हो तो तीन मास पीछे वर्षा हो ॥ ५३ ॥

आषाढकृष्णतुर्यायामस्तेभास्करमण्डले ।

नवर्पतियदामेघस्तदाकष्टतरंजलम् ॥ ५४ ॥

आषाढ कृष्ण चौथको सूर्यास्तके समय मेघ न वर्षे तो जलका कष्ट हो ॥ ५४ ॥

आषाढकृष्णपक्षस्याष्टम्यांचन्द्रोदयक्षणे ।

मेघैराच्छादितं व्योम नीरपूरणात्तदामही ॥ ५५ ॥

आषाढ कृष्णाष्टमीको चन्द्रोदयके समय आकाशमें बहुत बादल हो तो वर्षा बहुत हो ॥ ५५ ॥

आषाढेनवमीकृष्णाविद्युदम्भोदशेखरे ।

विक्रयः सर्वधान्यानां कर्षणे वै हिताय च ॥ ५६ ॥

आषाढ कृष्ण नौमीको बादल बिजली हों तो खेतीके निमित्त सब धान्य बेच देने चाहिये ॥ ५६ ॥

आषाढकृष्णपक्षे च धनिष्ठाश्रवणं तथा ।

गर्जविद्युद्विहीनं स्वादेशभंगस्तदादिशेत् ॥ ५७ ॥

आषाढ नवमीमें श्रवण, धनिष्ठामें बिना बिजलीके गर्ज तो देश भंग हो ॥ ५७ ॥

आषाढमासे रोहिण्यां विद्युद्वर्षां शुभाय सा ।

स्वातियोगेऽपि चाषाढे तथैव फलमिष्यते ॥ ५८ ॥

आषाढकी रोहिणीमें बिजली वर्षा शुभ है । स्वातिमें भी वही फल है ॥ ५८ ॥

आषाढशुक्लप्रतिपत्रये वर्षा यदा भवेत् ।

एकोद्वादश च द्रोणः षोडशापि क्रमाजलम् ॥ ५९ ॥

आषाढ सुदी एक-दोयज, तीजको वर्षा हो तो उससे क्रमसे एक, बारह, सोलह द्रोण जल वर्षे ॥ ५९ ॥

आषाढशुक्लपंचम्यादिकेतिथिचतुष्टये ।

यावन्त्यभ्राणि वर्षासुतावन्मेघमहोदयः ॥ ६० ॥

आषाढ सुदी ५ से चार दिनोंमें जितने बादल वर्षा हों उतनाही अधिक मेघ जानना ॥ ६० ॥

शुक्लापादनवस्यांचदशस्यांवर्षणं शुभम् ।

दुर्भिक्षं जायते नूनं वा ते वृष्टिं विना कृते ॥ ६१ ॥

आपाद शुक्ल ९ । १० को वर्षा हो तो शुभ हो और विना वर्षा
पवन चले तो दुर्भिक्ष करे ॥ ६१ ॥

आपादस्याप्यमावस्यां नवस्यां शुक्लकृष्णयोः ।

रदृच्छेच्च सहसां शुर्निर्मलो यदि दृश्यते ॥ ६२ ॥

आपादी अमावस तथा शुक्ल कृष्णकी नौमीको उगता हुआ सूर्य
निर्मल हो ॥ ६२ ॥

मध्याह्ने वृष्टिरूपं स्यात्सूर्यस्यास्तंगमे तथा ।

अग्रे तो यं न पश्यामि वर्जयित्वा महानदीः ॥ ६३ ॥

और मध्याह्नमें तथा सूर्यास्त समयमें वृष्टिका रूपक हो तो आगे
जल नहीं गिरे बड़ी नदियां भी सूख जाय ॥ ६३ ॥

चतुर्थ्यां तु सितापादे विद्युद्वर्षाश्च गर्जितम् ।

तदा जलं समुद्रे स्यात्पुस्तके वा प्रदृश्यते ॥ ६४ ॥

आपाद शुक्ल चौथको विजली वर्षा गर्जन हो तो जल समुद्रमें
दीखे या पुस्तकमें ॥ ६४ ॥

आपादयां प्रथमे या मेवादलेन सुभिक्षता ।

मासमेकं जलं धान्यं रतोकं लोकमहाभयम् ॥ ६५ ॥

आपादीको पहली पहरमें वादल हो तो सुभिक्ष नहीं हो, केवल
एक मास मात्र जल धान्य हो राजभय भी हो ॥ ६५ ॥

श्रावणस्यादिमे पक्षे अश्विन्यां मेघवृष्टितः ।

सर्वान्दोषान्निहत्येव सुभिक्षं भुवि जायते ॥ ६६ ॥

श्रावण कृष्णमें अश्विनीमें वर्षा हो तो सब दोषोंको दूर करके
सुभिक्ष करती है ॥ ६६ ॥

श्रावणेविपुलाविद्युद्भजितंचपुनर्घने ।

वृष्टिस्तदामनोभीष्टाकुरुतेवत्सरंशुभम् ॥ ६७ ॥

श्रावणमें बहुत विजलियाँ हों और मेघ गर्जना हो तो उस वर्षमें मनोभीष्ट वर्षा होती है ॥ ६७ ॥

श्रावणेकृष्णपक्षेचेच्चतुर्थ्यामरुणोदये ।

वादलंवृष्टिरनिशंसर्वत्रसुखवृष्टिकृत् ॥ ६८ ॥

श्रावण कृष्ण चौथको मातृकाल सूर्योदयके समयसे बादल वर्षा दिनभर रहे तो सर्वत्र सुवृष्टि हो ॥ ६८ ॥

श्रावणेकृष्णपंचम्यानिर्मलगगनंशुभम् ।

तदाष्टादशयामान्तेघनस्तोयंव्यपोहति ॥ ६९ ॥

श्रावणकृष्ण पञ्चमीको आकाश निर्मल हो तो अठारह पहरके बाद जल वर्षे ॥ ६९ ॥

अमावास्यांश्रावणस्ययद्विष्टिर्वनाघनः ।

चराचरंतदाविश्वंसुखभाक्चचलाचलम् ॥ ७० ॥

श्रावणकी अमावस्यको यदि वर्षा तथा घने बादल हों तो चलाचलके चराचरको सुख हो ॥ ७० ॥

चित्रास्वातिविशाखासुश्रावणेनजलंयदा ।

तदाकुल्यादिकंकृत्वानदीतीरेगृहंकुरु ॥ ७१ ॥

श्रावणके चित्रा स्वाति विशाखामें यदि जल न वर्षे तो कुल्ले करने मात्रके लिये भी नदी किनारे घर बांधना चाहिये ॥ ७१ ॥

नभःप्रथमपंचम्यांयद्विष्टःपयोधरः ।

तदाभूश्चतुरोमासान्भवेद्भारिसमाकृता ॥ ७२ ॥

श्रावणकी कृष्ण पञ्चमीको यदि वर्षा हो तो चारों महीनोंमें जल वर्षे ॥ ७२ ॥

श्रावणेशुकृसप्तम्यामस्तंयातेदिवाकरे ।

नवर्षतियदामेघोजलाशामुंचसर्वथा ॥ ७३ ॥

श्रावण शुक्ल सप्तमीको सूर्यास्तके समय मेहन वर्षे तो फिर

सर्वथा जलकी आशा छोड़देना ॥ ७३ ॥

अष्टम्यांश्रावणेशुक्रेप्रातर्वादलडम्बरम् ।

रविराच्छादितस्तेनपृथिव्येकार्णवाभवेत् ॥ ७४ ॥

श्रावण शुक्ल अष्टमीको प्रातःकाल बादलोंका आढंवर हो तो

संपूर्ण पृथ्वी जलमयी हो ॥ ७४ ॥

मेघैराच्छादितश्चन्द्रःपूर्णायांसमुदीरते ।

तदास्वस्थंजगत्सर्वराज्यसौख्यंघनोमहान् ॥ ७५ ॥

श्रावणी पूर्णिमाको चंद्रमा मेघोंसे ढँका हुआ हो तो सब जगत्

स्वस्थ रहे और राज्यमें घना सुख हो ॥ ७५ ॥

श्रावणकृष्णपक्षेवापूर्वाभाद्रपदासुच ।

चतुर्थ्यामेघवृष्टिश्चतदामेघमहोदयः ॥ ७६ ॥

श्रावण कृष्णमें पूर्वाभाद्रपदमें चौथमें मेघ वर्षे तो जल अच्छा

वर्षे ॥ ७६ ॥

शुक्लाचतुर्दशीपूर्णाचतुर्थीपंचमीतथा ।

सप्तमीचेच्छ्रावणस्यवृष्टियुक्ताशुभंतदा ॥ ७७ ॥

श्रावण शुक्ल १४।१५।१५।१६ को वर्षा हो तो शुभ है ॥ ७७ ॥

श्रावणेशुकृसप्तम्यांस्वातियोगेजलंयदा ।

प्रजानंदःसुखंराज्येवहुभोगान्वितामही ॥ ७८ ॥

श्रावण शुक्ल ७ को स्वाति योगमें जल वर्षे तो प्रजामें आनंद

सौख्य हो और पृथ्वी बहुत भोगोंसे युक्त हो ॥ ७८ ॥

एकादश्यां नभः कृष्णे यदि वर्षा मना गपि ।

तदा वर्षं शुभं भावि जायते नात्र संशयः ॥ ७९ ॥

आषण कृष्ण ११ को वर्षा हो तो आगामी वर्ष शुभ होता है ७९

नभश्चतुर्दशी राकाचतुर्थी पंचमी तथा ।

सप्तमी वृष्टियुक्ता चेद्वर्षं शुभं न चान्यथा ॥ ८० ॥

आषणकी १४।१५।१६।१७ वृष्टि युक्त हों तो निःसन्देह वर्षा अच्छा हो इसमें श्रंठ नहीं ॥ ८० ॥

भाद्रमासे द्वितीयायां यदि चन्द्रो न दृश्यते ।

तदा संपूर्ण वर्षा स्यादत्र निष्पत्तिरुत्तमा ॥ ८१ ॥

भाद्रपदकी शुक्ल दोयजको यदि चन्द्रमा न दीखे तो सम्पूर्ण वर्षा होकर अच्छी खेतिवां हों ॥ ८१ ॥

भाद्रे च शुक्ल पंचम्यां जलं दत्तेन चेद्वनः ।

दैवकोपात्तदाज्ञेयो स जनोऽपि च दुर्जनः ॥ ८२ ॥

भाद्रपद शुक्ल पंचमीको बादल वर्षा न करें तो ईश्वरका कोप समझना । ऐसा अकाल पड़े कि सजनभी दुर्जन हो जाय ॥ ८२ ॥

सप्तम्यां भाद्रमासस्य नवर्षा न च गर्जितम् ।

विद्युद्विद्यो न नैव दैवकालस्य नाशकः ॥ ८३ ॥

भाद्रपदकी सप्तमीको न वर्षा हो न गर्जे और न बिजली चमके सो देवकाल घातक होता है ॥ ८३ ॥

नवम्यां भाद्रमासस्य वृष्टिर्दुष्कालमादिशेत्

एकादश्यां तु तस्यैव धनो धान्यसमर्घदः ॥ ८४ ॥

भाद्रपदकी नौमीकी वृष्टि दुष्काल करती है । और एकादशीकी अन्न समर्प करती है ॥ ८४ ॥

सिंहार्कदिवसेवृष्टिर्नशुभायनृणांस्मृता ।

दैवाज्जातेघनेपश्चाद्वृष्टिर्दिनद्वयान्तरे ॥ ८५ ॥

सिंह संक्रांतिके दिन वर्षा शुभ नहीं होती है । यदि उससे दो दिन पीछे हो तो ॥ ८५ ॥

तदातद्दूषणं नास्ति मासमेकं प्रवर्षति ।

भाद्रेचतुर्दशीवृष्टिर्जने रोगाय जायते ॥ ८६ ॥

उसका दूषण दूर होकर एक मास वर्षता है । और भादवेकी चौदशकी वर्षासे रोग होता है ॥ ८६ ॥

आश्विनस्य चतुर्थ्या चेद्वादं लान्यरुणोदये ।

तदाक्षेमाय लोकानां वृष्टिः संजायते शुभा ॥ ८७ ॥

आश्विनकी चौथकी सूर्योदयमें बादल हों तो लोकमें क्षेम तथा शुभ वर्षा हो ॥ ८७ ॥

आश्विनस्य सिते पक्षे दशम्यां यदि वादलम् ।

विद्युद्वर्षाथ वामापतिलानां वैमहर्षता ॥ ८८ ॥

आश्विन शुक्ल दशमीको यदि बादल हों या विजली वर्षा हो तो उड़द और तिल महंगे हों ॥ ८८ ॥

सप्तम्याश्च युजिमासे सितेऽष्टमी जलान्विता ।

सुभिक्षं तत्र चादेश्यं राजानः शान्तविग्रहाः ॥ ८९ ॥

आश्विन शुक्ल ७।८ जल युक्त हों तो सुभिक्ष होता है और राजा लोग विग्रहसे शान्त होते हैं ॥ ८९ ॥

एकादश्यां कार्तिकस्य यदि मेघः समीक्ष्यते ।

आपादेत्र तदा वृष्टिर्जायते नात्र संशयः ॥ ९० ॥

कार्तिककी एकादशीको यदि बादल दीखें तो आपाटमें निश्चय वर्षा होती है ॥ ९० ॥

द्वितीयायांतृतीयायांकार्तिकेवृष्टिलक्षणम् ।

भाविवर्षेऽहुजलंनचेत्तस्मिन्नवर्षणम् ॥ ९१ ॥

कार्तिककी २।३ को वर्षाका लक्षण हो तो अगले वर्षमें बहुत जल वर्षे अवर्षण नहीं हो ॥ ९१ ॥

द्वादश्यांकार्तिकेरात्रौमार्गस्यदशमीदिने ।

पंचम्यांपौषमासस्यसप्तम्यांमाघमासके ॥ ९२ ॥

धाराधरोयदावृष्टिकुरुतेवासुगर्जितम् ।

तदाचश्रावणेमासेसलिलंनैवदृश्यते ॥ ९३ ॥

कार्तिककी चारसकी रात मगशिरकी दशमीका दिन पौषकी पाँचें और माघकी सातेंको बादलोंसे वर्षा हो और मेघ गर्जें तो श्रावणमें जल बिलकुल नहीं वर्षे ॥ ९२ ॥ ९३ ॥

कार्तिकेचद्वितीयायांतृतीयानवमीदिने ।

एकादश्यात्रयोदश्यामभ्राद्वृष्टिर्घनोमहान् ॥ ९४ ॥

कार्तिककी २।३।९।११।१३ को बादल होकर वर्षा हो तो वर्षा बहुत हो ॥ ९४ ॥

कार्तिकेयदिसंक्रान्तेःपर्यन्तेदिवसद्वये ।

महावृष्टिस्तदावर्षेशुभाभाविनिवत्सरे ॥ ९५ ॥

कार्तिककी संक्रांति पर्यन्तके दो दिनोंमें महावर्षा हो वो भार्वा वर्ष शुभ हो ॥ ९५ ॥

मार्गशीर्षप्रतिपदिनविद्युन्नेवगर्जितम् ।

नवृष्टिश्चेत्तदागर्भेकुशलंकुशलोदितम् ॥ ९६ ॥

मार्गशीर्षकी प्रतिपदाकी न बिजली हो न गर्जना हो न वर्षा हो तो गर्भमें कुशल जानना ॥ ९६ ॥

चतुर्थ्यामथपंचम्यांमार्गशीर्षस्यवादलम् ।

तदाभाविनिवर्षेस्याद्वर्षापूर्णामहीतले ॥ ९७ ॥

मगशिरकी ४ या ५ को बादल हों तो भावी वर्षमें पृथ्वी जलसे

पूर्ण हो ॥ ९७ ॥

मार्गशीर्षस्यसप्तम्यांनिर्मलंचेदिवानिशम् ।

धान्यमहर्घ्यवैशाखेसाभ्रतायांमहर्घता ॥ ९८ ॥

मगशिरकी सातेंको दिन रात आकाश निर्मल रहे तो वैशाखमें

धान्य महंगा हो ॥ ९८ ॥

मार्गस्यशुक्लद्वादश्याममायामथवर्षणम् ।

तदावर्षशुभभाविभावनीयंसुभावनैः ॥ ९९ ॥

मार्ग शुक्ल दशमी अथवा अमावसको वर्षें तो भावी वर्षकी भावना

शुभ हो ॥ ९९ ॥

पौषेकृष्णदशम्यांचेद्रात्रौवर्षतिवारिदः ।

तदाभाद्रपदेमासिवृष्टिर्भवतिभूयसी ॥ १०० ॥

पौष कृष्ण दशमीकी रातमें जल वर्षा हो तो भाद्रपदेमें बहुत वर्षा

हो ॥ १०० ॥

पौषेविद्युच्चमत्कारोगर्जिताभ्रादिसंभवः ।

जानीयान्निश्चितंतेनजगत्यांमेघदोहदः ॥ १०१ ॥

पौषमें बिजली चमके मेघ गर्जे बादल हों तो जगत्में निश्चय

मेघका दोहद (गर्भरहा) जानना ॥ १०१ ॥

वृष्टेमेवेपौषषष्ठ्याभाद्रेकृष्णेघनोदये ।

पौषशुक्लेमेघवृष्टौश्रावणेस्याच्चवर्षणम् ॥ १०२ ॥

पौषकी छठको मेघ वर्षें तो भाद्रपदमें मेघ हो । पौष शुक्लमें

मेघ वर्षें तो श्रावणमें वर्षा हो ॥ १०२ ॥

सप्तम्यादित्रयेपौषेशुक्लेविद्युच्चगर्जितम् ।

तदामेघस्यगर्भःस्यादचलेसुखसंपदे ॥ १०३ ॥

पौष शुक्ल ७।८।९ को, विजली तथा गर्जना हो तो मेघके अ-
ल गर्भ रहा जानना ॥ १०३ ॥

एकादश्यांतथापष्ठ्यांपूर्णायांदर्शकेथवा ।

नवृष्टिःस्यात्तदापादेघनप्रोक्तोघनाघनः ॥ १०४ ॥

पौषकी ११।६ या पूर्णिमा अमाको वर्षा न हो तो आषाढमें
घनसे घंणी वर्षा हो ॥ १०४ ॥

पौषमासेश्वेतपक्षेत्रदशतभिपग्यदा ।

वाताभ्रविद्युत्पंचम्यांगर्भश्चैवप्रजायते ॥ १०५ ॥

पौष शुक्ल पंचमी शतभिषामें यदि वायु बादल विजली हो तो
गर्भ होता है ॥ १०५ ॥

सचापादेकृष्णपक्षेचतुर्थ्याविर्पतिध्रुवम् ।

द्रोणसंज्ञस्तत्रमेघःसप्तगत्रंप्रवर्पति ॥ १०६ ॥

उससे आपाद कृष्ण चौथको निश्चय वर्षा होती है । और वह
द्रोण मेघ सात रात वर्षता है ॥ १०६ ॥

सप्तम्यादित्रयेपौषेशुक्लपौष्णदिनत्रयम् ।

विद्युत्तुषारवाताभूर्हिमैर्गर्भसमुद्भवः ॥ १०७ ॥

पौष शुक्ल ७।८।९ को रेवती आश्विनी भरणीमें विजली वर्षा वायु
हो तो ठंडमेंभी गर्भ रहे ॥ १०७ ॥

एकादशीपौषशुक्लेसहिमाविद्युतायुता ।

सजलारोहिणीयोगाच्छुभादेश्याविचक्षणैः ॥ १०८ ॥

पौष शुक्ल एकादशी हिम सहित विजली युक्त हो और रोहिणी
सजल हो तो शुभ योग होता है ॥ १०८ ॥

पौर्णमासीद्वितीयाचविद्युतावाहिमान्विता ।

वर्षानिष्पत्तिरादेश्यामेवैश्छन्नैस्तथाम्बरे ॥ १०९ ॥

पौषी पूर्णिमा वा द्वितीयाको हिम युक्त बिजली हो और बादल
लोंसे आकाश ढका हो तो वर्षा उत्पन्न होती है ॥ १०९ ॥

आषाढस्यत्वमावास्यांप्रबलंजलमादिशेत् ।

निष्पत्तिःसर्वधान्यानांप्रजानान्निरुपद्रवः ॥ ११० ॥

आषाढकी अमावस्यको प्रबल जल गिरता है और सब धान्योंकी
उत्पत्ति एवं निरुपद्रव होता है ॥ ११० ॥

पौर्णमास्यांयदापौषेचन्द्रमानैवदृश्यते ।

उत्तरस्यांदक्षिणस्यांयदाविद्युत्प्रदर्शनम् ॥ १११ ॥

पौषकी पूर्णिमाको यदि चन्द्रमा न दीखे और उत्तर दक्षिणमें
बिजली दीखे ॥ १११ ॥

अभ्रच्छन्नंनभोवापिमहावृष्टिर्नदादिशेत् ।

अमावास्यांश्रावणस्यनूनंभाविनिवत्सरे ॥ ११२ ॥

और आकाश मेघाच्छन्नभी हो तो श्रावणी अमावस्यको मेघों
वर्षा हो ॥ ११२ ॥

पौषस्यकृष्णसप्तम्यांस्वातियोगेजलंयदा ।

सुभिक्षक्षेममारोग्यंजायतेनात्रसंशयः ॥ ११३ ॥

पौष कृष्ण सप्तमी स्वाति योगमें जल वर्षे तो सुभिक्ष क्षेम
आरोग्य होता है ॥ ११३ ॥

अभ्रच्छन्नेजलंस्वरूपंजलपातेमहाजलम् ।

त्रयोदशीत्रयेकृष्णेपौषेविद्युच्चगर्भदा ॥ ११४ ॥

उस दिन यदि केवल बादल हो तो कम वर्षा और जल वर्षे तो
महा वर्षा हो । और पौष कृष्ण त्रयोदशीसे तीन दिन तक बिजली
हो तो गर्भ देती है ॥ ११४ ॥

ऐन्द्रीविद्युदमावस्यादर्शनंवाहिमस्यचेत् ।

अध्रच्छन्ननभोवापिसुभिक्षंजायतेतदा ॥ ११५ ॥

अमावसको यदि बिजली पूर्वमें चमके, कड़ी ठंड पड़े और बादल हों तो सुभिक्ष होता है । ११५ ॥

सप्तम्यादित्रयेमाघेशुकलेवादलयोगतः ।

धनधान्यसमृद्धिःस्याद्विवाहाद्युत्सवोजने ॥ ११६ ॥

माघमें शुक्ल ७।८।९को बादल हों तो धन धान्य समृद्धि हो और विवाहादि उत्सव हों ॥ ११६ ॥

माघनवम्यांशुकलेपरिवेषःशशिनिदृश्यतेऽवश्यम् ।

आपादेवर्षतितदामेघमहोदयोभवति । ११७ ॥

माघशुक्ल नौमीको चंद्रमाका परिवेष (मंडल) हो तो आपाठमें अवश्य वर्षा हो ॥ ११७ ॥

माघेदशम्यांहिशुभायवर्षातद्ब्रह्मवम्यांयदिचेदवर्षा ।

हर्षायतर्पातिशयोनकश्चिद्वर्षागमेमेघमहोदयेन ११८

माघ शुक्ल दशमीको वर्षा हो तो हर्ष और नौमीको अवर्षा हो तो तर्प होता है । दोनों दिनोंकी वर्षासे मेघ वर्षता है ॥ ११८ ॥

माघमासेचतुर्दश्यांप्रहरेयत्रवादलम् ।

वर्षाकालेतत्रमासेनवर्षतिपयोधरः ॥ ११९ ॥

माघ शुक्ल चौदशकी जिस पहरमें बादल हों, चौमासेके आपाठादि उसी मासमें सुखा पड़े ॥ ११९ ॥

महासुभिक्षमादेश्यंराजानोनिरुपद्रवाः ।

सप्तमीनिर्मलीनेष्टाश्रेष्ठावृष्टिबलान्ननु ॥ १२० ॥

यदि सप्तमी निर्मल हो तो नेष्ट और वृष्टियुक्त हो तो, श्रेष्ठ होती है तथा सुभिक्ष और निरुपद्रव होता है ॥ १२० ॥

माघस्यशुक्लसप्तम्यांयदाभ्रंजायतेऽभितः ।

तदावृष्टिर्घनालोकेभविष्यतिनसंशयः ॥ १२१ ॥

माघ शुक्ल सप्तमीको बादल हो तो संसारमें घनी वर्षा होती है ॥ १२१ ॥

माघेचकृष्णसप्तम्यांस्वातियोगेभ्रगर्जितम् ।

हिमपातेचसंजातेसर्वधान्यप्रजासुखम् ॥ १२२ ॥

माघ कृष्ण सप्तमीको स्वाति योगमें बादल गर्जन और ठंड पड़े तो सब धान्य हों प्रजा सुखी हो ॥ १२२ ॥

तथैवफाल्गुनेचैत्रेवैशाखेस्वातियोगजम् ।

विद्युद्भ्रादिकंश्रेष्ठमाषाढेपिसुभिक्षकृत् ॥ १२३ ॥

इसी भाँति फाल्गुन चैत्र, वैशाखके स्वाति योगमें बिजली बादल आषाढमें सुभिक्ष करके हैं ॥ १२३ ॥

स्वातौनिशांशेप्रथमेभिवृष्टेसस्यानि सर्वाण्युप-

यान्तिवृद्धिम् । भागेद्वितीयेतिलमुद्गमाषाढैष्मं

तृतीयेस्तिनशारदानि ॥ १२४ ॥

स्वातिमें रात्रिके प्रथमांशमें वर्षा हो तो सब धान्योंकी उत्पाति और वृद्धि करती है । दूसरे भागमें हो तो तिल मूंग उड़द करती है और तीसरे भागमें हो तो शीष्मके जौ गेहूं आदि तो करती है किन्तु शरदके मक्का चाजरी आदि नहीं करती ॥ १२४ ॥

वृष्टेहिभागेप्रथमेसुवृष्टिस्तद्वृद्धितीयेतुपर्काटसर्पाः ।

वृष्टिस्तु मध्यापरभागवृष्टेर्निश्चिद्रवृष्टिद्युनिशंप्र-

विष्टे ॥ १२५ ॥

उसी दिन यदि दिनके प्रथम भागमें वर्षा हो तो सुवृष्टि हो । दूसरेमें हो तो वर्षा, कीड़े और सर्पादि हों, तीसरेमें हो तो मध्यम वर्षा हो और दिनरात वर्षा तो निश्चय वर्षा हो ॥ १२५ ॥

समुत्तरेणताराचित्रायाःकीर्त्यतेह्यपांवत्सः ।

तस्यासन्नेचन्द्रेस्वातीयोगःशिवोभवति ॥ १२६ ॥

चित्रा नक्षत्रके समान सूतमें ठीक उत्तरमें एक अपांवत्स नामक तारा है यदि चन्द्रमा उस ताराके समीप हो तो स्वातिमें चन्द्रमाका योग शुभ होता है ॥ १२६ ॥

माघेकृष्णनवम्यांचमूलऋक्षदिनेथवा ।

विद्युन्मेघधनुर्योगेचाभ्रैर्नभसिसंवृते ॥ १२७ ॥

एतस्माद्गर्भतोवृष्टिर्भाविवर्षेभिजायते ।

आषाढेवाभाद्रपदेदशमीदिवसेशुभा ॥ १२८ ॥

माघ कृष्ण नौमाँको अथवा मूल नक्षत्रमें बिजली मेघ और धनुष हो तथा आकाश बादलोंसे आवृत(ढकाहुआ)हो तो इस गर्भसे भारी वर्षमें आषाढ अथवा भाद्रपदेकी दशमीको शुभ वर्षा होती है १२७॥ १२८

माघमासेचसप्तम्यांकृष्णेत्रयोदशीद्वये ।

पूर्वस्यामुन्नतेमेघेवादलैःसंकुलेपिखे ॥ १२९ ॥

माघकृष्ण १३।१४ को पूर्वमें बड़े बादल हों और आकाश ढका हुआ हो तो ॥ १२९ ॥

बहूदककरावृष्टिराषाढेसप्तरात्रिकी ।

अमावास्यामभ्रयागाद्भाद्रेवैपूर्णिमादिने ॥ १३० ॥

अषाढमें सात रात तक बहुत जल वर्षता है। अमावसको बादल हों तो भाद्रपदेमें पूनमको वर्षता है ॥ १३० ॥

नवृष्टिर्नगर्जारवोवादलेषुचतुर्थ्यांचगोधूमकादु-
र्लभाःस्युः । तदापंचमीवृष्टिहीनापिसाभ्रातदा

भाद्रमासेमहान्वृष्टियोगः ॥ १३१ ॥

भाद्रकृष्ण चौथको न वर्षा हो न गर्जे और न बादल हों तो गेहूं दुर्लभ होते हैं और यदि पंचमीको वर्षा न हो केवल बादल ही हों तो भादेवेमें महा वर्षा होती है ॥ १३१ ॥

कार्पासस्यमहर्षताभुविभवेत्पृथीयदानिर्मलासप्त-
म्यामपिचन्द्रनिर्मलतयाराज्ञामहान्विग्रहः ।

अष्टम्यां यदि भास्करस्समुदितः प्रातः परं निर्मले
रौद्रे वृष्टिनिरोधकृन्नभसि च प्रायोल्पवर्षाकरः ॥ १३२ ॥
यदि छठ निर्मल हो तो कपास महंगी हो सार्तको चंद्र निर्मल हो तो राजाओंमें महा विग्रह हो और यदि आठिका सूर्योदय निर्मल हो तो वृष्टि रोक कर अल्प वर्षा करे ॥ १३२ ॥

सप्तम्यादित्रये कृष्णफाल्गुने घनगर्जितम् ।

संग्रामाद्यप्रतिग्रामंधान्यानां च समर्षता ॥ १३३ ॥
फाल्गुन कृष्णकी सप्तमीसे तीन दिनोंमें घन गर्जे तो संग्रामादि हों तथा धान्य सस्ते हों ॥ १३३ ॥

फाल्गुने मासि वर्षा वै जायते चाष्टमी दिने ।

तदा सुभिक्षमादेश्यं देशे क्षेमं सुखं बहु ॥ १३४ ॥
फाल्गुनकी अष्टमीको वर्षा हो तो सुभिक्ष हो और देशमें क्षेम सुख बहुत हो ॥ १३४ ॥

सप्तम्यादित्रये साभ्रे गर्भे कुशलनिश्चयः ।

अमावास्याभाद्रपदे जलं सुलभमब्दतः ॥ १३५ ॥
सप्तमी आदि तीन दिन बादल हों तो गर्भमें कुशल रहे और भाद्रपदकी अमावस्यको जल वर्षे ॥ १३५ ॥

फाल्गुने शुक्लसप्तम्यां पूर्णमास्यां तथा दिने ।

निर्वातंगगनं मेघाविजलाविद्युदन्विताः ॥ १३६ ॥

भविष्यद्वत्सरेतत्रसुभिक्षंक्षेममादिशेत् ।

भाद्रेसौकृष्णसप्तम्यांदर्शेगर्भःफलंजलम् ॥ १३७ ॥

फाल्गुन शुक्ल सप्तमीको तथा पूनमको विना पवन आकाशमें बिना जलके बादलोंमें बिजली हो तो भविष्य वर्षमें सुभिक्ष हो । और भाद्रेकी कृष्ण सप्तमी अथवा अमावसको इस गर्भका फल (जल) हो ॥ १३६ ॥ १३७ ॥

समयेचेद्भुताशन्याज्ज्वलनस्यास्तिबादलम् ।

गोधूमकुंकुमापातान्महर्घप्रोच्यतेतदा ॥ १३८ ॥

यदि होली जलनेके समय बादल हों तो गेहूँकी फसलमें रोली लग जानेसे महँगाई हो ॥ १३८ ॥

दशम्यैकादशीशुक्लेफाल्गुनेभ्रादिगर्भयुक् ।

तदाचतुर्थपंचम्यामाश्विनेवृष्टिदायिनी ॥ १३९ ॥

और फाल्गुन शुक्ल दशमी एकादशीकी बादल आदिसे गर्भ हो तो आश्विनकी चौथ पाँच को वर्षा हो ॥ (इति) ॥ १३९ ॥

(३) अथ विस्तृतक्षणम् ।

प्राचीतत्क्षणमेवनक्षत्रमपरा सन्ध्याव्यहाराद्वाफलं स-

प्ताहात्परिवेपरेणुपरिधाःकुर्वन्तिसद्योनचेत् । त-

द्वत्सूर्यकरेद्रकार्मुकतडितप्रत्यर्कमेवानिलास्त-

स्मिन्नेवदिनेऽष्टमेऽथविहगाःसप्ताहपाकामृगाः १४०

(३) “वर्षाकारक बिजलीका वर्णन”—(वर्षाके प्रसंगमें जो संध्या-परिवेप-वायु-आदि आये हैं उनका यहाँ प्रमाण बतला कर बिजलीका वर्णन करते हैं ।) प्रातःसंध्याका तत्काल फल होता है सायंसन्ध्या वा रात्रिका तीन दिनमें-परिवेप, परिध, रजका उसी दिन—(अथवा उस दिन न हो तो सात दिनमें) सूर्यकी किरणोंका

इन्द्रधनुषका बिजलीका, प्रतिसूर्य तथा वायुका भाठ दिनमें-और
पाक्षियोंका सप्ताहमें फल होता है ॥ १४० ॥

एकंदीप्त्यायोजनंभातिसंध्याविद्युद्भासाषट्प्रका-
शीकरोति । पंचाब्दानांगर्जितंयातिशब्दोनास्ती
यत्ताकाचिदुल्लूकानिपाते ॥ १४१ ॥

सन्ध्याका प्रकाश ४ कोश तक-मेघकी गर्जना २० कोश तक-और
बिजलीकी चमक २४ कोशतक जाती है : किन्तु उत्कापातके योज-
नोंका कोई नाप नहीं किया जाता ॥ १४१ ॥

विद्युद्भ्रान्तिर्निखिलाकांतिः कलनामत्तायदा
पयोदाः । उन्मत्ताइवदृष्टश्चन्द्रःकिरणविहीनंभु-
विजलपूरम् ॥ १४२ ॥

जिस समय बिजली घूमती है उस समय सेव समस्त दीप्ति धारण
करनेसे उन्मत्तकी भांति मतवाला होकर चन्द्रमाकी किरणोंसे पृथ्वी
की हीन देखके उसे जलसे पूरता है ॥ १४२ ॥

विद्युन्मालाकुलोभूत्वानभनष्टाकंइन्दुना ।

प्रावृट्कालोविजानीयाजनसौख्यान्नदायकः १४३

जिस समय बिजलियोंके चकामकोसे आकुल होकर आकाश
सूर्य चन्द्र और तारागणोंसे हीन हो तो उस समय मनुष्योंको सुख और
आनन्द देनेवाला वर्षा काल जानना ॥ १४३ ॥

यदातुविद्युतःश्रेष्ठाःशुभाशाप्रत्युपाश्रिताः ।

तदातुसर्वसस्यानांवृद्धिर्ब्रूयाद्विचक्षणः ॥ १४४ ॥

“बिजलियोंके चमकनेका फल”—जिस समय शुभ दिशाओंमें
बिजली चमके उस समय सब प्रकारके धान्योंकी वृद्धि होती है ॥ १४४ ॥

दिवताडिद्यदिचपिनाकिदिग्भवा ।

तदाक्षमाभवतिसमातिवारिणा ॥ १४५ ॥

यादि दिनमें ईशान कोनमें विजली चमके तो उस समय पृथ्वी जलसे समान (बराबर) हो जाती है ॥ १४५ ॥

पौषशुक्लचतुर्दश्यांविद्युद्दर्शनमुत्तमम् ।

कृष्णपक्षे तथा पाठे भवेन्मेघमहोदयः ॥ १४६ ॥

पौष सुदी चौदशको विजलीका चमकना अच्छा है । उससे आषाढ कृष्णमें बहुत मेघ वर्षता है ॥ १४६ ॥

नभप्रदीपं प्रच्छाद्य गजेंद्रे रावतान्वितः ।

विद्युत्कुमारि संयोगाद्देवेन्द्रो गभंकारकः ॥ १४७ ॥

आकाशमें सूर्यको बादलोंसे छिपाकर मेघ गजें और विजली चमके तो मेघका उदय होता है ॥ १४७ ॥

उत्तरस्यां यदा विद्युत्स्वर्णवर्णा प्रदीप्यते ।

सा विद्युज्जलदाज्ञेया शीघ्रमेघमहोदयः ॥ १४८ ॥

यादि उत्तर दिशामें सोनाके वर्ण समान विजली चमके तो वह विजली जल देने वाली होती है । उससे शीघ्र वर्षा होती है ॥ १४८ ॥

ऐन्द्री च जलदा विद्युदाग्नेयी जलनाशिनी ।

याम्यदिक्रुस्था तु या विद्युद्वटाटोपाभयंकरी ॥ १४९ ॥

पूर्व दिशाकी विजली जल देने वाली होती है आग्नेयी जल शोषती है और दक्षिण दिशाकी विजली काले घटाटोपोंसे डराने वाली होती है ॥ १४९ ॥

प्रभूतजलदाज्ञेया वारुणी सस्य संपदे ।

नैऋतिर्निर्मला प्रोक्ता कौवेरी क्षिप्रवर्षिणी ॥ १५० ॥

पश्चिम दिशाकी विजली सस्य सम्पदाके लिये बहुत जल देती है और नैऋत्यकी निर्मल आकाश कम्ती है तथा उत्तरकी विजली

ऐशानीलोकशुभदाविद्युद्वेदाइतिस्मृताः ।

यत्रदेशेषुभिक्षंस्याद्विद्युत्तत्रैवगच्छति ॥ १५१ ॥

ईशानकी बिजली शुभदायक होती है । जिस देशमें सुभिक्ष होनेकी सम्भावना हो बिजली वहीं जाती है ॥ १५१ ॥

दिक्षुभूतास्थितिर्गुप्तमेघानामार्गदर्शनी ।

विद्युद्धीनानगर्जन्तिनवर्षतिजलंविना ॥ १५२ ॥

यह बिजली दिशाओंमें खड़ी रहकर भेवोंको मार्ग दिखाती है । अथवा बादल बिजली बिना नहीं गर्जते और जल बिना मेघ नहीं वर्षता ॥ १५२ ॥

कपिलाविद्युदनिलंकुर्यात्पीतातुवृष्टये ।

लोहिताआतपायस्यात्सितादुर्भिक्षहेतवे ॥

यादि भूरी बिजली चमके तो पवन चले, पीली चमके तो बहुत वर्षा हो लाल चमके तो गर्मी अधिक करे और सफेद चमके तो अकाल पड़े ॥ इति ॥

(४) अथ ग्रहयोगाद्वर्षाज्ञानम् ।

अवृष्टानयुतौकूरैर्ज्ञशुक्रावेकराशिगौ ।

जीवदृष्टौविशेषेणमहावृष्टिस्तदाभवेत् ॥ १५३ ॥

(४) “ग्रहोंके संयोगसे वर्षा कहते हैं ।” (तात्कालिक योग क्रूर ग्रह सहित बुध शुक्र एक राशिपर आये हों तो वर्षा नहीं हो) और यदि उनको गुरु देखे तो बहुत वर्षा हो ॥ १५३ ॥

ज्ञजीवावेकराशिस्थौकूरदृष्टिविवर्जितौ ।

शुक्रदृष्टौविशेषेणकुर्वतिवृष्टिसुत्तमाम् ॥ १५४ ॥

गोचर ग्रहोंमें बुध बृहस्पति एक राशिपर हों और उनको क्रूर ग्रह न देखे किन्तु शुक्र देखता हो तो उत्तम वर्षा करते हैं ॥ १५४ ॥

जीवशुक्रौयदायुक्तौऋणापिविलोकिता ।

बुधदृष्टौमहावृष्टिकुर्वातेजलयोगतः ॥ १५५ ॥

शुक्र शुक्र एक राशिपर हों और ग्रह तथा बुध देखता हो तो महा वर्षा करते हैं ॥ १५५ ॥

गुरुर्बुधोदानवेन्द्रोऽकराशिगतास्त्रयः ।

अदृष्टाःऋतचरैर्महावृष्टिविधायकाः ॥ १५६ ॥

बुध बृहस्पति शुक्र तीनों एक राशिके हों और ऋत न देखें तो महा वर्षा होती है ॥ १५६ ॥

यदाशुक्रश्चभौमश्चमन्दश्चैकत्रराशिगः ।

तदावर्षतिपर्जन्योजीवदृष्टौनसंशयः ॥ १५७ ॥

जब शुक्र शनि भौम एक राशिमें हों और बृहस्पति देखे तो महा वर्षता है ॥ १५७ ॥

शुकेचन्द्रमसायुक्तेभौमेवाचन्द्रसंयुते ।

उद्धन्धनादिशःसर्वाजलयोगस्तदामहान् ॥ १५८ ॥

शुक्र चन्द्रमाके साथ हो अथवा भौम चन्द्रमाके साथ हो तो महान् जलयोग होता है ॥ १५८ ॥

अग्रतोवास्थिताःसौम्याःऋराणांतुपरस्पराः ।

ददतेसलिलंभूरिनतोयंस्याद्विपर्यये ॥ १५९ ॥

सौम्यग्रह आगे हों और ऋत पीछे हों तो जल वर्षता है ॥ १५९ ॥

एकराशिगतोजीवःसूर्येणसहवर्षति ।

यावन्नास्तमनंयातियोगोद्धन्धज्जीवयोः ॥ १६० ॥

सूर्यके साथ एक राशिमें बृहस्पति होनेसे वर्षा होती है । जबतक अस्तन हों तबतक बुध शुक्र योगसे वर्षा होती है ॥ १६० ॥

उन्मार्गगमनंकृत्वायदाशुकंत्यजेदबुधः ।

तदावर्षतिपर्जन्योदिनानिपंचसप्तवा ॥ १६१ ॥

शुक बक्री होकर बुधको छोड़दे तो पांच, सात दिन वर्षा होती है १६१

कर्कटेतुप्रविशतेसूर्यपश्येद्यदागुरुः ।

पादोनंपूर्णदृष्ट्यावातत्रकालेमहाजलम् ॥ १६२ ॥

कर्क पर गये हुए सूर्यको गुरु पादोन वां पूरी दृष्टिसे देखे तो बहुत

जल वर्षता है ॥ १६२ ॥

उदयेस्तंगमेचेत्स्याज्जीवदृष्टोयदाग्रहः ।

पादोनंपूर्णदृष्ट्यावातदावर्षतिनान्यथा ॥ १६३ ॥

जब ग्रह उदय या अस्त हो उसको गुरु देखे तो वर्षा होती है १६३ ॥

शनिशुक्रेऽल्पवृष्टिःस्यान्नसस्यानिभवन्तिच ।

वक्रोत्तीर्णाःशुभाःक्रूराजीवोवक्रगतःशुभः ॥ १६४ ॥

शनि शुक्र एक राशिके हों तो कम वर्षा हो। क्रूर ग्रह वक्रसे उत्तर कर शुभ होते हैं। किन्तु बृहस्पति बक्री हो तब अच्छा है ॥ १६४ ॥

अतिचारगताःक्रूराःस्वल्पवृष्टिविधायकाः ।

सौम्यायदावक्रगतास्तदावृष्टिविधायिनः ॥ १६५ ॥

क्रूर ग्रह अतिचारी (बहुत गति वाले) हों तो कम वर्षा होती है और सौम्य ग्रह जब बक्री हों तब वर्षा होती है ॥ १६५ ॥

सिंहेकन्यातुलायांचयास्यतेचयदागुरुः ।

एकादश्यांचयोगोयंवर्षत्येवमहाजलम् ॥ १६६ ॥

सिंह कन्या और तुलसे बृहस्पति जाय और ग्यारहवें में अन्य योग हो तो बहुत जल वर्षे ॥ १६६ ॥

शुकस्ययदिभोमेनयदिस्यात्सप्तसप्तकम् ।

वृष्टिर्मासेतदाकालेतथैवशनिजीवयोः ॥ १६७ ॥

शुक्रसे मंगल सातवें हो और शनिसे बृहस्पति सातवें हो तो मही-
नेमें वर्षा होती है ॥ १६७ ॥

क्रूराणांसहसौम्यैश्चयदिस्यात्सप्तसप्तकम् ।

अनावृष्टिस्तदाज्ञेयालोकपीडामहत्यपि ॥ १६८ ॥

क्रूर ग्रहों सहित सौम्य ग्रह सातवीं सातवीं राशिपर हों तो अना-
वृष्टि तथा पीड़ा हो ॥ १६८ ॥

विशेषयोगः ।

अश्विन्यादित्रयंचैव आर्द्रादेः पंचकं तथा ।

पूर्वाषाढादिचत्वारिचोत्तरारेवतीद्वयम् ॥ १६९ ॥

उक्तानि शशिभान्यत्र प्रोच्यन्ते सूर्यभान्यथ ।

रोहिणीचमृगश्चैव पूर्वाफाल्गुनिका तथा ॥ १७० ॥

“विशेष योग” — अश्विनी आदि तीन और आर्द्रा आदि पांच
पूर्वाषाढादि चार और रेवती आदि दो इनको यहां चंद्र नक्षत्र कहे
हैं । और रोहिणी मृगशिर पूर्वाफाल्गुनी आदि बाकीके सब नक्षत्र
सूर्य नक्षत्र हैं ॥ १६९ ॥ १७० ॥

सूर्ये सूर्ये भवेद्वायुश्चन्द्रे चन्द्रे न वर्षति ।

चान्द्रसूर्यो भवेद्योगस्तदा वर्षति मेघराट् ॥ १७१ ॥

सूर्य जिस नक्षत्रपर हो वह नक्षत्र तथा नित्यका जो नक्षत्र हो वह
नक्षत्र इन दोनोंको उपरोक्त विधिके अनुसार देखना । यदि सूर्य
सूर्यकेही हों तो हवा चले । चन्द्र चन्द्रके हों तो वर्षा नहीं हो । और
चंद्र सूर्य दोनोंका योग हो तो वर्षा हो । (यथा वर्ष कालमें सूर्य
मृगशिरपर हो और पंचांगस्थ नित्यका नक्षत्र आर्द्रादि पांचमें हों तो
वर्षा हो । इत्यादि) ॥ १७१ ॥

आर्द्रादिदशकं स्त्रीणां विशाखात्रिनपुंसकम् ।

मूलाच्चतुर्दशं पुंसां नक्षत्राणि क्रमाद्बुधेः ॥ १७२ ॥

आर्द्रा आदि दश नक्षत्रोंको स्त्री-विशाखादि तीनको नपुंसक-
और मूलादि चौदहको पुरुष संज्ञक नक्षत्र मानकर इनसे वर्षाका
विचार करे ॥ १७२ ॥

वायुर्नपुंसकेभेचस्त्रीणांभेचाभ्रदर्शनम् ।

स्त्रीणांपुरुषसंयोगेवृष्टिर्भवतिनिश्चितम् ॥ १७३ ॥

सूर्य और चंद्रमा जिस जिस नक्षत्रपर हों उनकी उपरोक्त संज्ञा
देखकर विचार करे । यदि नपुंसक नक्षत्र हों तो पवन चले, स्त्री नक्षत्र
हों तो बादल छाये रहें-स्त्री नपुंसक हों तो कुछ बूँदा बाँदी हो, पुरुष
हों तो घूष रहे और स्त्री संज्ञक तथा पुरुष संज्ञक नक्षत्रोंका योग
हो तो निश्चय अच्छी वर्षा हो (इति) ॥ १७३ ॥

(५) अब प्रश्नद्वारा ज्ञानमाह ।

पृच्छालग्न्येचतुर्थस्थौशनिराहूयदापुनः ।

दुर्भिक्षंचमहाघोरतत्रवर्षेधुर्वभवेत् ॥ १७४ ॥

(५) "अब प्रश्नसे वर्षा कहते हैं ।" - (कोई आशार्थ
आकर वर्षाके लिये स्वस्थचित्तसे प्रश्न करे तो तत्काल उस समयका
लग्न लगाकर उसका विचार करे) यदि प्रश्न लग्नसे चौथे घरमें शनि
राहु हों तो उस वर्षमें महा घोर दुर्भिक्ष हो ॥ १७४ ॥

चतुर्णामपिकेन्द्राणामध्येयत्रशुभाग्रहाः ।

तस्यांदिशिचनिष्पत्तिःसुभिक्षंचप्रजायते ॥ १७५ ॥

यदि उस समय चारों केन्द्रोंमें शुभ ग्रह हों तो जिस जिस केंद्रमें
जो जो ग्रह हों उन उन ग्रहोंकी दिशामें धान्यकी उत्पत्ति और
सुभिक्ष जायना ॥ १७५ ॥

यस्यांदिशिशनिर्दृष्टःक्रूरश्चात्रग्रहेस्थितः ।

दिशितस्याबुधैर्धान्यंदुर्भिक्षंनात्रसंशयः ॥ १७६ ॥

जिस दिशामें क्रूर ग्रह हो और उस पर शनिकीभी दृष्टि हो तो
द्विष्ट लोग उस दिशामें निश्चय दुर्भिक्ष करें ॥ १७६ ॥

पंचांगुलिस्पर्शनेपियद्यंगुष्ठंजनःस्पृशेत् ।

तदावृष्टिस्तुमहतीसावित्रीस्पर्शनेत्पिका ॥ १७७ ॥

पूछनेवाला यदि पांच अंगुली पकड़ कर भी अंगुठेको पकड़े हुए प्रश्न करे तो अधिक वर्षा हो और कनिष्ठाको छुए तो कम वर्षा हो ॥ १७७ ॥ (इति)

(६) अथ सद्योवृष्टिलक्षणम् ।

पूर्वस्यांयदिसंध्यायांमेघैराच्छादितंनभः ।

पर्वताःकुत्रिमैःकैश्चित्कैश्चित्कुञ्जरमूर्तिभिः ॥ १७८ ॥

(६) "शीघ्र वर्षा होनेके लक्षण" - यदि सायंकालके समय पूर्वमें आकाशमें बादलोंकी घटा चढ़े, उनमें कोई बादल पर्वत सीखा और कोई हाथी जैसा दीखे ॥ १७८ ॥

नानाकृतिधरैश्चैवमातंगधवलैर्धनैः ।

पंचरात्रात्सप्तरात्रात्सद्योवृष्टिर्निगद्यते ॥ १७९ ॥

अथवा कई बादल सफेद हाथी जैसा होकर कई भौतिके बन जाँय तो पांच या सात रातमें शीघ्र वर्षा होती है ॥ १७९ ॥

उत्तरस्यांचसंध्यायांगिरिमालेवविस्तृतः ।

मेघस्तृतीयदिवसेवृष्ट्यातुष्टिकरोनृणाम् ॥ १८० ॥

सायंकालमें उत्तर दिशामें बादलोंकी पर्वत मालासी दीखे तो मनुष्योंके संतोषलाभक तीन दिनमें वर्षा होती है ॥ १८० ॥

पश्चिमायान्तुसंध्यायांघनाःस्युःपर्वताइव ।

श्यामाभ्रेस्तंगतेभानौसद्योवर्षाभिलक्षणम् ॥ १८१ ॥

संध्यासमय पश्चिममें बादलोंके पहाड़ दीखें और सूर्यास्तके समय काली घटा हो तो शीघ्र वर्षा होती है ॥ १८१ ॥

दक्षिणस्यांयदामेघःसकोटीनारसंभवाः ।

त्रिपंचसप्तरात्रान्तःकिंचिद्वृष्टिविधायकाः ॥ १८२ ॥

दक्षिण दिशामें यदि कोटी बाँधकर बादल खड़े हों तो तीन पाँच या सात रातमें कुछ वर्षा कर सकते हैं ॥ १८२ ॥

आग्नेय्यांबहुतापायमेघाःस्वरूपजलप्रदाः ।

नैऋत्यामीतिसंतापरोगवर्षाकराःस्मृताः ॥ १८३ ॥

अग्नि कोणमें बादल हों तो गर्मी अधिक और जल कम हों । तथा नैऋत्यमें हों तो संताप और रोगकारी वर्षा हो ॥ १८३ ॥

वातवृष्टिकराः सद्योवायव्यामुन्नताघनाः ।

ऐशान्यामशन्यक्तमेघाःसुखकराजलात् १८४ ॥

वायव्यमें यदि ऊँचे बादल हो तो शीघ्र वर्षता है और ईशान कोणमें बादल हों तो बराबर वर्षा होती रहती है ॥ १८४ ॥

चतुर्थीपंचमीषष्ठीह्यमावस्याचसप्तमी ।

आषाढकृष्णतिथयःसद्योमेघायलक्षणैः ॥ १८५ ॥

चौथ-पाँच-छठ-सार्ति और अमावस्यको आषाढमें घटा हो तो शीघ्र वर्षनेके लक्षण हैं ॥ १८५ ॥

पूर्वस्यांवादलंधूअंसूर्यास्तेयातिकृष्णताम् ।

उत्तरस्यामेघमालाप्रभातेविमलादिशः ॥ १८६ ॥

यदि पूर्वमें धुँसेके आकारके बादल हों और सूर्यास्तके समय काले हो जाँय । तथा उत्तरमें मेघमाला हो और प्रभातमें विमल दिशा हो और ॥ १८६ ॥

मध्यकालेजनस्तापईदृशमेघलक्षणम् ।

अर्द्धरात्रेगतेवृष्टिःप्रजातोषायजायते ॥ १८७ ॥

दुपहरीमें मारे गर्मीके लोग तड़फड़ाते हों यह मेघके लक्षण हैं । जिस दिन यह बातें हों उसदिन आधीरात जाने तक लोगोंको संतोष देनेवाली वर्षा अवश्य होती है ॥ १८७ ॥

ब्रह्म है । अथवा जिस दिन आकाशके बीचमें पहुँच कर सूर्य अत्यन्त तीक्ष्ण हो तो उस दिन वर्षा होती है ॥ १९२ ॥

रात्रोतारागलत्कारः प्रातश्चात्यरुणोरविः ।

अवृष्टोश्चाक्रचापश्चसद्योवृष्टिस्तदाभवेत् ॥ १९३ ॥

रातमें तारे गिरें प्रातःकालमें सूर्य लाल हों; बिना वर्षा इन्द्रधनुष हो तो शीघ्र वर्षा होती है अथवा तारे टूटें बिजली सहित मेघ गजें तो वर्षाकाल समीपही जानना ॥ १९३ ॥

धूम्रितानिषिडाः शैलाश्चर्मादिषुतथार्द्रता ।

प्रभातेपश्चिमायांचेदिन्द्रचापः प्रदृश्यते ॥ १९४ ॥

वारुणैश्चैव नक्षत्रैः शीघ्रं वर्षति माधवः ।

गोमयेउत्कराः कीटाः परितप्यन्ति दारुणाः ॥ १९५ ॥

चातकानां रवोवृष्टिः सद्यो वै सूचयेज्जने ।

पर्वत धूँकेसे होकर घने इकट्ठे दीखें चमड़े आदिमें गीलापन हो । प्रातःकाल पश्चिममें इन्द्रधनुष हो और जलनाड़ीके नक्षत्र हों तो शीघ्र वर्षा होती है । गोबरमें गुर्वादि अथवा और भांतिके दारुण कीड़े हों । और पपीहे बोलें तो शीघ्र वर्षा होती है ॥ १९४ ॥ १९५ ॥

सूर्योदये श्रावणमासि गजैर्भ्रमन्ति नीरोपरि वापिम-

त्स्याः । घनस्तदाष्टादशयाममध्ये करोति भूमिं स-

लिलेन पूर्णाम् ॥ १९६ ॥

श्रावण मासमें जिस दिन सूर्योदयके समय मेघ गजें और पानीके ऊपर मछलियाँ बार बार उपर उबर घूमें तो उस समय अठारह पहरके भीतर भारी वर्षा होती है ॥ १९६ ॥

शुककपोतविलोचनसन्निभोमधुनिभश्चयदाहिम-
दीधितिः । प्रतिशशीचयदादिविराजतेपततिवा-
रितदानचिरादिवः ॥ १९७ ॥

यदि चंद्रमाका रंग तोता और कवूतरकी आंखके समान लाल
हो अथवा सहदके समान हो या प्रतिशशि (दूसरा चंद्रमा) दीखे
तो जल्दी मेघ वर्षता है ॥ १९७ ॥

स्तनितंनिशिविद्युतोदिवारुधिरनिभायदिदंडव-
त्स्थिताः । पवनःपुरतश्चशीतलोयदिसलिल-
स्यतदागमोभवेत् ॥ १९८ ॥

रातको बादल गंज-दिनमें लाल रंगकी सीधी बिजली चमके
और पूर्व दिशाकी पवन चले तो शीघ्र वर्षा हो ॥ १९८ ॥

वल्लीनांगगनतलोन्मुखाः प्रवालाःस्नायन्तेयदि
जलपांसुभिर्विहंगाः । सेवन्तेयदिचसरीसृपास्तृ-
णाग्राण्यासन्नोभवतितदाजलस्यपातः ॥ १९९ ॥

वालियों (लता-बेलियों) के कोमल नये पत्ते आकाशकी तर्क
रूपको मुंह करें, पक्षी जलसे या धूलिसे स्नान करें । और सर्पादि
जीव घासकी नोकपर चढ़कर बैठें तो जल्दी जल आता है ॥ १९९ ॥

अतिवातश्चनिर्वातोह्यतिचोष्णमनुष्णता ।

अल्पाभ्रश्चनिरभ्रंचपडेतेवृष्टिलक्षणाः ॥ २०० ॥

अत्यंत पवन चले अथवा बिलकुल बंद होजाय । अत्यंत गर्मी
पड़े या ठंडक हो और बादल हों अथवा बिलकुल साफ हो तो यह
छः लक्षण भी शीघ्र वर्षा होनेके हैं ॥ २०० ॥

यदाभाद्रपदेमासेप्रतिपदशमीतथा ।

सप्तमीपूर्णिमाचैवनवमीचयथाक्रमम् ॥ २०१ ॥

मेघाद्यक्ष्णदृश्यन्तेपश्चिमांदिशमाश्रिताः ।

तद्वद्वर्षतिसततंबहुनीराःपयोधराः ॥ २०२ ॥

यदि भोदवेमें पड़बा, दशमी, सप्तमी, पूर्णिमा और नौमीको यया क्रमसे मेघ न दीखे और पश्चिम दिशामें न हो तो बहुत वर्षा हो ॥ २०१ ॥ २०२ ॥

संध्याकालेचयेमेघाःपर्वताकारसन्निभाः ।

आदित्यास्तंगतेतर्हिअहोरात्रेणवर्षति ॥ २०३ ॥

यदि प्रातःसंध्यामें पर्वताकार घटा हो तो सूर्यास्तमें दिन रात वर्षता है ॥ २०३ ॥

(७) अथ तात्कालिकलक्षणम् ।

विनोपघातेनपिपीलिकानामण्डोपसंक्रान्तिर-
दिव्यवायः । हुमाधिरोदश्चभुजंगमानांवृष्टेर्नि-
मित्तानिगर्वाप्लुतंच ॥ २०४ ॥

(७) "तात्काल वर्षा होनेके लक्षण"—यदि बिना किसी उप-
पात (बसेड़ेके) चीटियां (कीड़ी) अपने अण्डोंको उठाकर एक
जगहसे दूसरी जगह लेजाय सर्पपर सर्प चढ़ें या मैथुन करें । अथवा
चूषपर सर्प चढ़ें । और गायें उछलें कूदें अथवा ऊपरको छूह करें
तो उसी दिन वर्षा आती है ॥ २०४ ॥

मार्जारभृशमेवर्निनखैर्लिखन्तोलोहानांमलनि-
चयःसर्विस्रगन्धः । रथ्यायांशिशुनिचिताश्चसे-
तुबन्धाःसंप्राप्तजलमचिरान्निवेदयन्ति ॥ २०५ ॥

बिल्लियां अपने बजोंसे पृथ्वीको कुचें, लोहेपर मल जम जाय
और उसमें कच्चे मांसकी समान सुगंध आवे और बालक रास्तेमें
खेलते हुए धूल (रेत) आदिके पुल या बन्धे बांधें तो शून् बातोंमें
हीन जल वर्षता है ॥ २०५ ॥

यदितित्तिरपत्रनिभंगगनमुदिताः प्रवदन्तिचप-
क्षिगणाः । उदयास्तमयेसवितुर्ह्यनिशं विसृजन्ति
घनानचिरेणजलम् ॥ २०६ ॥

यदि प्रातःकाल अथवा सायंकालके समय तीतर पंखी बादल
हों । और मोर टिटहरी पपीहा आदि पक्षी आनन्दित होकर खुब
कलरव करें (ह हल्ला मचावें) तो शीघ्रही दिन रात मेघ वर्षता है २०६

यद्यमोघकिरणाःसहस्रगोरस्तभूधरकराइवोच्छ्रिताः॥

भूसमंचरसतेयदांबुदस्तन्महद्भवतिवृष्टिलक्षणम् २०७

यदि हजार किरणों वाले सूर्यके अस्त समयमें अस्ताचलकी किर-
णोंके समान ऊँची और अमोघ किरणें विराजमान हों (दीखें)
और मेघ पृथ्वीके नजदीक ही शब्द करे (गर्जना करे) तो इन
बातोंसे वर्षा होनेका बड़ा लक्षण जानना चाहिये ॥ २०७ ॥

प्रावृषिशीतकरोभृगुपुत्रात्सप्तमराशिगतःशुभग्रहः ।

सूर्यसुतान्नवपंचमगोवासप्तमगश्वंजलागमनाय २०८
(इति)

यादि चौमासेके दिनोंमें चन्द्रमाको शुभ ग्रह देखें अथवा चन्द्रमा
शुक्रसे सातवीं राशिमें या शनिसे नौवीं पाचवीं रातवीं राशिमें आवे
तो उस दिन जल वर्षता है ॥ २०८ ॥ इति ।

(८) अयोपकरणनिरूपणम् ।

(गंधर्वनगर) कपिलंसस्यघातायमंजिष्टाहरणं

गवि । अव्यक्तवर्णंकुरुतेबलक्षोभंनसंशयः ॥ २०९

(८) “वर्षा सम्बन्धी और घातोंका ज्ञान ”—(गंधर्व नगर)

यह आकाशमें किसी समय किसी रंगका—नगर जैसा दीखता करता
है । यदि यह गंधर्व नगर मूरा दीखे तो ऐतिष्योंका नुकसान हो-

मंजीठ जैसा हो तो गायोंमें बीमारी करे-और अग्रगण्य रंगका हो तो बल हरण करे ॥ २०९ ॥

गंधर्वनगरंस्निग्धं संप्राकारं सतोरणम् ।

सौम्यां दिशं समाश्रित्य राज्ञस्तद्विजयं करम् ॥ २१० ॥

गंधर्वनगर यदि चिकना हो और परकोटा तथा तोरण सहित पूर्व दिशामें हो तो वह राजाकी विजय करता है ॥ २१० ॥

(इन्द्रधनुष परिवेष)

इन्द्रायुधपरिवेषोत्प्रेक्ष्य चरचारे च पूर्वकथितौ ।

देवं तस्यामवलोक्य वर्षताववश्यमेवेति ॥ २११ ॥

(इन्द्रधनुष और परिवेष) यह दोनों पीछे खेचर चारमें आठवें श्लोकसे तेरहवें श्लोक तक कह आये हैं अतएव वर्षाविचारक विद्वानोंको वहाँ अवश्य देखलेना चाहिये ॥ २११ ॥

(प्रतिसूर्य) प्रतिसूर्यकः प्रशस्तो दिवसकृद्दत्तवर्णसप्रभस्निग्धः ।
वेदूर्यनिभः स्वच्छः शुक्लश्चक्षु-
मसौ भिक्षः ॥ २१२ ॥

(प्रतिसूर्य) इसका भी वहाँ उल्लेख हुआ है किन्तु प्रसंगवश फिर लिखते हैं । जिस ऋतुमें सूर्यका रंग जैसा हो उस ऋतुमें प्रतिसूर्यका रंगभी वैसाही चिकना या वेदूर्य माणिकी समान स्वच्छ और शुद्ध वर्ण युक्त हो वो बेम तथा सुमिक्ष करता है ॥ २१२ ॥

(रज) कथयन्ति पार्थिववधं रजसाधनतिमिरसं
चयनिभेन । अभिभाष्यमानगिरिपुरतरवः सर्वा
दिशश्छन्नाः ॥ २१३ ॥

(रज-धूलि) गहरे अन्धकारके सम्यक्की समान धूरि जब सब दिशाओंको ढक ले जिससे पर्वत पुरे वृक्षादि न दीखें तो जानना कि राजाका नाश होगा । जेठ वैशाखमें अधिक आंधी आवे या देखी

घूलि वर्षा उत्तर पश्चिमसे अधिक आवें तो कई एक उसे वर्षाके हिस्से अच्छी कहते हैं ॥ २१३ ॥

केत्वाद्युदयविभुक्तयदारजोभवतितीव्रभयदायि ।

शिशिरादन्यत्रतोफलमविकलमाहुराचार्याः २१४ ॥

केतु उदयके पीछे जब घूलि उड़े तो अत्यंत तीव्र भयदायी होती है। आचार्योंका कथन है कि इसका फल शिशिर ऋतुमें कुछ बिगाड़ नहीं करता अन्य ऋतुओंमें होता है ॥ २१४ ॥

(निर्घात) पवनःपवनाभिहतोगगनादवनौयदा

समापतति । भवतितदानिर्घातःसचपापोदीप्त-

विहगरुतः ॥ २१५ ॥

(निर्घात) पवनसे पवन टकरा कर जब पृथ्वीपर गिरता है तब चही निर्घात होता है । अर्थात् जो अत्यंत जोरसे कड़कड़ाहटका शब्द होता है वही निर्घात है । उस निर्घातके समय सूर्यकी ओरको झुंझ करके पक्षी रोवें तो पापकारी होता है ॥ २१५ ॥

(उल्का) दिविभुक्तशुभफलानांपततांरूपाणि

यानितान्युल्काः । धिष्ण्योल्काशनिविद्युत्तारा

इतिपञ्चधाभिन्नाः ॥ २१६ ॥

(उल्का) स्वर्गमें शुभ फल भोगकर पड़नेका जो रूप होता है ही उल्कापात है । किन्तु इनमें धिष्ण्या, उल्का, अशनि, विजुली, और तारा यह पांच भेद हैं ॥ २१६ ॥

(दिग्दाह) दाहोदिशाराजमया यपीतोदेशस्य

नाशायदुताशवर्णः । यश्चारुणःस्यादपसव्यवायुः

सस्यस्यनाशंसकरोतिदृष्टः ॥ २१७ ॥

इति वर्षप्रबोधे उत्तरभागे द्वितीयस्थलः समाप्तः ।

(दिग्दाह)—किसी २ समय दिशाओंमें लाललाल रंगकी आग लगी हुईसी दीखा करती है उसको दिग्दाह कहते हैं । यह दिग्दाह पीले वर्णका हो तो राजमय करता है । अग्निके वर्णका देश नाश करता है और लाल दिग्दाह दक्षिणी पवन सहित धान्यका नाश करता है । यदि आकाश अच्छा, तारा निर्मल और सुवर्ण समान दिग्दाह हो तो हितकारक होता है ॥ २१७ ॥

इति हनुमानशर्मासंग्रहीत भाषाटीका सहित वर्षप्रबोधके
उत्तरभागका दूसरा स्थल समाप्त ।

(१.) अधिकमासनिर्णयः ।

द्वात्रिंशद्भिर्गतैर्मासैर्दिनैः षोडशभिस्तथा ।

घटिकानांचतुष्केणपतत्यधिकमासकः ॥ १ ॥

(१) "अधिमासका निर्णय"—गताधिमासके पीछे ३२ महीने १६ दिन ४ घड़ी बीतने पर अधिमासका सम्भव होता है ॥ १ ॥

शाकेषाणकरांककेविरहितेनन्देन्दुभिर्भाजिते

शेषेऽग्नौचमधुश्चमाधवशिखेज्येष्ठश्चखेचाष्टके ।

आषाढोनृपतौनभश्चशरकेभाद्रश्चविश्वान्ककेनेत्रे

चाश्विनकोऽधिमासउदितोशेषेन्यकेस्यान्नहि ॥ २ ॥

वर्तमान शकेमें नी सौ पचीस (९२५) घटाकर उन्नीसका भाग देनेसे ३ शेष रहें तो वैशख, ११ शेष रहें तो वैशाख, शून्य अथवा ८ बचें तो ज्येष्ठ, १६ बचें तो आषाढ, ५ रहें तो आश्विन, १३ रहें तो भाद्रपद, और ३ बचें तो आश्विन अधिकमास जानना और उनसे अन्य बचें तो कोईभी अधिकमास नहीं जानना ॥ २ ॥

असंक्रांतिमासोधिमासः स्फुटं स्याद्विसंक्रांतिमा-

सः श्रयाख्यः कदाचित् । श्रयः कार्तिकादित्रये

नान्यतः स्यात्तदावर्षमध्येधिमासद्वयंच ॥ ३ ॥

जिस मासमें संक्रांति नहीं हो वह अधिमास होता है और जिस मासमें दो संक्रांति हों वह क्षय मास होता है। क्षयमास कार्तिक आदि तीनोंही मासमें होता है और जिस वर्षमें क्षय मास होता है उसी वर्षमें अधिमासभी दो होजाते हैं ॥ ३ ॥

अथ अधिकमासफलम् ।

दुर्भिक्षं श्रावणेषु गमे पृथ्वीनाशः प्रजाक्षयः ।

भाद्रपाद्विषयेषां न्यनिष्पत्तिः स्यादथेहितम् ॥ ४ ॥

“अधिमास फल”-जिस वर्षमें दो सावन हों तो दुर्भिक्ष होकर पृथ्वी पर प्रजाका क्षय होता है और दो भादवें हों तो हितकारक अच्छी खेतिपां होती हैं ॥ ४ ॥

आश्विनद्विषये भूम्यां सैन्यचौररुजं भयम् ।

सुभिक्षं केचन प्याहुर्दुर्भिक्षं दक्षिणादिशि ॥ ५ ॥

दो आसोज हों तो पृथ्वीमें सेना, चौर और रोगभय होता है । और उस वर्षमें सुभिक्ष नहीं होता है, दक्षिणदिशामें दुर्भिक्ष होता है ॥ ५ ॥

सुभिक्षं कार्तिकयुगे क्वचिद्दुःखं रणान् नृणाम् ।

मार्गशीर्षयुगे देशे जायते परमं सुखम् ॥ ६ ॥

यदि दो, कार्तिक हों तो सुभिक्ष होता है किन्तु राजाओंमें कड़ी रे युद्धादिके दुःख होते हैं । दो मार्गशीर्ष हों तो देशमें परम सुख होता है ॥ ६ ॥

पौषयुगे सुभिक्षं च मंगलं नृपतेर्जयः ।

राजदण्डपरो लोको लोके मतिविपर्ययः ॥ ७ ॥

पौष दो हों तो सुभिक्ष होता है, प्रजामें मंगल और राजाओंमें जय होती है । किन्तु राजदंडसे लोकमति का विपर्यय होता है ॥ ७ ॥

माघद्वयेभुविक्षेमंराज्यानांचभयंतथा ।

सुभिक्षंफाल्गुनयुगेक्षत्रियाणांशिवंभवेत् ॥ ८ ॥

• दो माघ हों तो पृथ्वीपर क्षेम और राजाओंको भय होता है ।
और दो फाल्गुन हों तो सुभिक्ष होता है तथा क्षत्रियोंका कल्याण
होता है ॥ ८ ॥

चैत्रद्वयेशुभंधान्येवैश्यानामुदयोमहान् ।

वैशाखयुग्मेधान्यानांनिष्पत्तिरशुभःकचित् ॥ ९ ॥

दो चैत्र हों तो खेती अच्छी होती है और वैश्योंकी उत्पत्ति होती
है । दो वैशाख हों तो कहीं २ धान्यकी उत्पत्ति अशुभ होती है ॥ ९ ॥

ज्येष्ठद्वयेनृपध्वंसोधान्यानिक्षितिसत्तमे ।

द्वयापाढेव्यथाकिंचित्खण्डवृष्टिःकचित्पुनः ॥ १० ॥

दो जेठ हों तो राज्यध्वंस, धान्यकी उत्पत्ति हो और दो आषाढ
हों तो कुछ व्यथा तथा कहीं कुछ खण्ड वृष्टि हो ॥ १० ॥

कचिदूद्विकार्तिवेदुःखंद्विमाघेप्यशुभंमतम् ।

द्विफाल्गुनेवह्निभयमशुभंमाघवद्वये ॥ ११ ॥

किसीका यहभी मत है कि दो कार्तिक होनेसे दुःख, दो माघ
होनेसे अशुभ, दो फाल्गुन होनेसे अग्निभय और दो वैशाख होनेसे
अशुभ होता है ॥ ११ ॥

अनेकयुगसाहस्र्यादैवयोगात्प्रजायते ।

त्रयोदशदिनेपक्षस्तदासंहरतेजगत् ॥ १२ ॥

(२) "तिथि क्षय वृद्धि फल"—दैवयोगसे कई एक युगोंमें
प्रजाका नाश करनेके निमित्त तेरह दिनका पक्ष आता है । अर्थात्
जिस पक्षमें तेरह तिथि हों वह पक्ष प्रजामें भीमारी महर्घता आदिक
उपद्रव करता है ॥ १२ ॥

जिस मासमें संक्रांति नहीं हो वह अधिमास होता है और जिस मासमें दो संक्रांति हों वह क्षय मास होता है। क्षयमास कार्तिक आदि तीनही मासमें होता है और जिस वर्षमें क्षय मास होता है उसी वर्षमें अधिमासभी दो होजाते हैं ॥ ३ ॥

अथ अविक्रमासफलम् ।

दुर्भिक्षं श्रावणेषु रमे पृथ्वीनाशः प्रजाक्षयः ।

भाद्रपद्विषाहान्यनिष्पत्तिः स्याद्यथेहितम् ॥ ४ ॥

“अधिमास फल”-जिस वर्षमें दो सावन हों तो दुर्भिक्ष होकर पृथ्वी पर प्रजाका क्षय होता है और दो भादवें हों तो हितकारक अच्छी खेतियां होती हैं ॥ ४ ॥

आश्विनद्विषाहान्येभूम्यां सैन्यचौररुजं भयम् ।

सुभिक्षं केचनप्याहुर्दुर्भिक्षं दक्षिणादिशि ॥ ५ ॥

दो आसोज हों तो पृथ्वीमें सेना, चौर और रोगभय होता है । और उस वर्षमें सुभिक्ष नहीं होता है, दक्षिणादिशमें दुर्भिक्ष होता है ॥ ५ ॥

सुभिक्षं कार्तिकयुगे कचिद्दुःखं रणान् नृणाम् ।

मार्गशीर्षयुगे देशे जायते परमं सुखम् ॥ ६ ॥

यदि दो, कार्तिक हों तो सुभिक्ष होता है किन्तु राजाओंमें कहीं २ युद्धादिके दुःख होते हैं । दो मार्गशीर्ष हों तो देशमें परम सुख होता है ॥ ६ ॥

पौषयुगे सुभिक्षं च मंगलं नृपतेर्नयः ।

राजदण्डपरो लोको लोके मतिविपर्ययः ॥ ७ ॥

पौष दो हों तो सुभिक्ष होता है, प्रजामें मंगल और राजाओंमें जय होती है । किन्तु राजदंडसे लोकमत्तिका विपर्यय होता है ॥ ७ ॥

मार्गादिपंचमासेषुशुक्लपक्षेतिथिक्षये ।

दौःस्थ्यंवाछत्रभंगोपिजायतेराजविग्रहः ॥ १९ ॥

मार्गशीर्षादि पांच महीनोंके शुक्ल पक्षमें तिथियां टूटें तो लोगोंका स्वास्थ्य बिगड़े राजाओंमें विग्रह हो और छत्रभंगभी हो ॥ १९ ॥

मार्गादिपंचमासेषुतिथिवृद्धिर्निरन्तरम् ।

कृष्णपक्षतदासौर्यंप्रजामारिः प्रवर्तते ॥ २० ॥

यदि मगशिर आदि पांच महीनोंमें बराबर तिथियां बढ़तीही चली जाँय तो स्वास्थ्यका अच्छा सुधार रहे किन्तु कृष्ण पक्षमें मारीभय हो ॥ २० ॥

श्रावणेशुक्लपक्षेचेद्यदाकश्चित्तिथिक्षयः ।

तदाकार्तिकमासेस्याच्छत्रभंगोपिजायते ॥ २१ ॥

श्रावण शुक्लमें कोईभी तिथि टूटे तो कार्तिकमें छत्रभंग हो ॥ २१ ॥

श्रावणकृष्णपक्षस्यप्रतिपदिवसेधृतौ ।

योगेधृतिःस्याद्धान्यस्यशेषयोगेषुविक्रयः ॥ २२ ॥

श्रावण कृष्ण प्रतिपदाको धृति योग हो तो धान्यका सम्ह करना चाहिये और यदि अन्य योग हो तो विक्रय करना चाहिये ॥ २२ ॥

(३) अथ मासे वारफलम् ।

चैत्रेचश्रावणेमासेपंचजीवोयदाभवेत् ।

दुर्भिक्षरौरवंघोरछत्रभंगंनसंशयः ॥ २३ ॥

(३) “महीनोंमें चारोंका फल”—चैत्र और श्रावणके महीनेमें पांच बृहस्पतिवार हों तो घोर दुर्भिक्ष हो तथा छत्रभंग हो ॥ २३ ॥

पंचार्कवासरेरोगाःपंचभौमेभयंमहत् ।

दुर्भिक्षंपंचमंघेषुशेषावाराःशुभप्रदाः ॥ २४ ॥

पांच दीतवार हों तो रोग, मंगल हों तो महाभय, शनिवार हों तो दुर्भिक्ष और सोम शुक्र बुधवार हों तो शुभ होते हैं ॥ २४ ॥

पंचमीश्रावणेहीनासप्तमीभाद्रपदके ।

आश्विनेनवमीनेष्टापौर्णमासीचकार्तिके ॥ १३ ॥

सावनमें पाँचें तिथि टूट जाय, भादवेमें सातें टूट जाय और आसोजमें नौमी तथा कार्तिकमें पूनम टूटे तो नेष्ट है ॥ १३ ॥

भाद्रपदपौषयुगेसितपक्षेपततितितिथिस्तस्याः ।

द्विगुणदिनैर्नृपमरणंयदिवादुर्भिक्षमतिरौद्रम् ॥ १४ ॥

भादवेमें और पौषमें शुक्ल पक्षकी जितनी तिथि घटें उनसे दुगुने दिनोंमें राजाका मरण और अतिरौद्र दुर्भिक्ष होता है ॥ १४ ॥

यस्यमासेशुक्लपक्षेतृतीयावाचतुर्थिका ।

पतेत्तदामुद्रघृतंमहर्घचभवेद्भुवि ॥ १५ ॥

जिस मासकी शुक्ल तृतीया वा चतुर्थी घटे तो मूंग धी मईमें ॥ १५ ॥

भाद्रपौषेतथामाघेविशेषेणमहर्घता ।

यन्मासेदशमीछेदस्तदाघृतमहर्घता ॥ १६ ॥

भादवां पौष तथा माघमें जिस मासमें दशमी टूटे उसीमें धीकी विशेष मईगई हो ॥ १६ ॥

श्वेतपक्षेप्रतिपदापंचमीवाचतुर्दशी ।

वर्द्धिताचेत्सुभिक्षायच्छिन्नादुर्भिक्षकारिका ॥ १७ ॥

शुक्ल पक्षमें पड़वा, पाँच चौदस ये बड़ें तो सुभिक्ष और घटे तों दुर्भिक्ष होता है ॥ १७ ॥

चैत्राद्राद्रपदंयावच्छुक्लपक्षेयदात्रुटिः ।

तदाक्वचिन्नोपपत्तिरल्पधान्योदयःकचित् ॥ १८ ॥

चैत्रसे लेकर भादवे तक शुद्धही शुक्ल पक्षमें नव तिथियां टूटें तो कहीं कुछ खेतिपां हों और कहीं कुछ धान्य उत्पन्न हो ॥ १८ ॥

चैत्रशुक्लप्रतिपदिरवौवायुर्विशेषतः ।

अल्पवृष्टिफलंतुच्छमल्पधान्यंप्रजायते ॥ ३१ ॥

यदि चैत्र शुक्ल प्रतिपदाको रविवार हो तो पवन अधिक चले और धान्य, वर्षा तथा फल कम हों ॥ ३१ ॥

चन्द्रेष्वहुजलंधान्यंतृणानां बहुलोदयः ।

ईतयःसप्तधाभौमेपीडादुःस्वपराभवाः ॥ ३२ ॥

चैत्र शुक्ल प्रतिपदाको चन्द्रवार हो तो जल घास और वर्षा बहुत हो । यदि उस दिन मंगलवार हो तो सात भांतिकी ईति उत्पन्न हो अर्थात् (१) अत्यंत वर्षा हो (२) बिलकुलही न हो (३) दीही दल आवें (४) मूषे अधिक हों (५) चिड़ी कमेड़ी कबूतर आदि पक्षी अधिक हों (६) कान्हा गजाई हों (७) और रोली आदि लगजाय ॥ ३२ ॥

बुधेचमध्यमेवर्षसुभिसंतुगुरोभृगौ ।

शनौधान्यतृणरसाजलशोषःप्रजायते ॥ ३३ ॥

बुध हो तो मध्यम वर्ष हो, शुक और बृहस्पति हों तो सुभित हो और शनिवार हो तो रस घास और खेतीका नाश तथा जलका शोष हो ॥ ३३ ॥

चैत्रेवैचाष्टमीमध्येसौम्योवाथभवेत्कुजः ।

विरूपवर्षजानीहिनदीतीरेगृहंकुरु ॥ ३४ ॥

यदि चैत्रकी अष्टमीको बुधवार या मंगलवार हो तो उस वर्षको विरूप जानना । उसमे जल नहीं वर्षता है और नदी किनारे घर बांध लेना अच्छा है ॥ ३४ ॥

वैशाखस्यचतुर्दश्यांवारोचेद्गुरुभार्गवौ ।

तदानिष्पद्यतेधान्यंविपुलंपृथिवीतले ॥ ३५ ॥

एकमासेरवेर्वाराःपंचनस्युःशुभावदाः ।

चन्द्रजीवौयदापंचधान्यादीनांसमर्घता ॥ २५ ॥

किस्तीभी एक महीनेमें पांच दीतवार हों तो शुभ नहीं होते हैं ।

सोम और गुरुवार पांच हों तो धान्य सस्ता होता है ॥ २५ ॥

मंगलेघ्नियेतेराजाप्रजावृद्धिस्तुभार्गवे ।

बुधेरसक्षयोभूम्यांदुर्भिक्षंतुशनैश्वरे ॥ २६ ॥

पांच मंगलवार हों तो खुशिया मरे, पांच शुक्रवार हों तो प्रजावृद्धि हो। बुध हों तो रसक्षय हो और पांच शनिवार हों तो महुँगाई हो २६

मासाद्यदिवसेसोमसुतवारोयदाभवेत् ।

धान्यमहर्घत्रीन्मासान्भावेवर्षेहिदुःखकृत् ॥ २७ ॥

मासके प्रथम दिनमें बुधवार हो तो तीन महीने अन्न महुँगाहो २७

पंचार्कयोगोवैशाखेवृष्टिर्भविनाशकः ।

पंचभौमेभयंवहेवृष्टिरोधस्तुकुत्रचित् ॥ २८ ॥

वैशाखमें पांच दीतवार हों तो वर्षाके गर्भको विगाड़ते हैं । और पांच मंगलवार हों तो अग्निका भय हो तथा कहीं वर्षामें देरी हो २८

प्रतिपत्सर्वमासेषुबुधेदुर्भिक्षकारिणी ।

ज्येष्ठमासेविशेषेणवृष्टिर्भगायजायते ॥ २९ ॥

प्रत्येक मासकी पड़वाको बुधवार हो वो दुर्भिक्ष करता है, विशेष करके जेठके महीनेमें बुरा है क्योंकि उससे वर्षाकी हानि होती है २९

आषाढेकार्तिकेमासेफाल्गुनेपिचदेवतः ।

जायतेपंचभौमाश्चपंचमासास्तदाशुभाः ॥ ३० ॥

आषाढ-कार्तिक और फाल्गुनमें पांच मंगलवार हों तो शुभ होते हैं ॥ ३० ॥

चैत्रशुक्लप्रतिपदिरवौवाशुर्विशेषतः ।

अरुपवृष्टिफलंतुच्छमरुपधान्यंप्रजायते ॥ ३१ ॥

यदि चैत्र शुक्ल प्रतिपदाको रविवार हो तो पवन अधिक चले और धान्य, वषां तथा फल कम हों ॥ ३१ ॥

चन्द्रेबहुजलंधान्यंतृणानांबहुलोदयः ।

ईतयःसप्तधाभौमेपीडादुःखपराभवाः ॥ ३२ ॥

चैत्र शुक्ल प्रतिपदाको चन्द्रवार हो तो जल घास और वषां बहुत हो । यदि उस दिन मंगलवार हो तो सात भांतिकी ईति उत्पन्न हो अर्थात् (१) अत्यंत वर्षा हो (२) बिलकुलही न हो (३) टीडी दल आवें (४) मूषे अधिक हों (५) चिढ़ी कमेड़ी कबूतर आदि पक्षी अधिक हों (६) कात्ता गजाई हों (७) और रोली आदि लगजाय ॥ ३२ ॥

बुधेचमध्यमेवर्षसुभिसंतुगुरोभृगौ ।

शनौधान्यतृणरसाजलशोषःप्रजायते ॥ ३३ ॥

बुध हो तो मध्यम वर्ष हो, शुक्र और बृहस्पति हों तो सुभिस हो और शनिवार हो तो रम घास और खेतीका नाश तथा जलका शोष हो ॥ ३३ ॥

चैत्रेवैचाष्टमीमध्येसौम्योवाथभवेत्कुजः ।

विरूपवर्षजानीहिनदीतीरेगृहंकुरु ॥ ३४ ॥

यदि चैत्रकी अष्टमीको बुधवार या मंगलवार हो तो उस वर्षको विरूप जानना । उसमें जल नहीं वर्षता है और नदी किनारे घर बांध लेना अच्छा है ॥ ३४ ॥

वैशाखस्यचतुर्दश्यांवारोचेद्गुरुमार्गवौ ।

तदानिष्पद्यतेधान्यंविपुलंपृथिवीतले ॥ ३५ ॥

वैशाखकी चौदशको यदि गुरु, शुक्रवार हो तो पृथ्वीपर बहुत अन्न होता है ॥ ३५ ॥

ज्येष्ठस्यप्रथमेपक्षेयातिथिःप्रथमाभवेत् ।

आगताकेनवारेणतमन्वेषययत्नतः ॥ ३६ ॥

ज्येष्ठ कृष्ण प्रतिपदाको कौन वार होगा इसका विचार करना चाहिये ३६

मानुनापवनोवातिकुजोव्याधिकरोमतः ।

सोमपुत्रेणदुर्भिक्षंखण्डवृष्टिःप्रजायते ॥ ३७ ॥

यदि दीप्तवार हो तो पवन चले, मंगल हो तो उर्वंगल करे, बुध हो तो खंड वृष्टि तथा महंगाई करे ॥ ३७ ॥

शुरुभार्गवसोमानामेकोपियदिजायते ।

वर्षावधितदापृथ्वीधनधान्यसमाकुला ॥ ३८ ॥

सोम शुक्र बृहस्पतिमेंसे कोई हो तो चौमासे तक पृथ्वीपर बहुत दान धान्य इकट्ठे होजाय ॥ ३८ ॥

अथवादैवयोगेनशनिवारोभवेद्यदि ।

जलशोषःप्रजानाशश्छत्रभंगस्तदा भवेत् ॥ ३९ ॥

यदि दैव योगसे केही पढवाको शनिवार हो तो जल शोष, प्रजा नाश एवं छत्रभंग हो ॥ ३९ ॥

आषाढमासेसितपंचमीदिनेरव्यादिवारःक्रमशः

फलानि । वृष्टिःसुवृष्टिर्हतिवृष्टिरूर्ध्ववातः प्रवातः

प्रलयःप्रणाशः ॥ ४० ॥

आषाढ शुक्ल पंचमीको सूर्यवार हो तो वृष्टि-सोम हो तो सुवृष्टि मंगल हो तो आति-वृष्टि, बुध हो तो पवन, गुरु हो तो भारी वृष्टान, शुक्र हो तो भारी वृष्टान और शनिवार हो तो नाशकारक हवा सम्बन्धी और उत्पात हों ॥ ४० ॥

आषाढषष्ठीदिवसेकृष्णपक्षेशनिर्यद

तदागोधूमकाग्राह्याद्विगुणायस्तुकार्तिके ॥ ४१ ॥

आषाढ बड़ी छठ को शनिवार हो तो गेहूं इकट्ठे करने चाहिये ।
कात्तिकमें उनसे दुगुना लाभ हो ॥ ४१ ॥

आषाढस्याप्यमावस्यायदिसोमवतीभवेत् ।

सुभिक्षंकुरुतेवश्यंनक्षत्रेनृगसर्पके ॥ ४२ ॥

आषाढी अमावस सोमवारी हो और मृगशिर आदि सात नक्ष-
त्रोंमेंसे कोई नक्षत्र हो तो अवश्य सस्ती होती है ॥ ४२ ॥

श्रावणेकृष्णपक्षेचप्रतिपद्गरुयोगतः ।

मुद्रामाषास्तिलास्तैलंमद्वर्षशीघ्रमादिशेत् ॥ ४३ ॥

श्रावण बड़ी पड़वा गुरुवार हो तो मूंग उड़द तिल तेल यह जल्दीही
महेंगे होते हैं ॥ ४३ ॥

श्रावणेनवमीयुक्तःशनिः संतापकारकः ।

छत्रभंगविजानीयादाश्विनांतेनसंशयः ॥ ४४ ॥

श्रावणकी नौमी शनिवार हो तो संताप करती है और आश्विनके
अन्तमें छत्रभंग होता है ॥ ४४ ॥

दशम्यांश्रावणेसिंहेरविःसंक्रमतेशनौ ।

महीस्याजलदैःपूर्णातदास्याद्धान्यसंपदः ॥ ४५ ॥

श्रावणकी दशमीको सूर्य संक्रांतिके दिन शनिवार हो तो पृथ्वी
पर जलकी अधिकता और अन्नकी वृद्धि हो ॥ ४५ ॥

वैशाखकृष्णपक्षस्वपंचम्यांजायतेरविः ।

आगामिवर्षसंक्रान्तौतद्दिनेवृष्टिबाधकः ॥ ४६ ॥

वैशाख बड़ी पांचे रविवार हो तो आगामी वर्षकी सक्रांतिके उट
दिन वृष्टिको रोकता है ॥ ४६ ॥

वैशाखी अमावसको भरणी हो तो व्याधि हो, कृत्तिका हो तो जल
कम वर्षे और रास्तोंमें छूटेरे लूटते रहैं तथा राजाओंमें परस्पर युद्ध हो ॥ ५७ ॥

तृतीयायामक्षयायांरोहिणीगुरुणासह ।

सर्वधान्यस्यनिष्पत्तिर्भुविमंगलकर्मच ॥ ५८ ॥

अक्षय तृतीयाको रोहिणी गुरुवार हो तो सब धान्य पैदा हो
और मंगल हों ॥ ५८ ॥

ज्येष्ठशुक्लतृतीयायांद्वितीयायांप्रजायते ।

नक्षत्रमाद्रातद्वृष्टीमहादुर्भिक्षकारणम् ॥ ५९ ॥

ज्येष्ठ सुदी दोयज वा तीजको आद्रा हो और उत्तमें वर्षा हो तो
दुर्भिक्ष करे ॥ ५९ ॥

ज्येष्ठकृष्णदशम्यांचरेवतीसुखकारिणी ।

एकादश्यांखण्डवृष्टिर्द्वादश्यांसानुकृष्टदा ॥ ६० ॥

जेठ कृष्ण दशमीको रेवती हो तो सुख हो एकादशीमें रेवती हों
तो खण्ड वृष्टि हो और द्वादशीमें रेवती हो तो कष्ट हो ॥ ६० ॥

शुक्लेज्येष्ठदशम्यांचशनिवारःप्रजायते ।

वृष्टिरोधोगवांनाशोमहाशोकाकुलाप्रजा ॥ ६१ ॥

ज्येष्ठ शुक्ल १० को शनिवार हो तो वृष्टिमें गेह लगे, गायें मरें
और प्रजामें शोक हो ॥ ६१ ॥

यावतीभुक्तिरापाडेशुक्लायांप्रतिपदिने ।

पुनर्वस्वोश्चतुर्मास्यांवृष्टिःस्यात्तावतीस्फुटम् ॥ ६२ ॥

आपाठ शुक्ल प्रतिपदामें पुनर्वसु नक्षत्र जितनी घड़ी भोगे उत्तरी-
ही वर्षा चौमासेमें हो ॥ ६२ ॥

आपाठेदशमीकृष्णासुभिक्षायचरोहिणी ।

एकादश्यामध्यकालेदुर्भिक्षंद्वादशीभवेत् ॥ ६३ ॥

आषाढ कृष्ण १० को रोहिणी हो तो शुभिक्ष करती है । एका-
दशीमें हो तो मध्यम और चारसमें हो तो दुर्भिक्ष करती है ॥ ६३ ॥

त्रयोदश्यांरोहिणीचैदुत्तमःपवनस्तदा ।

चतुर्दश्यांराजयुद्धंमृजाशोकाकुलतदा ॥ ६४ ॥

त्रयोदशीमें रोहिणी हो तो उत्तम पवन चले और चतुर्दशीमें राज
युद्ध तथा मृजामें शोक हो ॥ ६४ ॥

आषाढशुक्लनवमीसानुराधाशनीयदा ।

कचिद्धान्यार्द्धनिष्पत्तिःकचिद्दुर्भिक्षकारिका ॥ ६५ ॥

आषाढ शुद्ध नौमी (भद्रह्या नौमी) अनुराधा शनिवार युक्त
हो तो कहीं धान्यकी कुछ उत्पत्ति और कहीं कुछ दुर्भिक्ष हो ॥ ६५ ॥

आषाढेप्रथमेपक्षेप्रथमादितिथित्रये ।

श्रवणंवाधनिष्ठास्यात्तदान्नसंग्रहःशुभः ॥ ६६ ॥

आषाढ कृष्ण पड़वा, दोयज, तीजको श्रवण वा धनिष्ठा हो तो
अन्न संग्रह करना शुभ है ॥ ६६ ॥

आषाढेशनिरेवत्यामष्टम्यासंगतोयदा ।

तदावृष्टिनिरोधेनकष्टमुत्कृष्टमादिशेत् ॥ ६७ ॥

आषाढमें अष्टमीको शनिवार रेवती नक्षत्र हो तो बपकि न होनेसे
ढोंगोंको उत्कृष्ट कष्ट हो ॥ ६७ ॥

आषाढेऋकसंक्रान्तांशनिवारोयदाभवेत् ।

तदादुर्भिक्षमादेश्यंधान्यस्यापिमहर्घता ॥ ६८ ॥

आषाढमें ऋक संक्रांतिके दिन शनिवार हो तो धान्य महर्घा हो
और दुर्भिक्ष हो ॥ ६८ ॥

चतुर्दश्यांतथाषाढेसोमवारप्रवर्तनात् ।

नधान्यंनतृणंलोकेकिंवादेःप्रयोजनम् ॥ ६९ ॥

आषाढमें चौदशको सोमवार होनेसे न धान्य हो और न घास हो, अतः गवादीकोंके रखनेका भी उस समय प्रयोजन नहीं ॥६९॥

आषाढप्रथमेपक्षेद्वितीयानवमीतिथौ ।

शुर्विंदुशुक्रवाराःस्युःश्रेष्ठानेष्टोबुधःशनिः ॥ ७० ॥

आषाढ कृष्ण द्वितीया तथा नौमीको गुरु, सोम, शुक्रवार हों तो श्रेष्ठ और बुध, शनिवार हों तो नेष्ट हैं ॥ ७० ॥

आषाढशुद्धैकादश्यांशन्यादित्यकुजैःसमम् ।

संपूणस्तिथिभागश्चैतदादुर्भिक्षमादिशेत् ॥ ७१ ॥

आषाढ शुद्ध एकादशीको शनि, सूर्य, मंगलवार हों तो सम है किन्तु यदि यह तिथिके सम्पूर्ण भागमें हो तो दुर्भिक्ष हो ॥ ७१ ॥

आषाढपूर्णिमाषष्टिघटीमानायदाभवेत् ।

मासाद्वादशधान्यानांसुभिक्षंचसुखंजने ॥ ७२ ॥

आषाढी पूर्णिमा साठ घड़ी हो तो बारह महीने तक धान्यकट्ट सुभिक्ष रहे ॥ ७२ ॥

त्रिंशद्वघटीभिःषणमासात्सुखंदुःखंततःपरम् ।

चातुर्मास्यंपंचदशघटीमानेसुभिक्षतां ॥ ७३ ॥

तीस घड़ी हो तो छः महीने सुख और पीछे दुःख रहे । और ३६ घड़ी हो तो चौमासे भर सुभिक्ष रहे ॥ ७३ ॥

न्यूनत्वेतुपंचदशघटीभ्योदुःखसंभवः ।

वातवादलसंयोगात्फलेन्यूनाधिकाश्रयः ॥ ७४ ॥

यदि पन्द्रह घड़ीसे भी आषाढी पूनम कम हो तो दुःखकी संभावना हो। वायु और बादलके संयोगसे फलोंमें न्यूनाधिकता हो ॥ ७४ ॥

मासाभिधाननक्षत्रंराकायांशीयतेयदि ।

महर्षत्वंतदानूनवृद्धौज्ञेयासमर्षता ॥ ७५ ॥

यदि पूर्णिमाको महीनेका नक्षत्र (यथा आषाढमें पूर्वाषाढ, श्रावणमें श्रवण, भाद्रपदमें पूर्वाभाद्रपद और आश्विनमें आश्विनी इत्यादि) दृष्ट जाँय तो मढ़ंगाई, और बढ जायँ तो संस्ती होती है ॥ ७५ ॥

मासनामकनक्षत्रराकायानभवेद्यदा ।

महर्घचतदावक्ष्यंततद्योगविशेषतः ॥ ७६ ॥

और यदि पूर्णिमाको मास नक्षत्र बिलकुलही न हो तो उसके योग विशेषसे अवश्य महर्घता होती है ॥ ७६ ॥

ऋक्षवृद्धौरसाधिक्यंकणाधिक्यंचनिश्चितम् ।

योगाधिक्येरसच्छेदोदिनार्धप्रत्यहंस्फुटः ॥ ७७ ॥

योग यह है कि यदि नक्षत्र बढे तो रस अधिक हों और कण (अन्न) अधिक हों । और योग बढे तो रस क्षय हो ॥ ७७ ॥

मृगादिपंचकेराकाधान्येमहर्घतावदेत् ।

मघाचतुष्टयेपूर्णाकुर्याद्धान्यसमर्घताम् ॥ ७८ ॥

पूर्णिमाको मृगादि पांच नक्षत्रोंमें महर्घता और मघादि चारमें पूरी समर्घता हो ॥ ७८ ॥

राकाचित्राष्टकेयुक्तादुर्भिक्षात्कष्टकारणी ।

श्रवणाद्रोहिणीयावन्नक्षत्रैः पूर्णिमाशुभा ॥ ७९ ॥

पूर्णिमा चित्रादि आठमेंसे किसीसे युक्त हो तो दुर्भिक्षसे कष्ट करती है । और श्रवणसे रोहिणी तकके नक्षत्रोंमेंसे किसीसे युक्त हो तो वह पूर्णिमा शुभ फल देती है ॥ ७९ ॥

आर्द्राचतुष्टयेसूर्यवारेपूर्णार्थनाशिनी ।

मघाचतुष्टयेसोमेष्याधान्यमहर्घकृत् ॥ ८० ॥

सूर्यवार और आर्द्रादि चारमेंसे किसीसे युक्त पूर्णिमा हो तो व्यर्थ नाश करती है । सोमवार तथा मघादि चारमेंसे युक्त हो तो धान्य मढ़ंगा करती है ॥ ८० ॥

चित्राष्टकेभौमवारपूर्णिमाव्याधिवर्द्धिनी ।

दुर्भिक्षायशनौशेषावारर्क्षेषुशुभावहा ॥ ८१ ॥

भौमवार तथा चित्रादि आठमसे युक्त हो तो वह पूनम व्याधि पड़ती है। शनिवार युक्त हो तो दुर्भिक्ष और शेषवार तथा नक्षत्रसे युक्त हो तो शुभ होती है ॥ ८१ ॥

कृत्तिकाश्रावणेकृष्णैकादश्यामध्यमाभवेत् ।

सुभिक्षंरोहिणीकुर्यादुर्भिक्षंमृगशीर्षिनः ॥ ८२ ॥

श्रावण कृष्ण एकादशीको कृत्तिका हो तो मध्यम रोहिणी हो तो सुभिक्ष और मृगशीर्ष हो तो दुर्भिक्ष हो ॥ ८२ ॥

द्वादश्यांश्रावणेकृष्णेमघाचेद्रात्रिगोचरा ।

तत्राभ्रेजलवृष्टौवाजलयोगस्तदामहान् ॥ ८३ ॥

श्रावण कृष्ण द्वादशीको रातमें मघा हो और उसमें बादल तथा जल वृष्टि हो तो बड़ा जल योग होता है ॥ ८३ ॥

श्रावणस्यत्रयोदश्यांरेवत्यारवियोगतः ।

बहुधान्यविवस्तूनिजायन्तेवसुधातले ॥ ८४ ॥

श्रावणकी तेरसको रेवती नक्षत्र रविवार हो तो बहुत धान्य और बहुत वस्तु हों ॥ ८४ ॥

शनौश्रावणसप्तम्यांजलपूर्णावसुंधरा ।

श्रावणस्यचतुर्दश्यामार्द्रायामन्नसंग्रहः ॥ ८५ ॥

श्रावणकी सप्तमीको शनिवार हो तो पृथ्वी जल पूर्ण हो । और श्रावणकी चतुर्दशीको आर्द्रा हो तो अन्न संग्रह करनेकी आवश्यकता हो ॥ ८५ ॥

श्रावणस्यत्वमावस्यांपुण्याश्लेषामघायदि ।

मध्यमंवर्षमादेश्यंवृष्टिर्नमहतीतदा ॥ ८६ ॥

श्रावणकी अमावसको पुष्य आश्लेषा मवा हो तो मध्यमे वर्ष जानना । क्योंकि उसमें बहुत वर्षा नहीं होती है ॥ ८६ ॥

विशाखाद्यष्टकेदशोदुर्भिक्षं बहुधास्मृतम् ।

सुभिक्षमेकादशकेवारुणाद्येपुरोहितम् ॥ ८७ ॥

उसी अमावसको विशाखादि आठ नक्षत्रोंमेंसे हो तो दुर्भिक्ष और शतभिषादि ग्यारहमेंसे हो तो सुभिक्ष जानना ॥ ८७ ॥

अमावस्यां मध्यवर्षं भवेत्पुष्यचतुष्टये ।

शनिःसूर्यः कुजोदशेऽप्यनन्तरमरिष्टकृत् ॥ ८८ ॥

अमावसमें पुष्यादि चार नक्षत्रोंमेंसे हो तो मध्यमः वर्ष और शनि सूर्य मंगलवारसेभी युक्त हो तो अनन्त, अरिष्टकारी अमावस होती है ॥ ८८ ॥

पार्वणीयदि रौद्रास्यादादित्यः प्रतिपत्तिथौ ।

द्वितीया पुष्यसंयुक्ता जलधान्यं तृणं न च ॥ ८९ ॥

अमावस और प्रतिपदामें आर्द्रा और दीतवार हो और द्वितीया पुष्य युक्त हो तो अन्न जल घास नहीं हों ॥ ८९ ॥

अमावस्यादिने योगः पुनर्वस्वादिपंचके ।

समर्धमयदुर्भिक्षमुत्तरादिचतुष्टये ॥ ९० ॥

अमावस्याके दिन यदि पुनर्वसु आदि पांचमेंसे हो तो समर्ध और उत्तरादि चारमेंसे हो तो दुर्भिक्ष (मर्ध) जानना ॥ ९० ॥

विशाखाद्यष्टके कृष्णारुणादौ जने सुखम् ।

रुचिरेकेचनाचार्या दर्शनसत्रजं फलम् ॥ ९१ ॥

विशाखादि आठमें कृष्ण और शतभिषादिमें मनुष्योंको सुख हो । यह नक्षत्र जनिष्ठ अमावस फल कई एक आचार्योंने कहा है ॥ ९१ ॥

श्रावणेशुकुम्भम्यां स्वातियोगः सुभिक्षकृत् ।

श्रवणं पूर्णिमायां स्वाहान्ये रात्रिनाः प्रजाः ॥ ९२ ॥

श्रावण शुक्ल सप्तमीको स्वाति नक्षत्र हो तो शुभ होता है। श्रावणी पूर्णिमाको श्रवण हो तो इतना अन्न हो कि उससे प्रजा प्रसन्न हो जाय ॥ ९२ ॥

प्रथमायांतिथौभाद्रेगुरौश्रवणसंयुते ।

अभंगंजायतेवर्षधनधान्यादिसम्पदः ॥ ९३ ॥

भाद्रपद कृष्ण प्रतिपदाको बृहस्पतिवार तथा श्रवण हो तो वह वर्ष नहीं बिगड़ता है क्योंकि उसमें धन धान्यादि सम्पत्तियां हो जाती हैं ॥ ९३ ॥

भाद्रपदासिताष्टम्यारोहिणीशुभदायिनी ।

नवमीभाद्रशुक्लस्यरवौमूलेभयंकरी ॥ ९४ ॥

भाद्रपद कृष्णाष्टमी रोहिणी युक्त हो तो शुभ देती है। भाद्रपद सुदी नौमी दीतवार मूल नक्षत्र हो तो यह भयकारी है ॥ ९४ ॥

एकादशीभाद्रशुक्लेमूलेदिनकृतायुता ।

मेघेनवत्सरेसौख्यंलोकंव्याधिर्विबाधते ॥ ९५ ॥

भाद्रपद सुदी ११ दीतवार मूल नक्षत्र हो तो वर्षमें मेहका सुख नहीं हो और लोगोंको विशेष व्याधियोंसे बाधा हो ॥ ९५ ॥

भाद्रेशुक्लद्वितीयायांद्रितीयवारयोगतः ।

धान्यनिष्पत्तिरतुलासंपदःस्युश्वतुष्पदे ॥ ९६ ॥

भाद्रपद सुदी दोयज सोमवार हो तो बहुत धान्य उपजे और म्चीपायें बहुत बढ़ें ॥ ९६ ॥

शनौभाद्रपदेकृष्णाचतुर्थीयदिजायते ।

देशभंगश्चदुर्भिक्षंस्वस्थस्योदरपूरणम् ॥ ९७ ॥

भाद्रपद वदी चौथ शनिवार हो तो देश भंग तथा दुर्भिक्ष हो और स्वस्थ पुरुष पेट भर सकें ॥ ९७ ॥

नवम्यां स्वातिसंयोगे भाद्रमासे सिते यदा ।

तदा सुखमयी भूमिर्घृतधान्यसमन्विता ॥ ९८ ॥

भाद्रमा सुदी नौमीको स्वाति हो तो पृथ्वीपर घी और अन्न बहुत हो ॥ ९८ ॥

भाद्रशुक्लचतुर्थ्याचे द्वाराजीवेन्दुभार्गवाः ।

उत्तराहस्तचित्राभिः सुभिक्षं निश्चयात्तदा ॥ ९९ ॥

भाद्रमा सुदी चौथको गुरु शुक्र सोमवार हो और उत्तरा हस्त चित्रासे संयुक्त हो तो सुभिक्ष हो ॥ ९९ ॥

भाद्रमासे तृतीयायां भौमे चोत्तरफाल्गुनी ।

तदा वृष्टिकरो नैव प्रोन्नतोऽपि घनावनः ॥ १०० ॥

भाद्रमा सुदी ३ मंगलवार उत्तराफाल्गुनी हो तो बड़े बादलोंकी घटा चढे तौभी वर्षा नहीं हो ॥ १०० ॥

भाद्रमासे त्वमावस्यां रवौ घृतमहर्षता ।

धान्यं महर्षं भौमज्ञेशनौ तैलं विनिर्दिशेत् ॥ १०१ ॥

भाद्रमाकी अमावस दीतवारी हो तो घी महंगा हो । मंगल बुध हो तो धान्य महंगा हो और शनिवारी हो तो तेल महंगा हो ॥ १०१ ॥

जनानां बहुलाः क्लेशा राजा दुःखैः प्रपीड्यते ।

अमावस्यादिने सूर्यः सन्तापायार्थं नाशनात् ॥ १०२ ॥

अमावसको यदि दीतवार हो तो सन्ताप, अर्थ नाश, हेश, और राजदुःखकी पीड़ा हो ॥ १०२ ॥

सुभिक्षं क्षेममारोग्यं वर्षायाः प्रबलोदयः ।

सस्योत्पत्तिः प्रजासौख्यं सोमवारे प्रवर्तते ॥ १०३ ॥

सोमवारी अमावस हो तो सुभिक्ष क्षेम आरोग्य वर्षाका प्रबल उदय-धान्यकी उत्पत्ति और प्रजा सुख हो ॥ १०३ ॥

राज्यभ्रंशो राजयुद्धं क्लेशानां च प्रवर्द्धनम् ।

उपघातो ल्पवृष्टिश्च क्षयश्चार्थस्य भूमिजे ॥ १०४ ॥

मंगलवारी हो तो राज्यभ्रंश, राजयुद्ध-क्लेशोंकी वृद्धि-उपघात-
अल्पवृष्टि और द्रव्योंकी हानि हो ॥ १०४ ॥

दुर्भिक्षं राज्यनाशश्च प्रजानां दुःखभाजनम् ।

स्थानत्यागो धान्यमल्पं बुधवारं प्रवर्तते ॥ १०५ ॥

बुधवारी हो तो दुर्भिक्ष-राज्यनाश-प्रजाको दुःख-स्थानत्याग-
और कम धान्य हो ॥ १०५ ॥

सदा वृष्टिः सुभिक्षं च कल्याणं दुःखनाशनम् ।

आरोग्यं च प्रजाः स्वस्था गुरुवारं समादिशेत् १०६ ॥

गुरुवारी अमावस हो तो सदा वृष्टि तथा सुभिक्ष हो कल्याण हो
दुःखका नाश हो । आरोग्य रहे और प्रजा स्वस्थ हो ॥ १०६ ॥

भृशं जलोद्धता मेघाः कृषीणां भूर्युपद्रवाः ।

तस्करोपद्रवानित्यं शुक्रेणामावसीदिने ॥ १०७ ॥

शुक्रवारी हो तो उद्धत मेघोंसे जलभ्रंश हो और खेतीमें बहुत
उपद्रव हों । तथा चौरोंके उपद्रव भी नित्य रहें ॥ १०७ ॥

दुर्भिक्षं रौरवं घोरं महादुःखं महद्भयम् ।

पराङ्मुखाः पितुः पुत्राव्यसनं शनिवासरे ॥ १०८ ॥

यदि शनिवारी अमावस हो तो घोर रौरव समान दुर्भिक्ष होकर
महादुःख तथा महाभय हो पिता पुत्रोंमें पराङ्मुखता हो ॥ १०८ ॥

भाद्रपदशुक्लपष्ठ्यामनुराधायदा भवेत् ।

नक्षत्रान्तरदोषे पिहीने हीनत्वमाप्नुयात् ॥ १०९ ॥

भाद्रपद सुदी छठको अनुराधा हो तो श्रेष्ठ और नहीं हो तो हानि
॥ १०९ ॥

आश्विनेप्रथमायांचेच्छुकायांशनिरागते ।

तदाधान्यंचविक्रेयंपुरस्तस्यमहर्घता ॥ ११० ॥

आसोज सुदी पडवाको शनिवार हो तो संग्रहीत धान्यको बेंच देना चाहिये ॥ ११० ॥

आश्विनेद्वितीयायांयदिभौमःशनैश्चरः ।

तदाग्निःप्रचलोभूम्यामन्नादीनामहर्घता ॥ १११ ॥

आश्विन शुद्ध तीजको यदि मंगल वा शनिवार हो तो पृथ्वीपर सबल अग्निके उत्पात हों और अन्नादिकी महंगाई हो ॥ १११ ॥

चतुर्थ्यामाश्विनेसूर्येविक्रेतव्यघृतजनेः ।

संगृह्यंतेचधान्यानिपुरोलाभायतान्यपि ॥ ११२ ॥

आसोजसुदी चौथको दीतवार हो तो पहलेका इकट्ठा किया हुआ धान और अन्न बेंच देना चाहिये क्योंकि उसमें लाभ होता है ॥ ११२ ॥

आश्विनेशुकुसुप्तम्यांसोमेहस्तसमागमे ।

गन्तव्यंमालवस्थानेनिर्जलाजलदायिनी ॥ ११३ ॥

आमोज सुदी सार्ते सोमवार हस्त नक्षत्र हो तो माखाड़ छोड़ कर मालवेमें चला जाना चाहिये क्योंकि वहाँ निर्जलशालोंको जल दे सकता है ॥ ११३ ॥

सप्तम्यांशनियुक्तायांसितेपक्षेयदाश्विने ।

श्रवणंवाधनिष्ठाचेज्जगतोनाशकारणम् ॥ ११४ ॥

आसोज सुदी सार्ते शनिवार श्रवण या धनिष्ठा युक्त हो तो जगत्के नाशका कारण हो ॥ ११४ ॥

आश्विनेचबुधेष्टम्यांविधेयोघृतसंग्रहः ।

कार्तिकेविक्रयस्तस्यसंपदःस्युःपदेपदे ॥ ११५ ॥

आमोजकी आठ बुधवार हो तो धाँ इकट्ठा करके कार्तिकमें बेचे तो पद पद पर सम्पदा मिलती है ॥ ११५ ॥

नवम्यामाश्विनेशुक्लेकुजवारेणसंगतौ ।

शुद्धःकार्पासचपलामाषादेःसंग्रहोमतः ॥ ११६ ॥

द्विगुणस्तुभवेलाभोचैत्रमासेथविक्रये ।

आश्विनेदशमीभौमेभूम्यांव्याधिरबाधितः ११७॥

आसोजसुदी नौमीको मंगलवार हो तो बारंबार और जल्दी जल्दी कपासादि संग्रह करनी चाहिये उससे चैत्रमें बँचनेसे दूना लाभ होता है । आसोजसुदी दशमी मंगलवार हो तो पृथ्वीमें व्याधि उत्पन्न होती है ॥ ११६ ॥ ११७ ॥

एकादश्यांशनौतस्मिंश्छत्रभंगोथवाभुवि ।

नगरग्रामभंगःस्याद्वैरिचौराद्युपद्रवः ॥ ११८ ॥

उसी एकादशीको शनिवार हो तो छत्रभंग तथा नगर और ग्रामादिका भंग और वैरी तथा चौरादिके उपद्रव होते हैं ॥ ११८ ॥

तृतीयारोहिणीयोगेवारयोःशनिभौमयोः ।

तदाकार्पासिकं ग्राह्यं फाल्गुनेलाभमादिशेत् ॥ ११९ ॥

आसोजकी तीजमें रोहिणी और शनि तथा मंगलवार हो तों कपास संग्रह करके फाल्गुणमें बँचनेसे लाभ होता है ॥ ११९ ॥

आश्विनेकृष्णपंचम्यांरविवारःप्रवर्तते ।

माघमासेह्यमावस्यामहर्धनिश्चयाद्घृतम् ॥ १२० ॥

आसोज वदी पांचै रविवार हो तो माघकी अमावस पर घी निश्चय सहंगा हो ॥ १२० ॥

पष्ठ्यामथाश्विनेज्येष्ठादित्यमूलाभिसंगमे ।

संग्रहस्सर्वधान्यानांपंचमासिफलं लभेत् ॥ १२१ ॥

यदि आश्विनकी छठ रविवार और ज्येष्ठा तथा मूलसे युक्त हो तो सब धान्य संग्रह करनेसे ५ मासमें लाभ होता है ॥ १२१ ॥

आश्विनैकादशीकृष्णावारयोर्बुधसोमयोः ।

महिषीणांगवामूल्यमहत्संजायतेजने ॥ १२२ ॥

आश्विन कृष्ण एकादशीको बुध या सोमवार हो तो गाय भैंस
महँगी हों ॥ १२२ ॥

द्वादशीशनिनायुक्ताहस्तचित्रासमन्विता ।

तदायुगन्धरीग्राह्याचैत्रेवैत्रिगुणफलम् ॥ १२३ ॥

तथा बारस शनिवार हस्त चित्रा युक्त हो तो युगंधरी संग्रह
करके चैत्रमें वैचनेसे त्रिगुणा लाभ होता है ॥ १२३ ॥

आश्विनस्याप्यमावस्यांशनिवारोयदाभवेत् ।

मध्यमंवर्षमथवादुष्कालःखण्डमण्डले ॥ १२४ ॥

आश्विनकी अमावसको शनिवार हो तो मध्यम वर्ष हो और खंड
मंडलमें अकाल हो ॥ १२४ ॥

कार्तिकेप्रथमेपक्षेप्रथमाबुधसंयुता ।

जायतेमध्यमावृष्टिरनावृष्टिःकचिद्भवेत् ॥ १२५ ॥

कार्तिक कृष्ण प्रतिपदा बुधवार हो तो वर्षा मध्यम हो और
कहीं अनावृष्टिभी हो ॥ १२५ ॥

कार्तिकेसप्तमीशुक्लाशनोधान्यार्चनाशिनी ।

श्वेतवस्तुमहर्घस्यात्त्रिमासिद्विगुणफलम् ॥ १२६ ॥

कार्तिक शुक्ल सप्तमी शनिवार हो तो धान्यकी सस्ती दूर करे
और सफेद वस्तु महँगी होकर तीन मास दुगुना लाभ दें ॥ १२६ ॥

कार्तिकेपंचमीरौद्रयोगस्यानृणसंग्रहः ।

चतुष्पदेऽन्यथादुःखंजायतेअल्पवृष्टिजम् ॥ १२७ ॥

कार्तिककी पंचमीको आर्द्रा हो तो घामका संग्रह लाभ दे
और अल्पवृष्टिसे चौपायोंको दुःख हो ॥ १२७ ॥

कार्तिकेदशमीकृष्णाशनौरोगकरीजने ।

रविःकृष्णत्रयोदश्यांयवगोधूममूल्यकृत् ॥ १२८ ॥

कार्तिक कृष्ण दशमी शनिवार हो तो रोग करे और कृष्ण त्रयोदशीको रविवार हो तो जौ गेहूं मूल्यवान् (महँगे हों) ॥ १२८ ॥

कार्तिकेकृष्णदशमीशनौमेघसमन्विता ।

महर्षघृतपूगादिचतुर्मासानुविक्रयः ॥ १२९ ॥

कार्तिक कृष्ण दशमी शनिवारको मेघ हो तो घी सुपारी महँगे हों चार मासमें बेंचनेसे लाभ हो ॥ १२९ ॥ -

कार्तिकेचेदमावस्यांशनिश्चेदन्ननाशनः ।

भौमेभूम्यामहावह्नीरविर्युद्धायभूभुजाम् ॥ १३० ॥

कार्तिकी अमावास्या शनिवारी हो तो अन्न बेज हो । मंगलवारी हो तो महा अभि काण्ड और शिववारी हो तो राजाओंमें युद्ध हो ॥ १३० ॥

मार्गशीर्षेचतुर्थीचेन्मंगलोरेवतीदिने ।

प्रतिग्रामंवाह्निभयंजगत्क्लेशव्यथाभयम् ॥ १३१ ॥

मार्गशीर्षकी चौथी मंगलवारको रेवती हो तो प्रत्येक गाँवमें आग का भय हो और जलका क्लेश तथा व्यथा और भय हो ॥ १३१ ॥

द्वादश्यामार्गशीर्षस्यभौमवारैर्कसंक्रमे ।

भाविर्वर्षविनाशायग्रहणंशीतगोस्तथा ॥ १३२ ॥

मार्गशीर्षकी वारसफी मंगलवारके दिन सूर्य संक्रांति हो अथवा चन्द्रग्रहण हो तो भावी वर्षमें अकाल पड़ता है ॥ १३२ ॥

मार्गेनवम्यांरेवत्यांबुधोदुर्भिक्षकारकः ।

पंचमीगुरुणायोगात्पंचमासान्सुभिक्षदा ॥ १३३ ॥

मार्गशीर्षमें नौमीको रेवती बुधवार हो तो दुर्भिक्ष करता है । और पंचमी गुरुवार हो तो पांच महीने सुभिक्ष होता है ॥ १३३ ॥

मार्गशीर्षप्रतिपदिपुष्ययुक्तेचतुष्पदः ।

जलवृष्ट्यापसंवर्षगर्भसावाद्विनश्यति ॥ १३४ ॥

मार्गशीर्षकी प्रतिपदाको पुष्य हो तो चौपायोंको दुःख हो और आगेके वर्षका गर्भ नाश होनेसे वर्षाकी कमी हो ॥ १३४ ॥

पुनर्वस्वोस्तथार्द्रायांतृतीयायांचसंगमे ।

धान्यंसमर्घमादेश्यंराजस्वास्थ्यंप्रजासुखम् १३५ ॥

तथा तीजको पुनर्वसु और आर्द्रा हो तो धान्य तस्ता रहे । राज्य स्वस्थ रहे और प्रजामें सुख रहे ॥ १३५ ॥

मार्गशीर्षस्यपंचम्यामघाद्यंपंचकंयदा ।

पुरोवर्षविनाशायजायतेजलरोधतः ॥ १३६ ॥

मार्गशीर्षकी पंचमीको मघादि पांच नक्षत्रोंमेंसे कोई हो तो जलाभावसे आगेका वर्ष बिगड़े ॥ १३६ ॥

मार्गेनवम्यांचित्रायांधान्यमहर्घमादिशेत् ।

कृष्णाचतुर्दशीस्वातिश्रवणेजलरोधिनी ॥ १३७ ॥

मार्गशीर्षकी नौमीमें चित्रा हो तो धान्य महंगा हो । कृष्णा चतुर्दशीमें स्वाति वा श्रवण हो तो जल वृष्टिमें रुकावट हो ॥ १३७ ॥

मार्गशीर्षस्यदशमीमूलेवारविणायुता ।

संग्राह्याश्चतिलास्तेलंज्येष्ठान्तेलाभदायकाः १३८ ॥

मार्गशीर्षकी दशमी मूल और रविवारी हो तो तिल तेल इकट्ठे करनेसे ज्येष्ठके अन्तमें लाभ देते हैं ॥ १३८ ॥

मार्गेयदिस्यादादित्यएकादश्यांतिथौतदा ।

कार्पासादिकसुत्राणां ग्राह्यं वैशाखलाभकृत् ॥ १३९ ॥

मार्गशीर्षकी एकादशीको रविवार हो तो कपासादि सूत वैशाखमें लाभ देते हैं ॥ १३९ ॥

पौषे मूलमावस्यां वृष्टये लोकतुष्टये ।

शन्यादित्यकुजास्तस्यां बहुलाभाय धान्यतः ॥ १४६ ॥

पौषकी अमावास्याको मूल हो और शनि रवि मंगल हों तो धान्यसे बहुत लाभ हो ॥ १४६ ॥

पौषकृष्णप्रतिपदि रोहिण्यामोगसंभवे ।

सप्तमासाद्धान्यलाभश्छत्रभंगोऽथवा भवेत् ॥ १४७ ॥

पौषकृष्ण प्रतिपदामें रोहिणी हो तो सात मासमें धान्य महँगा हो अथवा छत्रभंग हो ॥ १४७ ॥

माघाद्यदिवसे वारेषु धो भवति चेत्तदा ।

मासत्रयं महर्षस्याद्भाविवर्षं विनश्यति ॥ १४८ ॥

माघ कृष्ण प्रतिपदाको बुधवार हो तो ३ मास महँगाई रहे और आगेके वर्षकी हानि हो ॥ १४८ ॥

माघशुक्लस्य प्रतिपद्धितीया वा तृतीयाका ।

त्रुदिता धान्यसंग्राहे लाभाय वणिजां मता ॥ १४९ ॥

माघ शुक्ल प्रतिपदा द्वितीया वा तृतीयाका क्षय हो तो व्यापारियोंको लाभ हो ॥ १४९ ॥

सप्तम्यां सोमवारः स्यान्माघे पक्षे सिते यदि ।

दुर्भिक्षं जायते रौद्रं विग्रहोऽपि च भूभुजाम् ॥ १५० ॥

माघ शुक्ल सप्तमी सोमवार हो तो बड़ा दुर्भिक्ष हो, तथा राजाओंमें विग्रह हो ॥ १५० ॥

माघस्य शुक्लसप्तम्यां रविवारो भवेद्यदि ।

दुर्भिक्षं हि महाघोरं विग्रहं च महाभयम् ॥ १५१ ॥

माघ शुक्ल सप्तमी रविवार हो तो महाघोर दुर्भिक्ष और भय हो ॥ १५१ ॥

माघमासप्रतिपदिशनिभोगःप्रशस्यते ।

सर्वथाधान्यनिष्पत्तिरारोग्यदेशस्वस्थता ॥ १५२ ॥

माघी पडवाको शनिवार हो तो सब धान्योंकी उत्पात्ति और देश-
स्वास्थ्य हो ॥ १५२ ॥

चतुर्थीमाघमासस्यशनिवारेणसंयुता ।

दुर्भिक्षंमृत्युचौराग्निभयंधान्यविनाशनम् ॥ १५३ ॥

माघकी चौथ शनिवारी हो तो दुर्भिक्ष मृत्यु चौराग्निभय और
धान्यनाश हो ॥ १५३ ॥

माघशुक्लेप्रतिपदिवाराजीवेन्दुभार्गवाः ।

सुमिक्षायरणायार्कःकुजेस्युर्बहुईतयः ॥ १५४ ॥

माघशुक्ल पडवाको गुरु शुक्र चंद्रवार हो तो सुमिक्ष हो दीप्तवार
हो तो युद्ध और मंगलवार हो तो ईतिभय हो ॥ १५४ ॥

माघशुक्लेयदाष्टम्यांकृत्तिकायदिनोभदेत् ।

फाल्गुनेरोलिकापातःश्रावणेवानवर्षणम् ॥ १५५ ॥

माघ शुक्लाष्टमीको यदि कृत्तिका न हो तो फाल्गुणमें रोली लगे
और श्रावणमें सूखा रहे ॥ १५५ ॥

माघेचशुक्लसप्तम्यांसोमवारेचरोहिणी ।

राज्ञांयुद्धंप्रजारोगह्यथवावर्षसुत्तमम् ॥ १५६ ॥

माघ सुदी सार्ते सोमवार रोहिणी हो तो राजाओंमें युद्ध प्रजामें
रोग अथवा उत्तम वर्ष हो ॥ १५६ ॥

माघमासेचसप्तम्यांभरणीयदिजायते ।

रोगनाशस्तदालोकेवसुधाबहुधान्यभृत् ॥ १५७ ॥

माघी सप्तमीको यदि भरणी हो तो संसारके रोग दूर हों और
जल वहुत उपजें ॥ १५७ ॥

फाल्गुनेकृष्णपक्षीचेचित्रानक्षत्रसंयुता ।

त्रिभिर्मसैःसुभिक्षायस्वात्यादुर्भिक्षसाधनम् १५८॥

फाल्गुन कृष्ण पक्षी चित्रानक्षत्रसे युक्त हो तो तीन मास सुभिक्ष और स्वाती हो तो दुर्भिक्ष हो ॥ १५८ ॥

फाल्गुनेचत्रयोदश्यांशुक्रायांयदिमार्गवः ।

ज्येष्ठेरोगायनूनंस्याद्भोगोमासत्रयेथवा ॥ १५९॥

फाल्गुन शुक्ल १३ शुक्रवार हो तो जेठमें रोग पैदा होकर तीन मास रहै ॥ १५९ ॥

फाल्गुनेप्रथमेपक्षेवारुणंप्रतिपद्दिने ।

भोगानुसारार्द्रपक्षस्वरूपंचनिरूपयेत् ॥ १६० ॥

फाल्गुन कृष्ण पड़वाको शताभिषा हो तो उसके भोगानुसार वर्ष स्वरूप जानना ॥ १६० ॥

फाल्गुनेकृत्तिकायुक्तसप्तम्यादिकपंचकम् ।

श्वेतपक्षेसुभिक्षायनार्द्राजलदवृष्टये ॥ १६१ ॥

फाल्गुन शुक्लकी सातैसे पांच दिनोंमें कृत्तिका हो तो सुभिक्ष और आर्द्रा हो तो गर्वर्षण हो ॥ १६१ ॥

चैत्रस्यपौर्णमास्यांहिनिर्मलग्नगनंशुभम् ।

तद्दिनेग्रहणंतारापातभूकम्पवृष्टयः ॥ १६२ ॥

रजोवृष्टिःपरीक्षेपोविद्युत्केतूदयादिना ।

उत्पातेनचसंग्राह्यधान्यंघातुव्ययादितः ॥ १६३॥

“वारह महीनोंकी पूर्णिमाओंका फल”—चैत्र सुदी पूर्णिमाको आकाश निर्मल हो और उसीदिन ग्रहण हो अथवा तारे टूटें भूकम्प हो या रजोवृष्टि, परिवेप, विद्युत्पात, केतु उदय आदि कोई उत्पात हों तो बर्तन बेंचकरभी धान्य संग्रह कियाजाय ॥ १६२ ॥ १६३ ॥

विक्रये सप्तमे मासे भाद्रे द्विगुणलाभदम् ।

वैशाख्यामीदृशे चिह्ने कार्पासस्य महर्घता ॥ १६४ ॥

और उसे सातवें महीनेमें बँचा जाय तो दूना लाभ हो । ऐसेही चिह्न वैशाखमेंभी हों तो कपास महँगी हो ॥ १६४ ॥

गोधूममुद्रमाषादेः संग्रहोलाभकारणम् ।

विक्रयाद्विगुणत्वेन मासे भाद्रपदे भवेत् ॥ १६५ ॥

गेहूँ मूँग उड़द आदि संग्रह करनेसे भी लाभ हो उनको भाद्रपदमें बँचनेसे दूना लाभ हो ॥ १६५ ॥

ज्येष्ठस्य पूर्णिमाऽनभ्राशुभाय कथिता बुधैः ।

वृष्ट्या वा परिवेषेण तस्या धान्यस्य संग्रहः ॥ १६६ ॥

तुर्ये मासे थवा पौषे लाभस्तस्यान्नविक्रयात् ।

आषाढी निर्मलानेष्टा वादलाच्छादिता शुभा १६७ ॥

जेठी पूर्णिमाको बादल न हों तो शुभ हैं यदि उस दिन वर्षा या परिवेष हो तो धान्य संग्रह करके चौथे महीनेमें या पौषमें बँचनेसे लाभ होता है । और आषाढी पूर्णिमा निर्मल हो तो नेष्ट तथा बादलोंसे ढकी हुई हो तो शुभ होती है ॥ १६६ ॥ १६७ ॥

निर्मल्याद्धान्यसंग्राह्यं पंचमे मासि लाभदम् ।

श्रावणी निर्मला श्रेष्ठा सा भ्रत्वे धान्यसंग्रहः ॥ १६८ ॥

यदि आषाढी पृन्थू निर्मल हो तो धान्य खरीदनेसे पांच मासमें लाभ देता है और श्रावणी पूर्णिमा निर्मल हो तो अच्छी और बादल हों तो बुरी होती है ॥ १६८ ॥

विक्रयाद्घृततैलादेर्लाभो मासे तृतीयके ।

पूर्णाभाद्रपदेषु भाशुभा धान्यस्य विक्रयात् ॥ १६९ ॥

तीसरे महीनेमें धी तेल वेंचनेसे लाभ होता है । भाँटूकी पून्यूका शुभ्र बादल हो तो शुभ हो ॥ १६९ ॥

अश्विनीनिर्मलापूर्णाशुभायवादलोदये ।

धान्यस्यसंग्रहंकुर्याच्चैत्रेवैलाभदोमहान् ॥ १७० ॥

आश्विनकी पून्यू निर्मल हो तो शुभ और बादल हों तो धान्य-संग्रहसे चैत्रमें लाभ हो ॥ १७० ॥

साभ्रायांमाघपूर्णायांधान्यसंग्रहइष्यते ।

विक्रेयःसप्तमेमासेतस्यलाभायसंभवेत् ॥ १७१ ॥

कार्तिक मार्गशीर्ष और पौषकी पूनमकामी यही फल जानना चाहिये—माघी पून्यूको बादल हो तो धान्य संग्रह काके सात मासमें बेचे तो लाभ हो ॥ १७१ ॥

फाल्गुनीपूर्णिमासाभ्रासवृष्टिर्वासगर्जिता ।

धान्यसंग्रहणान्मासेसप्तमेलाभदायिनी ॥ १७२ ॥

फाल्गुनी पून्यूको बादल वर्षा गर्जना हो तो सात मासमें धान्यसंग्रहसे लाभ हो ॥ १७२ ॥

(५) अथ ग्रहसंयोगादर्धमहर्षज्ञानम् ।

कन्यामीनधनुःसिहेष्वाकिंभौमौचक्रितौ ।

कुरुतोविभ्रमंलोकेनृपाणांक्षयकारकौ ॥ १७३ ॥

(५) “अथ ग्रहोंके योगसे तेजी मन्दी कहते हैं ।”—कन्या मीन धन राशिमें शनि मंगल बकी हों तो लोक विभ्रम और राजाओंका क्षय करें ॥ १७३ ॥

कृत्तिकारोहिणीसौम्यमघाचित्राविशाखिकाः ।

ज्येष्ठानुराधामूलानिपूर्वाषाढातथापुनः ॥ १७४ ॥

एतेषांचैवऋक्षाणांभौमःशुक्रस्तथाशनिः ।

उत्तरस्यायदायांतिमास्यापाढेविशेषतः ॥ १७५ ॥

सुभिक्षक्षेममारोग्यममध्येचमध्यमफलम् ।

दक्षिणेनयदायान्तिर्दतिरोगभयंभवेत् ॥ १७६ ॥

कृ. रो. मृ. म. चि. वि. ज्ये. ५नु. मृ. और पूर्वाषाढ इन नक्षत्रों-
पर भौम शुक्र शनि यह उत्तरमें विशेष कर आपाढमें आवें तो सुभिक्ष
क्षेम आरोग्य हो; बीचमें रहें तो मध्यम और दक्षिणमें चलें तो ईति
रोग भय हो ॥ १७४ ॥ १७५ ॥ १७६ ॥

चलत्यंगारकेवृष्टिरुदयेचबृहस्पतेः ।

शुक्रस्यास्तंगमेवृष्टिस्त्रिधावृष्टिःशनैश्चरे ॥ १७७ ॥

यदि राशि छोड़कर दूसरी राशिपर मंगल चले तो वर्षा हो-
बृहस्पति उदय हो तौमी वर्षा हो-शुक्र अस्त हो तब वर्षा हो और
शनैश्चरके चलने अर्थात् एकराशि छोड़कर दूसरी पर जानेसे अथवा
उदय होनेसे और अस्त होनेसे तीनोसे वर्षा हो ॥ १७७ ॥

मेषवृश्चिकयोर्मध्येयदातिष्ठतिभूसुतः ।

तदाधान्यमहर्घस्यान्मासद्वयमुदाहृतम् ॥ १७८ ॥

मेष वृश्चिकके बीचमें यदि मंगल हो तो दो महीने तक धान्य
महंगा हो ॥ १७८ ॥

रविराहुशनैश्चरभूमिसुताउदयंतिचमध्यमराशि-

गताः । धनधान्यहिरण्यविनाशकरा विलयंति

महीपतिछत्रधराः ॥ १७९ ॥

रवि राहु शनि और मंगल मध्य राशिमें उदय हों तो धन धान्य
हिरण्यको महंगा करें और छत्रधारी राजाका नाश हो ॥ १७९ ॥

शनिर्मीनेगुरुःकर्केतुलायामपिमंगलः ।

यावच्चरतिलोकस्यतावत् कष्टपरंपरा ॥ १८० ॥

शनि मीनका गुरु कर्केका, और मंगल तुलका ये जबतक इन शिष्यों पर चलें तबतक लोगोंको बष्ट होते रहें ॥ १८० ॥

भौमस्याधोगुरुस्तिष्ठेद्बुधोपिशनैश्वरः ।

ग्रहाणामुशलंज्ञेयमिदंजगदरिष्टकृत् ॥ १८१ ॥

मंगलमे नीचे गुरु और गुरुसे नीचे शनि हों तो यह ग्रहोंको उशल जगत्को अरिष्ट दाई है ॥ १८१ ॥

रविराशेःपुरोभौमोवृष्टिसृष्टिनिरोधकः ।

भौमाद्याश्चखलाश्च द्राक्षत्वारोवृष्टिनाशकाः ॥ १८२ ॥

सूर्य राशिके आगे मंगल हो तो वृष्टिकी सृष्टिका अवरोध करता है । और भौमादि क्रूर ग्रह चन्द्रसे आगे हों तो भी वर्षाको रोकते हैं ॥ १८२ ॥

भौमवक्रेअनावृष्टिर्बुधवक्रेधनक्षयः ।

गुरुवक्रेस्थिरोरोगोशुक्रवक्रेसुखीप्रजा ॥ १८३ ॥

शनिवक्रेजनेपीडाराहुःस्यादग्निकारकः ।

चतुर्ग्रहानवक्राःस्युर्योगोयंकथितोबुधैः ॥ १८४ ॥

भौम वक्रा हो तो अनावृष्टि हो, बुध वक्रा हो तो धन क्षय हो, गुरु वक्रा हो तो रोग स्थिर रहे, शुक्र वक्रा हो तो प्रजा सुखी रहे, शनि वक्रा हो तो मनुष्योंमें पीडा हो, और राहु हो तो : अभिषेक हो । चार ग्रह वक्रा होनेका योग अच्छा नहीं ॥ १८३ ॥ १८४ ॥

यत्रमासेग्रहाःसर्वेवक्रत्वंयांतिदेवतः ।

तन्मासेतिमहर्घस्याद्धान्यंवागजविग्रहः ॥ १८५ ॥

यदि देव योगमें किसी महीनेमें सभी ग्रह वक्रा हों तो इस मही-

नेमें धान्य आदिकी अत्यन्त तेजी हो और राजाओंमें विग्रह रहे ॥ १८५ ॥

यदितिष्ठतिभौमस्यक्षेत्रेकोपिग्रहस्तदा ।

षण्मासात्तुषधान्यानांजायतेचमहर्घता ॥ १८६ ॥

यदि मंगलके घरमें कोईभी ग्रह हो तो छःमहीने तुष धान्य महर्घ रहें ॥ १८६ ॥

शुक्रक्षेत्रेकुजेमासद्वयेनूनंमहर्घता ।

चन्द्रेचदिननाथेचसर्वरोगोऽशुभंतदा ॥ १८७ ॥

शुक्रके क्षेत्रमें मंगल हो तो २ मास महर्घाई रहे, चन्द्र और सूर्य हों तो सब रोग हों अशुभ हो ॥ १८७ ॥

शनौराहौसर्वधान्यमहर्घराजविग्रहः ।

बुधक्षेत्रेखौचन्द्रेविरोधःसर्वभूभुजाम् ॥ १८८ ॥

शनि राहु हों तो सब धान्य महर्घे हों, राजविग्रह हो । बुधके घरमें सूर्य चन्द्र हों तो राजाओंमें विरोध हो ॥ १८८ ॥

उत्पत्तिस्तुषधान्यानांपंचमासात्प्रजायते ।

शुक्रक्षेत्रेबुधेचन्द्रेक्षेत्रेभृगोःसुते ॥ १८९ ॥

शुक्रके घरमें बुध चन्द्र हों और चन्द्रके घरमें शुक्र हो तो पांच मासमें लौ गेहूँ अच्छे हों ॥ १८९ ॥

पाखण्डानांभवेद्वृद्धिर्धान्यानांचमहर्घता ।

रविक्षेत्रेभृगोःपुत्रेषूनांचमहर्घता ॥ १९० ॥

सूर्यके घरमें शुक्र हो तो पाखण्डकी वृद्धि, अन्नकी महर्गाई और पशुओंकी महर्घता हो ॥ १९० ॥

शनिक्षेत्रेशनौदेशेघृतधान्यमहर्घता ।

चन्द्रभास्करयोःक्षेत्रेसुभिक्षंचंद्रसूर्ययोः ॥ १९१ ॥

शानिके क्षेत्रमें शानि हो तो घी अन्न मँहगे हों। और चन्द्रः सूर्य अपने घरमें हों तो सुभिक्ष हो ॥ १९१ ॥

पशुनाशोधान्यवृद्धिर्गुडादीनामहर्घता ।

गुरुक्षेत्रे शनौ राहौ पशुनाशस्तृणक्षयः ॥ १९२ ॥

तथा पशुओंका नाश, धान्यकी वृद्धि और गुड़ सत्कारकी मँह-
गाई हो । यदि गुरुके घरमें शनि राहु हों तो पशु नाश और तृण
क्षय हो ॥ १९२ ॥

भौमे राज्ञां विरोधश्च बुधे वृष्टिस्तुभूयसी ।

भौमक्षेत्रे यदा सन्ति राहु भौमार्क भार्गवाः ॥ १९३ ॥

पण्मासाद्गुडकार्पासघृतक्षीरमहर्घता ।

मंदक्षेत्रे यदा सन्ति गुरुमंदबुधास्तदा ॥ १९४ ॥

चतुष्पदानां नाशश्च शंखस्य च महर्घता ।

भौमक्षेत्रे भार्गवे च धान्यानां च महर्घता ॥ १९५ ॥

मंगल हो तो राजाओंमें विरोध, बुध हो तो बहुत वर्षा हो यदि
मंगलके घरमें राहु मंगल सूर्य शुक्र हों तो छः महीने गुड़ सत्कार
प्री कपास और दूध मँहगा हो । और यदि जिनके घरमें गुरु शनि
बुध हों तो चोपाओंका नाश और शंखोंकी मँहगाई हो । और मंग-
लके क्षेत्रमें शुक्र हो तो धान्य मँहगे हों ॥ १९३ ॥ १९४ ॥ १९५ ॥

शानिक्षेत्रे यदा भानुर्वस्त्राणां च महर्घता ।

शुक्रे भौमे गुरुक्षेत्रे प्रजापीडा प्रजायते ॥ १९६ ॥

शानिके घरमें सूर्य हो तो वस्त्र मँहगे हों, गुरुके घरमें शुक्र भौम
हों तो प्रजा पीडा हो ॥ १९६ ॥

चन्द्रोदये कुजक्षेत्रे तु पधान्यस्य वृद्धये ।

चन्द्रोदये भृगुक्षेत्रे शुक्रवस्तुदयो भवेत् ॥ १९७ ॥

मंगलके घरमें चन्द्रोदय हो तो तुष धान्य बढे । और शुक्रके घरमें चन्द्रोदय हो तो सफेद वस्तु बढे ॥ १९७ ॥

रविक्षेत्रेतुलावृद्धिःशनिसोमभृगूदये ।

चन्द्रक्षेत्रेशुक्रचन्द्रबुधानामुदयोयदि ॥ १९८ ॥

षण्मासेषुचतुर्भिक्षमतिवृष्टिःप्रजायते ।

उदितौचबुधक्षेत्रेयदिराहुशनैश्वरौ ॥ १९९ ॥

सूर्यके घरमें शनि सोम भृगूदय हो तो वृद्धि हो। और चन्द्र क्षेत्रमें शुक्र चन्द्र बुधका उदय हो तो अति वर्षासे छः महीने दुर्भिक्ष हों । यदि बुधके घरमें शनि राहु उदय हों तो ॥ १९८ ॥ १९९ ॥

पशुक्षयःप्रजापीडाधान्यानांचमहर्षता ।

शुक्रक्षेत्रेचसोमश्चसूर्यपुत्रोदयोयदा ॥ २०० ॥

पशुक्षय, प्रजामें पीडा और धान्य महंगे हों । शुक्रके घरमें सोम शनि उदय हों तो ॥ २०० ॥

राजयुद्धंचधान्यानांजायतेतिमहर्षता ।

यदोदयःशनिक्षेत्रेभौमभास्करयोर्भवेत् ॥ २०१ ॥

राजाओंमें युद्ध और अन्नकी महंगाई हो । यदि शनिक्षेत्रमें भौम भास्कर उदय हों तो ॥ २०१ ॥

घृतादीनांतदावृद्धिर्गुडानारक्तवाससाम् ।

यदासमुदयंयातिशनिक्षेत्रेशनैश्वरः ॥

तदास्याचूणकाष्ठानालोहानांचमहर्षता ॥ २०२ ॥

घी गुड और लाल कपड़ोंकी वृद्धि हो । यदि शनिके घरमें शनि उदय हो तो घास काठ और लोहादिकी महंगाई हो ॥ २०२ ॥

कार्तिक शुक्ल नवमीको यदि पांच ग्रह एक राशिमें हों तो अकाल
वर्षा (विना चौमासे) मेंभी ऐसी महावर्षा हो कि नदियां पानीसे
खुब भरी हुई रहें ॥ २०८ ॥

मार्गशीर्षग्रहाः पंचयदिस्थुरेकराशिगाः ।

तदाजनेतिमारीस्यान्नृपस्यमरणंकचित् ॥ २०९ ॥

यदि मगशिरमें पांच ग्रह एक राशिमें हों तो मनुष्योंमें महामारी
हो और कहीं राजाभी मरे ॥ २०९ ॥

अथ ग्रहवेधादस्तुविशेषे महर्घसमर्घम् ।

सौम्यवेधेसमर्घत्वंक्रूरवेधेमहर्घता ।

देशःकालश्चवस्तूनिग्रहवेधेऽत्रिषुस्मृतः ॥ २१० ॥

“ अथ ग्रहोंके वेधसे अनेक वस्तुओंकी तेजी मंदी कहते हैं । ”

‘ * समरसार ’ आदि कईएक ग्रन्थोंमें ‘ सर्वतोभद्र ’ नामक
चक्रका वर्णन किया गया है उस चक्रको लिख कर उसमें जिस
समयकी तेजी मंदी देखनी हो उसी समयके ग्रहोंकी (जो ग्रह
जिस नक्षत्र पर हो उसी पर) स्थापन करके वेधका विचार करे ।
जो नक्षत्र सौम्य ग्रहोंसे विद्ध होता हो तो समर्घता और क्रूर ग्रहोंसे
वेधा गया हो तो महर्घता होती है । देश काल और वस्तु, तीनोंमें
ग्रह वेधका विचार करना चाहिये ॥ २१० ॥

व्रीहिर्यवाश्चवणकाहीरकाधातवस्तिलाः ।

कृत्तिकावेधतोमासानष्टयाम्यादितोसुखम् ॥ २११ ॥

चावल, जौ, चने, तिल, और हीरा तथा सब धातु यह वस्तु
कृत्तिकानक्षत्रके वेधसे गहंगी होती हैं और दक्षिण दिशासे असुख
होता है ॥ २११ ॥

* हमारा बनाया हुआ ‘ समरसार ’ ‘ श्रीवेकटेश्वर ’ ग्रंथ धर्मार्थमें छपा
है उसमें यह चक्र बहुत ही स्पष्ट लिखा है । (अनुवादक)

रोहिण्याःसर्वधान्यानिस्वैरसाश्चधातवः ।

जीर्णाःकंबलकाःप्राच्यामसुखंदिनसप्तकम् ॥ २१२ ॥

यदि रोहिणीको क्रूर ग्रह वेधते हों तो सब धान्य, सब रस, सब धातु और पुरानी कंबल महंगी हों और पूर्वमें सात दिन असौख्य हो ॥ २१२ ॥

मृगशीर्षेऽश्वमहिषीगावोलाक्षादिकोद्रवः ।

विविधानिजलान्नानिर्पाडाचपष्टिवासरान् ॥ २१३ ॥

मृगशिरपर क्रूर वेध हो तो भैंस, गाय, लाख और कोहू तथा कई प्रकारके जलके अन्न वस्तु आदि महंगे हों और साठदिन पीडा बढे ॥ २१३ ॥

आर्द्रायांतैललवणसर्वक्षाररसादयः ।

श्रीखंडादिसुगंधीनिमासेस्यात्पश्चिमाऽसुखम् २१४

आर्द्रामें तेल, लूण, सब तरहकी खारी वस्तु तथा रसादिक और अलयागिरी चंदन आदि सुगंधित वस्तुएं महीनेभर महंगी रहें और पश्चिममें असुख हो ॥ २१४ ॥

पुनर्वस्वोःस्वर्णसूतकार्पासश्चतथातिलः ।

कुसुम्भःश्यामकौशेयंमाषपुष्पमोत्तरासुखम् ॥ २१५ ॥

पुनर्वसुमें सोना, सूत, कपास, तिल, कुसुमा और श्याम तथा केरुएँ रंग दो मास महंगे हों उत्तरमें असुख हो ॥ २१५ ॥

पुष्येस्वर्णघृतंरूप्यशालिशोचलसर्पपाः ।

सर्जिकातैलहिग्वादियाम्यपीडाष्टमासिकी २१६ ॥

पुष्यमें सोना चांदी धी चावल संचरदून सरसों साजी तेल और होंग महंगे हों तथा दक्षिणमें आठ महिनेकी पीडा हो ॥ २१६ ॥

आश्लेषायांचर्मजिष्ठागोधूमश्चममृरिकाः ।

अरिचंकोद्रवाःशालिमासिकंपश्चिमासुखम् ॥ २१७ ॥

आलेषामें मँजीठ मसूर गेहूं मिर्च कोदूं और शालि यह महेँगे होते हैं और पश्चिममें असुख होता है ॥ २१७ ॥

मघायांतिलतैलाज्यप्रवालचणकागुडाः ।

अतसीदक्षिणेदेशेविग्रहश्चाष्टमासिकः ॥ २१८ ॥

मघामें तिल तेरू पी भूंग चने गुड अतसी महेँगे हों दक्षिणमें विग्रह हो ॥ २१८ ॥

उफायांकंवलोणादियुगंधरीतिलास्तथा ।

रजतंवस्तुजातानियाम्यांपीडाष्टमासिकी ॥ २१९ ॥
पूर्वाफाल्गुनमें कंवल-ऊन युगंधरी तिल और चांदी महेँगी हों दक्षिणमें पीडा हो ॥ २१९ ॥

उफायांमाषमुद्राद्यंतंदुलाःकोद्रवःपुनः ।

सैधवंलशुनंसर्जिमासेयुग्मोत्तरापथा ॥ २२० ॥
उत्तराफाल्गुनीमें उडद भूंग चावल कोदूं सींधानमक लहसुन और साजी महेँगे हों ॥ २२० ॥

हस्तेश्रीखण्डकर्पूरदेवकाष्टागरुस्तथा ।

रक्तचंदनकंदादिमासयुग्मोत्तराऽसुखम् । २२१ ॥
हस्तमें चन्दन कपूर देवदारु अगर लाल चंदन और कंद आदि महेँगे हों उत्तरमें असुख हो ॥ २२१ ॥

स्वर्णरत्नंतुचित्रायांगुडमाषप्रवालकम् ।

अश्वादिवाहनंमासद्वयंपीडोत्तरादिशि ॥ २२२ ॥
चित्रामें सोना, रत्न, गुड, उडद, भूंगा और घोडे आदि महेँगे हों दोमास उत्तरमें पीडा हो ॥ २२२ ॥

स्वातोपूगीमरिचंसर्षपतैलादिराजिकाहिगुः ।

खर्जूरादिकपीडासप्तदिनान्युत्तरेदेशे ॥ २२३ ॥

स्वातिमें सुपारी मिर्च सरसों तेल हाँग राई और खजूर मँहगे हों
७ दिन उत्तरमें पीड़ा हो ॥ २२३ ॥

विशाखायांयवाःशालिगोधूमासुद्वराजिका ।

मसूरात्रमकुष्टाचयाम्यपीडाएमासिकी ॥ २२४ ॥

विशाखामें जौ चावल गेहूं मूंग राई मसूर और मकड़ा मँहगे हों
दक्षिणमें पीड़ा हो ॥ २२४ ॥

राधायांतुवरीसर्वद्विदलान्नचतण्डुलाः ।

मकुष्टकाश्वणकाःप्राक्पीडादिनसप्तकम् ॥ २२५ ॥

अनुराधामें तुम्बर आदि सब तरहकी दालके अन्न चावल मकोय
और चर्ने मँहगे हों ॥ २२५ ॥

ज्येष्ठायांगुग्गुलंगुडलाक्षाकर्पूरपारदाः ।

हिंशुश्वबहुकांस्यानिप्राक्पीडादिनसप्तकम् ॥ २२६ ॥

ज्येष्ठामें गुग्गुलु गुड लाख कपूर पारा हाँग और कांशी मँहगी हों
पूर्वमें पीड़ा हो ॥ २२६ ॥

मूलेश्वेतानिवस्तूनिरसधान्यादिसैधवम् ।

कार्पासलवणाद्यंचमासिकंपश्चिमासुखम् ॥ २२७ ॥

मूलमें सफेद वस्तु, रस, धान्यादि, सैधानमक, कपास और नमक
मँहगे हों ॥ २२७ ॥

पूपायांजनतुषधान्यघृतकंदमूलचूर्णादि ।

वेद्यंसशालिपश्चिमदिशिमासिकमशुभमन्यदा २२८

पूर्वाषाढमें जन तुष धान्य, घी कंद मूल फल चूर्ण और घान
मँहगा हो पश्चिममें अशुभ हो ॥ २२८ ॥

उपायामश्ववृषभागजलोर्हादिघातवः ।

सर्वचसारवस्त्वाद्यंप्राग्व्यथादिनसप्तकम् ॥ २२९ ॥

उत्तराषाढमें घोड़े बैल हाथी लोह पीतल तांबा और सब सार
वस्तु महेगी हों ॥ २२९ ॥

द्राक्षाखजूरपूगैलामुद्राजातिफलंहयाः ।

अभिजिद्वेधतःपूर्वायथावादिनसप्तकम् ॥ २३० ॥

अभिजित्तके वेधसे दाख, खजूर सुपारी मूंग जापफल असर्गंध
मह महेगी हों ॥ २३० ॥

श्रवणेशर्करादीनिपिप्पलीपूगमालिका ।

तुषधान्यानिवेधानिप्राक्शुभंसप्तवासरान् ॥ २३१ ॥

श्रवणमें शर्करा आदि मिठाईयां पीपलि सुपारी तुष धान्य महेगी
हों पूर्वमें शुभ हो ॥ २३१ ॥

धनिष्ठार्यास्वर्णरूप्यधातवश्चविशेषतः ।

मणिमौक्तिकमन्नादिसप्ताहंपूर्वतःशुभम् ॥ २३२ ॥

धनिष्ठामें सोना चांदी मणि मोती महेगी हों पूर्वमें सात दिन शुभ
हों ॥ २३२ ॥

तैलकोद्रवमद्यादिधातकीपत्रमूलकम् ।

वल्लीशतभिपग्वेधंवारुण्यांमासिकंशुभम् ॥ २३३ ॥

शतभिषामें तेल कोद्रु मदिरा पीपलि मूली धेलि महेगी हों पश्चिममें
शुभ हो ॥ २३३ ॥

प्रियंगुमूलजात्यादिसर्वधान्यानिधातवः ।

सर्वापधंदेवदारुणाम्यापीडाष्टमासिकी ॥ २३४ ॥

पूर्वाभाद्रपदमें प्रियंगु—जोंधफल, धान्य, घातु, और औषधियां
महेगी हों दक्षिणमें पीडा हो ॥ २३४ ॥

उत्तराभाद्रपद्वेध्यमथोभावेयमुच्यते ।

गुडःखण्डाःशर्कराचखलंतिलाश्चशालयः ॥ २३५ ॥

उत्तराभाद्रपदमें गुड सकर खाण्ड खली और तिल महेगी हों ॥ २३५ ॥

घृतमणिमौक्तिकानिवारुण्यामासिकं शुभम् ।

पौष्णे श्रीफलपूगादिमौक्तिकं मणयोऽपि च ॥ २३६ ॥

स्वेतामें मणि मोती श्रीफल सुपारी यह मँहेंगे हों और पश्चिममें शुभ हो ॥ २३६ ॥

अश्विन्यां व्रीह्योजूर्णविखरोष्ट्रघृतादिकम् ।

सर्वाणि धान्यवस्त्राणि मासद्वयोत्तरा तथा ॥ २३७ ॥

अश्विनीमें चावल जून (तुण) विशेषरूपके गधे (खच्चर) ऊँट वी सब धान्य और वस्त्र मँहेंगे हो उत्तरमें दो मास अशुभ हो २३७

भरण्यां तुषधान्या नियुगन्धरी च वेध्यते ।

मरिचाद्यौषधसर्वयाम्यां पीडा एमासिकी ॥ २३८ ॥

और भरणीपर क्रूर ग्रहोंका वेध हो तो जौ मेहू चावल युगंधरी और सोंठ मिर्च पीपल अदि औषधियां यह मँहेंगी हों और दक्षिणमें पीडा हो ॥ स्मरण रहे कि उपरोक्त नक्षत्रोंको क्रूर ग्रह वेधेंगे जब तो यह वस्तु मँहेंगी होंगी और सौम्य ग्रह वेधेंगे तो पही उपरोक्त सब वस्तुयें सस्ती होंगी ॥ २३८ ॥ (इति)

(६) अथ संवत्सरस्य शुभाशुभसूचक कारणान्याह ।

रक्तमुत्पलवर्णाभयद्याकाशनुकार्तिके ।

तदा शुभं भावि वर्षं सन्ध्यायां तन्न शोभनम् ॥ २३९ ॥

(६) अब संवत्सरके अच्छे बुरे होनेके और कारण बतलावे हैं । १-यदि कार्तिकमें लाल कमलके वर्ण जैसा आकाश हो तो भावी वर्ष अच्छा हो किन्तु वह सन्ध्यामें अच्छा नहीं ॥ २३९ ॥

तुषारपतनं मार्गे पीषे हिमसमुद्भवः ।

माघमासेति शीतं च फारगुने दुर्दिनं शुभम् ॥ २४० ॥

मार्गशीर्षमें आले पड़ें तो अच्छे, पौषमें वर्ष पड़े तो अच्छी माघ

मासमें अधिक शरदी पड़े तो अच्छी और, फाल्गुनमें भयानक दिन हों तो अच्छे हैं ॥ २४० ॥

फाल्गुनेकालवातोपिचत्रेकिंचित्पयोहितम् ।

वैशाखःपंचरूपस्याज्येष्ठोघर्मान्वितःशुभः॥२४१॥

फागणमें प्रेचण्डवायु-चैत्रमें घुंदा वांटी-वैशाखमें पांच रूप और जेठमें अधिक गर्मी पड़े तो अच्छी है ॥ २४१ ॥

आषाढेऽश्रावणेभाद्रमाश्विनेलक्षणंचयत् ।

तदन्यभाज्ज्ञापनीयंसवत्सरशुभाशुभम् ॥ २४२ ॥

आषाढ श्रावण भाद्रवा और आश्विन इनमें जो लक्षण होने चाहिये सो अन्यत्र बतलाये हैं । इन सब लक्षणोंसे भावी वर्षका शुभाशुभ जानना चाहिये ॥ २४२ ॥

आर्द्राज्येष्ठेनष्टचन्द्रेप्रथमायाःपुनर्वसुः ।

द्वितीयापुष्यसंयुक्ताजलंधान्यंतृणंनच ॥ २४३ ॥

जेठकी अमावसको आर्द्रा, पडवाको पुनर्वसु और द्यौयजको शुष्य हो तो उस वर्षमें अन्न जल और घास कुछ नहीं हो ॥ २४३ ॥

कृष्णपक्षेऽश्रावणस्यैकादश्यांरोहिणीचभम् ।

यावद्घटीप्रमाणस्यात्तावद्धान्यस्यविक्रयः॥२४४॥

श्रावण कृष्ण एकादशीके रोहिणी नक्षत्र जितनी घड़ी हो उतने डी सेर अन्न उस वर्षमें कार्तिक पाँछे बिके ॥ २४४ ॥

यस्मिन्संवत्सरेयावद्दशमीरविवासरः ।

घटीप्रमाणमालोक्यशिवेधान्यस्यविक्रयः॥२४५॥

जिस वर्षमें शुक्ल पक्षके दशमी दीतवार कुल जितने घड़ी हों उ-
सेर पान्य बिकता है ॥ २४५ ॥

द्विपञ्चाशद्युतेवर्षेदिवसानांशतत्रये ।

सुभिक्षंकेचिदप्याहुःपरदेशेषुविग्रहः ॥ २४६ ॥

जिस वर्षमें तिनसौ भावन दिन हों उसको कई शुभ कहते हैं किन्तु देशमें उपद्रव हो ॥ २४६ ॥

वाणेषुत्रिदिनेकालोमध्यमोद्विशरत्रिभिः ।

वर्षखषट्त्रिभिःश्रेष्ठसुभिक्षतत्रनिश्चितम् ॥ २४७ ॥

जिस वर्षमें ३५५ दिन हों वह मध्यम होता है । ३५७ दिन हों वह शुभ होता है और जिसमें पूरे तीनसौ साठ दिन हों वह श्रेष्ठ होता है उसमें निश्चय सुभिक्ष हो ॥ २४७ ॥

अक्षय्यायांतृतीयायांसंध्यायांसप्तधान्यकम् ।

पुंजीकृत्यस्थापनीयंपृथक्कृत्वातरोरधः ॥ २४८ ॥

“अक्षय तृतीया वरीणा, ” आस्तातीज (वैशाख शुक्ल तीज) की संध्याके समय सातों धान्य लेकर एक बूझके नीचे उनकी ढेरें लगावे ॥ २४८ ॥

यदाविकीर्णतद्धान्यंतद्वर्षेबहुजायते ।

यत्पुञ्जरूपवातिष्ठेन्नैवनिष्पद्यतेपुनः ॥ २४९ ॥

उस ढेरिमेंसे जो जो अन्न बिखर जाय वे उस वर्षमें बहुत उत्पन्न हों । और जो ढेरी रूपसे ज्योंके त्यों घरे रहें वे उस वर्षमें नहीं उत्पन्न होते हैं ॥ २४९ ॥

अक्षय्यायांतृतीयायांप्रपूर्येद्भाण्डमम्बुना ।

गर्विविलोकयेन्मध्येतत्स्वरूपंविमृश्यते ॥ २५० ॥

अक्षय तृतीयाकी एक बर्तन (थाली आदि) में जल भर कर उसमें मूर्खको ड्रोसे और उसके रूपका विचार करे ॥ २५० ॥

रक्तेसूर्येविग्रहःस्यान्नीलेपीतेमहारुजः ।

श्वेतेसुभिक्षंजायेतधूसरेदुःखमूषकाः ॥ २५१ ॥

यदि उसमें सूर्य लाल दीखे तो, विग्रह हो नीला अथवा पीला दीखे तो दुनियामें महा रोग हो । सफेद दीखे तो सुभिक्ष हो और धूआँकासा दीखे तो चूहोंका दुःख हो ॥ २५१ ॥

अपापाढीविचारमाह ।-

आपाढ्यां समतुलिताधिवासितानामन्येद्युयद-
धिकतामुपैतिबीजम् । तद्वृद्धिर्भवतिनजायतेयदूर्ण-
मंत्रोस्मिन्भवतितुलाभिमंत्रणाय ॥ २५२ ॥

“आपाढी पूर्णिमाका विचार”-(उत्तरापाढ युक्त) आपाढ शुक्ल पूर्णिमाके दिन अधिवासित समस्त बीजोंको (धान्योंको) जुदे जुदे बराबर पूरे तौलकर और उनको अभिमंत्रित करके एक रात भर रख छोड़े और फिर दूसरे दिन उस तुला (तराजू) को नीचे लिखे मंत्रोंसे अभिमंत्रित कर उन सब बीजोंको फिर तौले । उनमें से जो जो बीज तौलमें घटे वह उस वर्ष नहीं हों और जो बढें वे उस वर्षमें अधिक हों । इसी प्रकार देश-गाँव और मनुष्योंकी भी परीक्षा की जाती है ॥ २५२ ॥

स्तोतव्यामंत्रयोगेनसत्यादेवीसरस्वती ।

दर्शयिष्यसियत्सत्यंसत्येसत्यव्रताह्यसि ॥ २५३ ॥

सत्यात्मिका सरस्वती देवीकी इस मंत्रसे इस प्रकार स्तुति करने चाहिये कि हे सरस्वती देवी ! आप सचाईके सम्बन्धमें सच्चेव्रत-वाली हैं इस लिये जो सत्य हो सो आप दिखा दें ऐसी स्तुति करने से जो सत्य होगा सो मालूम होजायगा ॥ २५३ ॥

येनसत्येनचन्द्रार्कौमहाज्योतिर्गणास्तथा ।

उत्तिष्ठन्तीहपूर्वेणपश्चादस्तं व्रजन्ति च ॥ २५४ ॥

जल तौलमें बढे तो थोड़ी वर्षा, झरनेका बढे तो मध्यम, तलावका बढे तो उत्तम और सबही जल बढें तो मारो वर्षा हो तथा कुछभी न बढे तो वर्षा नहीं हो ॥ २५८ ॥

दन्तैर्नागागोहयाद्याश्वलोमादेन्नाभूपाःसिक्थवे-
नद्विजाद्याः । तद्वद्देशावर्षमासादिशश्वशेषद्रव्या-
ण्यात्मरूपस्थितानि ॥ २५९ ॥

हाथीदाँतके तौलसे हाथियोंका लोमोंसे गौ आदिका, सोनेसे राजाओंका और सिक्थक अर्थात् एक ग्रास भर बखसे ब्राह्मणादि वर्णोंका न्यूनधिक्य होना जानना चाहिये । और इसी भाँति देव, वर्ष, मास, दिशामें तथा अन्य द्रव्योंकीभी आत्मरूप पदार्थोंके तौलसे स्थिति मालूम करनी चाहिये ॥ २५९ ॥

द्वैमीप्रधाना रजतेन मध्या तयोरलाभेखद्विरेण
कार्या । विद्धः पुमान्वेनशरेणसाबातुलाप्रमाणेन
भवेद्वितस्तिः ॥ २६० ॥

यदि तराजू सोनेकी ही तो सनसे अच्छी, चाँदीकी हो तो मध्य-
म और दोनों न हों तो खैरीकी करनी चाहिये अथवा जिस बाणसे
कोई पिधा हो उसकी १२ अंगुलीकी दंडी बनानी चाहिये ॥ २६० ॥

हीनस्य नाशोऽभ्यधिकश्चवृद्धिस्तुल्येनतुल्यंतु-
लिनंतुलायाम् । एतत्तुलाकोशरहस्यमुक्तंप्रजश-
योगेपिनरोविदध्यात् ॥ २६१ ॥

तुलामें तुली हुई वस्तुमें तौलमें कम हों तो हानि-बढे तो वृद्धि
और तुल्य (समान) हों तो सम हों । यह तुला कोश रहस्यमें
लिखा है । इसको रोहिणी योगमें भी देखना चाहिये ॥

अथ कुसुमलताफलम् ।

फलकुसुमसंप्रवृद्धिवनस्पतीनां विलोक्य विज्ञेयम् ।

मुलभत्वंद्रव्याणां निष्पत्तिश्चापि सस्यानाम् ॥ २६३ ॥

“अब पृथ्वीपर खड़े हुए पुष्प, लता आदिसे वर्षाका शुभाशुभ
ज्ञाते हैं।” वृक्षोंके फल फूलोंकी वृद्धि देखकर सब वस्तुओंकी
भ्रमा और खेतीकी उत्पत्ति जानीजातीहै ॥ २६३ ॥

शालेन कलमशाली गताशोकेन रक्तशालिश्च ।

पाण्डूकः क्षीरिकयानीलाशोकेन शूकरकः ॥ २६३ ॥

शाल वृक्षके फल फूलोंकी वृद्धिसे कलम शालीकी वृद्धि होतीहै।
ए अशोकसे लाल शाली—दूधीसे पाण्डूक और नीले अशोकसे
रक्त धान्यकी वृद्धि होतीहै ॥ २६३ ॥

न्यग्रोधेन तु यवकस्तिन्दुकवृद्ध्या च पट्टिको भवति ।

अश्वत्थेन ज्ञेयानिष्पत्तिः सर्वसस्यानाम् ॥ २६४ ॥

वड़की वृद्धिसे यवक तेंदूकी वृद्धिसे साठी, और शीपलकी वृद्धिसे
प खेतिपा होतीहै ॥ २६४ ॥

जम्बूभिस्तिलमापाः शिरीषवृद्ध्या च कङ्गुनिष्पत्तिः ।

गोधूमाश्च मधूकैर्यववृद्धिः सप्तपर्णैः ॥ २६५ ॥

जामनकी वृद्धिसे तिल और उड़द, सिरसकी वृद्धिसे बांगनी,
महुएसे गेहूं और सप्तपर्णा(सतपत्ती) से जौकी वृद्धि होतीहै ॥ २६५ ॥

अतिमुक्तककुन्दाभ्यां कपासः सर्षपा असनैः ।

चदरीभिश्च कुलत्थान् चिरबिल्वेनादिशेन्मुद्गान् ॥ २६६ ॥

अतिमुक्तक और कुन्दसे कपास, असनसे सरसो, येरसे कुटबि
और बेलकी वृद्धिसे भूंग अधिक होतेहै ॥ २६६ ॥

अतसीवेतसपुष्पैःपलाशकुसुमैश्चकोद्रवाज्ञेयाः ।

तिलकेनशंखमौक्तिकरजतान्यथाचैंगुदेनशणाः ॥ २६७ ॥

वेतके फूलोंकी वृद्धिसे अलसी, पलाशके फूलोंसे कोदों, तिलकके वृक्षसे शंख मोती और चांदी और ईंगुदीकी वृद्धिसे सणकी वृद्धि होती है ॥ २६७ ॥

कारिणश्चहस्तिकरणैरादेश्यावाजिनोश्चकर्णेन ।

गावश्चपाटलाभिःकदलीभिरजाविकंभवति ॥ २६८ ॥

लाल परंडकी वृद्धिसे हाथियोंकी, अश्वकर्णकी वृद्धिसे घोड़ोंकी पाटलकी वृद्धिसे गायोंकी और केलोंसे भेड़ बकरीकी वृद्धि होती है ॥ २६८ ॥

चम्पककुसुमैःकनकंविद्रुमसंपञ्चबंधुजीवेन ।

कुरवकवृद्ध्यावज्रवैदूर्यनन्दिकावर्तैः ॥ २६९ ॥

चंपेके फूलोंसे सोनेकी, गुल दुपहरिसेते मृंगेकी, कुरवकसे हरिकी और नन्दिकावर्तकी वृद्धिसे वैदूर्य मणिकी वृद्धि होती है ॥ २६९ ॥

विन्द्याच्चसिन्दुवारेणमौक्तिकंकारुकान्कुसुम्भेन ।

रक्तोत्पलेनराजामंत्रीनीलोत्पलेनोक्तः ॥ २७० ॥

सिंधुवालकी वृद्धिसे मोती, कसुंभेकी वृद्धिसे कारीगरोंकी, लाल कमलसे राजाओंकी और नीले कमलोंसे राज मंत्रियोंकी वृद्धि होती है ॥ २७० ॥

श्रेष्ठीसुवर्णपुष्पैःपद्मैर्विप्राःपुरोहिताःकुमुदैः ।

सौगंधिकेनवलपतिरकेणहिरण्यपरिवृद्धिः ॥ २७१ ॥

सोनेके फूलोंसे सेठोंकी, कमलोंसे ब्राह्मणोंकी, कुमुदोंसे राज-पुष्टेदितोंकी, सुगन्धित पुष्पोंसे सेनापतिकी और आककी वृद्धिसे सोनेकी वृद्धि होती है ॥ २७१ ॥

आम्रैःक्षेमंभल्लातकैर्भयंपीलुभिस्तथारोग्यम् । :

खदिरशमीम्यांदुर्भिक्षमर्जुनेशोभनावृष्टिः ॥ २७२ ॥

आम्रकी वृद्धिसे कल्याण, भिलावेसे आरोग्यता-खेजड़ेसे दुर्भिक्ष (इसकी कली सांगरेसे सुभिक्ष) और अर्जुनकी वृद्धिसे वर्षाकी वृद्धि होती है ॥ २७२ ॥

पिचुमन्दनागकुसुमैःसुभिक्षमथमारुतःकपित्थेन ।

निचुलेनावृष्टिभयं व्याधिभयं भवतिकुटजेन २७३ ॥

नीम और नागकेसरके फूलोंसे सुभिक्ष, कैयसे पवन वेग, निचुलेसे वृष्टि भय, और कुटजकी वृद्धिसे रोग भय होता है ॥ २७३ ॥

दुर्वाकुशकुसुमाभ्यांभिक्षुर्वह्निश्चकोविदारेण ।

श्यामालताभिवृद्ध्यावन्धक्योवृद्धिमायान्ति २७४

दुर्वा और इम्लीकी वृद्धिसे तथा पुष्पोंकी वृद्धिसे ईशकी, कोविदारसे भिक्षुकी और श्यामलतासे व्यभिचारिणी स्त्रियोंकी वृद्धि होती है ॥ २७४ ॥

यस्मिन्कालेस्तिग्धनिश्छिद्रपत्राःसंहश्यन्तेवृक्ष-

गुल्मालताश्च । तस्मिन्वृष्टिःशोभनासंप्रदिष्टारुक्षे-

श्छिद्रैरल्पमम्भःप्रदिष्टम् ॥ २७५ ॥

जिस वर्षमें वृक्ष (बड़ेपेड़) गुल्म (छोटेपेड़) बड़ी (बेलहों) और अन्य प्रकारकी वनस्पतियां चिकने तथा छेद रोहित पत्तोंसे युक्त हों तो उस वर्षमें उत्तम वर्षा होती है । और जो इनके पत्ते रुखे हों तथा छेदवाले हों तो कम वर्षा होती है । ऊपर लिखे मुताबिक प्रति वर्ष निरीक्षण करके जान करनी चाहिये ॥ २७५ ॥

काकागत ।

काकस्याण्डानि चत्वारिवारुणं प्रथमं स्मृतम् ।

तथा द्वितीयमाग्नेयं वायवीयं तृतीयकम् ।

चतुर्थं भूमिजं प्रोक्तमेषां फलमथोदितम् ॥ २७६ ॥

“ कागकी चेष्टाओंसे शुभाशुभका ज्ञान ”—

कागके वारुण—आग्नेय—वायवीय और भूमिज यह चार आ होते हैं ॥ २७६ ॥

क्षेमं सुभिक्षं सुखिता च धात्री स्याद्भूमिजे ण्डे महती
चवृष्टिः । पृथ्वी तथानन्दति सस्यमाद्यं वर्षा विशेषे-
ण जलाण्डतः स्यात् ॥ २७७ ॥

यदि भूमिज अण्डा हो तो क्षेम सुभिक्ष और पृथ्वी सुखी तथा आनन्द युक्त हो वर्षा श्रेष्ठ खेती अच्छी हो और वारुणी हो तो अधिक वर्षा हो ॥ २७७ ॥

जातानि धान्यानि समीरजाण्डे खादंति कीटाः
शलभाः शुकाश्च । दुर्भिक्षमण्डे मिभवेन्निवेद्यं जा-
नीहि मासाश्चतुरोपि चाण्डे ॥ २७८ ॥

वायवीय अण्डा हो तो खेती अच्छी हों किन्तु टीडी तोते खाजाँम और अग्नि संज्ञक हो तो दुर्भिक्ष पड़े । इस प्रकार चौमासेमें अंडोंके अनुसार फल केहे । आपाद आदि चार महीनोंमें उल्लेखित चार भाँतिके अंडे होते हैं ॥ २७८ ॥

काकालयः प्राग्दिशि भूरुद्धस्य सुभिक्षकृत्स्वरूपघ-
नस्तथाग्रौ । मासद्वयं वृष्टिकरोति पूर्वं ततो न वृष्टि-
र्हि मया त एव ॥ २७९ ॥

यादि कागका घोंसला वृक्षमें पूर्वकी तर्फ हो तो सुभिक्ष, और कोणकी तर्फकी डालियोंमें हो तो कम वर्षा और दक्षिणमें हो तो केवल दो मास भेद वने ॥ २७९ ॥

मासद्वयेतीवघनःप्रतीच्यानिष्पत्तिरन्नस्यतदोच्च-
भूम्याम् । ततोल्पवृष्टिर्यदिवालपवर्षासवातवृष्टिः
पवनस्यकोणे ॥ २८० ॥

पश्चिमकी तर्फकी डालियोंमें हो तो दो मास बहुत बादल रहें.
कैसी भूमिमें अन्न अधिक हो और वायव्यमें हो तो थोड़ी वर्षा हो
अथवा पवन पानी दोनों हों ॥ २८० ॥

पूर्वनवृष्टिर्निऋतौपयोदाःपश्चाद्घनोलोकसुरोग-
ताच । स्यादुत्तरस्यांभवनेसुभिक्षमीशानभागे-
पिसुखंसुभिक्षम् ॥ २८१ ॥

नैऋत्यमें हो तो पहले वर्षा न हो पीछे हो-और रोग पैदा हो
उत्तरमें हो तो सुभिक्ष हो और ईशानमें घोंसला हो तो अच्छा
संवत् हो ॥ २८१ ॥

वृक्षाग्रेतुमहावर्षावृक्षमध्येतुमध्यमा ।

अधःस्थानेनैववर्षावृक्षेकाकालयाद्भेदः ॥ २८२ ॥

वृक्षकी चोटीपर घोंसला हो तो महावर्षा हो, बीचमें हो तो
मध्यम वर्षा हो । और नीचे पेड़हीमें हो तो वर्षा नहीं हो ॥ २८२ ॥

वृक्षकोटरकेगेहप्रकारेकाकमालयम् ।

दुर्भिक्षविग्रहोराज्ञायाम्याछन्नस्यपातनम् ॥ २८३ ॥

यादि वृक्षके कोटरमें कागका घर हो तो दुर्भिक्ष हो और गमा-
ओंमें विग्रह हो ॥ २८३ ॥

नदीतीरेकाकगृहेमेघप्रशनेनवर्षणम् ।

— पक्षौविधूगयनूकाकोवृक्षाग्रेसीघंमेघकृत् ॥ २८४ ॥

• नदीके किनारे घोंसला हो तो वर्षा नहीं हो और यदि काग पंख
कँपाकर वृक्षके आगे बैठा हो तो जल्दी वर्षा हो ॥ २८४ ॥

अन्यप्रयोग ।

— ग्रामाद्बहिश्चनिर्गत्यस्वस्थानेमण्डलंलिखेत् ।

संपूज्यशकुनंवीक्ष्यकाकंगितविनिर्णयः ॥ २८५ ॥

“ अब कागका कुछ और तंत्र कहते हैं । ”—

कागकी घेष्टाओंका निर्णय करनेके लिये गाँवसे बाहर जाकर एक
अच्छी जगहमें मंडल लिखे और (उसमें आगे बतार्ई हुई विधिकी
क्रिया करके) पूजन करे ॥ २८५ ॥

कपिलानांशतंहत्वाब्राह्मणानांशतद्वयम् ।

तत्पापंपरिगृह्णासियदिमिथ्यावल्लिहरेः ॥ २८६ ॥

फिर कागसे कहे कि तौ गाय और दोसौ ब्राह्मणोंके (भूखे-
मारनेका) जो पाप होता है वह पाप तेरेको हमारी दी हुई बलिकों
मिथ्या हरण करनेसे होगा । अर्थात् तू सत्य फलदायी बलिकों
हरण करना ॥ २८६ ॥

शाल्योदनेनसाज्येनकृत्वापिडचयंबुधः ।

संमार्जितेशुभेस्थानेस्थापयेन्मंत्रपूर्वकम् ॥ २८७ ॥

यह कह कर चावल्लोंके आटेमें घी मिलाकर चार पिंड बनावे
और पोते हुए शुभस्थानमें उनको मंत्र पूर्वक स्थापन करे ॥ २८७ ॥

(मंत्रोयथा । ॐतुंडब्रह्मणे सुराय । असुरेन्द्राय
हिरण्यपुण्डरीकायस्वाहा ॥ १ ॥)

आह्वानमंत्र ॥ ॐ तिरितिमिरिटिकाकपिंडालये

स्वाहा । पिंडाभिमंत्रणम् ॥ २ ॥

देशकालपरीक्षार्थवृषभंचाद्यपिंडके ।

द्वितीयेतुरगन्यस्यतृतीयेहस्तिनक्रमात् ॥ २८८ ॥

और हुंडेति इससे आवाहन और तिरिति इससे अभिमंत्रण करें
फिर देश कालका परीक्षाके निमित्त पहले पिंड पर बैलका चिह्न
दूसरेपर घोड़ेका और तीसरे पर हाथीका चिह्न करें ॥ २८८ ॥

वर्षाज्ञानायसंस्थाप्यप्रथमेपिंडकेजलम् ।

द्वितीयेमृत्तिकास्थाप्यातृतीयंगारकःपुनः ॥ २८९ ॥

और वर्षके ज्ञानके लिये पहले पिंड पर जल दूसरे पर मिट्टी और तीसरे
पर अंगार रसे ॥ २८९ ॥

शीघ्रंवर्षतिपानीयेमृत्तिकायास्तुपिंडके ।

पक्षान्तेनतुवृष्टिस्यादंगारेनास्तिवर्षणम् ॥ २९० ॥

यदि काग जल पिंडको स्पर्श करे तो शीघ्र वर्षा, मिट्टी वालेको
करे तो पन्द्रह दिन पीछे और अंगारके को स्पर्श करे तो वर्षा नहीं
हो ॥ २९० ॥ इति ।

अथ गवंगितम् ।

नावोदीनापार्थिवस्याशिवायपादैर्भूमिकुट्टयन्तश्च
रोगान् । मृत्युंकुर्वन्त्यश्रुपूर्णयताक्ष्यःपत्युर्भाता-
स्तस्करानाद्वयन्त्यः ॥ २९१ ॥

“अथ गौके इंगित (इंगारे) अथवा चेष्टा कहते हैं ।” यदि गा
उदात्त हो तो राजागो भय हो, पंरांसि भूमिको फूटे तो गोगोत्पत्ति
हो नेत्रांसि आंसु भरें रें तो मालिकगो मृत्यु हो और भयभीत हो
कर पटा शब्द करे तो चीर आवे ॥ २९१ ॥

अकारणक्रोशति चेदनर्थो भयाय रात्रौ वृषभः शिवाय ।
भृशं निरुद्धो यदि मक्षिकाभिस्तदा शुवृष्टिः सरमात्म-
जैर्वा ॥ २९२ ॥

गौ बिना कारण बोले तो अनर्थ हो, रातको बोले तो भय हो बल
बोले तो शुभ हो और यदि गायोंको मक्खी अथवा श्वान बहुत
घेरें तो शीघ्र वर्षा हो ॥ २९२ ॥

आगच्छन्त्यो वेश्महम्बारवेण संसेवन्त्यो गोष्ठवृद्धये
गवांगाः । आद्रग्यो याहृष्टरो मयः प्रहृष्टा यन्या
गावः स्युर्महिष्योपि चैवम् ॥ २९३ ॥

यदि 'हम्वा' शब्द पुकारती हुई गौ घरमें आवे और घरको
संवे तो गायोंकी गोष्ठि बैठे । यदि गायका अंग जलसे भीग रहा
हो और रोमांच हों तथा गौ मसल हो तो शुभ होता है यह बात
महिषी (भैंस) में भी जानना चाहिये ॥ २९३ ॥

इत्येवं शकुनं विचार्य सुधिया वाच्यं फलं वार्षिकं यस्यो-
द्धोधनतोलभेद्बुधनं सर्वार्थसंसाधनम् । राजन्ये-
रपि मान्यते स निपुणः प्रोक्षासि भास्वद्वृणः शास्त्रं य-
न्मनसि स्फुरत्यतिभयाच्छ्रीवर्षबोधाह्वयम् ॥ २९४ ॥

इस प्रकार शकुनोंका विचार करके बुद्धिमानोंको संवत्सरका
फल कहना चाहिये । क्योंकि इस विद्याके ज्ञानसे बहुत धन और
सर्वार्थसिद्धि होती है । जो इस वर्षप्रबोधको जानते हैं वे चतुर और
राजमान्य होते हैं और उसके श्रेष्ठगुण सर्वत्र विख्यात हो जाते हैं ॥ २९४ ॥

श्रीमत्तपागणविभुः प्रसृतप्रभावः प्रद्योतते विजयतां
प्रभुनामसूरिः । तत्पादपद्मतरणिर्विजयादिरत्नः
स्वामी गणस्थमदसाविजितद्युरत्नः ॥ २९५ ॥

तच्छासनेजयतिविश्वविभासनेऽभृद्धिद्वान् कृपाविध-
रतुलंज्ञनिषेव्यमाणः । शिष्योस्यमेघविजयाह्वय-
वाढकोसौग्रंथःकृतःसुकृतलाभकृतेत्रतेन ॥ २९६ ॥

इन दोनों श्लोकोंमें वर्षप्रबोधके बनानेवालेका परिचय है ॥ २९५ ॥ २९६

अनुष्टुभांसहस्राणित्रीणिसाध्यानिमानिता ।

अथोयंवर्षबोधाख्योयावन्मेरुःप्रवर्तताम् ॥ २९७ ॥

इन ग्रन्थमें सब साढ़े तीन हजार श्लोकथे किन्तु उनमेंसे उपयोगी
विषय लेकर इनको संक्षेप कर दिया है । अब यह ग्रन्थ सुमेरु तक
प्रवृत्त हो ऐसी आशा है ॥ २९७ ॥

यत्पुनरुक्तमयुक्तं द्विरुक्तमिदं तद्विशोधितं युक्तम् ।

बद्धांजलिनेति मयाभ्यर्थं सकतगीतार्थः ॥ २९८ ॥

इस ग्रन्थमें जहाँ जहाँ अयुक्त पुनरुक्ति अथवा द्विरुक्ति हुई हो
उसको विद्वान् लोग ठीक करलें यह मेरी प्रार्थना है ॥ २९८ ॥

भावि वत्सरबोधावतस्य बालस्य शालिनः ।

कुरुता गुरुताग्रंथो हितं बालस्य पालनात् ॥ २९९ ॥

इति श्रीमहामहोपाध्यायमेघविजयमणिविरचिः

तो वर्षप्रबोधः समाप्तः ।

यह ग्रंथ आगामी संवत्सरके शुभाशुभ ज्ञानके होनेमें उपयोगी
समझकर बालकोंके हितके मिमित्त निर्माण किया गया है ॥ २९९ ॥

इति श्रीमहर्षीनारायणात्मजहनुमानश्चर्मलिखित भाषाटीका

साहित वर्षप्रबोधके उत्तर भागका तीसरा स्थल समाप्त ।

समाप्तोयं ग्रन्थः ।

॥ विज्ञापन ॥

धर्मसखा-पुस्तकमाला ।

नहाने, धोने, खाने, पीने, पहरने और सोने आदिके विषयमें हमारे प्राचीन महर्षियोंने जो नियम स्थिर किये थे उनके अनुसार आचरण करनेसे हिन्दू सन्तानोंको अनेकों लाभ होते हैं। किन्तु कई कारणोंसे आज कल कुलीन और सदाचारी लोगोंके भी आचरण बदल गये हैं। इसी बातको देख कर जयपुरके हनुमान शर्माने “धर्म सखा-पुस्तकमाला” का सम्पादन करना प्रारम्भ किया है। जिसके पाँच मित्र आज हमारे सामने उपस्थित हैं।

(१) प्रथम मित्र “स्नानविधि” है। इसमें घर पर कुएँ, तालाब नदी आदिपर-या तीर्थ पर अथवा घाण्डालादिसे स्पर्श हो जानेपर कहां किस भांति स्नान करना चाहिये-और नित्य या नैमित्तिक स्नानमें क्या विशेष होना चाहिये यह उत्तम रीतिसे लिखा है।

(२) दूसरा मित्र “भोजन विधि” है इसमें क्या खाना क्या नहीं खाना, कब खाना, कब नहीं खाना, कैसे बनाना, परोसना और कैसे खाना, तथा सखरानखरा किस प्रकार मानना और अकेले वा सासुदायिक भोजनमें किसी प्रकारसे आकस्मिक छूआछूत या दुर्घटना हो जाय तो क्या करना चाहिये इत्यादि भोजन सम्बन्धी सब बातें सरलतासे लिखी हैं।

(३) तीसरी पुस्तक-“शयनाविधि” है। इसका नाम ही गुण-सूचक है।

(४) चौथी पुस्तक “व्यवहारविधि” है। यह धर्मके लिये फूक दे देकर पांव रखनेमें उरनेवालोंके लिये अच्छी है। इसमें वर्तमान युगके उपयोगी धर्मव्यवहारकी अनेकों बातें हैं।

ज्योतिष ग्रन्थ ।



नाम.	की. रु. आ.
अनेकचर्चोका केलेन्टर	०-१॥
कीर्तिपञ्चाङ्ग-पं० महीधर शर्माकृत संवत् १९७८ का, अनेक मुहूर्त	
और प्रसिद्ध देशोंके अक्षांशादि सारणियों सहित...	०-६
गौराजातक भापाटीका	०-२
जन्मपत्री-वनानेके सचित्र कोष्टकादि	०-४
दशवर्षीय पञ्चाङ्ग-पं० मनोरामजी कृत संवत् १९८१ से १९९० तक	
पञ्चाङ्गोपयोगी तिथि नक्षत्रादि सब नियम और विवाहोपनयनादि	
मुहूर्त हैं,	२-८
भविष्यफल भास्कर-भापाटीकासमेत	१-८
भविष्यफल स. १९७८ का पं० हरदेव शर्माका सालभरकी तेजी	
मदी रुई चादी वगैरह	०-६
मनुष्यजातक-सटीक ज्योतिषका उत्तम ग्रन्थ है	१-४
मानवपञ्चाङ्ग-पं०-श्रीमनोरामजीकृत-स० १९७८ और १९७९	
तक तैयार है और १९८० तक भी है प्रत्येकका मूल्य	०-४
मुहूर्तचिन्तामणि मूळ-विद्यार्थियोंके लिये उपयोगी	०-८
मुहूर्तदीपक सटीक-५८ शा. वि. छन्द के श्लोकोंमें प्रायः सभी	
, मुहूर्त आगये हैं	०-४
वर्षप्रबोध भा. टी. पञ्चांग सम्बन्धी फलके विषयमें अच्छा है ;	२-०
वर्षफलवनानेका-सचित्र-फार्म यथास्थान फलादेश लिखनाही बाका है	०-४
वाशिष्टदेहिता-फलित ज्योतिषका अनुपम ग्रन्थ है	२-०
शतवार्धिकगन्त्री ई० स० १९१६ से २०१६ तक	०-२
जाम्बुद्वीप प्रकाश-पं० महीधरशर्मा विरचित भापाटीका सहित ।	
इनमें ग्रहोंके योगोंसे विशेष चमत्कारिक फल ग्रहपङ्कज्यादि	
गणित, अशायु, पिण्डायु, निसर्गायु आदिक गणित, आयुका	
टीका निश्चय है	२-८

नाम.

को. रु आ.

शायनमास्कर—(भाषाटीका सहित) इस ग्रन्थमें वर्षकल बनानेमें

बड़ी सहायता मिलती है ०—१ ०

ग्रहलाघन सान्वय भाषाटीका । गणेशदैवज्ञकृत मूल और प० राम-

स्वरूपजीकृत अन्वय भाषाटीका और उदाहरण सहित ग्रेज १—८

१) तथा रफ्तकागज १—४

ग्रहलाघनकरण—स्वर्गीय प० सुधाकर द्विवेदीजीकृत सर्वोत्तम

टीका सहित ४—४

ग्रहलाघनसारणी—यह सारणी बहुतही सरल व उत्तम वर्नी है १—०

ज्योतिषसार—भाषाटीकासमेत । इस ग्रन्थमें सम्पूर्ण मुहूर्त, जन्मपथ-

ज्ञान, वर्षज्ञान आदि बहुत विषयोंका संग्रह है । इसके द्वारा जीव
ज्योतिषी होसकते हैं ग्रेज कागज १—१२

ज्योतिषश्यामसंग्रह—प० श्यामसुन्दर प्रणीत भाषाटीका सहित ।

ग्रेज कागज ३—०

राजिकनीलकण्ठी—सटीक—तन्त्रनयात्मक । इसमें वर्षकल बनानेका पूरा

हाल और वर्षान्तर्दशाफल, द्वादशमास और प्रथमतन्त्रमें अनेक
प्रकारके प्रश्नके विषय चमत्कारिक हैं, ग्रेज कागज १—८

राजिकनीलकण्ठी—उपरोक्त विषयांशुनार प० महीधरकृत भाषाटी-

कासहित ग्रेज कागजका दाम. २—०

चरपतिजयचर्या—चक्रोत्तमेत स्वरोदय और जयलक्ष्मी टीकासमेत

और अष्टमिछादि चक्रोत्तमेत अष्टमिछाका चर्या ज्योतिष जातक
फलदेश है .. २—८

मृदुभातकमटीक—महोदयकीटीकासमेत ग्रेज कागज २—८

मृदुभातक—दशमिहिराचार्यकृत मूल और प० महीधरशर्माकृत

सरल भाषाटीकासमेत । २—०

एते गुह्यस्य रक्षार्थं कृत्तिकोमाग्निशृङ्गलिभिः ।
 सृष्टाः शरवनस्यस्य रचितस्यात्मतेजसा ॥
 स्त्रीविग्रहा यक्षा ये तु नानारूपा नयेरिताः ।
 गङ्गोमाकृत्तिकानाञ्च ते भामा राजसा मताः ॥
 नैगमेषस्तु पार्वत्या सृष्टो मेघाननो यदः ।
 कुमारधारी देवस्य गुह्यस्यात्मममः मखा ॥
 स्कन्दापस्मारभञ्जो यः सोऽग्निनाग्निसमद्युतिः ।
 स च स्कन्दमखा नाम विशाख इति ध्यायते ॥
 स्कन्दः सृष्टो भगवता देवेन विपुरारिणा ।
 विभक्तिं चापरां भृङ्गां कुमार इति स यदः ॥
 बाललीलाधरो योऽयं देवो हृद्भाग्निसम्भवः ।
 मिथ्याचारेषु भगवान् स्तूयं नैव प्रवर्त्तते ॥
 कुमारः स्कन्दसामान्यादत्र केचिदपण्डिताः ।
 गृह्णातीत्येष्वविज्ञाना मुवते देहचिन्ताकाः ॥
 ततो भगवति स्कन्दे मुरसेनापतौ कृते ।
 उपतप्त्युदहाः सर्वं दीप्तप्रतिधरं गुहं ॥
 ऊंचुः प्राञ्चलयद्भयं वृत्तिं नः संविधस्तु वै ।
 तेषामुच्यं ततः स्कन्दः शिवं देवमभोदयत् ॥
 ततो यदांस्तानुयाच भगवान् भगवन्ब्रह्म ।
 तिर्यग्योनिं मानुष्यं देवञ्च चित्तयं जगत् ॥
 परस्परपकारेण वर्त्तते धार्यतेऽपि च ।

देवा मनूयान् प्रीणन्ति तैर्व्योमानीस्तथैव च ॥

वर्त्तमानैर्व्यथा कालं शीतवर्षीणमावृतेः ।

द्वयाञ्जलिमस्कारजपहोमव्रतादिभिः ॥

नराः मन्यक् प्रयुक्तेषु प्रीणन्ति त्रिदिवेश्वरान् ।

भागधेयं विभक्त्युत्तमं किञ्चिन्न विधत्ते ॥

तद्युक्ताय प्रभा वृत्तिर्वालेष्वेव भविष्यति ।

कुलेषु येषु नेज्यन्ते देवाः पितर एव च ॥

ब्राह्मणाः साधवश्चैव गुरवोऽतिथयस्तथा ।

निवृत्ताचारगोत्रेषु परपात्रोपभोजिषु ॥

उच्छ्वेदलिभिर्जेषु भिक्षुकांश्चोपभोजिषु ।

गृहेषु तेषु ये बालास्तान् गृहीध्वमपक्रिताः ॥

तत्र वा विपला वृत्तिः पूजा चैव भविष्यति ।

एवं यदाः समुत्पन्ना बालान् गृह्णन्ति चाप्यतः ।

यहोपसृष्टा बालास्तु दुष्टकिंत्सतमा सताः ।

वैकल्यं नरणं चाशु भुवं स्कन्दयद्वा मृतं ॥

स्कन्दयद्वाऽत्ययतमः सर्वेष्वेव यतः स्मृतः ।

अन्योना सर्वरूपस्तु न साध्या यद्वा उच्यते ॥